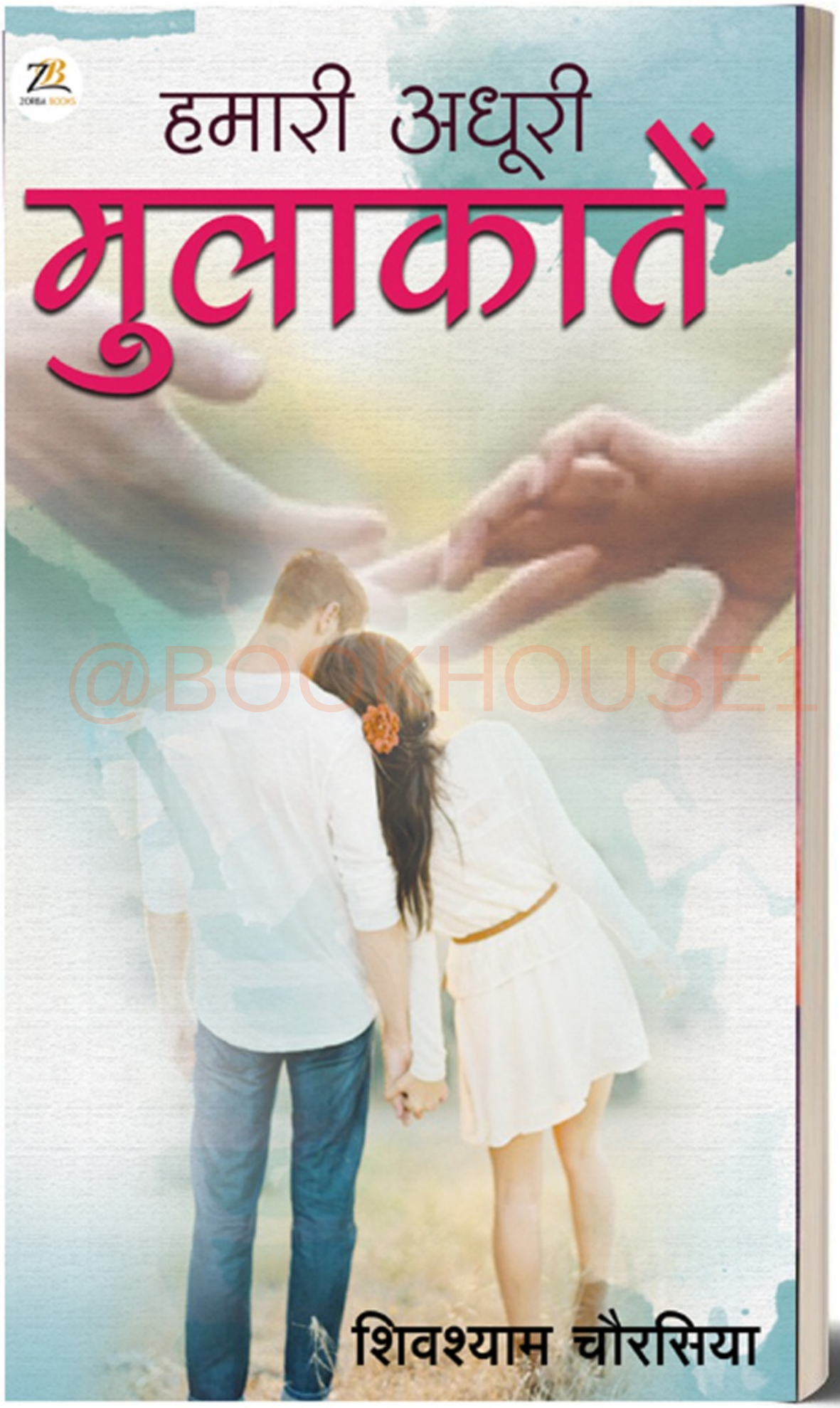
ZORBA BOOKS
हमारी अधूरी
मुलाकातें
@BOOKHOUSE1
शिवश्याम चौरसिया

VISIT…

# हमारी अधूरी मुलाकातें

@BOOKHOUSE1

शिवश्याम चौरसिया

PUBLISHED IN INDIA BY ZORBA BOOKS, 2018

Copyright © ShivShyam Chaurasiya

ISBN Print Book – 978-93-87456-13-6

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording, or by an information storage and retrieval system— except by a reviewer who may quote brief passages in a review to be printed in a magazine, newspaper, or on the Web— without permission in writing from the copyright owner.

Although the author and publisher have made every effort to ensure the accuracy and completeness of information contained in this book, we assume no responsibility for errors, inaccuracies, omissions, or any inconsistencies herein. Any slights on people, places, or organizations are unintentional.

Printed in India

@BOOKHOUSE1

# प्रस्तावना

शाम का वक़्त था, मैं दिल्ली के 'द न्यू अशोका होटल' में पहुँचा। दिल्ली पहुँचने से पहले ही मैंने ऑनलाइन होटल बुक कर लिया था, ताकि ठहरने में कोई असुविधा ना हो। दिल्ली के 'न्यू अशोका होटल' काउंटर पर,

"हैलो", मैंने बोला ?

काउंटर पर बैठी लेडी रिसेप्शनिस्ट अपने सेल फ़ोन में बिज़ी थी |

"क्या आप मुझे सुन पा रही हैं ?" मैंने काउंटर पर अपने हाथ से थप-थपाते हुए कहा।

@BOOKHOUSE1

"द न्यू अशोका होटल" में आपका स्वागत है",लेडी रिसेप्शनिस्ट ने कहा |

"जी धन्यवाद",मैंने कहा |

"मैं आपकी क्या सहायता कर सकती हूँ" ?

"कल रात मैंने रूम बुक किया था |"

"आपका शुभ नाम", रिसेप्शनिस्ट ने पूछा?

"शिवश्याम चौरसिया"|

उसने अपने सिस्टम में चेक किया और मुस्कुराने लगी।

"क्या हुआ?", मैंने कहा।

मुस्कुराते हुए उसने मुझे चाबी दी, और कहा कि – "आपका रूम नंबर 143 है, जो की सैकंडफ्लोर पर है |"

मैं समझ गया की वो क्यों मुस्कुरा रही है।

मैं अपने रूम में आ चुका था,लम्बा सफर तय करने के बाद मुझे थकान सी महसूस हो रही

थी, इसलिए मैं जल्द बिस्तर पर लेट गया। उसी वक़्त मुझे बिस्तर पर कुछ चुभन सी महसूस हुई |मैं सोचने लगा की दिल्ली के अच्छे होटलों का भी यह हाल है| मैंने बेड पर से गद्दे को उठाया तो एक "डायरी" पड़ी हुई थी | जब मैंने डायरी को खोला तो आधी डायरी भरी तथा आधी डायरी खाली थी, उस डायरी में दो पेज रखे हुए थे | एक पेज में कुछ समझौते वाली बातें थी शायद, और दूसरे पेज पर कुछ इस तरह से लेख लिखा गया था :

"हम दोनों का मिलना किस्मत के हाथ में है पर, तुम दो साल बाद ही तुम अपनी एलo एलo बीo की पढ़ाई पूरी करके इस 8052XXXXXX पर कॉल करना ।

तुम्हारी 'प्रेमिका रिमसा साहनी",

मैंने उस कागज़ पर लिखे हुए नंबर पर कॉल किया, ताकि जिसकी डायरी हो उस तक मैं पहुंचा सकूँ। कुछ देर बाद कॉल रिसीव हुआ |

किसी लड़की की आवाज़ आई -

"हेलो....., कौन ? "

"जी आप "रिया" की दोस्त बोल रहीं हैं ?" मैंने कहा |

"समझ गई", उसने कहा |

"आप क्या समझ गई ?", मैंने कहा ।

"जी 'धन्यवाद' बड़े वर्षों बाद मुझे अपनी ज़िम्मेदारी निभाने का मौका मिला है",उसने कहा |

"कैसी ज़िम्मेदारी?", मैंने कहा।

"आप प्लीज़ जहाँ हैं वहाँ का एड्रेस मुझे दीजिये", उसने कहा |

वो लड़की मेरी बात सुन ही नहीं रही थी | सिर्फ अपनी बात पर अड़ी हुई थी, और फोन पर मेरा एड्रेस बार-बार माँग रही थी | दिल्ली के जिस होटल में मैं ठहरा हुआ था, वहाँ का एड्रेस मैंने उस लड़की को दे दिया |

"धन्यवाद", उसने कहा |

"जल्दी आना मुझे यहाँ से जाना भी है", मैंने कहा |

"कल शाम तक आपको डिलीवरी मिल जाएगी", उसने कहा |

"कैसी डिलीवरी?", मैंने पूछा ?

@BOOKHOUSE1

बाय बोलकर उस लड़की ने कॉल कट कर दिया |

मैं सोचने लगा यह कैसा मजाक है?

मैं उसकी डायरी देना चाहता था पर उसने मेरा ही पता लेकर कल तक डिलीवरी देने की बात कह दी |

लड़की का चक्कर लग रहा था इसलिए, मैं डायरी को लेकर सीरियस नहीं होना चाहता था |

फिर होटल के लैंडलाइन नंबर से मैंने फोन करके वेटर को बुलाया |

“हाँ सर, आपने मुझे बुलाया”, वेटर ने कहा |

“यह डायरी यहीं बिस्तर के नीचे पड़ी हुई थी, इसे ले जाओ शायद किसी के काम आ जाये |”

वेटर डायरी लेकर चला गया |

मैं बिस्तर पर बैठे-बैठे भोजन करने लगा जो घर से आते वक़्त माँ ने मेरे लिए पैक करके दिया था, तभी मेरे रूम की बेल बजी। मैंने सोचा, “अरे यार..! अब कौन आ गया ?”

@BOOKHOUSE1

मैंने दरवाज़ा खोला तो सामने वेटर अपने हाथ में डायरी लेकर खड़ा था, और वह मुस्कुरा रहा था।

“क्यों मुस्कुरा रहे हो यार ?”, मैंने पूछा।

“बात ही ऐसी है सर, यह जिसकी “डायरी” है, वो तीन बार ऐसे ही कर चुका है”, वेटर ने मुस्कुराते हुए कहा |

“ठीक से बताओ?” मैंने कहा ।

वेटर ने हसँते हुए बोलना शुरू किया ।

“एक पागल सा लंबा आदमी है जो इस होटल के इसी रुम में तीन बार अपनी डायरी छोड़ चुका है| यह चौथी बार उसने ऐसा किया है। अभी एक दिन पहले ही उसने ये रूम बुक किया था। अगर आप उस पागल की सहायता करना चाहते हैं, तो यह रहा उसका कांटेक्ट नंबर, जो काउंटर से मिला है।

टेबल पर डायरी के साथ एक पेज रखते हुए वेटर रूम से बाहर चला गया |

मैं सोचने लगा की ऐसा कौन हो सकता है, जो इस होटल के रूम में अपनी डायरी रखने के लिए इतने महंगे होटल को बुक करता है, वो भी अच्छा खासा चार्ज देकर ? मैं उस आदमी

को जानने के लिए बिल्कुल बेचैन सा हो गया। आखिर वो आदमी ऐसा क्यों करता है ? वेटर के द्वारा दिए गये नंबर पर मैंने कॉल किया |

थोड़ी देर में कॉल रिसीव हुआ |

"हैलो....., आप कैसे हो ?", मैंने कहा |

"ठीक हूँ सर", उसने जवाब दिया |

उसकी बातों से मुझे ऐसा बिल्कुल नहीं लगा की वह पागल है, क्योंकि वो ठीक से बात कर रहा था |

"आपकी कुछ ज़रूरी चीज़ें दिल्ली के एक होटल के रूम में पड़ी हुई हैं। ", मैंने कहा |

उधर से कुछ जवाब नहीं आया |

"क्या यह डायरी तुम्हारी नहीं है ? मैंने कहा |

"मेरी ही है, पर अब मेरे काम लायक नहीं है", उसने कहा |

"इंसान और उसकी चीज़ें वही रहती है, सिर्फ वक़्त बदल जाता है", मैंने कहा |

@BOOKHOUSE1

"सब बदल गया है मेरे लिए।" उसने कहा |

"आओ और अपनी डायरी यहाँ से ले जाओ", मैंने कहा |

कुछ आवाज़ नहीं आया , क्योंकि कॉल डिस्कनेक्ट हो चुका था |
मैं इन सभी चीजों में उलझना नहीं चाहता था। फिर रूम का लाइट ऑफ किया और सो गया। सुबह में जब मैं मीटिंग के लिए जाने लगा तो मेरी नज़र उस डायरी पर पड़ी, जो टेबल पर रखी हुई थी, पर मैं उस डायरी को इग्नोर करता हुआ रूम से बाहर निकल गया अपनी मीटिंग अटेंड करने के लिए |

मैं दिल्ली में जी०टी०एफ०एस०एस०, ग्लोबल मल्टी सर्विस प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी की मीटिंग को अटेंड करने के लिए आया हुआ था |चूंकि यह कंपनी इंश्योरेंस के अलावा रक्तदान अभियान को बढ़ावा देने के लिए कार्य करती है, उस मीटिंग को जल्द समाप्त करके मैं अपने शहर लौटना चाहता था क्योंकि मुझे अपने करियर डिप्लोमा के एडमिशन की काउंसलिंग भी करवाना था |

शाम के वक़्त जब मैं मीटिंग अटेंड करके वापस होटल लौटा, तो होटल के काउंटर से रिसेप्शनिस्ट ने मुझे आवाज़ दी |

"यस मैंडम", मैंने कहा |

“आपके लिए ‘डिलीवरी’ आई है और आपको कोई नौजवान ढूँढ रहा था”, उस लेडी रिसेप्शनिस्ट ने कहा |

“कहाँ है, वह  नौजवान ?”,  मैंने पूछा ।

“अभी तो यहीं था, पता नहीं कहाँ चला गया,” रिसेप्शनिस्ट ने कहा |

मैं दिल्ली में किसी को जानता नहीं था, इसलिए डिलीवरी लेकर मैं अपने रूम की तरफ जाने लगा । रूम में जाने से पहले मैं होटल के कॉफी शॉप वाले काउंटर पर कॉफी आर्डर करके अपने रूम में जाकर बैठ  गया |

फिर आई हुई डिलीवरी को खोला तो मैं आश्चर्यचकित हो गया |

उसमें भी एक डायरी थी । मैं समझ गया की यह डायरी उसी लड़की ने भेजी है, जिसने फोन पर मुझसे मेरा एड्रेस माँगा था |

ठीक उसी समय मेरे रूम की बेल बजी । मैंने दरवाज़ा खोला तो वेटर कॉफ़ी लेकर खड़ा था |

“धन्यवाद” ,

मैंने रूम का दरवाज़ा बंद किया, और कॉफ़ी के प्याले  को लेकर कुर्सी पर बैठ गया |

@BOOKHOUSE1

मैं उस डायरी को पढ़ना चाहता था, जो कुछ देर पहले मुझे डिलीवरी में मिली थी, कॉफ़ी की चुस्की लेते हुए।

मैंने डायरी का पहला पेज पलटा और पढ़ना शुरू किया, “तुम किसी की सहायता करने में व्यस्त थे, मैं उसी वक़्त तुम्हें अपना दिल दे बैठी थी। तीन साल बाद तुम मिल सके, वह भी लम्बे इंतजार के बाद | मेरे लिए तुमने अपना एल०एल० बी० का पढ़ाई  एक साल बर्बाद कर दिया, इसलिए ना चाहते हुए भी मैं तुमसे दूरी बना ली, ताकि तुम अपनी माँ के सपने को पूरा कर सको। मैं तुम पर बोझ नहीं बनना चाहती थी। अगर मैं तुमसे दूर नहीं होती तो तुम अपनी माँ के सपने को पूरा नहीं कर पाते और शायद 2016 की बगावत में तुम अपने पिता को न्याय नहीं दिला पाते, वकील बनकर।”

जिस वक़्त तुम लखनऊ जाने से पहले, मेरी सहेली  प्रिया के मोबाइल पे कॉल करके मुझे रीज़नल स्टेडियम वाली गली में बुलाये थे| वो सारी बात प्रिया के मोबाइल में रिकॉर्ड हो गया था | उस वक़्त मुझे पता नहीं चला, की हम दोनों की बातें रिकॉर्ड हो रहीं है | प्रिया मेरी खाश सहेली थी फिर भी वो मुझसे जलती थी, प्रिया ने दलाल को बता दिया था,  कि हम दोनों शाम को 5:00 बजे रीज़नल स्टेडियम वाली गली में मिलने वाले हैं | फिर वहाँ पहुँचकर दलाल तुम पर गलत इल्ज़ाम लगाकर तुम्हें जेल भिजवाना चाहता था..... |

”डिलीवरी” वाली डायरी को पढ़ते-पढ़ते मुझे आधा घंटा लगा | मेरी कॉफ़ी खत्म हो चुकी

थी, पर मैं उस  डायरी को पढ़ने में इतना केंद्रित हो गया था की खाली कप की चुस्की लेता रहा और डायरी को पढ़ता रहा। डायरी पढ़ने के बाद मुझे कंफर्म हो गया था की इन दोनों डायरियों का आपस में कोई ना कोई कनेक्शन ज़रूर है | क्योंकि दोनों ही डायरी आधी - आधी खाली थी, जो एक दुसरे की पूरक थीं। मैं कुर्सी पर बैठा हुआ था और टेबल पर रखी डायरी को देख रहा था। एक डायरी मेरे हाथ में थी, जिसे कुछ क्षण पहले ही मैं पढ़ चूका था, तभी अचानक मेरी रूम की बेल बजी। मैंने दरवाज़ा खोला तो मेरे सामने छ: फुट लम्बा एक नौजवान आदमी  चुपचाप खड़ा था। मुझे लगा की वह किसी को ढूँढ रहा होगा इसलिए मैं दरवाजा बंद किये बीना कुर्सी पर आकर बैठ गया |

“क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?” उस नौजवान ने पूछा।

“ऑलरेडी आप अंदर आ चुके हैं।” मैंने कहा |

सॉरी  बोलते  हुए वो नौजवान दरवाज़े की तरफ दो कदम पीछे हो गया |

“आ जाओ ! आ जाओ !”  मैंने जवाब दिया।

वो नौजवान मेरे सामने  बेड पर बैठ गया। उसे देखकर ऐसा लग रहा था की, वो किसी गहरे सदमे का शिकार हो चुका है। उस नौजवान का चेहरा मायूस सा लग रहा था |

@BOOKHOUSE1

“किसे ढूँढ रहे हो ?” मैंने कहा।

”आपका इंतजार मैं सुबह से ही कर रहा हूँ,” उसने कहा |

“मैंने तो तुम्हें कभी देखा ही नहीं ?”

“यह सच है, पर शायद कल आपने मुझे कॉल किया था,” उस नौजवान ने कहा |

“अच्छा याद आया, कुछ बताओ अपने बारे में,” मैंने कहा |

“मेरा नाम “अमन श्रीनेत” है | मैं “सेवई” गाँव से हूँ,” उसने कहा |

“यह तो “गोरखपुर” के पास है, वही ना,” मैंने पूछा |

“हाँ !  हाँ !  क्या आप वहाँ गए हैं ?” उसने कहा |

“बराबरी में बात करोगे तो मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकता हूँ, गोरखपुर से “योगी” जी उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं, वही ना,” मैंने कहा |

“उसने अपना सर हिलाते हुए हामी भर दी।”

“वह रही तुम्हारी डायरी,” मैंने उसे टेबल की तरफ इशारा करते हुए कहा |

वो धीरे धीरे कुछ फुस फुसा रहा था |

“क्या, यह डायरी तुम्हारी नहीं है ?” मैंने पूछा |

“हाँ, यह मेरी ही डायरी है|” उसने धीरे से कहा ।

उसकी आवाज़ सुनकर ऐसा लग रहा था की उस वक़्त उसने खाना नहीं खाया हो |

“अपनी डायरी इस होटल में बार-बार क्यों छोड़ कर चले जाते हो ?” मैंने पूछा |

वह मुझे मासूमियत भरी निगाहों से देख रहा था । उसे यह अहसास हो गया था की मैं उसकी मदद करने वाला हूँ|

“दिल उस वक़्त नहीं संभाला जाता, जब यह समझ में नहीं आता कि मैं उसको भूल जाऊँ या उसका इंतजार करूँ?” उसने गहरी साँसे लेते हुए कहा |

उसकी बातें सुनकर मुझे एहसास हो गया की वह कितना बड़ा आशिक है |

“तुम्हारी डायरी में क्या लिखा है ?“

तब उसने दरवाज़े पर लिखे गए रूम नंबर 143 की तरफ इशारा किया । मैं उसके अंदाज पर मुस्कुराया –

“वा-ओ ‘ब्लाइंड लव’ क्या बात है” |

@BOOKHOUSE1

“पर तुम्हारी डायरी तो आधी खाली है ?” मैंने पूछा ।

“हमारी अधूरी मुलाकात”, के बिना “ अमन श्रीनेत ने कहा |

“हमारी अधूरी मुलाकातें, मतलब ?” मैंने दोबारा पूछ दिया ।

“रिमसा, जिससे मैं प्यार करता था | वह मुझे आधे सफर में ही छोड़ कर चली गई,” उसने धीमे स्वर मे बोला |

“कोई तो होगा जो तुम्हें उस तक पहुँचा सके ?” मैंने पूछा |

“रिया थी जो मेरे प्यार रिमसा तक मुझे, पहुँचा सकती थी | रिया हम दोनों के बीच की मिडिएटर थी पर वह भी कहीं चली गई है, कुछ पता नहीं उसका ।” अमन ने आहें भरते हुए कहा |

“रिया कौन है ?” मैंने पूछा |

“वह मेरी दोस्त है, जो बिल्कुल रिमसा की तरह दिखती थी |”

“रिमसा के कहने पर ही मैंने रिया से दोस्ती किया था पर मैं प्यार रिमसा से ही करता हूँ|” अमन की आधी बात सुनकर मुझे कंफर्म हो गया था की मेरे पास आई हुई डिलीवरी वाली

डायरी से अमन की अधूरी मुलाकात पूरी हो सकेगी, और वह अपनी रिमसा के बारे में कुछ जान सकेगा |

“रिया और रिमसा, एक जैसी दिखती थीं  क्या तुम पूरे कांफिडेंस के साथ कह सकते हो ?” मैंने पूछा |

“रिमसा के गाल पर काला तिल था, जबकि रिया के गाल पर ऐसा कुछ नहीं था,” उसने कहा |

“तुमने कोई तो गलती की होगी, जिससे वह तुम्हें छोड़ कर चली गई,” मैंने कहा |

“उसकी इजाज़त के बिना मैं कुछ भी ऐसा नहीं किया, जिससे वह नाराज़ हुई हो,” उसने गंभीरता से कहा |

“तुमने बुरे हालात में कभी किसी की सहायता की है ?”  मैंने पूछा |

“सन 2008 में, मैं अपनी बी०ए०एल०एल०बी० की पढ़ाई के लिए गोरखपुर से लखनऊ जाने की ख़ातिर स्टेशन गया हुआ था | उसी वक़्त गोरखपुर स्टेशन के बाहर  एक आदमी अकेले बैठकर रो रहा था | वह आदमी विदेश से कमाकर घर जा रहा था, पर कुछ ठग मिलकर उस आदमी का सारा सामान लूट लिये थे, इसलिए वह बेचारा स्टेशन के बाहर बैठकर रो रहा था | मैं उसे उसके घर छोड़ने गया था। जब मैं वापस स्टेशन लौट रहा था तो अचानक एक खुबसूरत लड़की दिखी पर मुझे लखनऊ के लिए ट्रेन पकड़ना था, इसलिए लड़की के बारे में नहीं सोच सका और तेज़ी से स्टेशन पहुँच गया। लेकिन जब मैं स्टेशन के प्लेटफार्म पर पहुँचा तो ट्रेन जा चुकी थी | फिर मैंने गोरखपुर की रोडवेज के बस से लखनऊ तक अपना सफर पूरा किया |”

“तुमने दया की है, तो लाभ भी जल्दी मिलने वाला है।”  मैंने कहा |

वो मेरे सामने पहली बार मुस्कुराया था।

“जाने से पहले तुम्हारी रिमसा ने कुछ कहा था ?” , मैंने पूछा |

“वह बार-बार सरप्राइज़ देने की बात कहा करती थी, पर मुझे ना उसका सरप्राइज़ मिला और ना ही वो। शायद मुझे वह छोड़कर जाना चाहती थी | इसलिए उसने अपने सरप्राइज़ को मुझ पर ज़ाहिर नहीं किया।” अमन ने कहा |

“तुम्हारी माँ का क्या सपना है ?”  मैंने पूछा ?

वो अपनी ज़गह पर खड़ा हो गया |

“बैठ जाओ ! बैठ जाओ !” मैंने कहा |

©BOOK HOUSE

वो बैठ तो गया पर बेचैन लग रहा था, मेरे अंतिम सवाल पूछने से वह हैरान हो गया था |

उसकी बेचैनी वाकई देखने लायक थी |

मैंने उसे पानी की बोतल दिया |

अमन ने बोतल का पूरा पानी पी लिया |

“क्या, तुम ठीक हो ?” मैंने पूछा |

उसने अपना सर हिला दिया |

“तुम अपनी पूरी कहानी मुझे बता सकोगे ?” मैंने पूछा |

उसने कोई रिस्पांस नहीं दिया |

“क्या, तुम अपने अच्छे दिन के बारे में बता सकोगे ?” मैंने पूछा |

“एक - एक लाइन बता सकता हूँ,” उसने कहा |

“क्या हुआ था ?”

“कहां से शुरू करुँ ?” उसने कहा |

“जहाँ से ‘उसकी यादें तुम्हें दर्द का एहसास दिलाती हो“’ मैंने कहा |

वो मेरे सामने दूसरी बार हँसा और अपनी कहानी सुनाने लगा |

@BOOKHOUSE1

◆ ◆ ◆

@BOOKHOUSE1

# गोरखपुर, #उत्तर प्रदेश #

भाग - *01*

@BOOKHOUSE1

# हमारी अधूरी मुलाकातें

@BOOKHOUSE1

◆ ◆ ◆

बी०ए०एल०एल०बी० कोर्स के पढ़ाई में ग्रेजुऐशन थर्ड ईयर का एग्ज़ाम समाप्त हो चुकी था | हमारे बैच के सारे लड़के खुश थे, क्योंकि हम सब अपने –अपने घर जाने वाले थे समर वेकेशन्स के लिए | मैं भी अपने कॉलेज के हॉस्टल से निकला और चारबाग स्टेशन के सामने पहुँच गया | रात का वक़्त होने के कारण चारबाग स्टेशन के बाहर चारों तरफ तारों की तरह सोलर लाइट चमचमा रही थी | उस पल ऐसा लग रहा था की हम किसी गोल्फ सिटी स्टेशन के बाहर खड़े हैं | आधी रात होने के बावजूद चमचमाती सड़कों पर गाड़ियों का आना-जाना लगा हुआ था | मेरा टिकट पहले से कंफर्म हो चुका था गोरखपुर जाने के लिए | स्टेशन का बाहरी नज़ारा देखते हुए मैं बड़ी लाइन के प्लेटफार्म नंबर चार पर खड़े होकर ट्रेन का इंतजार करने लगा, कुछ देर बाद वैशाली सुपरफास्ट ट्रेन आई | मैं ए०सी० वाले कोच में जाकर अपनी सीट पर बैठ गया | सुबह में जब मेरी आँखे खुली तो मैं गोरखपुर पहुंचने ही वाला था थोड़ी देर बाद मैं ट्रेन से निकलकर प्लेटफार्म नंबर एक पर खड़ा हो गया | उस वक़्त मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था की, मैं दुनिया के सबसे लम्बे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर एक पर खड़ा हूँ | क्योंकि उस वक़्त बहुत कम लोग प्लेटफार्म पर नज़र आ रहे थे | अचानक मेरा नज़र स्टेशन के प्रवेश द्वार पर गई | ढ़ेर सारे यात्रियों का झुण्ड देखकर मेरा सर चकरा गया | फिर उसी भीड़-भाड़ से होते हुए मैं अपने बैग को लेकर लिफ्ट की ओर जाने के लिए आगे बढ़ा, तभी एक सात फुट के बंदे ने मुझे रोका जो काले कलर के कोट पैंट में था |

@BOOKHOUSE1

“यस सर”, मैंने कहा ?

“टिकट प्लीज “,

मैं अपनी जेब से वॉलेट निकालने ही वाला था, कि तभी उसने मेरा नाम पूछा |

“माइसेल्फ, “अमन श्रीनेत” , मैंने कहा |

मेरे पीठ पर उसने अपने हाथ से थपथपाया और मुस्कुराते हुए कहा - “आप जा सकते हैं |“

मैं उस टी०टी० के व्यवहार से ताज़ुक था, क्योंकि वैसा टी०टी० मुझे पहली बार सफर करने में मिला था | मैं भी मुस्कुराता हुआ स्टेशन के बाहर निकला | मेरा नाम लेकर कोई चिल्ला रहा था, जब मैंने पीछे मुड़कर देखा तो पिताजी अपनी पुरानी बाइक के साथ खड़े थे और मेरा नाम पुकार रहे थे | मैं तुरंत ही उनके पास पहुँचा । उन्होंने तपाक से मुझे अपने गले लगा लिया |

“कैसे हो ?“ पिताजी ने कहा |

“ठीक हूँ, पापा जी |“

“सफर के वक़्त बोर तो नहीं हुए ना ? “ पिताजी ने पूछा |

“लखनऊ से गोरखपुर कब पहुँच गया मुझे पता ही नहीं चला |“ मैंने कहा |

पुरानी बाइक पर बैठकर गोरखपुर स्टेशन से शास्त्री चौक होते हुए , राजघाट पुल पार करते हुए एन० एच०-29 होते हुए, हम अपने गाँव की तरफ जा रहे थे, तभी पिताजी ने अपनी बाइक टर्न किया |

@BOOKHOUSE1

“इधर कहाँ?“ मैंने पूछा |

“पेट्रोल तो ले ले बेटा जी |“ पिताजी ने कहा |

“हां हां“, मैंने कहा |

नौसढ़ वाले हिंदुस्तान पेट्रोल पम्प पर बाइक में तेल लेने के लिए हम अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे| अचानक एक नई पल्सर बाइक आई जिस पर एक खूबसूरत लड़की बैठी हुई थी | जिस नई बाइक पर लड़की बैठी थी, उस बाइक को चलाने वाला या तो उस लड़की का पापा या चाचा होगा | ‘बॉयफ्रेंड’ तो किसी एंगल से नहीं लग रहा था | हमारी पुरानी बाइक के बगल में न्यू पल्सर बाइक खड़ी थी | उस लड़की को देखकर ऐसा लगा की, मैंने उसे पहले भी कभी देखा है पर याद नहीं आ रहा था | मेरे पिताजी ने पांच सौ रूपये का नोट पेट्रोल भरने वाले को दिया फिर न्यू पल्सर वाले बन्दे ने भी एक हजार रूपये का

नोट पेट्रोल भरने वाले को दिया | मैं अपनी बाइक से उतरकर बगल में खड़ा था क्यों उस वक्त पेट्रोल टंकी पर काफी भीड़ था | मैं उस लड़की को बार-बार देख रहा था तभी पेट्रोल भरने वाले ने यह गलती कर दिया, कि उसने मेरे पिताजी वाली बाइक में हजार रुपए का तेल, तथा उस नई पल्सर बाइक में पांच सौ रूपये का तेल भर दिया | फिर पल्सर वाले बन्दे तथा पेट्रोल भरने वाले में बहस होने लगी |

बहस होने के दौरान मेरे पिताजी चुप-चाप अपनी बाइक के पास खड़े होकर मुस्कुरा रहे थे | वो लड़की उस वक़्त कुछ दूर जाकर टहलने लगी, शायद उस लड़की को बहस पसंद ना हो | मेरा सारा ध्यान उस लड़की की तरफ लगा हुआ था | मैं यही चाह रहा था की कुछ देर तक बहस और चलती रहे, ताकि मैं उस खूबसूरत लड़की को देखता रहूँ, पर पेट्रोल भरने वाला चतुर निकला, कुछ देर के लिए वह बिल्कुल शांत हो गया | उसे शांत देखकर पल्सर वाला बंदा भी शांत हो गया |

पेट्रोल भरने वाले ने हंसते हुए कहा - आप दोनों आपस में समझ लीजिये | इतना बोलने के साथ ही पेट्रोल भरने वाला बंदा वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गया | पल्सर वाला बंदा मेरे पिताजी की तरफ देख रहा था | मेरे पिताजी वहाँ से कुछ देर के लिए चले गये और कुछ ही पल में अपने साथ एक औज़ार लेकर आये | उस औज़ार से एक स्क्रूगेज निकालकर, अपनी बाइक की डिग्गी खोलकर उन्होंने पल्सर वाले बंदे को दे दिया | पिताजी के पुरानी बाइक में सिर्फ एक डिग्गी ही थी जो बिल्कुल नई थी | जिस का भाव हज़ार रुपए के तकरीबन होगा | बाइक की डिग्गी पाकर पल्सर वाला बंदा खुश था क्योंकि, उसके पांच सौ रूपये के बदले उसे डिग्गी मिल गई थी | कुछ देर तक पल्सर वाले बंदे और पिताजी में बातचीत होती रही |

@BOOKHOUSE1

“आप तो बड़े जुगाड़ी आदमी हैं“, पल्सर वाले ने कहा |

“आप भी बड़े सज्जन हैं“, पिताजी ने कहा |

उस वक़्त मैं उस लड़की को देखने में बिज़ी था | फिर उस पल्सर वाले बंदे ने अपने वॉलेट से एक कार्ड निकालकर मेरे पिताजी को देते हुए कहा – “हमारा दिल्ली में ट्रेवल एजेंसी है” कोई भी सहायता चाहिए हो तो मुझे याद करना, मुझे खुशी होगी |“

उस कार्ड को लेकर पिताजी ने मुझे दे दिया | मैं अपने पिता की बाइक पर बैठ चुका था, तभी उस पल्सर वाले बंदे ने उस लड़की का नाम लेते हुए बुलाया, –“रिमसा” चलो बेटा |

लड़की का नाम तो अब मुझे पता चल चुका था |कुछ दूर तक मेरे पिताजी और पल्सर

वाला बंदा बात करते हुए साथ – साथ बाइक ड्राइव कर रहे थे | दोनों बाइक्स आगे पीछे होते हुए "सेवई बाज़ार" की तरफ चलती रही | वो दोनों लोग आपस में ऐसे बात कर रहे थे, जैसे की उन लोगों में पुरानी मित्रता हो | मैं भी बार-बार अपना सर घूमाकर उस लड़की को देख रहा था। पर वह सिर्फ मुस्कुरा रही थी और शायद कुछ गुन-गुना भी रही थी | कुछ दूर चलने के बाद दोनों गाड़ियाँ दो दिशाओं में चलने लगी | काश ! मुझे लेने कोई और आया होता तो मैं उस लड़की के घर का पता उसी वक्त लगा लिया होता, पर मैं अपने पिताजी से भला कैसे कह सकता था कि मुझे उस लड़की से एक-तरफा प्यार हो गया है। मैं अंतिम वक़्त तक मुड़-मुड़कर उस लड़की को देखने की कोशिश कर रहा था |

"गाड़ी कितना हिला रहे हो ?" पिताजी ने कहा |

"मुझे नींद आ रही है।" मैंने झूठ बोला |

"बस घर पहुंचने ही वाले हैं।" पिताजी ने कहा |

मैं उस लड़की को देखने के लिए एक बार और मुड़ा, पर वह बहुत आगे निकल चुके थे |

"ओह हो !!" पिताजी ने कहा |

"सॉरी प्लीज !" मैंने कहा |

@BOOKHOUSE1

मैं उस लड़की के बारे में सोचने लगा। मैं पहली बार किसी लड़की की चाहत का शिकार हुआ था। वाकई वह लड़की इतनी खूबसूरत थी की, मैं उसकी मासूमियत का दीवाना हो गया था। काश ! मेरी बाइक के साथ उसकी बाइक का सफर कुछ दूर तक और होता, ये सोचते हुए मैं अपने घर कब पहुँच गया, कुछ पता ही नहीं चला |

"गाड़ी से उतरो", पिताजी ने बाइक को हिलाते हुए कहा |

मैंने हकलाते हुए कहा, - " जी.....और बाइक से उतर गया।"

तभी माँ अंदर से चिल्लाते हुए आई, -

"मेरा लाल आ गया, मेरा लाल आ गया", कहते हुए मुझे अपने गले लगा लिया |

"पढ़ाई कैसे चल रही है तेरी ?" माँ ने पूछा |

"ठीक, चल रही है।"

"रिजल्ट कब आएगा ?"

"जुलाई तक आ जाना चाहिए", मैंने कहा |

"नाश्ता करके आराम कर लो", माँ ने कहा |

मुझे भूख लगी हुई थी या नहीं कुछ पता ही नहीं चल रहा था, क्योंकि कैसे भी करके मुझे रिमसा का पता लगाना था | शाम के वक़्त मेरा मित्र परम मेरे घर आया हुआ था | जो बचपन में हम दोनों सिर्फ चड्डी में खेला करते थे |

“कब आए ?” परम ने पूछा ।

“आज ही आया हूँ, और आते वक़्त मैं एक लड़की से एकतरफा प्यार कर बैठा हूँ”, मैंने कहा |

“आते ही रंगबाजी शुरू“, परम ने कहा |

“अपना बताओ”, मैंने पूछा |

“कल ग्राउंड में आना मैचखेलने, तुम्हें कुछ दिखाऊँगा”, परम ने कहा |

“क्या दिखाओगे?” मैंने पूछा |

“आना फिर दिख जायेगा“, कहते हुए परम चला गया |

मैं रात को बिस्तर पर लेटा हुआ था | उस लड़की का मुस्कुराता हुआ चेहरा मुझे बार - बार नज़र आ रहा था। ये सोचते सोचते मैं कब सो गया कुछ पता ही नहीं चला | सुबह जब मैं ग्राउंड पहुँचा तो मैं च शुरु हो चुका था | परम बॉलिंग कर रहा था, जो भी लड़का बैटिंग करने जाता था, वह गेंद को सिर्फ एक ही मकान की छत पर मारने की कोशिश करता, जो ग्राउंड के समीप था । तभी एक लड़के ने तेज़ी से गेंद को ग्राउंड के बगल वाले मकान की छत पर मार दिया । फिर वो लड़का गेंद लेने के लिए उस घर के अंदर चला गया, जिस घर के छत पर लड़के ने गेंद को मारी थी | कुछ देर बाद जब वो लड़का गेंद लेकर लौटा तो उसकी कॉलर कटी हुई थी | उस लड़के की कटी हुई कॉलर को देखकर मेरा हँसी बंद नहीं हो रहा था |

“तुम इतना हँस क्यों रहे हो ?” परम ने पूछा |

“उसकी शर्ट का कॉलर देखो यार”, मैंने कहा |

“एक लड़की रहती है इस पीछे वाले घर में । वो बहुत ही सुंदर है”, परम ने कहा |

“वाकई सुंदर है”, मैंने कहा |

“उसे पाने के लिए ही हम सब अपनी शर्ट का कॉलर कटवाने जाया करते हैं पर अभी तक वो लड़की किसी से सेट नहीं हुई है । गांव के सारे लड़के उसी लड़की के लिए मैच खेलने आते हैं”, परम ने कहा |

“शर्ट का कॉलर क्यों कटा हुआ है ?” उस लड़के का, मैंने पूछा ।

“क्योंकि, उस लड़की तक पहुँचने का और कोई रास्ता नहीं है। खास बात यह है कि हम सब का कॉलर वो लड़की कैंची से खुद काटती है”, परम ने कहा|

“क्या वह सचमुच इतनी सुंदर है ?” मैंने दोबारा पूछा।

“जब तू उसे लड़की को देखेगा, तब पता चल जाएगा”, परम ने कहा|

“क्या नाम है उस लड़की का ?” मैंने पूछा|

उस लड़की का रियल नाम हममे से किसी को नहीं पता है, पर ग्राउंड के सारे लड़के उसे “कॉलर काटने वाली लड़की ”के नाम से जानते है”, परम ने कहा|

“तुम्हें एक बात बतानी थी”, मैंने कहा|

“बताओ कौन सी बात ?” परम ने कहा।

“मैं इसी शर्त पर बता रहा हूँ की तुम्हें मेरी सहायता करनी होगी”, मैंने कहा|

“हाँ, बोलो तो पहले”, परम ने कहा|

“मुझे एक लड़की से एकतरफा प्यार हो गया है, उस लड़की का नाम रिमसा है। जब मैं स्टेशन से पिताजी के साथ घर आ रहा था, उसी वक़्त वो नौसढ वाले पेट्रोल पम्प पर दिखी थी”,|

@BOOKHOUSE1

“वो कहां रहती है“, परम ने कहा|

“यही तो पता लगाना है पर जो बंदा उस लड़की के साथ बाइक ड्राइव कर रहा था, मेरे पास उसका टेंपलेट कार्ड है, जिसमें उसका नंबर है”, मैंने कहा|

टेंपलेट कार्ड वाले नंबर पर परम ने फोन किया पर वो नंबर स्विच ऑफ जा रहा था|

“थोड़ा सा इंतजार कर लो एक दिन तो हुआ है तुम्हें उस लड़की को देखे हुए”, परम ने कहा|

“उस लड़की की दीवानगी मुझ पर सवार हो चुकी है”, मैंने कहा|

“तुम तो उस लड़की का नाम भी जान गये हो और पिछले एक महीने से हम इस कॉलर काटने वाली लड़की के पीछे पड़े हैं, पर अभी तक उसका नाम भी पता नहीं कर पाये हैं”, परम ने कहा|

मैं भी मैचखेलने लगा परम बैटिंग कर रहा था, और वो सारे शॉट ग्राउंड के पीछे कॉलर काटने वाली लड़की के घर की छत पर मारने की कोशिश कर रहा था पर कुछ देर से उसकी कोशिश नाकाम होती जा रही थी, फिर बॉलिंग करने की मेरी बारी आई। मेरी

अगली ही गेंद को परम ने उस लड़की के छत पर तेज़ी से मारा | परम, गेंद लेने के लिए उस कॉलर काटने वाली लड़की के घर की तरफ़ जाने लगा, जिस छत पर उसने गेंद को मारा था। कुछ पल बाद परम लौटा, तो उसके शर्ट के कॉलर कटे हुए थे, पर वो गेंद नहीं लाया था | मैचका एक अनोखा नियम था की जो बल्लेबाज गेंद को उस बगल घर के छत पर मारेगा वो स्वयं ही गेंद लाने जाएगा, अगर गेंद बल्लेबाज को ना मिला, तो बॉलर को गेंद लाने जाना पड़ता था |

परम ने मुझे उस घर की तरफ इशारा किया जिस घर की छत पर उसने गेंद को मारा था | मैं धीरे-धीरे उस घर की तरफ़ जाने लगा। जब मैं घर में दाखिल हुआ तो सामने से किसी के आने की आवाज़ सुनाई दी। मैं उसे देखकर दंग सा रह गया। उस लड़की को देखकर मैं हैरान हो गया। उस लड़की को देखकर मैं ऐसे खड़ा था जैसे की मुझे लकवा मार दिया हो |

“क्या ढूंढ रहे हो ?” उस लड़की ने पूछा।

“जी, कुछ नहीं”, मैं लड़खड़ाता हुआ बोला |

मुझे तो यह अंदाजा भी लगाना मुश्किल लग रहा था, कि जिस लड़की को मैं पिछले 24 घंटे से तलाश कर रहा हूँ वो मेरे इतने करीब हो सकती है | वो धीरे-धीरे मेरी तरफ आ रही थी। मैं हिम्मत जुटाकर उस लड़की का नाम पूछना चाहता था, क्योंकि जो लड़की गेंद लेकर मेरी तरफ़ आ रही थी, उसकी शक्ल बिल्कुल “रिमसा” की तरह दिख रही थी | उस लड़की का नाम पूछने की मैं हिम्मत नहीं जुटा पाया, क्योंकि मेरी ज़ुबान लड़खड़ा रही थी | मैं जहाँ खड़ा था, वहाँ टेबल पर एक कैंची रखी हुई थी | मैंने कैंची उठाई और अपने हाथ से ही अपने कॉलर काट लिया। फिर उस लड़की के घर से बाहर की तरफ़ जाने लगा |

“गेंद तो लेते जाओ”, उस लड़की ने कहा |

मैं अपनी जगह पर मुड़कर खड़ा हो गया | उसने गेंद मेरी तरफ़ फेंक दिया | मैं गेंद लेकर ग्राउंड में आ गया। सारे लड़के मेरा कॉलर देखकर हँस रहे थे, क्योंकि आज तक सबकी पूरी-पूरी कॉलर काटी जाती थी पर पहली बार आधी कॉलर कटी हुई थी, वो भी मेरा। मैं फ़ौरन परम के करीब गया।

“कुछ बात करनी है, किनारे चलो”, मैंने कहा |

“यहीं बोल सकते हो”, परम ने कहा |

“मैं जिस लड़की के बारे में बात कर रहा था, वो यही लड़की है”, मैंने कहा |

“रिमसा !” नाम लेते हुए परम चौकता हुआ बोला |

“हाँ यार, जब वो मेरे सामने गेंद लेकर आ रही थी, तो मुझे भी उस पल लगा की मैं सपना देख रहा हूँ”, मैंने कहा |

“तुमने उस लड़की का नाम पूछा ?” परम ने कहा |

“कोशिश की पर हिम्मत नहीं जुटा पाया”, मैंने कहा |

“फिर तुम कैसे कह सकते हो की, वो लड़की तुम्हारा प्यार “रिमसा” ही है ?” परम ने कहा |

“रिमसा का चेहरा मुझे अच्छे से याद है”, मैंने कहा |

“तुम इतने यकीन के साथ कैसे कह सकते हो? पिछले एक महीने से सारे लड़के उस लड़की को कॉलर काटने वाली लड़की के नाम से जानते हैं क्योंकि किसी को भी उस लड़की का रियल नाम नहीं पता है अभी तक”, परम ने कहा |

“रिमसा का चेहरा मुझे अच्छे से याद है और ये लड़की बिल्कुल वैसी ही दिखती है,” मैंने दोबारा कहा |

“जब उसने तुम्हें देखा, तो कुछ रिस्पांस दिया ही होगा ?” परम ने कहा |

“यही बात तो सस्पेंस वाली है, जब उसने मुझे देखा तो उसके चेहरे को पढ़कर मैंने पता लगा लिया की, या तो उसने मुझे कभी देखा नहीं है या फिर, वो मुझे जानबूझकर इग्नोर कर रही है | जब वो मुझे गेंद देने आ रही थी, उस वक़्त वो बिल्कुल सीरियस दिख रही थी”, मैंने कहा |

@BOOKHOUSE1

“कॉलर काटने वाली लड़की तेरी रिमसा नहीं हो सकती, इससे तो यही पता चलता है”, परम ने कहा |

जिस वक़्त मैं उस लड़की के सामने खड़ा था, उस वक़्त मुझे ऐसा एहसास हो रहा था कि मैं किसी ख़ास फरिश्ते के सामने खड़ा हूँ । वैसे भी मैं रिमसा को अपने दिलो - दिमाग में बैठा चुका था |

उसे पहचानने में मैं भला कैसे चूक सकता था । इतनी उलझन वाली बात को एक वकील बिना सुलझाएं भला कैसे रह सकता है ?

“इस लड़की का नाम जानकर मैं रिमसा तक पहुंच सकता हूँ”, मैंने कहा |

“ट्राई करने में क्या जाता है, तू भी आजा हम लोगों की लाइन में । आखिरकार कॉलर तूने भी कटवा ही लिया है”, परम ने हँसते हुये कहा |

मैच समाप्त हो चुका था । कुछ लड़के ग्राउंड से बाहर जा चुके थे और कुछ जाने वाले थे | मैंने कोशिश किया एक पारी मैच और खेला जाये, ताकि इस बार मैं हिम्मत जुटाकर उस कॉलर काटने वाली लड़की का नाम पूछ सकूँ, जो मेरी शहज़ादी की तरह दिखती है, पर कोई भी लड़का मैच खेलने को तैयार नहीं था । मैं उस लड़की का नाम जानने के लिए बहुत

ही बेताब था, क्योंकि मैं ज़ल्द से ज़ल्द रिमसा का पता लगाना चाहता था।

काश ! मेरे लिए वो भी तड़पती हो। मुझसे रहा नहीं गया। मैंने फ़ौरन गेंद को उठाया और सीधे उस लड़की की छत पर फेंक दिया| मेरी शैतानी हरक़त को देखकर दो - चार लड़के अपना मुँह खोलकर मुझे देखने लगे।

मैं तेज़ी से उस लड़की के घर में दाख़िल हुआ | घर के अंदर कोई दिखाई नहीं दे रहा था। मैं इधर-उधर झाँकने लगा | अचानक वो लड़की मेरे सामने आ गई |

"किसे देख रहे हो ?" उस लड़की ने पूछा |

"किसी को नहीं", मैंने कहा |

वो मेरे पास आ चुकी थी।

"चुपचाप खड़े रहना", उस लड़की ने कहा।

फिर उसने टेबल से कैंची उठाई और मेरी बची हुई आधी कॉलर भी काट दी | फिर टेबल पर गेंद रखकर वो अंदर के तरफ़ जाने लगी |

"एक मिनट प्लीज़", मैंने लड़खड़ाते हुए कहा |

"हाँ बोलो", उसने रूखी आवाज़ में कहा |

@BOOKHOUSE1

"क्या आपका नाम 'रिमसा' है ?"

वो मुझे घूरते हुए अंदर चली गई, दरवाज़ा बंद करके। ऐसा लग रहा था की, मैंने उसे कोई गंदी गाली दी हो। अभी भी मेरा ज़बाब अधूरा था। उस वक़्त मैं बहुत चिड़-चिड़ाया हुआ था | गेंद लेकर मैं ग्राउंड में पहुँचा तो कुछ लड़के हँस रहे थे। आधे से मेरा कॉलर पूरा कट चुका था |

"तुम इतने परेशान क्यों हो ?" परम ने पूछा।

"मैं रिमसा को तहे दिल से प्यार करने लगा हूँ |"

"थोड़ा सब्र तो कर लो मेरे यार", परम ने कहा |

"इस लड़की का नाम पता लगाकर ही रहूँगा, चाहे मेरी कॉलर कटे या कुछ और फटे", मैंने कहा |

"कमिटमेंट कॉलर काटने के बाद भी", परम ने कहा |

ग्राउंड से मैं वापस घर आ चुका था | तभी दौड़ता हुआ परम मेरे घर आया |

“इतना हाँफ क्यों रहे हो, कुत्ते ने दौड़ाया क्या ?” मैंने पूछा।

“तुझे और इतंज़ार करना पड़ेगा उस लड़की का नाम जानने के लिए”, परम ने कहा |

“क्यों वो कहीं जा रही है क्या ?” मैंने पूछा|

“नहीं नहीं, बल्कि जिस ग्राउंड में हम सब मैच खेलते हैं उस ज़गह पर टेंट गिर रहा है |”

“किसी की शादी पड़ी होगी”, मैंने कहा।

“पता चला है की कुछ दिनों तक ग्राउंड में रामलीला का कार्यक्रम होने वाला है”, परम ने कहा |

“कुछ दिनों का मतलब ?”

“चार से पांच दिन तो लग ही जाएंगे”, परम ने कहा |

“इतने दिन मैं इंतज़ार नहीं कर सकता और कोई रास्ता नहीं है क्या, उस लड़की तक पहुँचने का ?” मैंने पूछा।

“उस लड़की के घर के सामने एक चौकीदार रहता है, जो घर के अंदर जाने की अनुमति नहीं देता, सिवाय गेंद लाने के”, परम ने कहा |

“ चौकीदार से सेटिंग नहीं कर सकते क्या ?” मैंने कहा |

“अगर ऐसा होता तो हम सब अपनी कॉलर क्यों कटवाते | तुम्हें इंतज़ार ही करना होगा। आज रामलीला का पहला दिन है तुम शाम को ज़रूर आना”, परम ने कहा |

“मैं नहीं आ सकता |”

“तुम्हारी जैसी मर्ज़ी कहता हुआ”, परम वहाँ से चला गया |

सुबह में जब परम मिला तो मुस्कुरा रहा था |

“मुझे भी बताओ इस मुस्कान के पीछे क्या राज़ छुपा रहे हो ?”

“भाई तुमने एक दिन मिस कर दिया अपने प्रपोज़ल का”,

“कैसा प्रपोज़ल ?” मैंने पूछा|

“वो लड़की रामलीला का दृश्य देखने आई थी, जिसे तुम रिमसा समझ रहे हो | बल्कि ग्राउंड के सारे लड़के उसे कॉलर काटने वाली लड़की के नाम से ही जानते हैं”, परम ने कहा |

@BOOKHOUSE1

“तूने मुझे बताया क्यों नहीं ?” मैंने चिल्लाते हुए कहा|

“तेरा मन नहीं लग रहा था, तो मैं क्या कर सकता हूँ”, परम ने कहा |

“जा तू मेरा दुश्मन है दुश्मन |

पर मैं तेरे साथ तो हूँ”, परम ने कहा |

पूरा दिन इंतज़ार करना पड़ा, क्योंकि रामलीला का कार्यक्रम सिर्फ शाम के वक़्त होता था । दूसरे दिन शाम के वक़्त मैं वहाँ पहुँच चुका था, जिस ग्राउंड में रामलीला का कार्यक्रम हो रहा था । पर उस दिन वो लड़की नहीं आई । उसके ना आने पर मैं परम पर भड़क गया था । परम ने मुझे यक़ीन दिलाया कि वो लड़की पिछले दिन आई थी । जिसके कारण ग्राउंड में मैच खेलने वाले सारे लड़के भी वहाँ मौज़ूद थे । फिर भी मुझे परम की बातों पर यक़ीन नहीं रहा था |

“यक़ीन ना हो तो ग्राउंड में मैच खेलने वाले किसी भी लड़के से तुम पूछ लो”, परम ने कहा |

परम ने मुझे संतावना देते हुए यह कहा कि –

“अगले दिन वो लड़की ज़रूर आएगी ।”

@BOOKHOUSE1

मैं ग्राउंड से चुपचाप वापस घर आ गया था | रात को कुछ अच्छा नहीं लग रहा था । माँ ने मुझे खाना दिया पर मैंने खिड़की से बाहर फ़ेंक दिया था । उस वक़्त मेरी हालत ख़स्ती हो गई थी । अगले दिन में रामलीला वाले कार्यक्रम में थोड़ी देर ही पहुँचा, क्योंकि अगर किसी चीज़ की आस लगाई जाए और वो ना हो तो, उस वक़्त बहुत दुःख होता है, ख़ासतौर से प्यार के मामले में ।

तभी परम ने आवाज़ देते हुए पुरुषों वाली लाइन में बुलाते हुए कहा- “थोडा और ज़ल्दी आना चाहिए था तुम्हें|”,

“क्या करता ज़ल्दी आकर ?” मैंने उसकी साइड वाले कुर्सी पर बैठते हुए कहा |

“पीछे देखो ज़रा महिलाओं वाली लाइन में”, परम ने कहा |

“मैंने अपना सर पीछे किया तो लगा की परम मुझसे मज़ाक कर रहा है । मैंने दोबारा अपना ध्यान महिलाओं वाली लाइन में डाला तो उस वक़्त वो लड़की रामलीला का दृश्य देखने में बिज़ी थी |

“यार.. ! वो आई है”, मैंने मुस्कुराते हुए कहा |

दो बार मिलने के बावजूद मैं उस लड़की से नाम नहीं पूछ पाया था । अब मैं कोई चांस

नहीं लेना चाहता था क्योंकि कॉलर काटने वाली लड़की मुझे 'रिमसा' की छाया लग रही थी। ये मेरे नादान दिल का आवाज़ थी |

"इस लड़की का नाम पता करके ही, मैं सुकून से जी सकूँगा", मैंने कहा |

सात लड़के और मुझे लेकर आठ लड़के इस लड़की का बाल बांका करना तो दूर की बात है, नाम तक नहीं पता लगा सके।

"तो आप इतने कम दिनों में क्या कर पाएंगे ?" परम ने कहा |

"जिनके पास काफी समय रहता है और हौसले में कमी होती है, वो किसी काम को अंज़ाम देने में देरी लगाते हैं, दुर्भाग्य से यह दोनों ही मेरे उल्टा है। तू बस देखते जा", मैंने कहा |

"क्या करने वाले हो ?" परम ने कहा |

"दस का एक नोट दो तब बताऊँगा |"

"ले फिर", परम ने मुझे दस रूपये का नोट देते हुए कहा |

"इश्क़ की बात है, रिस्क लेना ही पड़ेगा", मैंने परम के हाथ से दस का नोट लेते हुए कहा |

दस रूपये का नोट लेकर मैंने एक आठ वर्ष के लड़के को देते हुए, स्टेज़ पर भेज दिया |

@BOOKHOUSE1

"कौन सा ज़ादू खेल रहे हो ?" परम ने पूछा |

"धमाकेदार एनाऊंस्मेंट होने वाला है, बेहतर होगा की तुम अपना ध्यान स्टेज़ पर लगा लो", मैंने कहा |

तभी स्टेज़ से एक श्रोतागण ने ऊँची आवाज़ में बोला –" 'रिमसा मौसी' की तरफ़ से दस रुपए का इनाम, रामलीला कमेटी की तरफ़ से उनका बहुत-बहुत धन्यवाद

" स्टेज़ का एनाऊंस्मेंट सुनकर परम का मुँह खुला का खुला रह गया। फिर मैंने महिलाओ वाली लाइन में देखा तो सारी औरतें खूब हँस रहीं थीं, क्योंकि एनाऊंस्मेंट कुछ मज़ाकिया तरह से ही हुआ था। 'रिमसा' तक तो नॉर्मल था, पर 'रिमसा मौसी' बिल्कुल ही मजाकिया था। कुछ पल के लिए मैं भी हँस पड़ा था | उसी वक़्त मेरा ध्यान उस लड़की पर गया | उसे देखकर यह पता लगाना मुश्किल था, की वो 'रिमसा' है या कॉलर काटने वाली लड़की। क्योंकि वो हँसने के साथ-साथ ताली भी बजा रही थी | उसके बगल में बैठी सारी लड़कियाँ वैसा ही कर रही थी | मुझे यक़ीन ही नहीं हो रहा था की मेरे साथ क्या हो रहा है | बिल्कुल सेम शक्ल वाली दो लड़की मेरे इतने इर्द-गिर्द मिल सकती हैं, मुझे एकिन ही नही हो रहा था। उस पहेली को सुलझाकर मैं ज़ल्द से ज़ल्द अपनी शहज़ादी का पता लगाना चाहता था | उस लड़की की हक़ीकत जानने के लिए मैं आख़िरी तक कोशिश करना चाहता था |

“तुझे भी वही दिख रहा है, जो मुझे दिख रहा है ?” मैंने पूछा |

“कोशिश अच्छी की तुमने, पर इसे नाकाम ही माना जाएगा”, परम ने कहा |

एक बात तो कंफर्म हो गई थी ‘रिमसा’ मुझे गहराई से पहचानते हुए भी जानबूझकर इग्नोर नहीं कर सकती है | फिर भी मैं उस कॉलर काटने वाली लड़की का नाम कंफर्म कर लेना चाहता था, जो ‘रिमसा’ की तरह दिखती थी | “यह कॉलर काटने वाली लड़की तुझे जानती ही नहीं है”, परम ने कहा |

“मेरी आँखे धोखा नहीं खा सकती है पर दिल नही”, मैंने कहा |

“तेरी ‘रिमसा’ और इस कॉलर काटने वाली लड़की का चेहरा सेम हो सकता है, पर कुछ तो ऐसा होगा जो दोनों में अलग सा दिखता होगा”, परम ने कहा |

“ ‘रिमसा’ मुस्कुरा सकती है या फिर मुझे घूर सकती है, जबकि ये कॉलर काटने वाली लड़की सिर्फ सीरियस होने के साथ-साथ अपनी नज़र फेर लेती है”, |

“दस रुपए और दूँ क्या ?” परम ने पूछा |

रामलीला का दृश्य जारी था, वो लड़की रामलीला देखने के साथ –साथ अपनी निग़ाहें इधर-उधर भी मटका रही थी | मैं उसकी तरफ़ देखने में कोई कंजूसी नहीं कर रहा था, लगातार उसकी तरफ़ देखे जा रहा था | उसी बीच कभी-कभी मेरी और उसकी नज़र लड़ जाया करती थी, पर तुरंत ही वो अपनी नज़रे आगे की ओर कर लेती थी | उसके मुँह फेर लेने वाली स्टाइल से मैं कंफ्यूज था, और यही क्लियर कर लेना चाहता था कि सामने वाली लड़की ‘रिमसा’ है या कॉलर काटने वाली लड़की | जो भी था मेरे सामने एक खुले चैलेंज़ जैसा था, फिर इस चैलेंज़ में मेरा उलझना स्वाभाविक था | मेरा जवान दिल ‘रिमसा’ की चाहत का शिकार हो चुका था |

“इस दस रुपए के नोट का कुछ करेगा ?” परम ने कहा |

“इश्क की बात है, रिस्क तो लेना ही पड़ेगा”, कहते हुए परम के हाथ से मैंने दस रूपये का नोट ले लिया |

पुरुषों और स्त्रियों की लाइन के बीच में थोड़ी सी ज़गह छोड़ी गई थी, लोगों के आने जाने के लिए | जिसमें छोटे-छोटे बच्चे आपस में पत्थरबाजी का ख़ेल-ख़ेल रहे थे | मैंने उन बच्चों की तरफ़ परम को इशारा किया, एक बच्चे को बुलाने के लिए |

“यह बच्चा किस काम आएगा, वो भी इतना छोटा ?” परम ने एक बच्चे को बुलाते हुए कहा |

उस बच्चे को दस रूपये का नोट देते हुए मैंने सामने वाली लड़की की तरफ़ इशारा कर दिया |

बच्चा दस का नोट पाकर बच्चा ख़ुश था। फिर मैंने अपनी ज़ेब से एक कागज़ निकाला और उस लड़की तक पहुँचाने को कह दिया। प्यारा बालक हँसते हुए लव लैटर उस लड़की को दे दिया। आख़िर बच्चे ने अपनी वाली हरक़त कर ही दी, जिस वक़्त बच्चा खेल रहा था, उस वक़्त उसके हाथ में पत्थर के दो तीन टुकड़े भी थे, जो उस बच्चे ने उस लड़की को लव लेटर देने के साथ-साथ अपने हाथ में लिया हुआ पत्थर भी उस लड़की को दे दिया |

"उस कागज़ में क्या लिखा है?" परम ने पूछा |

"तुम्हें दोस्ती करनी ही होगी", मैंने कहा |

जब मैंने उस लड़की की तरफ़ देखा तो, वो मुझे सिर्फ घूर रही थी। उसके व्यवहार में आये परिवर्तन से वो लड़की बिल्कुल 'रिमसा' जैसी लग रही थी | उस वक़्त वो मुझे इतना घूर रही थी कि मुझे अपनी नज़र उसकी तरफ़ से हटाना पड़ रहा था |

"वो इतना घूर क्यों रही है तुम्हे ?" परम ने पूछा |

"पता नहीं यार, लगता है काम बिगड़ गया |"

"अच्छा है, काम बिगड़ने के बाद ही बना करता है" परम ने कहा |

रामलीला का कार्यक्रम समाप्त हो चुका था सारे लोग अपने-अपने घर जा चुके थे | मैं और परम कुछ वक़्त के लिए उस ग्राउंड का मुआयना कर रहे थे, जहाँ वो लड़की बैठी थी, वहाँ दो-तीन पत्थर के टुकड़े बिखरे पड़े थे | "अरे! ये क्या है ?" परम ने कहा |

"छोटे बच्चे ने काम बिगाड़ दिया है, लेटर देने के साथ-साथ उसने पत्थर भी उस लड़की को दे दिया", मैंने कहा |

"इसीलिये वो तुम्हे इतना घूर रही थी", परम ने कहा |

"उसका घूरना मुझे अच्छा लग रहा था, क्योंकि नज़र फेर लेने से तो अच्छा ही था", मैंने कहा |

"अगले दिन कुछ अद्भुत होने वाला है", परम ने कहा |

ग्राउंड खाली था सिवाय मेरे और परम के।

"हमें भी घर चलना चाहिए", परम ने कहा |

"मुझे कल का बेसब्री से इंतज़ार रहेगा", मैंने कहा |

अगले दिन चन्द्रमा की लाली डूबने से पहले ही मैं ग्राउंड में पहुँच चुका था |

"आज बहुत ज़ल्दी आ गए, रामलीला देखने में तुम भी माहिर हो गए हो", परम ने कहा |

“आज किसी का इंतज़ार करना था”, मैंने मुस्कुराते हुए कहा |

“अभी बातचीत भी हुई नहीं, और इंतज़ार करना भी शुरू हो गया”, परम ने कहा |

“जब दिल से सिगनल मिल जाए तो उसे किसी का बाप भी नहीं रोक सकता है”, मैंने कहा |

रामलीला का दृश्य शुरु हो चुका था पर अभी तक उस लड़की का आगमन नहीं हुआ था। मेरी भटकती निग़ाहें उस लड़की को बेगानों की तरह ढूँढ रही थी |

मैं अपनी जगह से खड़ा होकर महिलाओं की लाइन में उस लड़की को देखने की कोशिश कर रहा था। उस वक़्त मेरी आँखों की पलकें कब झपकती थी, मुझे कुछ एहसास ही नहीं हो पा रहा था |

“कुर्सी पर बैठ जाओ !” परम ने कहा |

“मुझे तंग मत करो |”

“जो चीज़ फ़र्श पर खड़े होकर हासिल की जा सकती है, वो खड़े होकर हासिल नहीं की जा सकती है”, परम ने कहा |

मैं कुर्सी पर बैठ गया क्योंकि पीछे से कुछ लोगों को सामने हो रही रामलीला का दृश्य दिखाई नहीं दे रहा था, और वो पीछे से आवाज़ लगा रहे थे, मुझे बैठने के लिए | अचानक मुझे करंट का झटका लगने जैसा महसूस हुआ, क्योंकि उस दिन वो लड़की महिलाओं वाली लाइन में सबसे किनारे एक कुर्सी पर बैठी हुई थी | मेरे सामने से महज़ दस कदम दुरी पर | मेरे और उस लड़की के बीच कुछ खाली जगह था , जिसे रास्ता बनाया गया था लोगों के आने जाने के लिए। वहाँ से बांस के एक छोर पर मैं और परम तथा दूसरे छोर पर वो लड़की बैठी हुई थी | मेरी निग़ाहें उस लड़की पर टिकी हुई थी |

“कुछ करें, या ऐसे ही बैठे रहें हैं ?” परम ने कहा|

“हम दोनों के बीच की दूरियां बहुत कम है, देख तो लेने दो मुझे अपनी शहज़ादी को”, मैंने कहा |

मैं उस लड़की की तरफ़ देख रहा था और अपनी तरफ़ पलटने का इंतज़ार कर रहा था, क्योंकि उसका ध्यान सामने रामलीला का दृश्य देखने मे लगा हुआ था | अचानक हम दोनों की नज़रे टकरा गई, पर तुरंत ही उसने अपना सिर सामने घुमा लिया। फिर एक बालक से वो लड़की ना जाने क्या बातें कर रही थी, मुस्कुराते हुए | सिर्फ मेरे लिए ही उसका व्यवहार मिर्ची जैसा था, बाकी सब से वो हँस कर बातें किया करती थी | दस रुपए का नोट देते हुए परम ने मुझे उस लड़की की तरफ़ इशारा किया |

“इश्क की बात है, रिस्क लेना ही पड़ेगा”, कहते हुये मैं परम के हाथ से दस रुपए का नोट

लेने ही वाला था, तभी वो मोटू बालक मेरे पास आया, जिससे कुछ वक़्त पहले वो कॉलर काटने लड़की हँस - हँस के बातें कर रही थी। बच्चा मेरे सामने खड़ा होकर मुस्कुरा रहा था, और अपने दोनों हाथ को पीछे छुपाया हुआ था |

"क्यों हँस रहे हो मोटू और अपने हाथ पीछे क्यों छुपाए हुए हो ?" मैंने पूछा |

"अपना दोनों हाथ सामने करो, तब मैं अपने हाथ आगे करूँगा", उस बच्चे ने कहा |

"आप कोई जादू दिखाने वाले हो क्या ?" परम ने कहा |

"ज़रूर, पर उस जादू को देखने के लिए आपको अपने हाथ आगे करने ही होंगे", उस बालक ने कहा |

जब मैंने अपना दोनों हाथ आगे किया, तो बच्चा अपना हाथ आगे करते हुए मेरे हाथों पर पत्थर के टुकड़े रख दिया। मैं आश्चर्यचकित होकर उस बालक को देखने लगा। फिर उस बच्चे ने अपने हाथों से मेरा सर उस लड़की की तरफ़ घुमाते हुए इशारा कर दिया | मैं बिना पलकें गिराए उस लड़की को देखने लगा। कुछ पल के बाद हम दोनों की नज़र लड़ी, उस वक़्त वो लड़की थोड़ा मुस्कुराते हुए नज़र आई |

"कितनी खतरनाक लड़की है", परम ने कहा |

@BOOKHOUSE1

वो नज़र चुराने के बदले हल्की मुस्कुराहट का सिगनल दे चुकी थी, मेरे दोनों हाथों में पत्थर के टुकड़े थे | मैंने तपाक से परम के हाथ से दस रुपए का नोट लेकर उस बालक को दे दिया। हँसता हुआ बालक वहाँ से चला गया |

"मेरा दस रुपए  का नोट उस बालक को क्यों दिये ?" परम ने कहा |

"उस लड़की की तरफ़ देखो, क्या वो हँसती हुई तुझे भी दिख रही है ?"

"चाहे कुछ भी हो भाभी मुझे यही चाहिए", परम ने कहा |

"इस पत्थर का क्या करें ?"

"प्यार की निशानी है रख लो", परम ने कहा |

कार्यक्रम समाप्त हो चुका था, ग्राउंड खाली हो गया था। सारे लोग अपने - अपने घर जा चुके थे, ग्राउंड से टेंट भी उठना शुरू हो गया था। मैं उस पत्थर को हाथ में लेकर खड़ा था, तभी परम दूसरी तरफ़ देखने लगा।

मैंने पत्थर को धीरे से अपने ज़ेब में रख लिया |

"चले !" परम ने कहा |

“हाँ“, ।

“तेरे हाथ के पत्थर कहाँ गए ?”

“फेंक दिया, मैंने कहा | परम मुस्कुराता हुआ मेरे पास आया और मेरी ज़ेब की तरफ़ लपका |

“छोड़ ना यार, जानते हो तो मेरे प्यार का मज़ाक क्यों उड़ा रहे हो ? तेरी भाभी की पहली निशानी है यार | ”,

“वो कॉलर काटने वाली लड़की इतनी आसानी से कैसे मान गई ? मुझे यकीन नहीं हो रहा है,” परम ने कहा |

“कल तक तुम्हारी शंका समाप्त हो जाएगी, जब मैं उस लड़की का नाम पता कर लूँगा”, मैंने कहा |

“अगर वह लड़की ‘रिमसा’ ना हुई तो ?”

“प्यार करने वाले दिल से एहसास करते हैं और परछाई से पता लगा लेते हैं । यह बात तुम्हारी समझ से परे है, लिहाज़ा तुम सही वक़्त का इंतज़ार कर लो”, |

@BOOKHOUSE1

“अगर वो ना हुई तो ?”

“सही जवाब पाने के लिए इंतज़ार करो ।”

हम दोनों उस रात ग्राउंड से वापस घर जा चुके थे |

परम की बातों ने मुझे उलझन में डाल रखा था । अगर वो लड़की सचमुच ‘रिमसा’ ना हुई तो, मैं खुद को संभाल नहीं पाऊँगा | ‘रिमसा’ और ‘कॉलर काटने वाली’ हमशक्ल लड़कियों की पहेली सुलझाते - सुलझाते, ‘रिमसा’ मेरे दिमाग पर हावी हो चुकी थी । रामलीला कार्यक्रम के दौरान उस लड़की के मुस्कुरा देने से यह कंफर्म हो गया था कि वो लड़की अगली बार मिलते ही मुझे अपना नाम बता देगी और शायद मैं अपनी शहज़ादी को पा भी जाऊँगा । मैं रात को बिस्तर पर लेटे हुए अगले पल की कल्पना करते हुए सो गया । सुबह सूरज की लाली उगने से पहले मैं मैच वाले ग्राउंड पर पहुँच चुका था । उस वक़्त ग्राउंड पर कोई भी लड़का आया नहीं था । कुछ लड़कों को तो यह भी नहीं पता था की ग्राउंड खाली हो चुका है क्योंकि पिछली रात को ही रामलीला का कार्यक्रम समाप्त हुआ था । मैं ग्राउंड में अकेला बैठकर उस लड़की के घर की तरफ़ निहार रहा था । तभी ग्राउंड में दस्तक सी हुई | जब मैंने पीछे मुड़कर देखा तो परम के साथ तीन लड़के मेरे करीब आ चुके थे |

“अरे ! तुम कब आए ?” परम ने हल्की मुस्कान के साथ पूछा |

“मैं तो यहीं सोया था”, मैंने कहा ।

मेरे अलावा सारे खिलाड़ी मेरी बातों पर हँसने लगे । ग्राउंड में मुझे छोड़कर चार खिलाड़ी ही आए थे । मैच के ग्राउंड में मैं किसी और मकसद के लिए गया हुआ था । खिलाड़ियों की कमी के कारण टीम नहीं बाँटी गई | सिंगल-सिंगल ही बैटिंग करने का प्लान किया गया । पाँच लोगों में से सबसे पहले बल्लेबाजी कौन करेगा, इससे निजात पाने के लिए मैंने बैट लिया, और फिर चार खिलाड़ियों को ग्राउंड में ही कुछ दूर भेज दिया । फिर मैंने ज़मीन पर नक्शा तैयार किया जिससे पुराने मॉडल में बैटिंग करने के लिए सीरीज़ बनाई जाती थी । एक से पाँच तक मैंने ज़मीन पर लिख दिया, फिर मैंने एक से पाँच तक की काउंटिंग को अपने बैट से छुपा लिया और ज़मीन पर लिखे हुए एक से पाँच तक की काउंटिंग के सामने मैंने एक-एक करके सीधी लाइन खींच दिया |

”आ जाओ ! ज़ल्दी”, मैंने चिल्लाते हुए आवाज़ दिया । अपनी बैटिंग नंबर सिलेक्ट करने के लिए मेरे अलावा चारों खिलाड़ियों ने एक-एक लाइन को चुनाव कर लिया । जब मैंने बैट उठाया तो सबको अपने द्वारा चुनी गई लाइन से अपनी-अपनी बैटिंग करने का नंबर पता चल गया था | परम की बैटिंग दूसरे नंबर पर था, सोनू का बैटिंग नंबर पाँचवा था, दुर्गेश का बैटिंग नंबर तीसरा था, और विशाल का बैटिंग चौथे नंबर पर था । एक लाइन बची हुई थी जिसके सामने एक लिखा हुआ था | फाइनली मेरा बैटिंग नंबर एक था | मैं क्रीज़ पर बैटिंग करने के लिए खड़ा था | सामने परम मुझे बॉलिंग कराने को तैयार था, तभी अचानक दो चीज़ो के टकराने की आवाज़ आई | ग्राउंड के सामने वाली रोड की तरफ़ से कुछ लोगों के चीखने - चिल्लाने की आवाज़ आने लगी । बहुत सारे लोग उस तरफ़ दौड़ते हुए जा रहे थे, जहाँ से आवाज़ आई थी | मैच वाले ग्राउंड में से भी तीन लड़के जा चुके थे |

“हमें भी चलना चाहिए देखने के लिए”, परम ने कहा |

“हम नहीं , सिर्फ तुम जा सकते हो”, मैंने कहा |

मेरी लाचारी को परम के अलावा और कोई नहीं समझ सकता था । उसके हाथ में पहले से ही गेंद मौज़ूद थी । उसने मेरे तरफ़ मुस्कुराते हुए देखा फिर गेंद को तेज़ी से कॉलर काटने वाली लड़की की छत पर फेंक दिया ।

“जल्दी आना तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा”, बोलते हुए ग्राउंड से परम भी दौड़ता हुआ चला गया, जिधर  से आवाज़ आई थी |

मैं तेज़ी से कॉलर काटने वाली लड़की के घर में दाखिल हुआ । जब वो लड़की मेरे सामने आई तो पहले की तरह वो बिल्कुल सीरियस लग रही थी । मैं अंदर पूरा बैकअप बना चुका था उस लड़की का नाम पूछने के लिए |

वहाँ तुम्हारी गेंद रखी है, उस लड़की ने गेंद की तरफ़ इशारा किया, जो खिड़की पर रखी हुई थी |

“धन्यवाद !” मैंने हल्की मुस्कान के साथ कहा |

“पर क्यों ?” उस लड़की ने बेरुख़ी सी आवाज़ में कहा |

“आपने मुझे गेंद दे दिया, वो भी बिना मेरा कॉलर काटे हुए”, मैंने कहा |

“हाँ, आज मैं थोड़ी जल्दी में हूँ”, उस लड़की ने कहा |

“आपका नाम प्लीज़ !” मैंने कहा |

“हाँ बताओ, अपना नाम”, उस लड़की ने कहा |

मैं कंफ्यूज़ हो गया, क्योंकि मैंने उसका नाम पूछा था, पर उसने मेरे ही सवाल को मुझसे पूछ लिया | लड़कियाँ कितनी चालू चीज़ हैं, इसका अंदाज़ा लगाना बेहद ही मुश्किल है। आपने भी अगर दिल्लगी की होगी तो आपको भी इस चालू चीज़ का एहसास ज़रूर हुआ होगा |

“क्या हुआ बोलो ?” उसने कहा |

“जी मेरा नाम ‘अमन श्रीनेत’ है |”

“तुम्हारा नाम तो काफी छोटा है, पर बहुत प्यारा है”, उसने हल्की मुस्कान के साथ कहा |

@BOOKHOUSE1

“आपका नाम ?” मैंने दोबारा पूछा ।

“वो लड़की मुस्कुराते हुए ‘बाय’ बोली और जाने लगी |

“आपका नाम.....”, मैं आधा बोलकर चुप हो गया |

वो रुकी और बिना मुड़े धीरे से बोली-

“अगली बार मिलेंगे तो बता दूंगी ।”

फिर उसने ‘बाय’ बोलते हुए अंदर का दरवाज़ा बंद कर लिया । लड़कियों की यह सबसे बुरी आदत होती है की, उसे चाहे कितना भी प्यार करने वाला लड़का मिल जाए पर वो पल भर में ही उसका मज़ाक उड़ा देती हैं । और लड़के थोड़ा भी उनका मज़ाक उड़ा दें फिर तो उस लड़के को अपनी महारानी को मनाने के लिए या खुश करने के लिए शॉपिंग, रेस्टोरेंट और ना जाने कितनी बीयर बार का बिल पेमेंट करना पड़ता है । तब जाकर वो लड़की थोड़ा बहुत आप पर मेहरबान होगी । मैं तुरंत ही वहाँ से दौड़ता हुआ परम के पास पहुँचा, जहाँ वो मेरा इंतज़ार कर रहा था |

“इतनी देर क्यों कर दिए ? ‘भाभी’ मान गई क्या ?” परम ने पूछा |

“लड़कियों के हज़ार प्लस नखरे होते हैं, अच्छा होगा इनके नखरो के बारे में तुम जानने की

कोशिश ना करो 'समझे !' ", मैंने कहा |

"हॉस्पिटल चलें ", परम ने कहा |

"हाँ, चलो | एक्सीडेंट कैसे हुआ ?"

"एक ट्रॉली वाले ने एक बाइक वाले को ठोक दिया है, बाइक वाले के शरीर से ब्लड कुछ ज्यादा ही गिर चुका है", परम ने कहा |

हम दोनों ही बाइक पर बात करते हुए हॉस्पिटल पहुँच चुके थे। वहाँ ग्राउंड के सारे लड़के पहले से ही उपस्थित थे । तभी पता चला की उस आदमी के शरीर से सारा खून गिर चुका है और उसे बचाने के लिए ब्लड चाहिए ही चाहिए । हर कोई ब्लड डोनेट करने के लिए तैयार नहीं था। जो ब्लड डोनेट करने के लिए तैयार थे उनका ब्लड ग्रुप उस घायल आदमी से मैच नहीं कर रहा था । जब मैं उस आदमी के केबिन में गया तो वो ऐसा व्याकुल और अधीर सा लग रहा था, जैसे कि उसके शरीर में जान ही ना हो, वो चुपचाप बेड पर लेटा हुआ था और कुछ भुन-भुना रहा था । उस घायल आदमी की हालत पर मुझे तरस आ गया । फिर मैं तुरंत ही डॉक्टर के केबिन में गया, अपना ब्लड टेस्ट कराने के लिए । मेरे शरीर से थोड़ा सा ब्लड निकालकर मुझे 'डॉक्टर' ने बाहर भेज दिया, ताकि उस घायल आदमी के ब्लड ग्रुप से मेरा ब्लड ग्रुप मैच किया जा सकें ।

@BOOKHOUSE1

"बधाई हो ! आपका ब्लड ग्रुप मैच कर गया", एक लेडी नर्स ने अवैध मुस्कान के साथ कहा |

मैं ज्यों ही थोड़ा आगे बढ़ा तभी परम ने मेरा हाथ पकड़ लिया |

"तुझे अनजान लोगों से क्या लेना देना है ? इससे कोई फायदा नहीं होने वाला", परम ने कहा |

"जिंदगी में अपनों से ज्यादा पराये "हमसफ़र" साबित होते हैं | एक दिन लोग मेरे इसी व्यवहार के कायल हो जाएँगे। फिर तुम्हें भी मुझ पर गर्व होगा दोस्त कहते हुए |

मैंने तत्काल घायल आदमी के केबिन में प्रवेश किया | "क्या आप तैयार हैं ?" एक लेडी नर्स ने पूछा |

"जी"

फिर उस घायल आदमी के बगल वाले बेड पर मुझे लेटा दिया गया । मैं उस वक़्त अपनी आँखें बंद कर रखा था । मेरे शरीर से ब्लड निकाला जा चुका था । जब मेरी आँखें खुली तो उस घायल आदमी के शरीर में पतले पाइप द्वारा ब्लड की बूंदे प्रवाहित हो रही थीं । पहले की भाँति अब वो घायल आदमी ठीक दिख रहा था । अचानक एक औरत मेरे माथे को सहलाने लगी । मैं समझ गया की यह औरत उस नौजवान की माँ होगी क्योंकि बेटे का

रिश्ता सिर्फ माँ ही अच्छे से निभा सकती है | अपनी माँ का प्यार हर किसी को नसीब होता है, पर किस्मत वालों को ही किसी दूसरे की माँ का प्यार मिल पाता है |

“धन्यवाद बेटे ! तुमने मेरे बेटे को बचाया है “, उस औरत ने मेरे माथे को प्यार से सहलाते हुए कहा |

“धन्यवाद क्यों ? मैं भी तो आपका बेटा ही हूँ”, मैंने कहा |

वो औरत मेरी बात को सुनकर मुस्कुरा रही थी |

“क्या नाम है आपका ?” उस औरत ने ममता भरे प्यार से पूछा |

“अमन श्रीनेत”, मैंने कहा |

“अच्छा है |”

“आपके दूसरे बेटे का क्या नाम है ?” मैंने उन्हें घायल लड़के के तरफ़ इशारा करते हुए पूछा |

“राणा”, उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा |

जब मैं बेड से उठा तो पहले के लिहाज़ा मेरा शरीर हल्का सा लग रहा था। हॉस्पिटल से मुझे परम बाइक पर बैठा कर घर ले जा रहा था। मैं शांति से बाइक के पीछे बैठा हुआ था, परम उस वक़्त नवसिखिया की तरह बाइक चला रहा था |

“बाइक तेज़ी से चलाओ”, मैंने कहा |

“ठीक है, इतनी हिम्मत उस कॉलर काटने वाली लड़की के सामने तो तुम नहीं दिखा पाते हो”, परम ने कहा |

“जवान लड़की के सामने मेरी फटती है”, मैंने कहा |

जोर-जोर से परम हँस रहा था। मेरा घर आ चुका था मुझे और मेरे पुराने बाइक को परम छोड़कर अपने घर चला गया। अगली सुबह मैं मैच खेलने ग्राउंड में नहीं गया था, क्योंकि ब्लड डोनेट करने के बाद मैं अपने आप को कम फुर्तीला महसूस कर रहा था और वैसे भी मैं मैच खेलने के लिए कम उस लड़की का नाम पता लगाने के मकसद से ही मैं ग्राउंड में जाया करता था। पर मेरे लिए वो लड़की उलझन बनी हुई थी  पहचानने में, कि वो लड़की ‘रिमसा’ है या ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की। मुझे थोड़ा बहुत यक़ीन हो गया था कि जिस लड़की को मैं अपनी ‘रिमसा’ समझता हूँ, वो लड़की शायद ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की ही हो सकती है। शाम के वक़्त परम मेरे घर आया हुआ था |

“तबीयत कैसी है तुम्हारी ?” परम ने पूछा |

“मैं तो बिल्कुल चंगा हूँ।”

“तो फिर ग्राउंड में क्यों नहीं आए मैच खेलने ?”

“यार मूड ठीक नहीं था।”

“रिमसा का बुख़ार चढ़ गया है तुम पर।”

“तुम कह सकते हो इज़ाज़त है”, मैंने कहा।

“आज ग्राउंड में मज़ा आ गया”, परम ने कहा।

“मुझे भी बताओ”,।

“सुनो, वो लड़की आज के दिन छत पर आई थी। खास बात यह है की जिस वक़्त वो अपनी छत पर खड़ी होकर मैच देख रही थी, उस वक़्त सारे लड़के अपना अच्छा परफॉर्मेंस कर रहे थे। कोई भी लड़का मिस फीलिंडिंग नहीं कर रहा था, ना कोई बॉलिंग लापरवाही से कर रहा था। सारे खिलाड़ी नियम से खेल रहे थे। उस लड़की के छत पर आ जाने से मैच के सारे नियम अपने आप बदल गए थे। उस लड़की को इंप्रेस करने के लिए सब लड़के अपना - अपना अच्छा प्रदर्शन कर रहे थे”, परम ने कहा।

“छोड़ो यार !, ‘रिमसा’ का पता करना है, उस ‘कॉलर काटने‘ वाली लड़की का नहीं। समझ में नहीं आ रहा है कि मैं उसका इंतज़ार करूँ या उसे भूल जाऊँ”,।

@BOOKHOUSE1

उसी वक़्त वहाँ माँ आ गई। माँ के आते ही हम दोनों पढ़ाई - लिखाई की बातें करने लगे।

“यह नाना जी के दुकान पर देकर आओ”, माँ ने मुझे एक झोला देते हुए कहा।

“मैच खेलने नहीं चलेगा क्या ?” परम ने पूछा।

“तुम मार्केट चलना चाहोगे ?”

“मुझे नहीं जाना है, पर थोड़ा जल्दी लौटना मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगा “, परम ने कहा।

झोले को लेकर मैं नाना जी की दुकान पर पहुँच चुका था। मेरे मौज़ूदगी में नाना जी दुकान मुझ पर छोड़कर कहीं चले गए, कुछ वक़्त के लिए। मैं आराम से कुर्सी पर बैठकर रॉउंडिंग में घुमा रहा था, तभी दुकान पर एक नौजवान आदमी आया। उसके साथ में एक औरत भी थी। उन दोनों लोगों को देखकर मुझे ऐसा लगा की हम दोनों के बीच मुलाकात कभी हुई है, पर मुझे याद नहीं आ रहा था।

“जी क्या चाहिए ?” मैंने पूछा।

बैग से वेडिंग कार्ड निकालते हुए नौजवान ने मेरे हाथ में रख दिया।

“पहचाना नहीं आपको “, मैंने कहा |

“इतनी जल्दी भूल गए,”, उस नौजवान ने कहा |

“आपने मेरे लड़के की जान बचाई थी ‘अवंतिका हॉस्पिटल’ में, अपना ब्लड डोनेट करके”, रूखी आवाज़ में माँ सामान महिला ने कहा |

“हाँ – हाँ ! याद आया, आप प्यार से उस वक़्त मेरा माथा सहला रहीं थी”, मैंने कहा |

मेरी बात सुनकर सामने खड़ा नौजवान तथा औरत, दोनों ही हँस रहे थे |

“किसकी शादी है ?” मैंने पूछा |

शादी की बात पर नौजवान ने थोड़ा मुस्कुरा दिया | मैं एक पल में समझ गया कि दूल्हा शर्मा गया |

“आप शादी में ज़रूर आना”, राणा ने कहा |

“हाँ, बेटा आप हमारे ख़ास मेहमान होंगें, शादी के शुभ समारोह में”, औरत ने कहा |

“मैं ज़रूर आऊँगा अपने बड़े भाई की शादी में”, मैंने कहा |

“थोड़ा जल्दी आना”, उस नौजवान ने जाते हुए कहा |

@BOOKHOUSE1

जब मैं वापस घर पहुँचा, तो परम मेरा इंतज़ार कर रहा था |

“इतनी देरी कर दी मार्केट से आने में”, परम ने कहा |

“काम से गया हुआ था, तेरे जैसे लाइन मारने नहीं समझे । “सिटीयाबाज” कहीं का”, मैंने हँसते हुये ताना मारा |

“आज भी वो लड़की छत पर टहल रही थी”, परम ने कहा |

“लगे रहो ! वो लड़की अब जल्दी ही तुम लोगों में से किसी को मिलने वाली है, आख़िरकार तुम लोगों ने लंबे वक़्त से आस लगा रखी है उस लड़की को पाने के लिए”, मैंने कहा |

मेरी बात सुनकर परम चकरा गया और मुझे अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से देखने लगा |

“तुम ठीक तो हो ?” परम ने भारी आवाज़ में पूछा |

“शाम को रेडी रहना शादी में चलना है”, मैंने कहा |

“किसकी शादी में चलना है ?”

“जिस लड़के का एक्सीडेंट हुआ था ग्राउंड की सामने वाले रोड पर”, मैंने कहा |

“राणा की शादी में क्या ?”

मैंने सिर हिला दिया |

“आज अच्छा मौका है, तुम जाकर उस ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की का नाम पता कर लो, क्योंकि रामलीला वाले दिन उस लड़की ने हल्की मुस्कान के साथ सिगनल दे दिया था। ख़ास बात ये है की आज उस लड़की के घर का चौकीदार भी नही है”, परम ने कहा |

“लड़कियों की मुस्कान उनकी अपनी प्राकृतिक प्रॉपर्टी है। उनकी मुस्कान में ना जाने कितने लोग अपनी कौन-कौन सी चीज़ गिरवी रख चुके होंगे”, मैंने कहा |

“लास्ट समझकर आज ट्राई तो कर लो”, परम ने कहा |

“आज नहीं फिर कभी”, मैंने कहा |

“अच्छा मौका छोड़ रहे हो तुम |”

“छोड़ ना यार, मैं ‘रिमसा’ की तलाश कर रहा हूँ | इस लावारिस हमशक्ल जैसे ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की की थोड़ी ना, और ये लड़की ‘रिमसा’ होती तो, अभी तक मुझे पहचान गई होती है। नौजवान लड़का - लड़की के बीच मुस्कान की क़ीमत क्या लगाई जा सकती है, इसका तर्क-वितर्क करना आसान नहीं है। बेशक उस ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की की शक्ल ‘रिमसा’ जैसी है, पर इस लड़की से मैं लगभग चार बार मिल चुका हूँ, किसी ना किसी बार तो इसका सच्चा चेहरा पर्दे के सामने आ ही गया होता। पर अभी तक ऐसा नहीं हो सका की उसके चेहरे को देखकर यह पढ़ा जा सके कि वो मुझे पहचानती है या जानबूझकर इग्नोर करती है |”

“मतलब तू नहीं जाएगा”, परम ने कहा |

“हम दोनों ज़रूर जाएँगे पर राणा की शादी में। मुझे ऐसा एहसास हो रहा है कि जल्द ही मैं अपने प्यार को पाने वाला हूँ”, मैंने कहा |

“दिन में सपने देखना बंद करो”, परम ने कहा | “सपने रात को देखे जाते हैं और वो भी बिस्तर पर।

ये मेरे दिल की आवाज़ है”, मैंने कहा |

“यह लो एडवांस में दस रुपए का नोट”, परम ने मुझे दस का नोट दिखाते हुए कहा |

परम के हाथ से नोट लेकर मैंने अपनी ज़ेब में रख लिया | राणा की शादी में शाम की लाली डूबने से पहले मैं और परम पहुँच चुके थे। शादी की तैयारी जोर - शोर के साथ चल रही थी। हम दोनों को राणा ने दूर से ही देख लिया था। जल्दी ही राणा सामने उपस्थित हो हम दोनों के खातेदारी में लग गया |

“मेरे शादी में आपका स्वागत है ‘मेरे यमराज’ “, राणा ने अपना सिर झुकाते हुए कहा ।

कुछ वक़्त तक राणा बातें करने लगा । फिर राणा मुझे और परम को अपने घर में ले गया |

“इन्हें पानी पिलाओ”, राणा ने एक लड़की को इशारा करते हुए कहा |

“मैं अभी आया”, बोलते हुए राणा वहाँ से चला गया | अपनी शादी में वह खुद बिज़ी था । मैं और परम कुर्सी पर बैठे हुए थे, बार-बार मुझे परम खोद रहा था |

“परेशान क्यों कर रहे हो ?” मैंने कहा |

“आँगन की तरफ़ देखो ज़रा”, परम ने धीरे से कहा |

जब मैंने आँगन की तरफ़ देखा तो मेरी आँख खुली की खुली रह गई ।

मैं चहकता हुआ बोला -

“अरे.....! ये लड़की कौन है, ‘रिमसा’ या ‘कॉलर काटने’ वाली ?” मैंने पूछा ।

“झटका लगा ना !” परम ने कहा |

“कौन हो सकती है ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की या मेरी ‘रिमसा’ ?” मैंने पूछा |

“‘कॉलर काटने’ वाली तो बिल्कुल नहीं हो सकती है”, परम ने कहा |

“तुम इतने कॉन्फिडेंस से साथ कैसे कह सकते हो ?” मैंने कहा |

“शादी में आने से पहले मैंने ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की को छत पर टहलते हुए देखा था”, परम ने कहा |

“लगता है मेरा दिन का देखा हुआ सपना आज पूरा होने वाला है”, मैंने कहा |

“मेरा दस रुपये का नोट तेरी ज़ेब में पड़ा हुआ है याद है, या भूल गए’ ?” परम ने कहा |

“याद है, ‘इश्क की बात है, रिस्क लेना ही पड़ेगा’ “, मैंने कहा |

मैं कोई तरक़ीब सोचने लगा, जिसके बहाने आँगन में बैठी लड़की तक मैं जा सकूँ और उस लड़की का नाम मैं पता कर सकूँ । मैं और परम आँगन में बैठी लड़की को निहार रहे थे । वो लड़की बेवज़ह मुस्कुरा रही थी । उसकी मुस्कराहट को देखकर मैं भाँप गया कि वो लड़की ‘रिमसा’ ही हो सकती है |

“फँस गई क्योंकि वो बेवज़ह हँस गई”, परम ने कहा |

“अबे.....गढ़े ! लड़कियों को दुनिया नहीं समझ पाई आज तक, फिर तू उसकी मुस्कान से

@BOOKHOUSE1

इतना वाकिफ़ कैसे हो गया ? शांति से बैठे रहो, क्योंकि शादी एक ऐसा समारोह है जिसमें दूल्हा - दुल्हन के अलावा और कई सारे लड़के - लड़कियाँ आपस में समाहित हो ही जाते हैं", मैंने कहा |

एक दूसरी लड़की पानी पिलाने आई हुई थी, उस वक़्त मैं आँगन में बैठी लड़की को देखने में बिज़ी था। फिर अचानक गिलास का पूरा पानी मेरी पैंट पर गिर गया |

"सॉरी–सॉरी !", उस लड़की ने कहा जो मुझे और परम को पानी पिलाने आई हुई थी।

"कोई बात नहीं", मैंने कहा।

पानी मेरे पैंट पर कैसे गिरा था, मुझे उसका अंदाज़ा खुद नहीं था क्योंकि मेरा ध्यान उस वक़्त आँगन में बैठी लड़की पर लगा हुआ था | मैं उसकी मुस्कान को देखने में बिज़ी था, मेरी और उसकी नज़र दो-तीन बार लड़ चुकी थी। हम दोनों के बीच मुस्कान का सिलसिला जारी हो चूका था "

आप रूम में जाकर अपनी पैंट को तावल से सुखा लीजिए", पानी पिलाने वाली लड़की बोली |

"कोई बात नहीं अपने आप ही सूख जाएगा", मैंने कहा |

@BOOKHOUSE1

"प्लीज़ जाइए ना | मैं वहाँ से जाना नहीं चाहता था क्योंकि आँगन में बैठी लड़की से मेरा संपर्क दो नैनों द्वारा जारी था,पर मुझे अंदर रूम में जाना ही पड़ा, पानी पिलाने वाली लड़की के ज़िद करने पर |

रूम में मैं पहुँच चुका था। बेड पर बैठकर तावल से मैं अपने गीले पैंट को सुखा रहा था ताकि गीलन से कुछ निज़ात मिल सके। अचानक आँगन में बैठी लड़की गलियारे से रूम में दाखिल हुई, जिस रूम में मैं बैठा हुआ था |

"मेरा नाम 'रिमसा' है कुछ चाहिए तो याद कर लेना", उस लड़की ने अपना नाम खुद मुझे बता दिया |

'रिमसा' नाम सुनते ही मैं अपने पैर के बल पर तपाक से खड़ा हो गया |

"आप बैठ जाइए!", उस लड़की ने कहा |

'रिमसा' पुकारते हुए मैं धीरे से बेड पर बैठ गया। उस वक़्त मैं अगर अकेला होता तो जोर से चिल्लाया होता अपनी ख़ुशी ज़ाहिर करने के लिए। पर मैं अपने आप पर काबू बनाया हुआ था | मेरे हाथ के सारे रोंगटे खड़े हो गए थे। बेड से थोड़ी दूरी पर वो खड़ी थी |

"मुझे पानी मिल सकता है, प्लीज !", मैंने कहा |

वो रूम के बाहर चली गई। कुछ देर के बाद वो वापस रूम में आई तो अपने साथ पानी की बोतल लाई थी। पानी तो मैं कुछ वक़्त पहले ही पी चुका था | पानी माँगना तो सिर्फ एक बहाना था ताकि मैं किसी बहाने 'रिमसा' से बात कर सकूँ |

"आपके साथ वाला मित्र कहाँ है?" उसने पूछा |

"वो तो बाहर ही है", मैंने कहा |

वो रूम से बाहर चली गई फिर कुछ देर मे परम भी रूम में आ गया |

"साले ! अकेले गुटर-गू कर रहे हो ख़ूबसूरत लड़की के साथ एकांत रूम में, मुझे भी बुला लिये होते", परम ने कहा |

"तमीज़ से प्यारे, तमीज़ से ! वो भाभी लगती है तेरी", मैंने कहा |

"यहाँ पर कौन-सी भाभी?" परम ने कहा |

"अपना कान मेरे पास करो", मैंने कहा |

"तू बोल ना, मैं सुन लूँगा|"

"जो लड़की तुम्हें इस रूम में लाई है वही 'रिमसा' है, उसने अपना नाम मुझे खुद बताया है", मैंने धीरे से कहा |

@BOOKHOUSE1

"सच्ची! ", ऊँची आवाज़ में परम ने चिल्लाते हुए कहा |

"अबे! धीरे बोल, मैच वाला ग्राउंड नहीं है", मैंने कहा |

"चलो! फिर ढूँढ़ते हैं भाभी को", परम ने कहा |

राणा का घर बड़ा था इसलिए मैं और परम अलग - अलग होकर 'रिमसा' को ढूँढ़ने लगे। अचानक 'रिमसा' एक रूम में लड्डू बांधती हुई मिली | मैं उसके पास जाकर बैठ गया और लड्डू बंधवाने लगा |

"अरे! आप ये क्या कर रहे हैं?" रिमसा ने कहा।

"आपकी सहायता कर रहा हूँ", मैंने कहा |

"आप इस शादी के ख़ास मेहमान हैं, अगर किसी ने मेरे साथ आपको काम करते हुए देख लिया, तो मेरी ख़ैर नहीं होगी |"

"कुछ नहीं होगा आपको 'मैं हूँ ना!' ", मैंने कहा |

"मेरा नाम 'अमन श्रीनेत' है |

“पता है”, उसने कहा |

“क्या, आप मुझे जानती हैं?” मैंने पूछा ।

“बहुत गहराई से आपको जानती हूँ”, रिमसा ने कहा |

“गहराई से मतलब?”, हल्की मुस्कान के साथ मैंने कहा |

“आप वही है ना, जो कुछ दिन पहले पेट्रोल टंकी पर मिले थे | मेरे मौसा जी की न्यू पल्सर बाइक के साथ साथ बात करते हुए आपके पिताजी अपनी बाइक चला रहे थे, एन० एच०-29 हाईवे रोड पर, ‘नौसड’ वाले हिंदुस्तान पेट्रोल पम्प वाली बात आप भूल गए क्या?” उसने हल्की मुस्कान के साथ कहा ।

“मुझे बहुत अच्छे से याद है । आपके मौसा जी पाँच सौ रुपए के लिए मेरे पिताजी को प्यार से घूर रहे थे”, मैंने कहा |

वो मुस्कुराते हुए रूम से बाहर गई और चंद सेकेंड में मेरे पिता जी के द्वारा दी गई उनकी बाइक की “डिग्गी” को लाकर मेरे सामने रखते हुए मुस्कुराने लगी |

मैं चाहकर भी अपने आपको रोक ना सका और ख़ुशी के मारे मैं उसके सामने ही चिल्लाने लगा ।

@BOOKHOUSE1

मेरे नादानी को देखकर वो हैरान हो गई थी | मुझे पक्का यक़ीन हो गया था की यही लड़की ‘रिमसा’ है, क्योंकि बाइक वाली पूरी बात तो परम को भी नहीं पता था । मेरे चिल्लाहट को सुनकर मुसाफ़िरों की तरह वहाँ परम भी आ गया |

“रिमसा, ये मेरा मित्र परम”, मैंने अपने दोस्त परम का ‘रिमसा’ से इंट्रो कराया |

“हाय ‘भाभी’!” परम ने तपाक से कह दिया |

मैं तो डर गया था की मेरा घर बसने से पहले ही परम फालतू बात बोलकर मेरा घर उज़ड़वा ना दे । पर ‘रिमसा’ ने परम के भाभी वाले शब्द का कोई विरोध नहीं किया, बल्कि वो अपने मुँह पर हाथ रखकर मुस्कुरा रही थी | लड्डू से भरे परात को लेकर ‘रिमसा’ रूम से बाहर जा चुकी थी |

“ ‘भाभी’, बोलना अभी ज़रूरी था”, मैंने कहा |

“उसने तो कोई विरोध नहीं किया, फिर तू क्यों कर रहा है”, परम ने कहा |

“ठीक है |”

“तुम्हारा यहाँ आना फलित हो गया”, परम ने कहा |

“मैंने कहा था ना कि अगर ‘रिमसा’ ने मुझे देख लिया तो वो मुझे एक बार में ही पहचान लेगी और बिल्कुल ऐसा ही हुआ। एक ही सेकंड में सारा काम इतनी जल्दी हो गया की मैं कुछ समझ भी नहीं पाया”, मैंने कहा |

“ दिन में देखा गया सपना सच हो गया ‘वीरे’ “, परम ने कहा |

‘रिमसा’ को मैं दिल से प्यार करता हूँ, इसलिए मुझे अपने प्यार पर पूरा कॉन्फिडेंस था।”,

“दिल को तसल्ली मिल गई हो तो, चले शादी में नाचने”, परम ने कहा |

“ज़रूर क्यों नहीं!”

हम दोनों रूम से निकलकर बाहर पहुँच चुके थे। सभी लोग नाचने में बिज़ी। थे

डी०जे० के सामने ‘रिमसा’ भी अकेले नाच रही थी |

“मैंने उसे अभी प्रपोज़ भी नहीं किया हैं”, मैंने परम से कहा |

“तेरे सामने ही तो मैंने उसे भाभी बोला था और ‘रिमसा’ ने मेरी बातों को कोई विरोध नहीं किया, अब इससे बड़ी बात क्या हो सकती है”, परम ने कहा |

परम की बात मुझे ठीक लगी पर मैं अंदर से डरा हुआ था, क्योंकि बड़ी मशक्क़त के बाद तो वो मुझे मिली थी |“इससे अच्छा वक़्त तुम्हें नहीं मिलेगा, इसलिए वक़्त ज़ाया मत करो, आगे बढ़ के ‘रिमसा’ को ‘किस’ कर दो,” परम ने कहा |

“पहले प्रपोज़ किया जाता है”, मैंने कहा |

“इतना भटकने के बाद ये लड़की तुम्हें मिली है, अब देर बिल्कुल मत करो”, परम ने कहा |

“डायरेक्ट ‘किस’ अँग्रेज़ करते हैं”, मैंने कहा |

“इसीलिए वो अँग्रेज़ कामयाब और सबसे आगे रहते हैं”, परम ने कहा |

“अँग्रेज़, मुझे नहीं बनना है, तू ही बन”, मैंने कहा |

‘रिमसा से दो कदम पीछे खड़े होकर मैं और परम उसको डांस करते हुये देख रहे थे। अचानक परम ने मुझे जोर से धक्का दे दिया मैं हवा में गिरता हुआ ‘रिमसा’ से टकरा गया |

“सॉरी – सॉरी !”, मुझे बोलना पड़ा। पर डी०जे० का आवाज़ तेज़ था, इसलिए ‘रिमसा’ को कुछ सुनाई नहीं दिया, वो नाचने में मगन थी। जब मैंने ‘रिमसा’ से कुछ दूरी बनाना चाही तो, अचानक वो मेरा हाथ पकड़कर मुझे नचाने लगी। उसके हाथ पकड़ने से मुझमें अलौकिक हिम्मत आ गई | मौक़ा पाते ही मैंने ‘रिमसा के गाल पर ‘किस’ कर दिया, पर वो नाचने में बिज़ी थी उसे यही लगा था की मैं अनजाने में उसके गाल पर लड़ गया हूँ।

शायद मेरे 'किस' करने के तरीके से वो वाकिफ़ नहीं थी। मेरा हौसला थोड़ा और बढ़ गया। मैंने अपने दोनों हाथ उसके गालों पर रखते हुए तपाक से उसके गुलाबी होंठ चूम लिया। उसने अपना चेहरा तुरंत तेज़ी से पीछे खींच लिया। उसके बाद जो हुआ बहुत डरावना था। उस डाँस पार्टी से मेरा हाथ पकड़कर तेज़ी से वो मुझे खींचते हुए घर के अंदर ले जाने लगी मैं तो डर गया कि, 'किस' करने की सज़ा मिलने वाली है। मैं उस वक़्त धीरे-धीरे चल रहा था। मेरा हाथ पकड़कर वो खींचते हुए सीढ़ियों से होते हुए सेकेंड फ्लोर के एक रूम में ले गई। फिर उसने मुझे छोड़कर रूम का दरवाज़ा बंद कर दिया। मैं चुपचाप खड़ा था एक अपराधी की तरह। वो तूफ़ान की तरह मेरी बाहों में आकर समा गई।

"आई लव यू", उसने लंबी सांस लेते हुए कहा।

कुछ वक़्त पहले तक मुझे हत्यारों जैसा लगा रहा था। डर के कारण मैं कुछ बोल नहीं पा रहा था। लेकिन जब वो मेरी बाहों से लिपट गई थी तो मुझे कुछ राहत मिल चुका था।

"तुम कुछ नहीं बोलोगे", उसने कहा।

"लव यू टू" मैंने एका - एक लड़खड़ाते हुए बोला।

ख़ौफ़ वाले मूड को एका - एक रोमाँस मूड में परिवर्तन करना, अपने आप में एक खुले चैलेंज़ की तरह लग रहा था। जिसे मैंने धीरे-धीरे मैंनेज़ कर लिया था। 'रिमसा' मेरी बाहों में लिपटी हुई थी। उस वक़्त मैं अपने आपको एक बहुत बड़ा हुनरमंद इंसान समझ रहा था। "किस्मत" ने मेरी लॉटरी लगा दी थी। बड़े स्टेज़ पर रिस्क लेना वाकई बड़ा जोखिम वाला कार्य होता है। यह मैंने उसकी बाहों में समाकर एहसास किया था। कुछ वक़्त बाद उसने मेरी बाहों से दूर होकर रूम की खिड़की खोल दी और खिड़की के पास खड़ी होकर बाहर आसमान में तारे देखने लगी। नीचे से डी०जे० की आवाज़ आ रही थी, उस वक़्त शादी में सारे लोग बिज़ी थे। रात के 12:00 बज रहे थे, मैं बेड पर बैठा हुआ था।

"वक़्त ने कितना वक़्त लगा दिया हम दोनों को मिलाने में, पर अब मुझे किसी से कोई शिक़ायत नहीं है", रिमसा ने कहा।

मैं उसकी बातों को सुनकर ख़ामोश हो गया था कि वो अपनी फ़रियाद मुझे बता रही है या तारों से बातें कर रही है, क्योंकि उस वक़्त वो आसमान में तारों को निहार रही थी। मुझे उसके रूम में मौज़ूद होने के बाद भी वो आसमान की तरफ़ देखने में बिज़ी थी।

बातों का सिलसिला मैंने शुरू किया –

"पहली मुलाक़ात में ही मैं तुमसे एक तरफ़ा प्यार कर बैठा था। जब तुम्हें पेट्रोल पम्प पर मैं पहली दफ़ा देखा था, पर उस वक़्त मुझे तुम्हारे नाम के अलावा कुछ और पता नहीं चल सका।" मैंने कहा।

मेरी आवाज़ लड़खड़ाते हुए निकल रही थी। वो खिड़की से आकर मेरे पास बेड पर बैठ गई

|

“मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ था, फ़र्क इतना है कि तुमने मुझे पहली बार सन 2011 में देखा है, और मैं तुम्हें सन 2008 में ही देख चुकी थी और तभी से ‘तुम्हारी चाहत’ ने मुझे बेगाना बना दिया था।” उसने कहा |

उसकी बात सुनकर मेरी आँख की बरौनी तन गयी थीं|

“सन 2008 में तुमने मुझे कब देखा था?” मैंने पूछा |

“उस वक़्त तुम किसी की सहायता करने में बिज़ी थे। मैं उसी वक़्त तुम्हारे उस अंदाज़ की शिकार हो चुकी थी। मैं तुम्हें ढूँढ़ना चाही, पर वक़्त ने मुझे बेवक़्त कर दिया था, जो मैं तुम तक पहुँच ना सकी”, उसने कहा |

“लेकिन मैंने तुम्हें उस वक़्त देखा नहीं था”, मैंने कहा |

“देखने की कोशिश करते तब तो देख पाते।”, उसकी आवाज़ गंभीरतापूर्वक निकल रही थी |

उसकी बात सुनकर मैं अपने अंगुलियों से बाल को खींच रहा था, ताकि पिछला पल कुछ याद कर सकूँ। वाकई ‘रिमसा’ को मैंने उससे पहले कभी नहीं देखा था। जहाँ तक मुझे याद था कि जब मैं अपनी पढ़ाई के लिए सन 2008 में लखनऊ जाने से पहले अपनी बाइक से एक भटके हुए आदमी को उसके घर छोड़कर वापस स्टेशन पर जा रहा था, तो एक लड़की का दुपट्टा मेरे चेहरे पर आया था, पर मैं उस दुपट्टे वाली लड़की को ठीक से देख नही पाया था क्योंकि मैं स्टेशन जाने के लिए तेज़ी में था। उसके बाद मेरी नज़र में कोई ऐसी लड़की नहीं आई थी जिस पर मेरा दिल फ़िदा हुआ हो |

“क्या सोच रहे हो?” रिमसा ने पूछा।

“कुछ नहीं।” मैंने कहा |

“पिछली बार एक नौजवान लड़के को किसी ने गोली मार दी थी। उस वक़्त तुम उसे अपनी गोद में लेकर रो रहे थे, जैसे की तुम अनाथ हो गए हो”, रिमसा ने कहा |

“मतलब पिछली बार बग़ावत के वक़्त तुम सचमुच यहाँ उपस्थित थी”, मैंने कहा |

“उपस्थित ज़रूर थी पर मेरी समझ में कुछ नहीं आया था, बग़ावत और ‘किस्मत का पत्थर’ वाला अद्भुत खेल”, उसने कहा |

वो मेरे पैर पर अपना सिर रखकर बिस्तर पर लेट गई |

“पिछली बग़ावत मुझे समझाओ ना”, रिमसा ने कहा |

“मानोगी नहीं”, मैंने कहा |

“उसके बदले में क्या चाहते हो तुम?” उसने कहा |

“तुम अपनी आँखें बंद कर लो” मैंने कहा |

“ठीक है” बोलते हुए उसने अपनी आँखें बंद कर ली |

उसका ख़ूबसूरत चेहरा देखकर मैं उसके प्रति और आकर्षित हो गया था। उस चाँदनी रात में वो अपना सिर मेरे पैर पर रखकर बिस्तर पर लेटी हुई थी | उसको खुलकर देखने की आज़ादी मुझे मिल चुकी थी क्योंकि उस पल उसकी दोनो आँखें बंद थीं। उसके मासूम चेहरे को निहारते हुए, मैं सन 2008 में हुई पिछली बगावत की बात मैं उसे समझाने लगा |

@BOOKHOUSE1

# प्राचीन भारत में होने वाला बगावत

कुछ दशक पहले जब अँग्रेज़ भारत को छोड़कर जाने लगे, उस वक़्त अँग्रेज़ों के पास मुंशी, साहूकार या लगान वसूली का कार्य करने वाले जो भी भारतीय लोग थे, वो लोग अँग्रेज़ों के जाते ही मालामाल हो गए थे। उन फिरंगियों से हम सब भारतीय आज़ाद हो गए थे। मेरे दादाजी भी अँग्रेज़ों के लगान वसूली करने वाले मुंशी थे | उस समय बहुत से लोगों ने मेरे दादा जी से कर्ज़ा लिया हुआ था, जो चुकाने में वे बिल्कुल असमर्थ थे। कर्ज़ चुकाने के लिए सारे लोगों ने अपनी - अपनी ज़मीने मेरे दादा जी को सौंप दिया था। मेरे दादा जी वाक़ई में बहुत बड़े ज़मींदार थे। मेरे दादा जी के पास बहुत से प्लॉट तथा ज़मीने थी | कुछ ज़मीनो को उन्होंने दूर से आये हुए मुसाफिरों को बसने के लिए दे दिया तथा कुछ ज़मीनो को उन्होंने हॉस्पिटल व मस्ज़िद के निर्माण के लिए दे दिया था और गोरखपुर शहर से दस किलोमीटर दूर सेवई गाँव में स्थित एक पुरानी हवेली में सुकून से अपना जीवन व्यतीत करने लगे थे। वो समय ही ऐसा था की लोग सुकून चाहते थे, रूपया हथियाने की कोई भूख नहीं थी। उस समय जिनके पास बावन बीघा ज़मीन थी वो अपने आपको उस क्षेत्र का राजा समझता था और यह बिल्कुल सच था, क्योंकि वहाँ के आसपास के बाशिंदे भी बावन बीघा वाले को राजा ही कहकर पुकारते थे। हालाँकि अँग्रेज़ों के आने के बाद हमारे भारत में राजाओं का राजवाड़ा समाप्त हो चुका था। मेरे दादा जी ने गोरखपुर शहर से दस किलोमीटर दूर एन०एच०-29, रोड के किनारे बसे एक छोटे से गांव "सेवई" में अपना निवास स्थल बना लिये थे। शहर से थोड़ा बाहर होने के बावज़ूद उनके पास हर चीज़ मौज़ूद थी। वो बुढ़ापे के वक़्त, मरने से पहले अपने ख़ास मुंशी से एक नोटरी पर यह लिखवा चुके थे, कि जब उन्हें मृत्यु प्राप्त हो, उसके बाद ही उनकी बावन बीघा से ज्यादा ज़मीनों तथा प्लॉटों को उनके तीन पुत्रों में बाँटा जाए | नोटरी में उन्होंने ये भी ज़िक्र किया था की, जिस तारीख़ को उनकी मृत्यु हो, उस तारीख़ के अलावा अगले दो वर्षों तक उनकी मृत्यु वाली तारीख़ पर उनकी रियासतों की बग़ावत उनके पुत्रों में की जाये। ख़ास बात तो यह था की मेरे दादा जी का मृत्यु 29 फरवरी 2008 में हुआ था। सच में हमारे पूर्वज बहुत ही चालाक है उन्होंने अगले दो वर्षो तक अपने रियासत की बग़ावत के लिए नोटरी में इसलिए लिखवाया था, ताकि मेरे दादा जी को लोगों के बीच में दो साल तक और याद किया जाये। भाग्य ने भी मेरे दादा जी का साथ दिया था | 29 फरवरी, चार साल में एक

बार आता है | अब तो उन्हें और शांति मिल गई होगी, क्योंकि उनके रियासतों की बग़ावत सन् 2008 के अलावा सन् 2012 तथा 2016 तक होने वाला था | सामान्यतः लोग अपने पूर्वजों का घर - बार या ज़मीने बराबर-बराबर हिस्सो में नाप - तोल कर बांट लेते हैं, पर मेरे दादाजी की रियासत को उनके द्वारा नोटरी के अनुसार ही, उनके पुत्रों में बाँटा गया था | 29 फरवरी 2008 को मेरे दादा जी की मृत्यु हुई थी। उनका अंतिम संस्कार भी करना था, इसलिए उस वक़्त कम प्लॉटों का ही बटवारा किया गया था। मेरे दादा जी के तीन पुत्र क्रमशः है, मेरे पिताजी, अपाहिज चाचा, विधायक चाचा जो सबसे छोटे थे, जिन्हें लोग एजेंट के नाम से जानते थे |

बारह छोटे - बड़े प्लॉटों की बग़ावत करना था, जिन्हें तीन लोगों में बांटना था। हर एक हिस्सेदार को चार प्लॉट मिलना तय था, इसलिए बारह पत्थरों पर सबके नाम लिखे गए थे |

चार पत्थरों पर मेरे पिताजी का नाम लिखा गया।

चार पत्थरों पर अपाहिज चाचा का नाम लिखा गया।

चार पत्थरों पर मेरे सबसे छोटे चाचा का नाम 'जसवंत सिंह श्रीनेत' लिखा गया। जिन्हें लोग एजेंट के नाम से जानते थे |

@BOOKHOUSE1

बारह पत्थरों को एक टोकरे में रखा गया था | रास्ते से एक अनजान व्यक्ति जा रहा था, उस अनजान व्यक्ति को बुलाकर बारह पत्थरों को बारह प्लॉटो में रखवा दिया गया। जिस प्लॉट पर जिसके नाम का पत्थर चला जाता था वो प्लॉट उसका हो जाता था। इस पत्थर के खेल को देखने के लिए वहाँ के सारे बाशिंदे इकट्ठे हुए थे | पहले ही बगावत में दलाल ने चाल चल दी थी | जिस अनजान व्यक्ति से प्लॉटो पर पत्थर रखवाया गया था उस व्यक्ति को एजेंट ने पहले से ही रिश्वत दे रखी थी। ताकि सारे बड़े प्लॉट एजेंट को मिल सके और बिल्कुल वैसा ही हुआ। वह अनजान व्यक्ति शहर से आया हुआ था | जो एजेंट ने बुलाया था, रिश्वत वाली बात मेरे भाई को पता चल गया था। जब मेरे भाई ने रिश्वत वाली बात पर आवाज़ उठाई तो एजेंट ने मेरे भईया को गोली मरवाकर ठिकाने लगावा दिया। उस वक़्त मैं बहुत उदास था | बगावत में मेरे पिता जी को जो प्लॉट मिले थे, वो सारे ही प्लॉट अतिरिक्त प्लॉटो से छोटे थे, फिर भी हम सब खुश थे | एजेंट को बढ़ावा देने वाला उसका एक मित्र है, जो सारी परिस्थितियों में उसका साथ देता है, उसका नाम ' चड्ढा' है | 'चड्ढा' के सारे शहर में दारू के ठेके चलते हैं। उसके साथ एक लड़की भी आई थी शायद वह दयालु थी | मेरे भाई के मर जाने के बाद माँ ने मुझे लखनऊ के कॉलेज में दाख़िला दिला दिया ताकि मैं बी० ए० एल० एल० बी० करके वक़ील बन जाऊँ और अगली बगावत जो 2012 या 2016 में होने वाला हैं उसमें एजेंट को चाल चलने का कोई मौक़ा ना मिल सके |

माँ का एकमात्र यही सपना है कि मैं वक़ील बनकर अपने पिताजी को हिस्से को दिला सकूँ, जो अगली बगावत में होना था। अभी बहुत से प्लॉटो की बगावत करना बाकी है। फिर मैं

लखनऊ चला गया अपनी माँ के सपने को संवारने के लिए और जब तीन साल बाद मैं अपना ग्रेजुएशन पूरा करके घर लौट रहा था तो, तुम मुझे गोरखपुर के 'नौसड' वाले पेट्रोल पम्प पर पहली दफ़ा दिखी थी, और मैं तुम्हारी चाहत का शिकार उसी वक़्त हो गया था" मैंने कहा |

◆ ◆ ◆

"अपनी आँखें खोल सकती हो", मैंने 'रिमसा' का सिर हिलाते हुए कहा।

@BOOKHOUSE1

उस वक्त सुबह के 05:00 बज रहे थे।

"चड्ढा की बेटी का नाम 'रूपा' है", 'रिमसा' ने अपनी आँखें मसलते हुए कहा |

"क्या तुम उसे जानती हो?" मैंने कहा |

"ज्यादा नहीं थोड़ा सा। वह लोग सचमुच बहुत अमीर लोगों में से एक हैं", रिमसा ने कहा।

रिमसा मेरे पैरों पर से अपना सिर उठाया और बेड से उतरकर खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गई। सुबह के वक़्त थोड़ी - थोड़ी ठंडी महसूस हो रही थी । वो ठंड के कारण अपने दोनों हाथों को अपने सीने से चिपकाकर खिड़की के बाहर देख रही थी। उसे खिड़की से आकाश को देखने से ऐसा लग रहा था कि, आसमान से उसका कोई पुराना नाता हो। जब वो मेरे पैर पर अपना सिर रखकर बिस्तर पर लेटी थी, उस वक़्त मैं उसे लगातार तीन चार घंटो तक देख चुका था, फिर भी उसे देखे बिना मेरा मन नहीं मान रहा था। सुबह की ठंड के कारण उसके दांत कट-कटा रहे थे। मैं भी उसके पास जाकर खड़ा हो गया।

"तुम्हें एक बात बतानी थी", रिमसा ने कहा |

"हाँ बताओ, भला इससे अच्छा मौक़ा कहाँ मिलने वाला है", मैंने कहा |

“इसके लिए तुम्हें इतंज़ार करना होगा”, उसने बेरुखी आवाज़ में कहा।

“प्लीज़ बताओ ना”, मैंने कहा।

“कितने दुष्ट है ना तुम्हारे चाचा (एजेंट)”, उसने मेरी बात को काटते हुए कहा|

“हाँ, पर कोई भी उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकता है”, मैंने कहा।

“बुराई का अंत निश्चित है, चाहे वो कितना भी पर्दे के पीछे छुपाकर रखी जाये ”, उसने कहा|

“एजेंट का मात्र एक ही सहारा है जिसके बल पर किसी भी क्राइम को एजेंट आसानी से अंज़ाम दे देता है”, मैंने कहा|

“प्रत्येक ब्रांडेड चीज़ों की एक्सपायरी डेट ज़रूर आती है”, उसने हल्की मुस्कान के साथ कहा|

“चड्ढा जी के साथ एक लड़की आई थी पर उसका नाम याद नहीं आ रहा है”, मैंने दोबारा कहा|

“उस लड़की से तुम्हें प्यार हो गया है क्या?” उसने मुझे घूरते हुये कहा।

“प्यार - व्यार के चक्कर में मैं नहीं पड़ता”, मैंने सिर हिलाते हुए कहा|

“ ‘रूपा’ नाम था उस लड़की का”, उसने कहा|

“सच्ची?”

“हाँ!“, उसने हल्की मुस्कान के साथ अपना सिर हिलाते हुए कह दिया|

“ ‘रुपा’ के बारे में तुम क्या - क्या जानती हो ?” मैंने कहा।

“मैं उसकी तरह बिल्कुल नहीं हूँ, पर उसके जैसी साफ़ - सुथरे दिल वाली हूँ”, रिमसा ने कहा।

मैं ‘रूपा` का ज़िक्र ‘रिमसा’ से बार-बार इसलिए कर रहा था, ताकि मैं यह पता कर सकूँ कि आख़िरकार ‘रिमसा’ मुझसे कितना प्यार करती है। अगर ‘रिमसा’ मुझसे सच - मुच प्यार करती होगी, तो ‘रूपा’ की चर्चा या प्रशंसा सुनकर ‘रिमसा’ थोड़ा - बहुत ज़रूर जलेगी|

“पिछली बगावत के वक़्त जब ‘रूपा’ आई थी तो वो बहुत अच्छी लग रही थी। उसकी ख़ूबसूरती वाक़ई में बेमिसाल थी”, मैंने कहा|

“ ‘रुपा’ के बारे में तुम तो मुझसे भी अधिक जानते हो”, रिमसा ने कहा|

@BOOKHOUSE1

उसके चेहरे को पढ़कर मुझे पता चल चुका था की जलने वाली लड़कियों की तरह रिमसा बिल्कुल ही नहीं है। वो चुप-चाप "रूपा" की प्रशंसा सुन रही थी और मुस्कुरा भी रही थी|

"अब हमें चलना चाहिए", उसने कहा|

उसकी बात पर मुझे कोई ऐतराज़ नहीं हुआ क्योंकि सुबह हो चुकी थी और ठंड के कारण उसके हाल नाज़ुक हो गए थे। दूसरी मंज़िल से हम दोनों अलग - अलग सीढ़ियों के रास्ते से नीचे उतर चुके थे|

पूरी रात मैं जगा हुआ था फिर भी मैं अपने आप को फ्रेश महसूस कर रहा था| मेरे सामने आँख मसलते हुए परम आकर खड़ा हो गया।

"रात को कहाँ चले गए थे?" मैंने पूछा|

"यह बात तो तुम्हें बतानी चाहिए", परम ने अपने आँखों से हाथ हटाते हुए कहा|

मेरे चेहरे पर ख़ुशी के नज़ारे से वह वाकिफ़ हो चुका था कि, मैं रात में कहाँ था। तभी पायलों की छन-छनाहट की आवाज़ आती हुई सुनाई दिया। जब उस तरफ़ मैंने देखा तो दो लड़कियां हम दोनों के करीब आ रही थी| एक तो रिमसा थी और दूसरी लड़की मेरे पैंट पर पानी गिराने वाली लड़की थी|

@BOOKHOUSE1

"तुम दोनों रात में कहाँ थे?" रिमसा ने पूछा|

उसकी बातों से मैं भाँप गया था की हम दोनों के बीच जो भी है, उसे रिमसा सबसे छुपाना चाहती है। रिमसा की बातों का मैंने कोई जवाब नहीं दिया|

"परम, तुम भी नहीं दिखाई दे रहे थे", रिमसा ने कहा|

"आपकी निग़ाहें तो कहीं और लगी हुई थी 'मैंडम'", सख़्त अंदाज़ में परम ने कहा|

परम की बातें सुनकर रिमसा खिल-खिला कर हँसने लगी।

"इससे मिलो ये मेरी सहेली 'प्रिया' है", रिमसा ने कहा|

"इन्होंने ही तो मेरे पैंट पर पानी का गिलास गिरा दिया था", मैंने कहा|

"उस वक़्त आपका ध्यान गिलास पर नहीं था 'मिस्टर'", प्रिया ने कहा|

"प्रिया जी आप बिल्कुल सच कह रही हो", परम ने कहा|

"तू भी उनके साथ हो गया", मैंने कहा|

"सच्चाई कहीं भी हो उभर ही जाती है", रिमसा ने कहा|

“मेरा मोबाइल कहीं छूट गया है, अपना मोबाइल देना प्लीज़”, प्रिया ने कहा |

मैंने अपनी पॉकेट से फोन निकाला ही था की प्रिया ने मेरे हाथ से तपाक से मोबाइल को खींच लिया और वो नंबर डायल करने लगी। चंद ही पलों में प्रिया ने मुझे मेरा मोबाइल दे दिया। मैं मोबाइल के डायल लिस्ट में उसका नंबर ढूँढने लगा पर उस वक़्त से पिछले 24 घंटों तक कोई भी नंबर डायल नहीं हुआ था |

“मोबाइल में क्या देख रहे हो?” प्रिया ने कहा |

“कुछ नहीं “, मैं लड़खड़ाता हुआ बोला।

जो चीज़ मैं अपने मोबाइल में ढूँढ रहा था, शायद मेरी वो चोरी रिमसा और प्रिया को पता चल चुका था। वो दोनों ही मुस्कुरा रही थी।

“घर चले!” परम ने कहा |

“राणा से थोड़ा मिल लेते तो अच्छा होता”, मैंने कहा।

तभी पीछे से राणा भी वहाँ मौज़ूद हो गया।

“मेरी शादी में बोर तो नहीं हुए ना”, राणा ने मेरी तरफ़ इशारा करते हुए कहा |

“नहीं - नहीं बिल्कुल भी नहीं“, मैंने चंद मुस्कुराहट के साथ कहा।

मेरी बातों पर राणा के अलावा सभी हँस रहे थे |

“आप दोनों की मौज़ूदगी मुझे अच्छी लगी”, राणा ने कहा |

“जी धन्यवाद ! अब आप हम दोनों को जाने का इज़ाज़त दीजिए”, परम ने कहा |

मेरा वहाँ से आने का थोड़ा भी मन नहीं कर रहा था, क्योंकि जिस चाहत का मैं शिकार हुआ था वो शहज़ादी वही मौज़ूद थी |

“ठीक है, आप चाहे तो जा सकते हैं”, राणा ने कहा |

@BOOKHOUSE1

हम दोनों घर से बाहर निकल चुके थे। फिर परम बाइक चलाने लगा मैं उसके पीछे बैठ गया।

"घर जाने की इतनी जल्दी क्या थी?" मैंने कहा |

"इतना सारा वक़्त भी तुम्हें कम पड़ गया क्या", परम ने कहा।

तभी अचानक बाइक के हैंडल पर लगे मिरर में राणा की छत पर खड़ी एक लड़की दिखी। जब मैंने पीछे मुड़कर देखा तो राणा के घर की छत पर रिमसा खड़ी होकर अपने हाथों को हवा में हिलाते हुए 'बाय' करने का इशारा कर रही थी।

"बाइक थोड़ी धीरे चलाओ यार", मैंने कहा |

"तुम्हारी लव स्टोरी मेरी उम्मीद से आगे निकल पड़ी है", परम ने कहा |

दुर्भाग्य की वहीं से हमें टर्न होना था। आखिरी वक़्त शादी से जाते समय मैं "रिमसा" को बाय भी नहीं कर पाया था।अब आगे - पीछे चारों तरफ़ रोड, खेत और गाड़ियों के अलावा और कुछ नज़र नहीं आ रहा था। मैं घर पहुँच चुका था पर मैं कल्पना राणा के घर की कर रहा था।

"फ्रेश होकर मैच खेलने आ रहे हो ना", परम ने कहा |

"रात की नींद मेरी पूरी नहीं हुई है, माफ़ करना दोस्त मैं नहीं आ सकता मैच खेलने", |

"ठीक है, अधूरी नींद पूरी कर लेना चाहिए। तुम रात की नींद पूरी कर लो", परम ने जाते हुए कहा |

जब मैं अपने रूम में दाख़िल हुआ तो किचन से आवाज़ आई –

"आ गए",|

"मुझे आए हुए तो देरी हो गई", मैंने कहा |

"तू कब आता है, और कब जाता है, मुझे सब पता है", माँ ने कहा |

टेबल पर चाय का कप रखकर माँ बाहर चली गयीं। चाय की चुस्की लेते हुए मैं यही सोच रहा था की काश ! कोई ऐसा बहाना मिल जाए ताकि मैं अपनी शहज़ादी को रोज़ देख सकूँ और उससे थोड़ी बहुत बातें कर सकूँ। उसे पाने की ख़ुशी में मैं उसका नंबर भी लेना भूल गया था। ऐसी अद्भुत घटना शायद सबके साथ घटित होती है। जब कोई पहली बार किसी लड़की की चाहत का शिकार होता है, तो वो अपनी ख़ुशी के कारण सब कुछ भूल जाता है। मुझे नींद आना तो दूर की बात थी, बेवज़ह बेचैनी होने लगी थी, उसे देखे बिना, क्योंकि मैं अपनी शहज़ादी की कल्पना में डूबा हुआ था। रिमसा के इर्द-गिर्द जाने के लिए मुझे राणा के सहारे के बिना और कोई रास्ता नहीं दिख रहा था। तभी नए नंबर से मेरे फोन पर कॉल आया, मैंने कॉल रिसीव किया.. तकरीबन दस सेकंड तक कोई आवाज़ नहीं आई |

@BOOKHOUSE1

“आप कौन?”

“इतनी जल्दी भूल गए जीजू !” किसी लड़की की आवाज़ आई थी |

“मैं तुम्हें नहीं जानता रॉन्ग नंबर है”, मैंने कहा ।

ज्यूँ ही मैं कॉल कट करने वाला था, उधर से आवाज़ आई – “मैं प्रिया बोल रही हूँ |

“कैसी हो?” मैं टपाक से बोल पड़ा |

“मेरा ठीक है, रिमसा का हाल पूछ लो”, प्रिया ने कहा |

“बोलो”. उधर से आवाज़ आई ।

रिमसा की आवाज़ को मैंने पहचान लिया और मुझे झटका सा लगा, फिर मैंने अपने दोनों हाथों से अपना मोबाइल कान के पास चिपका लिया, लेकिन मैंने कोई जवाब नही दिया |

“कल तुम खाली हो थोड़े वक़्त के लिए”, रिमसा ने कहा |

“हाँ - हाँ बिल्कुल”, मैंने जवाब दिया |

“कल सुबह 10:00 बजे शास्त्री चौक पर आ जाना”, उसने कहा |

मेरे कुछ बोलने से पहले ही उसने कॉल कट कर दिया । उस वक़्त मुझे थोड़ा बुरा लगा, पर उन दोनों की तारीफ़ करनी होगी जिस तरह से राणा की शादी से वापस आते वक़्त प्रिया ने मेरा मोबाइल नंबर पता लगा लिया था । मुझे थोड़ा सा भी आभास नहीं हो पाया था कि इस कायेराने तरीके के द्वारा भी किसी का मोबाइल नंबर पता लगाया जा सकता है । जिस तरह से शादी से लौटते समय प्रिया ने रिमसा की मौज़ूदगी में मेरे सेल फोन से नंबर लिया था, वह तरीका वाक़ई मुझे बेहद पसंद आया था |

उस दोपहर से कल 10:00 बजे तक का समय इतना बड़ा लग रहा था, जैसे कि साल में हम सब एक दिन 25 दिसम्बर को बड़ा दिन मनाते हैं। अगला वाला दिन बिल्कुल मुझे वैसा ही आभास हो रहा था । एक-एक सेकेंड बिताना मुझे मुश्किल सा लग रहा था । जहाँ तक मैंने यही एहसास किया था की लोगों का अपने दुखों वाला समय जल्दी नहीं व्यतीत हो पाता है, पर मेरे साथ बिल्कुल उसका उल्टा हो रहा था । लिहाज़ा मेरी ख़ुशी का एक - एक पल कटता गया । सुबह को मैं जल्दी ही फ्रेश होकर रेडी था । उस वक़्त केवल 9:00 बज रहे थे । मैं अपने घर से शास्त्री चौक के लिए निकलने ही वाला था, तभी परम का आगमन हो गया ।

“कहाँ जा रहे हो इतने बन-ठन के?” परम ने कहा ।

“एक बहुत ज़रूरी काम है”, मैंने अपनी बाइक को हिलाते हुए कहा |

“ज़रूरी काम बताने लायक नहीं है क्या?” परम ने कहा ।

मेरे चेहरे की झलक से वो समझ चुका था कि मैं किस ज़रूरी काम के लिए जा रहा हूँ |

@BOOKHOUSE1

“लगे रहो प्यारे, मुझे ग्राउंड तक छोड़ दो”, परम ने कहा |

अपनी बाइक से परम को ग्राउंड के पास छोड़कर, मैं शास्त्री चौक जाने के लिए बाइक को तेज़ी से चलाने लगा। शास्त्री चौक पहुँचकर मैं रिमसा का इंतज़ार करने लगा | उस वक़्त का समय 09:40 हो रहा था | 10:00 बजने में बीस मिनट बाकी थे। उस वक़्त मेरा ध्यान बार-बार अपने मोबाइल में समय देखने के अलावा शास्त्री चौक के चारों तरफ़ टिका हुआ था, लेकिन रिमसा का कुछ अता-पता नहीं था | मेरा ध्यान फिर मोबाइल पर गया तब एक्यूरेट 10:00 बज चुके थे |

अचानक मेरा ध्यान चौक पर पड़ा  तभी एक लड़की अपनी जुल्फ़े संभालते हुए ऑटो से निकली। वो लड़की रिमसा ही थी वो शायद मुझे देखने के लिए अपनी निगाहें चौक के चारों तरफ़ दौड़ा रही थी। उस वक़्त वो बहुत ही जच रही थी। फिर वो मुस्कुराने लगी क्योंकि हम दोनों की नज़रें लड़ चुकी थी। हम दोनों सड़क के दो छोर पर खड़े थे, बीच से गाड़ियों का आना जाना लगा हुआ था। मैंने उसे रुकने का इशारा किया पर वो सिगनल देखते हुए सड़क पार करते हुए मेरे पास आ गई। वो सचमुच फुर्तीली लड़कियों जैसी लग रही थी |

“सिविल लाइन रोड़ चलना है”, रिमसा ने कहा |

“ओफ़्कौर्स”, कहते हुए मैं बाइक पर बैठ गया |

बाइक को संभालते ही वो मेरे पीछे बैठ गई पर हम दोनों के बीच उसने काफ़ी दूरियां बना रखीं थीं। ऐसा लग रहा था की मैं किसी अनजान लड़की को लिफ्ट दे रहा हूँ। शास्त्री चौक से होते हुए पी०आर०एस० कोचिंग सेन्टर पार करते हुए हम आगे की ओर बढ़ रहे थे |

“आगे रोक लेना जहाँ पार्लर आए”, उसने धीरे से कहा।

अभी ‘नेचुरल स्पा पार्लर’ के सामने हम पहुँचने ही वाले थे | मेरे बाइक रोकने से पहले ही उसने रुकने को बोल दिया | बाइक से उतरकर वो ट्रैफिक से बचते हुए सड़क पार करके पार्लर की ओर जाने लगी | मैं बाइक को पेड़ की छांव में डबल स्टैंड पर खड़ा करके आराम से बाइक पर बैठ गया और मैं यह सोचने लगा कि लड़कियों को भगवान ने पहले से ही सुंदर बनाकर इस धरती पर भेजा है फिर भी लडकियाँ सजने सवरने के लिए पार्लर में जाया करती हैं। आखिर ये लड़कियाँ हम सब मर्दों पर कब तक राज़ करती रहेंगी। वाक़ई इसका पता लगाना अपने सिर के बाल गिनने के बराबर है। घंटो तक मैं अपने बाइक पर बैठकर खुद से वार्तालाप करता रहा क्योंकि उस वक़्त मैं अकेला ही था। तभी पार्लर वाली दुकान में लगा हुआ शीशे का दरवाज़ा खुला और रिमसा बाहर निकली और रोड़ पार करते हुए, वो मेरे पास आकर खड़ी हो गई |

“सॉरी देर हो गई”, रिमसा ने कहा |

पिछले तीस मिनट से मैं पागलों की तरह अकेला बैठा था फिर भी मैं उससे यही कह सका –

@BOOKHOUSE1

“कोई बात नहीं’ इट्स ओके |”

“एक्च्युली पार्लर में जेंट्स अलाऊड नहीं है”, रिमसा ने कहा |

“ठीक है, ठीक है, इतना तो मुझे भी पता है”, मैंने कहा |

वो मुस्कुराते हुए बाइक पर बैठ गई | पार्लर में वो क्यों गई थी, मुझे कुछ पता ही नहीं चला क्योंकि जिस तरह वो चौक पर दिखी थी, बिल्कुल वैसे ही पार्लर से लौटने के बाद भी दिख रही थी | उसके पार्लर जाने के बारे में मैंने कुछ बात करना उचित नहीं समझा क्योंकि उस वक़्त हम दोनों एक दूसरे के ज्यादा क्लोज़ नहीं हुए थे |

“कहाँ चलें?” मैंने पूछा |

“किसी अच्छे रेस्टोरेंट में चलो”, उसने कहा |

बाइक द्वारा सिविल लाइन रोड पार करते हुए हम दोनों गोलघर मार्केट में पहुँच चुके थे | गोलघर वाला रेस्टोरेंट गोरखपुर का जाना माना रेस्टोरेंट है |

रेस्टोरेंट के कैटलॉग से उसने मुझे फास्ट फूड सेलेक्ट करने को कहा । मैं चाहता था की उस समय मैं उसकी पसंद का नाश्ता करूँ |

“क्या तुम वह खाना पसंद करोगे, जो मैं सिलेक्ट करूँगी?” उसने पूछा |

“हाँ, मुझे कुछ भी चलेगा”, मैंने कहा |

@BOOKHOUSE1

किसी ख़ास की मौज़ूदगी में, मैं किसी भी रेस्टोरेंट का फास्ट फूड खाने को तैयार था, चाहे वो स्वाद में कैसा भी हो। जो ऑर्डर करना था रिमसा ने कर दिया था | मैं उसके बोलने का इंतज़ार कर रहा था |

“आज व्रत है क्या?” रिमसा ने कहा ।

“तुम्हें चुप देखकर मैं तुम्हारी नकल कर रहा था”, मैंने कहा |

वेटर ऑर्डर देकर जा चुका था, वेटर के रहने तक रिमसा चुप थी |

“रात की नींद पूरी हुई की नहीं”, रिमसा ने पूछा |

“नींद पूरी करने के लिए मुझे वक़्त ही नहीं मिला”, मैंने कहा |

मेरे बातों का मतलब कोई हँसने वाला नहीं था, फिर भी वो हँस रही थी । उसने दो प्लेट में चाऊमीन निकालते हुए एक प्लेट को मेरे सामने कर दिया |

“चाऊमीन तुम्हारा फेवरेट है?” मैंने चाऊमीन खाते हुए पूछा |

“तुम्हें अच्छा नहीं लगता क्या?”

“मेरे कहने का यह मतलब नहीं था”, मैंने कहा |

“हाँ यह मेरा फेवरेट है, कह सकते हो” उसने मुहं सिकुराते हुये कहा |

लड़कियों को अपनी प्रशंसा सुनना बहुत ही अच्छा लगता है, चाहे वह प्रशंसा झूठी ही क्यों ना हो । लड़कियाँ अपनी प्रशंसा सुनने के लिए हमेशा ही आतुर रहती हैं |

“क्या तुम मेरे लिए रोज़ थोड़ा सा वक़्त दे सकते हो?” उसने बेरुखी आवाज़ से पूछा |

“हाँ हाँ, क्यों नहीं“, मैंने कहा |

जिस समस्या को सुलझाने के लिए मैं राणा का सहारा लेने के लिये सोच रहा था, वह समस्या तो रिमसा ने ख़ुद सुलझा दी| मैं अंदर से बहुत ख़ुश था I

“मुझे क्या करना होगा”, मैंने अपना खशी छुपाते हुये कहा |

“अगले दिन से मैं पार्लर ज्वाइन कर रही हूँ I क्या तुम सुबह के वक़्त शास्त्री चौक से नेचुरल ब्यूटी पार्लर तक मुझे अपने बाइक से लिफ्ट दे सकते हो?” उसने कहा I

दूसरी ख़ुशी को मैं रोक नहीं सका I मुझे जोर से छींक आई और मेरे मुँह से सारा चाऊमीन बाहर आ गया | बच्चों जैसी हरक़त देखकर रिमसा जोर-जोर से हँसने लगी I उस वक़्त अगर, मैच वाले ग्राउंड में होता तो जोर से चिल्लाकर मैं अपनी ख़ुशी का इज़हार किया होता, पर मुझे छींक से ही संतोष करना पड़ा | रेस्टोरेंट में उपस्थित अन्य लोग मेरे कारनामे को देख कर हँस रहे थे |

“हमें चलना चाहिए”, उसने कहा |

@BOOKHOUSE1

मैं भी वहाँ से जल्दी ही जाना चाहता था, क्योंकि मुझे छींक ग़लत समय पर आई थी और रेस्टोरेंट में उपस्थित लोग मुझे ही देख रहे थे | रेस्टोरेंट से निकलकर हम दोनों बाइक के करीब पहुँच चुके थे | वो मेरी बाइक पर बैठ गई I मैंने उसे उसके स्टॉपेज (शास्त्री चौक ) पर छोड़ दिया | एक प्राइवेट ऑटो आई जिसमें वो बैठ गई |

“कल कितने बजे आओगी?” मैं आखरी बार बोला |

मुस्कुराते हुए उसने अपने हाथों की दस अँगुलियाँ दिखा दी | लड़कियों से इशारे में भी बात किया जा सकता है I शुरुआत भी दो नैनों के इशारों से होती है | उसकी टेक्सी के पीछे - पीछे मैं अपनी बाइक से पीछा करता रहा I राजघाट पुल पार करके एन० एच० – 29, के रास्ते आगे बढ़ते गए | फिर उसका ऑटो सेवई मार्केट से टर्न हो गया और मैं वहाँ से अपने घर चला आया | शास्त्री चौक से सेवई बाज़ार के मंदिर तक का रास्ता हम दोनों का बिल्कुल सेम था | सेवई बाज़ार से हम दोनों के घर के रास्ते अलग-अलग हो जाते थे I शाम के वक़्त परम मेरे घर आया हुआ था | मैंने उसे देखकर मुस्कुरा दिया I

“और मिस्टर आप का ज़रूरी काम हो गया की नही ”, परम ने कहा |

“जब जान ही रहे हो तो, बातों को घुमा क्यों रहे हो”, मैंने कहा |

“अगली सुबह मैच खेलने चल रहे हो ना?”

मुझे अपनी 'कॉलर' नहीं कटवानी है",

"हाँ, तुम्हारी ज़रूरत तो ऊपर वाले ने पूरी कर दी है हमसफ़र देकर", परम ने कहा |

इतने में वहाँ माँ आ गयीं | माँ की आहट पाते ही हम दोनों ऊँची आवाज़ में पढ़ाई लिखाई की बात करने लगे | "परम तुम कब आये हो ?" माँ ने पूछा |

"हाँ, कुछ वक़्त पहले ही आया हूँ आंटी", परम ने कहा |

"अच्छे समय पर आए हो, चलो खाना साथ में खा लो", माँ ने कहा |

रात के वक़्त परम  मेरे घरवालों के साथ भोजन किया, फिर वो अपने घर चला गया I सुबह 09:00 बजते ही मैं अपनी बाइक से शास्त्री चौक जाने के लिए निकल गया I मैं रास्ते में बाइक को धीरे - धीरे चला रहा था, क्योंकि चौक पर पहुँचते ही मेरा सारा ध्यान मोबाइल में समय देखने तथा चौक के पास गाँव से आए हुए ऑटो में बैठे पैसेंजर की निगरानी करने में लगता था I लेट करने के बावज़ूद मैं शास्त्री चौक पर 10:00 बजने में बीस मिनट पहले ही पहुँच चुका था I बीस मिनट इंतज़ार करने के बाद वो आई और ऑटो से उतरकर मेरी बाइक पर बैठ गई | मैं भी अपने बाइक को वही खड़ा करता था जहाँ उसके ऑटो का स्टॉपेज था I मैंने बाइक को चालू किया और चौक को आधा राउनडिंग करते हुए पी०आर०एस० कोचिंग सेंटर पार करते हुए नेचुरल एंड स्पा वाले पार्लर के सामने मैंने बाइक रोक दिया |

@BOOKHOUSE1

"अगले दिन मिलेंगे शास्त्री चौक पर", बोलते हुए वो अपने पार्लर की तरफ़ जाने लगी |

"तुम पार्लर से फ्री कब होगी?" मैंने पूछा I

कुछ बोलने से वो संकोच कर रही थी |

"अगले दिन चौक पर मिलना", रिमसा ने दोबारा कहा |

"आज रात तुम पार्लर में ही रुकने वाली हो या फिर मुझे बताना नहीं चाहती हो?" मैंने कहा I

"तुम जैसा समझ रहे हो वैसा बिल्कुल नहीं है | शाम को 06:00 बजे के बाद ही मैं पार्लर से फ्री हो सकूँगी", उसने रूखी आवाज़ में कहा |

मैं उसके मासूम चेहरे को देखने लगा |

"बाय" बोलते हुए रिमसा रोड पार करके पार्लर में चली गई | उसके चेहरे से यह पता चल चुका था की वो मुझ पर बोझ नहीं बनना चाहती है I इसलिए वो शाम के वक़्त बुलाकर मुझे परेशान करना नहीं चाहती थी, पर मैं उससे कितना प्यार करता हूँ, शायद वो इस बात से अनजान थी, कि मैं उसके लिए क्या - क्या कर सकता हूँ | काश! मैं उसे बता पाता पर संकोच के कारण मैं अपने दिल की बात दिल में ही कैद कर रखा था | उसे पार्लर छोड़ने के बाद पूरे दिन मैं शहर की सड़कों पर बाइक से घूमता रहा I शाम को 6:00 बजे से पहले ही मैं रिमसा के पार्लर के सामने अपनी बाइक खड़ी करके उसका इंतज़ार करने लगा I कुछ

देर के बाद वो पार्लर से आती हुई दिखाई दी | वो मेरे पास आकर बाइक पर बैठ गई I

“शाम के वक़्त तुम मेरे कारण परेशान हुये ना?”

“इसमें परेशान होने की क्या बात है”, मैंने कहा |

शायद मेरा मुरझाया हुआ चेहरा देखकर उसे पता चल चुका था कि मैं उसे पार्लर छोड़ने के बाद सुबह से मार्केट में ही घूम रहा था I पार्लर से होते हुए हम दोनों शास्त्री चौक ( उसके स्टॉपेज ) पहुँच चुके थे |

बाइक से उतरकर वो मेरे सामने खड़ी होकर बोली-

“तुम्हें इतना परेशान होने की ज़रूरत नहीं है” |

“इसमें परेशान होने वाली क्या बात है“, मैंने कहा I

“तुम मुझे सिर्फ सुबह के वक़्त ही लिफ्ट देने आया करो”, उसने कहा I

“पर क्यों?”

“एक बात को बार - बार मत पूछा करो”, उसने नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए कहा |

उसकी बात को मैं समझ नहीं पाया था, कि वो मुझे समझा रही थी या मुझ से विनती कर रही थी |

@BOOKHOUSE1

“ठीक है”, उसकी बात पर मैंने हामी भर दिया I

तभी उसके स्टॉपेज से एक ऑटो जाने लगा, “बाय” बोलते हुए वो ऑटो में जाकर बैठ गई I उसकी टेक्सी के पीछे - पीछे मैं राजघाट पुल पार करते हुए एन०एच० – 29, रोड होते हुए सेवई बाज़ार तक गया I फिर वहाँ से उसका ऑटो मुड़ गया, और मैं अपने घर आ गया |

अगले दिन जब मैं चौक पर पहुँचा तो उस दिन वो चौक पर मुझसे पहले ही पहुँच चुकी थी |

“हेलो, तुम कब आई?”

“अभी जस्ट आई हूँ”, बोलते हुए वो मेरी बाइक पर बैठ गई |

बाइक को ड्राइव करते हुए चौक को आधी राउंडिंग करते हुए पार्लर की ओर जाने के लिए मैं बाइक चलाने लगा I मैं बाइक धीरे ही चला रहा था क्योंकि चौक से पार्लर तक का ही मौका मिलता था उसके साथ सफ़र करके बात करने का |

“बाइक थोड़ी तेज़ चलाओ”, रिमसा ने कहा |

उसके पार्लर के सामने मैंने बाइक रोक दी पर वो बाइक पर बैठी रही I

“मैडम आपका पार्लर सामने है ”, |

“पार्लर कर–कर के मैं बोर हो चुकी हूँ, आज मूवी देखने चलते हैं”, उसने कहा |

उसकी बात सुनकर मैं चौंक गया, “क्या ?”

“मूवी देखने चलिए मिस्टर”, उसने मुस्कुराते हुए कहा I

रिमसा की बात सुनकर मेरी ख़ुशी का ठिकाना ना रहा, क्योंकि उसके साथ तीन घंटे बिताने का मौका मुझे पहली बार मिलने वाला था I मैंने तुरंत ही बाइक स्टार्ट किया और सिविल लाइन होते हुए, महाराणा प्रताप बालिका इंटर कॉलेज पार करते हुए पार्क रोड ”सिटी माल” के सामने बाइक पार्क कर दिया | टिकट काउंटर के बगल में लगे हुए मूवी की लिस्ट को मैं और रिमसा देखने लगे | 10:30 सुबह के वक़्त सलमान खान की ‘बॉडीगर्ड’ मूवी का शो शुरू होने वाला था | टिकट लेकर हम दोनों हाल में एंट्री ले चुके थे | शो शुरू हो चुका था I “तेरी मेरी.. मेरी तेरी... प्रेम कहानी” वाले गाने पर मैंने रिमसा के हाथ पर अपना हाथ रख दिया I मैं उससे बात करना चाहता था पर हम दोनों के बगल में बैठे हुए श्रोतागण मेरे बात करने से मुझे घूरने लगते थे I फिर मैं भी शांत होकर मूवी देखने लगा सलमान खान की मूवी को बड़े ध्यान से वो देख रही थी I मेरी उपस्थिति में भी वो मुझे नज़रअंदाज़ कर रही थी I मैं चाहकर भी उसका विरोध नही कर सका | डेढ़ घंटे बाद इंटरवल हुआ | वेटर से चिप्स और कोल्ड ड्रिंक लेकर हम दोनों बात करते - करते खाने लगे लगभग पंद्रह मिनट इंटरवल वाला वक़्त बात करते हुए कैसे गुज़र गया कुछ पता ही नहीं चला I फिर हाल की सभी लाइटें बंद हो चुकी थी और मूवी का बचा हुआ आधा भाग शुरु हो चुका था | 01:00 बजे के लगभग शो समाप्त हो चुका था, पर वाक़ई मुझे पन्द्रह मिनट इंटरवल वाला वक़्त ही खास अच्छा लगा था I मूवी ख़त्म होने के बाद हम दोनों बाहर निकल चुके थे |

©BOOKHOUSE1

“मूवी कैसी लगी?” उसने कहा I

“अच्छी रही”, मुझे बेमन से कहना पड़ा I

अगर मैं उस मूवी की तारीफ़ नहीं करता तो अगली बार मुझे ट्रिप मिलती या नहीं कुछ कह नहीं सकता था | सिटी मॉल के बाहर हम दोनों खड़े होकर एक दूसरे को देख रहे थे |

“चलें फिर”, उसने कहा |

बाइक से मैंने रिमसा को उसके स्टॉपेज पर छोड़ दिया I कुछ देर बाद वो ऑटो मैं बैठकर जाने लगी | मैं उसके ऑटो के पीछे - पीछे सेवई बाज़ार तक चलता रहा फिर वहाँ से हम दोनों के रास्ते अलग - अलग हो गए I मैं घर पहुँच चुका था I कुछ दिनों तक ऐसा ही चलता रहा मैं उसे सुबह के समय शास्त्री चौक से पार्लर तक लिफ्ट देने जाया करता था | रिमसा के मना करने के बावजूद भी मैं शाम के वक़्त उसे पार्लर से चौक तक लिफ्ट देने चला जाया करता था I वो मुझे शाम को आने के लिए मना करती थी पर मैं अपना वाला ही करता था I अगली सुबह मैं चौक से पार्लर तक छोड़ने के लिए गया था | उसके पार्लर के सामने मैं अपनी बाइक रोक दिया पर वो मेरी बाइक पर बैठी रही |

“मैडम, आपका पार्लर सामने है”, मैंने अपनी बाइक हिलाते हुए कहा |

“पार्लर कर-कर के बोर हो चुकी हूँ”, उसने धीरे से मेरे कान में कहा |

“कहाँ चले फिर?”

“जहाँ तुम्हारा जी करे“, उसने कहा I

इतना सुनते ही मेरे मन में लड्डू फूटने लगे | मैं अपने ख़ुशी का इज़हार जोर से चिल्लाकर करना चाहता था, पर मुझे मज़बूरन अपनी आवाज़ दबानी पड़ी I अभी तक उसने मेरे पिताजी की पुरानी बाइक से लगभग दस किलोमीटर तक का ही सफ़र मेरे साथ किया था I यह दूसरी बार ऐसा हुआ था की उसने मुझे अपने साथ वक़्त दिया था कुछ घंटो के लिए I फिर हम सिविल लाइन होते हुए डी०डी०यू० यूनिवर्सिटी पार करते हुए, सुभाष चौक से टर्न होते हुए वाटर पार्क से आगे बढ़ते हुए, ‘नौका विहार’ के अंतिम छोर तक पहुँच चुके थे | ‘नौका विहार’ गोरखपुर शहर के किनारे का एक वही हिस्सा है, जो रामगढ़ ताल से सटा हुआ है I ‘नौका विहार’ के अंतिम छोर पर मैंने अपनी बाइक को पार्क कर दिया I हम दोनों एक ज़गह सीढ़ियों पर बैठ गए I सुबह का वक़्त था | नदी से होती हुई हवाओं में ताज़गी जैसा महसूस हो रहा था I हम दोनों जहाँ बैठे हुए थे वहाँ एक सीढ़ियों का चबूतरा था | जिस का सबसे निचला भाग रामगढ़ ताल के पानी में डूबा हुआ था | हम दोनों सीढ़ियों पर बैठे रहे और एक दूसरे से बोलने के लिए हम दोनों आपस में ताका-ताकी कर रहे थे की पहले कौन बोलेगा ?

“तुम पार्लर क्यों नहीं गई?” मुझे ही पहले बोलना पड़ा |

“छोड़ो ना पार्लर-वार्लर तुम्हारा कॉलेज कब खुलेगा?” उसने कहा |

“ग्रेजुएशन का रिज़ल्ट आज 12:00 बजे तक आने वाला है, फिर मैं यहाँ से चला जाऊँगा अपनी एल० एल० बी० की पढ़ाई करने के लिए”, |

वो सीढ़ी पर मुझसे एक स्टेप ऊपर बैठी हुई थी | मैंने उसके पैर पर अपना सिर रखा तो, उसने मेरे सिर को अपने पैर पर आराम से बिना विरोध किए रखने की इज़ाज़त दे दी I फिर कुछ वक़्त तक हम दोनों में बातें चलती रहीं I मैं उसकी गोद में अपना सिर रखकर सीढ़ियों पर लेटा हुआ था I अचानक उसने अपना सिर नीचे कर दिया, उसके सारे बाल मेरे चेहरे पर बिख़रे हुए थे | उसका सिर नीचे झुकने से मेरे नाक का अंतिम छोर उसके होंठ को स्पर्श कर रहा था | मैं थोड़ी ऊपर की तरफ़ खिसक गया तब उसके होंठ मेरे होंठ को स्पर्श करने लगे | मैं भी मौक़े को छोड़ना नहीं चाहता था, फिर मैं उसके पतले होंठ को चूमने लगा I उसकी आँखे बंद ज़रूर थी पर मेरा साथ वो भी दे रही थी I अचानक उसने अपना सिर ऊपर उठा लिया और अपने चारों तरफ़ देखने लगी ताकि उसे उस हालात में कोई देख ना रहा हो |

“क्या हुआ?” मैंने कहा |

“कहीं भी शुरू हो जाते हो”, उसने गंभीरतापूर्वक कहा |

लड़कियों के मूड का अंदाज़ा लगाना किसी के बस की बात नहीं है, क्योंकि मौक़े पर चौका

@BOOKHOUSE1

मैंने ज़रूर लगाया था, पर चांस तो उसने ख़ुद ही दिया था | उस मुलाक़ात से उसने महसूस करा दिया था की वो मुझे कितना चाहती है पर वो मुझसे कम ही बातें करती थी I उस वक़्त मुझे पता नहीं चल सका की फ़ालतू में बात करना उसे पसंद नहीं था या जानबूझकर मेरे सामने चुप रहने का नाटक किया करती है | हमेशा ही हम दोनों के बीच वार्तालाप की शुरुआत मुझे ही करना पड़ती थी | रामगढ़ नदी की सीढ़ियों पर हम दोनों बैठकर पानी के लहरों को देख रहे थे | धूप की चमचमाती गर्मी ने हम दोनों को उथल-पुथल कर दिया था | वो अपने रुमाल से बार-बार अपने चेहरे का पसीना पोंछ रही थी I उसकी यह हालत मैं और देर तक नहीं देखना चाहता था | मैं अपनी जगह पर खड़ा हो गया |

"चलें क्या?" उसने तुरंत कहा I

वो भी उस तपती धूप से जाना चाहती थी, पर वो मेरे भरोसे बैठी हुई थी |

"हाँ चलना ही चाहिए", मैंने कहा |

पार्किंग से बाइक निकालने के बाद वो बाइक पर बैठ गई, उस वक़्त बाइक पर वो मुझसे चिपककर बैठी थी | एक मुलाक़ात के बाद उसमें इतना बदलाव हो जाएगा मैंने सोचा भी नहीं था |

"एक बात बोलूं", मैंने कहा I

"बोलो, पर इस धूप में रुकने के लिए ना कहना", उसने कहा |

@BOOKHOUSE1

"हम दोनों का घर जाने का रास्ता सेवई बाज़ार तक बिल्कुल एक ही है, तो क्यों ना मैं तुम्हें शास्त्री चौक तक लिफ्ट देने के बज़ाय सेवई बाज़ार तक हम दोनों बाइक द्वारा जाएं", मैंने कहा |

"तुम अभी मेरे मौसा जी को नहीं जानते हो I उन्हें थोड़ी सी भी भनक लग गई की मैं तुमसे मिलती-जुलती हूँ, तो वह तुरंत ही मुझे मेरे मामा के पास भेज देंगे", उसने कहा |

उसकी बात मुझे चेतावनी जैसे लगी I फिर मैंने बात को घुमाते हुए, बातों को पलट दिया |

"तुम्हें तो स्पोर्ट बाइक पर बैठने की आदत है I इस बाइक पर तुम्हें बैठने में कोई ऐतराज़ तो नहीं है ना?"

"तुम शायद भुल गए हो कुछ दिन पहले यही पुरानी बाइक थी, जो मेरे मौसा जी की स्पोर्ट्स बाइक के साथ - साथ चल रही थी | सारी चीज़ों की क़ीमत सिर्फ दिखावे से नहीं देखी जाती है'मिस्टर',| वह चीज़ हमारा कितना साथ देगी, उसकी क़ीमत देखी जाती है", उसने कहा |

मुझे उसकी बात सुनकर अच्छा लगा था I मेरा ना सही कम से कम उसने मेरे बाइक की तो तारीफ़ कर दी थी | "पार्लर के पास रुकना", वो मेरे कान के बिल्कुल करीब से बोली |

पार्लर के सामने मैंने बाइक रोक दी I बाइक से उतर कर वो मेरे सामने खड़ी हो गई |

"पार्लर- मैंडम कब तक चुप्पी साधी रहोगी?" मैंने पूछा |

“शाम को 05:00 बजे आ जाना”, उसने भारी आवाज़ में कहा |

पहली बार उसने मुझे शाम को अपने पार्लर बुलाया था और वह भी पूरे अधिकार के साथ I शायद वो मेरे मासूम दिल के बारे में कुछ जान चुकी थी | फिर रोड पार करते हुए वो पार्लर में जा चुकी थी | मैं वहाँ से कैफे चला गया और अपने ग्रेजुएशन का रिज़ल्ट निकाल लिया I मेरे ग्रेजुएशन का रिज़ल्ट तो अच्छा बना था, पर लखनऊ जाने के नाम पर मेरा मुँह लटका हुआ था I मेरे लटके हुए मुँह को देखकर कोई भी कह सकता था की मैं फेल हो गया हूँ | मुँह लटकाये हुए मैं शाम के वक़्त पार्लर के सामने उसका इंतज़ार करने लगा | मेरा ध्यान पार्लर में लगे शीशे के दरवाज़े पर था I तभी पीछे से किसी लड़की की आवाज़ आई I

“पार्लर की तरफ़ किसे देख रहे हो?”

“जाओ यहाँ से अपना काम करो”, मैंने बिना सिर घुमाए कह दिया I

उस वक़्त मैं पार्लर की तरफ़ देखने में बिज़ी था | मैं चली जाउंगी तो तुम मेरी गलती ना देना उस लड़की ने फिर कहा |

“जा पगली”, मैंने तेज़ी से उस लड़की की तरफ़ अपना सिर घुमाते हुए कहा |

वो लड़की कोई नही बल्कि रिमसा ही थी |

“सॉरी – सॉरी”, मैंने कहा |

जोर-जोर से वो हँस रही थी |

@BOOKHOUSE1

“तुम पार्लर से बाहर कब आई?” मैंने पूछा I

“कुछ मिनट पहले”, उसने कहा |

“मेरा ग्रेजुएशन का रिज़ल्ट आ चुका है”, मैंने कहा |

“तुम अपना मुँह ऐसे लटकाए क्यों हो? मैं भाग थोड़ी ना जाती”, रिमसा ने कहा |

मैं उसे कैसे बताऊँ की मेरे लखनऊ जाने का वक़्त आ गया है अपने एल० एल० बी० की पढ़ाई के लिए, जो मैं अब जाना नहीं चाहता हूँ | बाइक के टैंक पर उसने मिठाई का डब्बा रख दिया |अचानक परम भी वहाँ आ गया I

“मिठाई किस ख़ुशी में? मुझे भी चाहिए”, परम ने कहा |

“आज तुम्हारे दोस्त ‘अमन’ का रिज़ल्ट आया है और रिज़ल्ट बहुत ही अच्छा बना है”, रिमसा ने कहा |

उसकी बात सुनकर मैं आश्चर्यचकित हो गया क्योंकि मैंने अभी तक उसे अपने रिज़ल्ट के बारे में कुछ बताया भी नहीं था | उसे कैसे पता चला की मैं पास हो गया हूँ, वो भी अच्छे नंबरों से I मेरे उदास चेहरे को देखकर उसने मेरे रिज़ल्ट के बारे में कैसे भविष्यवाणी कर दी थी ? मुझे यह सोचकर हैरानी हो रही थी |

तुरंत ही मेरा हाथ ज़ेब में गया |

“ज़ेब में क्या ढूँढ़ रहे हो?” रिमसा ने पूछा |

मैंने अपने ज़ेब से रिज़ल्ट का डाउनलोड नेट पेपर निकालकर उसे दे दिया | रिमसा ख़ूबसूरत होने के साथ-साथ एक अच्छी जादूगरनी भी हो सकती है मुझे पता भी नहीं था | मेरे लटके हुए मुँह को देखकर भी उसके दिमाग़ में मेरे प्रति नेगेटिव बात ना सोचकर, उसे मेरे रिज़ल्ट के बारे में आख़िर कैसे पता चला था कि, मेरा रिज़ल्ट अच्छा बना है | ताज्जुब की बात तो यह थी की वो अपने साथ मिठाई भी लाई थी I मैं गहरे चिंतन में डूबा हुआ था, उसकी एक्टिवनेस पर |

“क्या सोच रहे हो?” उसने मुस्कुराते हुए पूछा I

फिर मेरे रिज़ल्ट का डाउनलोडेड पेपर उसने मुझे दे दिया |

“भाभी जी, सारी मिठाई ‘अमन’ के लिए ही है या उसके दोस्तों के लिए भी है?” परम ने बाइक के टैंक पर अपने हाथ से ठोकते हुये कहा |

“मिठाई का डब्बा खोलते हुए रिमसा ने परम के सामने पेश कर दिया |

“आजकल तुम मैच खेलने नहीं आ रहे हो”, परम ने मिठाई खाते हुए कहा |

“मुझे अपने शर्ट का कॉलर’ नहीं कटवाना है”, |

“परम, तुम सबकी ‘कॉलर’ कौन काटता है?” रिमसा तपाक से बोल पड़ी I

@BOOKHOUSE1

परम ने बोलना शुरू किया... “एक लड़की है जो बिल्कुल आपके जैसी दिखती है, पर उसका नाम किसी को पता नहीं है I वही लड़की हम सब की ‘कॉलर’ काटती है I बाकी बात आप हमारे दोस्त और अपने शहज़ादे से पूछ लीजिएगा”, बोलते हुए परम वहाँ से चला गया |

परम की बात सुनकर रिमसा जोर-जोर से हँसने लगी I परम वहाँ से जा चुका था |

“मुझे भी अपनी ख़ुशी में शामिल कर लो”, मैंने कहा |

“मैच खेलने के लिए भला अपनी ‘कॉलर’ कोई क्यों कटवायेगा?” उसने अपनी हँसी कंट्रोल करते हुए कहा | “किसी अनजान लड़की को कोई जवान लड़का बार-बार परेशान करेगा, तो वह लड़की भला चुप थोड़ी ना बैठेगी”, मैंने कहा |

“वह लड़की सारे लड़कों की ‘कॉलर’ क्यों काटती है ?”

मैं ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की का ज़िक्र रिमसा से नहीं करना चाहता था, पर वो मान नहीं रही थी I मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि आख़िर रिमसा उस ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की के बारे में जानने के लिए इतना बेचैन क्यों थी ? उसके बार-बार ज़िद करने के कारण मैं रिमसा की जैसी सेम शक्ल वाली ‘कॉलर काटने वाली लड़की की करतूत सुनाने लगा |

“जिस ग्राउंड में हम सब मैच खेलने जाते हैं, उस ग्राउंड के पीछे एक मकान है I जिसमें एक लड़की रहती है, वो बिल्कुल तुम्हारे जैसी दिखती है I जब मैं उसके घर में पहली बार गेंद लेने गया था, उस वक़्त ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की मेरी तरफ़ आ रही थी I उस लड़की को देखते ही मुझे लगा कि वो लड़की ‘रिमसा’ है यानि की तुम | क्योंकि मैं पेट्रोल पम्प पर पहली बारे देखते ही तुम्हारे चाहत का शिकार हो गया था |

मैं हिम्मत जुटाकर उसका नाम पूछना चाहता था, पर मेरी आवाज़ लड़खड़ा रही थी I मैं अपने ही हाथों से कैंची उठाकर अपने आधे कॉलर को काट लिया I फिर मैं वापस बाहर जाने लगा, परंतु ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की ने मुझे रोककर तुरंत मेरी तरफ़ गेंद फेंकी और अंदर चली गई |

ग्राउंड के सारे लड़के उस लड़की को प्रपोज़ करने के चक्कर में ही मैच खेलने जाते हैं और वह लड़की हम सबकी ‘कॉलर’ काट दिया करती है I उसके घर के बाहर एक बुड्ढा वाचमैंन रहता है, जो बेवज़ह घर के अंदर किसी को जाने नहीं देता है | ग्राउंड के सब लड़कों के पास गेंद लाना ही एकमात्र ज़रिया था उस लड़की तक पहुँचने के लिए I

इसलिए ग्राउंड में जो भी खिलाड़ी क्रीज पर बल्लेबाजी करने जाता था, वह सारे शॉट उस लड़की की छत पर ही मारने का कोशिश करता था I मुझे उस लड़की की छत पर गेंद मारने का कोई शौक नहीं था I वो तो मैंच के नियमों में बंधकर उस ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की के घर के अंदर गेंद लाने मुझे जाना पड़ा था I

@BOOKHOUSE1

उस ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की को देखकर मैं अपनी शहज़ादी रिमसा समझ बैठा था, इसलिए उस कॉलर काटने वाली लड़की का नाम जानने के लिए मुझे बहुत कोशिश करना पड़ा था पर मैं नाकाम होता रहा | आखिरकर तुम मुझे राणा की शादी में मिल ही गई ”

उस वक़्त रिमसा के चेहरे पर अज़ीब तरह का मुस्कान दिख रही थी I मुझे ऐसा लग रहा था की रिमसा और ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की दोनों में कोई न कोई कनेक्शन ज़रूर है I वो बेवज़ह मुस्कुराई जा रही थी |

‘कॉलर काटने’ वाली लड़की यह कैसा नाम है?” रिमसा ने पूछा |

“उसका रियल नाम किसी को पता नहीं है, इसलिए उस लड़की को ग्राउंड के सारे लड़के ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की के नाम से ही उसे जानते हैं”, मैंने कहा |

“जिस लड़की को तुम सब कॉलर काटने वाली समझते हो वह लड़की रूपा की खास सहेली है”, रिमसा ने कहा |

“क्या तुम उसे जानती हो?” मैंने पूछा I

“बहुत वक़्त पहले उससे मिली थी I”, तुम उस कॉलर काटने वाली लड़की को अपना दोस्त बना लो”, रिमसा ने कहा |

“बिल्कुल नहीं मुझे अपने शर्ट का कॉलर नहीं कटवाना है और ना ही पागलों की तरह परेशान होना है”, मैंने कहा |

वो मेरे सामने ऐसे हँस रही थी जैसे कि मेरी सारी बेईज़्ज़ती उसे पता चल गई हो |

“तुम उस कॉलर काटने वाली लड़की का नाम जानती हो?” मैंने पूछा I

“नहीं जानती हूँ और कितनी बार पूछोगे?” रिमसा ने कहा |

“ ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की, बिल्कुल तुम्हारे जैसी दिखती है”, मैंने कहा |

“हाँ, पता है पर उसका नाम मेरे जैसा नहीं है”, |

“मेरा यक़ीन मानो कॉलर काटने वाली लड़की से तुम दोस्ती कर लो I अगर वो तुम पर मेहरबान हो गई तो, रूपा के द्वारा बग़ावत में कुछ सहायता तुम्हें ज़रूर दिला देगी”, रिमसा ने कहा |

“ कॉलर काटने वाली लड़की इतनी आसानी से मानने वाली नहीं है”, मैंने कहा |

“गुच्छे की अंतिम चाबी से भी लॉकर कभी-कभी खुल जाता है I एक बार कोशिश तो करो”, रिमसा ने आत्मविश्वास दिलाते हुए कहा |

“ठीक है, तुम्हारे कहने पर ट्राई करके देखूंगा”, मैंने कहा |

मिठाई वाले पैकेट से एक मिठाई मेरे मुँह में पूरा घुसेड़ते हुए बाइक पर बैठ गई I मेरा पूरा मुँह भरा हुआ था, इसलिए पार्लर से चौक तक जाते समय मैं रिमसा से कुछ बात नहीं कर पा रहा था |

शास्त्री चौक पर जाम लगा हुआ था I उसके बाइक से उतरने से पहले ही मैंने बता दिया की दो से चार दिन में लखनऊ चला जाऊँगा, परंतु उसने कोई जवाब नहीं दिया I उसके सिसकने की आवाज़ आ रही थी | चौक से चार तरफ़ के लिए रोड निकलता है I ट्रैफिक के कारण मैं अपने बाइक को उसके स्टॉपेज के दूसरी साइड में ही रोक रखा था, ताकि सड़क पर भीड़ कम हो जाने के बाद मैं अपनी बाइक को चौक को राउंडिंग करके सड़क को पार करके उसके स्टैंड तक जा सकूँ | अचानक बाइक से उतरकर वो जाने लगी I

“क्या हुआ?” मैंने पूछा I

एक दिन बाद मिलेंगे कहते हुए रिमसा अपने स्टॉपेज की तरफ़ जाने लगी ऐसा पहली बार हुआ था की जाते वक़्त वो मुझे बाय बोले बिना मेरे पास से चली गई थी I आखिरकर आते वक़्त तो वो बहुत खुश थी मेरे रिज़ल्ट को लेकर अचानक उसे हो क्या गया था, मेरे समझ के बाहर था |

मैं तुरंत ही अपनी बाइक को सड़क के किनारे खड़ा करके चौक के दूसरी तरफ़ पैदल ही पहुँचा I रिमसा के स्टॉपेज के पास खड़ा होकर मैं छुपकर उसे देखने की कोशिश कर रहा था, वो रुमाल से बार-बार अपने चेहरे को पोछ रही थी I जब ऑटो में बैठने के लिए वो मुड़ी तो वो रो रही थी |

मैं समझ गया कि उसका मासूम दिल अब उसका ना रहा, शायद अब वो अपना दिल मुझे दे चुकी है I मेरे लखनऊ जाने का दुख उससे बर्दाश्त नहीं हुआ और इसी बात पर वो रो

@BOOKHOUSE1

रही थी I उसे रोते हुए देखकर मुझे अच्छा नहीं लग रहा था पर उसके रोने से मुझे पता चल चुका था कि वो मुझे किस हद तक चाहती है |

उसे गहरी दिल्लगी होने के बावजूद भी वो अपनी पर्सनल बातें मुझसे शेयर नहीं करती थी I उसकी ऑटो चौक से जा चुकी थी | मैं सड़क को पार करते हुए अपने बाइक तक पहुँचा I

सड़क पर लगा जाम समाप्त हो चुका था | मैं रिमसा को लखनऊ जाने वाली बात बताकर पछता रहा था I मेरी वज़ह से बेचारी रोते हुए घर गई थी I फिर मैं चौक से घर पहुँच चुका था | उस वक़्त मैं बहुत ही व्याकुल था I रिमसा से एक पल बात करने के लिए, उस तरह से बेचैनी मुझे पहले कभी नहीं हुआ था I तभी मेरे मोबाइल की घंटी बजी, नए नंबर से कॉल आ रहा था I मैंने जानबूझकर कॉल रिसीव नहीं किया क्योंकि मेरा मुड़ ठीक नहीं था I मेरे मोबाइल की घंटी दोबारा बजी –

“हेलो”, मैं चीखते हुए बोला |

“अमन, तुम ठीक तो हो?” रिमसा की आवाज़ थी |

मैं झट से उसकी आवाज़ को पहचान गया I

“तुम जाते वक़्त रो क्यों रही थी?” मैंने पूछा |

“मैं भला क्यों रोऊँ”, उसने धीमी आवाज़ में कहा |

“तुम ठीक तो हो?” मैंने कहा |

“हाँ, एक दिन बाद चौक पर मिलना, फोन रखो बाय”, रिमसा ने कहा |

“तुम भी तो फोन रख सकती हो”, मैंने कहा |

“मौसी आ रही हैं”, उसने कहा |

मैंने झट से कॉल कट कर दिया, क्योंकि मेरे और रिमसा के बीच जो कुछ भी चल रहा था, अगर यह खबर उसके मौसा तक पहुँच गई तो रिमसा मुझसे दूर कर दी जाएगी I कुछ देर तक मैं रिमसा से और बात करना चाहता था पर उसने चीटिंग करके मुझसे कॉल कट करवा दिया था |

गाँव की लड़कियां शहर की लड़कियों से कम नहीं होती है बस इतना फर्क होता है की गाँव की लड़कियां छुप छुपाकर प्यार करती हैं | जबकि शहर की लड़कियां थोड़ा ओपेन होती हैं I

रिमसा से दो बात हो जाने से मुझे थोड़ी - सी राहत मिल चुकी थी I अगले दिन उसने किसी काम से पार्लर से छुट्टी ली थी, इसलिए मैं भी खाली था I सुबह की लाली से पहले मैं मैच खेलने के लिए ग्राउंड में पहुँच चुका था |

“तुम क्या करने आए हो?” बड़े प्यार से परम ने पूछा I

“ग्राउंड में मैच खेलने आया जाता है | मैं भी मैच ही खेलने आया हूँ”, मैंने कहा |

@BOOKHOUSE1

“लगता है कॉलर कटवाने का मन बना चुके हो”, परम ने कहा |

मैच शुरू हो चुका था मैं स्लिप कवर में फील्डिंग कर रहा था I तभी एक लड़के ने ग्राउंड के पीछे वाले मकान की छत पर गेंद को मारा, जिस घर में कॉलर काटने वाली लड़की रहती थी I

मैं उस वक़्त पीछे वाले मकान के करीब फील्डिंग कर रहा था | गेंद लाने के लिए उस मकान की तरफ़ आगे बढ़ा, तभी एक लड़के ने आवाज़ दी- “इतना ही कॉलर कटवाने का मन है तो गेंद खुद उस लड़की के छत पर मारो फिर जाना गेंद लाने |”

मैं उस लड़के की बात सुनकर वहीं खड़ा रह गया I गेंद लाने जो लड़का ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की के घर के अंदर गया हुआ था कुछ देर बाद जब वह लड़का गेंद लेकर ग्राउंड मे वापस लौटा तो उसके शर्ट की कॉलर कटी हुई थी |

बॉलर की अगली गेंद किपर से छूटते हुए मेरी तरफ़ आने लगी, मैंने झट से गेंद उठाया और तेज़ी से गेंद को उस लड़की की छत पर फेंक दिया I मेरी अज़ीब हरक़त से ग्राउंड के सभी खिलाडी चौंक गए I फिर मैं गेंद लेने के बहाने से कॉलर काटने’ वाली लड़की के घर में दाखिल हुआ I तभी सामने से रिमसा जैसी शक्ल वाली लड़की मेरी तरफ़ आते हुए दिखी |

मेरी तलाश तो पूरी हो चुकी थी I मेरा उस कॉलर काटने’ वाली लड़की में कोई इंटरेस्ट नहीं था की मैं उस कॉलर काटने वाली लड़की से दोस्ती करूँ या उसका नाम पूछूँ | वो तो मैं रिमसा के कहने पर ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की के पास गया हुआ था | ‘रिमसा’ और ‘कॉलर काटने’ वाली दोनों लड़कियों की बिल्कुल सेम शक्ल थी I

उन दोनों में बस यही अंतर था कि रिमसा मुस्कुराने में तथा ख़ामोश होने में माहिर थी और उसके गाल पर काले कलर का तिल था | जबकि ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की हमेशा सीरियस दिखती थी |

मैं शरीफ़ बनता हुआ ‘कॉलर काटने वाली लड़की’ के सामने चुपचाप खड़ा था I वो मेरे पास गेंद लेकर आ चुकी थी |

“देखिये, जैसा आप मुझे समझ रहीं हैं, वैसा कुछ भी नहीं है”, मैंने कहा |

“एक्सक्यूज़ मी, एक मिनट रुको”,कॉलर काटने वाली लड़की ने मेरे पास से जाते हुए कहा |

मैं चुपचाप खड़ा होकर उसका इंतज़ार कर रहा था I कुछ ही सेकंड में वो मेरे पास आई, अपने साथ उसने एक जार लाकर मेरे सामने रख दिया |

“यह क्या है?” मैंने पूछा I

“खुद ही खोल कर देख लो”, कॉलर काटने वाली लड़की ने कहा |

मैंने जार के ढ़क्कन को खोलकर देखा तो उसमें बहुत सारे कागज़ के छोटे-छोटे लेटर पड़े हुए थे |

“इससे मेरा क्या लेना-देना है?” मैंने पूछा |

“याद करो कुछ दिन पहले मैच खेलने वाले ग्राउंड में रामलीला का कार्यक्रम चल रहा था I उस दौरान तुमने एक बालक से मेरे पास “लव लेटर” भिजवाया था”, ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की ने कहा |

“हाँ - हाँ याद आया”, मैंने कहा |

“हाँ, पर मैंने तो सिर्फ एक लेटर भिजवाया था”, मैंने कहा |

“ठीक है, अपना वाला लव लेटर ढूँढ़ कर निकालो”, उसने कहा |

मैं जार में पड़े सारे लेटर को एक-एक करके पढ़ने लगा, सारे लेटर में उस लड़की को प्रपोज़ करने की बात थी I

एक हसीन लड़की के पीछे इतने सारे प्रपोज़ल आने के बावजूद वो लड़की किसी से सेट नहीं हुई थी I इस जमाने में यह बात सोचने वाली है |

क्या लड़की है यार...तभी मेरा वाला लेटर मेरे हाथ में आया, जिसमें लिखा हुआ था “तुम्हें दोस्ती करनी ही होगी” उस लेटर को एक बार पढ़ते ही मैंने अपना लेटर झट से पहचान लिया |

“यह रहा मेरा लेटर”, मैंने उसे इशारा करते हुए कहा |

@BOOKHOUSE1

“क्या लिखा है लेटर में?” उसने पूछा I

“खुद ही पढ़कर देख लो”, उसके हाथ में लेटर देते हुए मैंने कहा |

मेरे लेटर को पढ़कर पहली बार कॉलर काटने वाली लड़की मेरे सामने मुस्कुराई थी |

“सारे प्रपोज़ल लेटर आपके हैं?” मैंने जार में रखे गए लव लैटर की तरफ़ इशारा करते हुए पूछा |

“हां जी !, सारे प्रपोज़ल लेटर मेरे ही हैं |”

“इतने सारे प्रपोज़ल लेटर बाप रे!” मैं धीरे से भुन-भुनाया |

“कुछ कहा क्या तुमने?”

मैंने कोई ज़बाब नहीं दिया |

“मेरा नाम ‘रिया’ है”, कॉलर काटने’ वाली लड़की ने मुझे घूरते हुए अपना नाम बताया |

सारी लड़कियों का यही हाल होता है | इसके पहले मैंने उस लड़की का नाम जानने के लिए कितना कोशिश किया था पर उस वक़्त उसने अपना नाम नहीं बताया था |

एका-एक ‘कॉलर काटने वाली लड़की के स्वभाव में परिवर्तन देखकर मैं हैरान था क्योंकि उस कॉलर काटने वाली लड़की ने अपना नाम “रिया” मुझे खुद बताया था |

“तुम मुझे मारना क्यों चाहते थे?” रिया ने पूछा |

“मैं भला ऐसा क्यों करूंगा”|

“उस नटखट बालक से लव लेटर के साथ पत्थर का टुकड़ा क्यों भिजवाये थे ?” रिया ने पूछा |

“मैं आपसे दोस्ती करना चाहता था, इसलिए मैंने सिर्फ लव लेटर ही भिजवाया था | गलती से उस बालक ने आपको पत्थर दे दिया था क्योंकि उस वक्त बालक अपने दोस्तों के साथ पत्थरबाजी कर रहा था | गलती से उसने आपको अपना पत्थर भी दे दिया था”, मैंने कहा |

“सच बोल रहे हो ना?” रिया ने कहा |

“सौ टका”,|

“इस जार में तुम्हारे लेटर को छोड़कर पचास से भी अधिक प्रपोज़ल मुझे मिल चुके हैं और आज से मैं तुम्हें अपना दोस्त चुनती हूँ क्योंकि तुम्हारे द्वारा पत्थर भिजवाने का अंदाज़ मुझे अच्छा लगा था |

यह अलग बात है की बच्चे ने गलती से मेरे पास पत्थर दे दिया था |”

“तुम दोस्त बन गई, इतना बहुत है मेरे लिए”, मैंने कहा |

“सिर्फ दोस्ती रहेगी, इसके आगे सोचने की कोशिश मत करना”, रिया ने कहा |

@BOOKHOUSE1

“मेरे प्रति तुम अपनी सोच अच्छी रखना | जिससे तुम मेरे अच्छे व्यवहार का अंदाज़ा लगा सकोगी”, मैंने कहा |

“लगता है तुम्हारे पास गर्लफ्रेंड मौज़ूद है, इसीलिए तुम इतना इतरा रहे हो”, |

“मैं मुस्कुराते हुए टेबल से गेंद लिया और ग्राउंड में पहुँच गया | ग्राउंड के सारे खिलाड़ी बड़े ध्यान से मुझे निहार रहे थे क्योंकि मेरे शर्ट का कॉलर बिल्कुल सेफ था |

“घर चले गए थे क्या अपनी शर्ट बदलने?” परम ने कहा |

“नहीं मैं उसी लड़की के पास था जो हम-सभी का कॉलर काट दिया करती है”, मैंने कहा |

“तुम्हारा ‘कॉलर’ तो बिल्कुल सेफ है”, परम ने कहा |

“जिस लड़की को तुम कॉलर काटने वाली लड़की समझते रहे हो, उसका रियल नाम “रिया” है और उससे मेरी दोस्त हो चुकी है”, मैंने उच्चे आवाज में कहा |

“रिया, अच्छी दोस्ती निभा रही है तुमसे, जो तुम्हारा कॉलर उसने छोड़ दिया”, परम ने कहा |

“दोस्ती के नाम पर थोड़ा-सा दया दिखाना मानवता है यार”, मैंने कहा |

उस दिन से मैच के कुछ खिलाड़ी, दोस्त से मेरे दुश्मन बन गये थे, क्योंकि मैंने उन्हें बता दिया था की रिया मेरी दोस्त बन चुकी है |

अगली सुबह जब रिमसा चौक पर मिली तो पहले की तरह मैं उसे अपनी बाइक पर बैठाकर चौक की रॉउंडिंग करते हुए उसके पार्लर की ओर ले जाने लगा | पार्लर के सामने मैं अपना बाइक रोक दिया, पर वो बाइक पर बैठी रही |

"यहाँ क्यों रूके?" रिमसा ने कहा |

"मैडम, आपका सौंदर्य प्रसाधन का केंद्र सामने है", मैंने कहा |

"पार्लर जाने का मूड नहीं है | ऐसी जगह चलो जहाँ पेड़-पौधे अधिक हो या जहाँ बिल्कुल शांति हो ", रिमसा ने कहा |

मैं बाइक को तेज़ी से चलाते हुये छात्र संघ चौराहा होते हुए, वाटर पार्क पार करते हुए तारामंडल की तरफ़ चम्पा देवी पार्क में पहुँच गया |

"धन्यवाद", पार्क में दाखिल होते ही रिमसा ने कहा |

"मैडम सिर्फ इतने से काम नहीं चलेगा ", मैंने कहा |

मेरी बातों का उसने क्या अर्थ लगाया था ये तो मुझे नहीं पता, पर वो मुस्कुरा रही थी | चम्पा देवी पार्क में पेड़-पौधों अधिक होने के कारण वहाँ का पर्यावरण संतुलित लग रहा था |

पार्क में सन्नाटा छाया हुआ था क्योंकि उस वक़्त पार्क मैं कोई दिखाई नही दे रहा था | हम दोनों अपने-अपने पैर मोड़कर घास पर बैठ गये |

@BOOKHOUSE1

कुछ देर बाद रिमसा मेरे पैर पर अपना सर रखाकर घास पर लेट गई | उस दिन उसने लाल कलर का सलवार - सूट पहन रखा था |

"तुम अपनी वकालत कब तक पूरी करलोगे?" रिमसा ने पूछा |

"दो साल बाद, लगभग सन 2013 तक", |

"लखनऊ जाकर मुझे भूल तो नहीं जाओगे ना",उसने कहा |

उस वक़्त उसका चेहरा वाकई बहुत ही मासूम लग रहा था |

"तुमसे बिछड़ के जी पाना मुश्किल है, मेरा वकालत पूरी होते ही मैं अपनी माँ से बात करके तुम्हें अपना बना लूँगा", मैंने कहा |

"तुम्हारे माँ-बाप मान जाएँगे?" रिमसा ने पूछा |

"इकलौता हूँ, उन्हें मानना ही पड़ेगा | मैं खुद तुम्हारे भी माँ-बाप से बात करूँगा", मैंने कहा |

"मेरे मौसा~मौसी और मामा ही मेरे माँ-बाप के समान हैं |"

"मतलब? मैं नहीं समझा, थोड़े अच्छे से बताना चाहोगी", मैंने कहा |

"मेरे मॉम-डैड इस दुनिया में नहीं रहे | एक रोड एक्सिडेंट में वो दोनों लोग मारे गए",

उसने लंबी सांस लेते हुए कहा |

उन लोगों के गुज़रने के बाद मैं मामा के पास रहने लगी थी | पहली दफ़ा जब गर्मी के समय में सेवई गावँ आई थी |

उसी वक़्त ना चाहते हुए भी मैं तुमसे प्यार कर बैठी थी और तब से मैं यहाँ हमेशा आती-जाती रहती हूँ | उसकी आवाज़ लड़खड़ाते हुए निकल रही थी |

“सॉरी यार”, मैंने कहा |

उसकी आँखों से आँसू निकल रहे थे | उसके दुपट्टे से मैं उसके आँसू पोंछने लगा |

“जिनके पास माँ - बाप मौजूद हैं वो उनकी कदर ही नहीं करते, पर जिनके माँ - बाप नहीं है उन्हें पता चलता है जिंदगी के सफ़र में वो कितने अकेले जी रहे हैं”, उसने कहा |

“हाँ यार | एक बात पूछूँ?” रिमसा ने कहा |

“पूछ सकती हो”, मैंने कहा |

“किसी दलदल में मैं और तुम्हारी माँ अलग - अलग एक ही वक़्त में डूब रहे हो तो, पहले तुम किसे बचाना चाहोगे?” उसने पूछा |

उसके सवाल को परखने में मैंने कुछ देर लगा दी | मैं समझ नहीं पा रहा था की झूठा दिलासा देकर मैं उसे ख़ुश करूँ या सच बोलकर उसे तसल्ली दिलाऊँ | कैसे भी करके मैं उसके दिल को दर्द नही देना चाहता था |

@BOOKHOUSE1

“वक़ील साहब, इतना समय लगा दिये छोटी सी बात को सुलझाने में”, उसने कहा |

“मैं कुछ और सोचने लगा था”, मैंने कहा |

आख़िर में उसका जवाब मैं नहीं दे पाया था |

“मेरे माँ - बाप मुझसे बहुत प्यार करते थे, क्योंकि मैं अपने माँ - बाप की इकलौती बेटी थी | जाते - जाते उन लोगों ने मेरे लिए बहुत कुछ छोड़ दिया है |

जहाँ तक मेरे सामने दलदल वाली बात होती तो, मैं पहले अपने प्यार को सेफ करती और ऐसा नहीं कर पाती तो मैं भी उस दलदल में अपने माँ के साथ समा जाती”, रिमसा ने कहा |

मैं उसका जवाब ना देकर गलती कर बैठा था पर मैं उससे झूठ नहीं बोलना चाहता था | वो मेरे सामने ज़बरदस्ती हँसने का नाटक कर रही थी |

“लखनऊ जाने के बाद तुम कब आओगे?” रिमसा ने कहा |

“अगली बग़ावत तक”, मैंने कहा |

वो अपने हाथ पर कुछ गिनने लगी |

“दो सौ दिन के बाद आओगे”, उसने चहकते हुए कहा |

“कम हैं क्या?” |

“तुम्हारे लिए तो कम ही हैं और पहले नहीं आ सकते हो”, उसने कहा |

“कोशिश करूँगा”,|

“कॉलर काटने वाली लड़की का नाम पता चला?” रिमसा ने गंभीरता से पूछा |

“रिया नाम है उस ‘कॉलर काटने वाली लड़की का”, मैंने कहा |

“वा.....उ! वाकई तुमने उस ‘कॉलर काटने वाली लड़की’ का नाम पता कर ही लिया |

उस लड़की से मुझे कोई मतलब नहीं है, सिर्फ मैं तुम्हारे कहने पर उसके पास गया था और वो भी दोस्ती करने के लिये ”, मैंने कहा |

“ठीक है |”

“उस लड़की को मैंने अपना प्यार समझकर लेटर दिया था, पर उस वक़्त उसने मुझे इग्नोर कर दिया था | अब वो मुझे अपना दोस्त मान गई है”, मैंने कहा |

“तुम्हारे और उस रिया के बीच का सम्बन्ध बस दोस्ती तक ही सीमित होनी चाहिए”, रिमसा ने कहा |

“मेरे जीते जी मेरे दिल में तुम्हारे अलावा और कोई जग़ह नहीं ले सकता है | एक बात पूछनी थी?” मैंने कहा | “बिल्कुल पूछ सकते हो”, रिमसा ने कहा |

@BOOKHOUSE1

“आज तक तुम्हें कितने लड़कों ने प्रपोज़ किया होगा?” मैंने पूछा |

वो मुस्कुराते हुए मेरी आँखों में देखने लगी |

“तुम्हें कोई शक़ है क्या?” रिमसा ने कहा |

“हरगिज़ नहीं, पर हॉफ सेंचुरी का आंकड़ा तो पार हो ही चुका होगा”, मैंने कहा |

“हाँ, पर मैं तुम्हारी चाहत की शिकार हो चुकी हूँ | अभी भी कुछ-कुछ लफंगे लड़कों का प्रपोज़ल आ ही जाता है”, उसने कहा |

“तुम जैसी हसीनाओं को प्रपोज़ल आना कोई बड़ी बात नहीं है | ऊपर वाले ने तुम लड़कियों को बनाया ही ऐसा है”, |

“तुम ऐसा बेहूदा वाला सवाल मुझसे क्यों पूछ रहे हो?” रिमसा ने कहा |

“जब मैं रिया के पास गया था, तो उसने मुझे एक जार दिया था | जिसमें पचास से भी अधिक लव लेटर थे | मेरा भी एक लेटर था, पर मैंने सिर्फ दोस्ती का ही डिमांड किया था | क्योंकि जब मैं पहली बार उस ‘कॉलर काटने’ वाली लड़की के घर गेंद लेने गया था, उस वक़्त उस लड़की को देखकर मुझे लगा कि वो रिमसा ही है यानि तुम | पर वो लड़की रिया है | ये अलग बात है की मेरा प्यार राणा की शादी मे मिल चुका है |”

वो मेरी बातो को सुनकर मुस्कुरा रही थी |

“रिया भी तुम्हारी जैसी दिखती है | तुम्हारी शक्ल उस रिया से बिल्कुल ही रूबरू मैच खाती है | तुम्हें उससे मिलना चाहिए”, मैंने कहा |

“मैं उसे उतना अच्छे से नहीं जानती”, रिमसा ने कहा |

“एक बार मिलो तो पहले”, मैंने कहा |

“मैं उस घमंडी लड़की से नहीं मिलना चाहती हूँ ”, रिमसा ने कहा |

तभी मेरे सेल फोन की घंटी बजी, नंबर देखकर कोई लैंडलाइन का नंबर लग रहा था |

“हेलो कौन?” मैंने कहा |

“आप ‘अमन श्रीनेत’ एल० एल० बी० के स्टूडेंट बोल रहे हैं?”

“जी”,

“जल्द से जल्द पेमेंट करके अपने कॉलेज का सीट अलॉटमेंट करा लीजिए |

“किसका कॉल था?” रिमसा ने पूछा |

“मेरे कॉलेज से |”

“क्या कह रहे थे?”

“पेमेंट जमा करने के लिए कह रहे थे |”

@BOOKHOUSE1

“ये फोन किसका है?” उसने मेरा सादा फोन अपने हाथ में लेते हुए पूछा |

“चोरी का नहीं है मैडम, मेरे माँ का कहना है की मेरे वक़ालत पूरी होने तक मैं यह सादा फोन ही यूज़ करुँ”, |

“कितने भाग्यशाली है तुम्हारे माँ - बाप कि इस मॉडर्न जमाने में भी उनका आदर्शवादी लड़का उनकी हर बात मानता है और उनका कहना भी स्वीकार करता है”, रिमसा ने कहा |

“मेरे अच्छे मार्क्स आने पर माँ बहुत खुश है”, मैंने कहा |

“रिया को मिठाई खिलाये ?” रिमसा ने पूछा |

“अभी नहीं”,

“दोस्त भी मायने रखती हैं जिंदगी में”, रिमसा ने कहा |

उस वक़्त पार्क में अंधेरा सा लग रहा था | तेज़ हवाएं चल रही थी पेड़ों से पत्ते हम दोनों के ऊपर गिर रहे थे | तभी एक पत्ता रिमसा के बाल में आकर फंस गया | मैं उसकी गोद में लेटा हुआ था | मैं अपने हाथ से पत्ता निकालने के लिए उसका सिर थोडा सा झुकाया |

“क्या कर रहे हो?” उसने पूछा |

पत्ता निकालते हुए मैंने उसके हाथों में रख दिया |

“मेरे बालों की रौनक बिगाड़ दिये”, रिमसा ने कहा |

“आंधी - पानी आने वाला है, यहाँ से चलो नहीं तो हम दोनों की रौनक बारिश बिगाड़ देगी”, मैंने कहा |

मेरा जाने का मन नहीं था, फिर भी मैंने दिखावा किया था |

“होने दो बारिश, अधिक से अधिक हमें भिगा ही सकती है”, |

तभी कुछ ही पल में बारिश होने लगी | हर तरफ़ पेड़ की छाया होने के कारण बारिश की बूंदे डायरेक्ट ज़मीन पर नहीं गिर रहीं थीं | पेड़ के पत्तों से होते हुए बारिश की बूंदे ज़मीन पर टप-टपा रहीं थीं | मैं उसकी गोद में अपना सिर रखकर घास पर लेटा हुआ था | मेरे चेहरे पर पानी की बूंद टप-टपा रही थी |

मैं अपने हाथ से चेहरे पर गिरती हुई बारिश की बूंदो को रोकने की कोशिश कर रहा था | अचानक उसने अपना सिर झुका दिया | उसके खूले हुए बाल मेरे चेहरे पर पसरे हुए थे |

उस पल हम दोनों की आँखें महज़ कुछ ही दूरी पर थी | मैं उसकी आँखों में देखता रहा | अचानक ही उसने अपनी आँखे बंद कर ली और मेरे तरफ़ थोड़ा सा और झुक गई |

उसके गुलाबी होंठ से मेरे होंठ स्पर्श करने लगे थे | मैं चाहते हुए भी उसके गुलाबी होंठ को नज़र अंदाज नही कर सका | फिर मैं थोड़ी देर के लिए मगन हो गया | उसकी सांसों के चलने का मुझे आभास हो रहा था | उस तरह से किस करना आसान नहीं होता है | पार्क में हम दोनों को देखने वाला वहाँ कोई मौज़ूद नहीं था | बारिश कब की थम चुकी थी पर कुछ पता ही नहीं चला क्योंकि हम दोनों आपस में डूबे हुए थे | कुछ मिनटों बाद वो अपना सिर ऊपर करके बार-बार पार्क में इधर-उधर अपनी नज़रें दौड़ा रही थी, उसे ऐसा लग रहा था की पेड़ों के पीछे से छिपकर उसे कोई देख रहा हो |

“क्या देख रही हो? कोई नहीं है इस पार्क में हम दोनों के अलावा”, मैंने कहा |

“तुम भी मौक़ा नहीं छोड़ना चाहते हो और कहीं भी शुरू हो जाते हो”, रिमसा ने सिर हिलाते हुए कहा |

मैंने अपना आईब्रो मटकाटे हुए बोला- “चलें  फिर |”

“हाँ, मैं भी एक छोटा सा काम कर लूंगी”, उसने कहा |

“कौन सा काम?” मैंने पूछा |

“चलो जल्दी”, उसने कहा |

चम्पा देवी पार्क से निकलते हुए हम दोनों सिविल लाइन्स पहुँचकर एक कैफे में दाखिल मे हुए | मैं तेज़ी से की- बोर्ड को यूज़ करते हुए अपना फॉर्म फिलअप करने लगा |

“आराम से टाइप करो नहीं तो जल्दबाज़ी में ग़लत हो जाएगा”, उसने कहा |

“तुम्हारी मौज़ूदगी में ग़लती हो जाए, ये नामुनकिन है | यक़ीन नहीं हो रहा है तो ख़ुद ही देख लो डेस्कटॉप पर”, मैंने कहा |

“गुड, तुम्हारी टाइपिंग स्पीड बेहतर है”, रिमसा ने कहा |

एल०एल०बी० के एडमिशन के लिए मैंने फॉर्म सबमिट कर दिया | अपने कॉलेज के अकाउंट में ऑनलाइन पेमेंट करने पर सर्वर फेल हो जा रहा था |

“क्या हुआ?” उसने पूछा |

“अगले दिन पेमेंट करेंगे आज सर्वर फेल हो जा रहा है ”, मैंने कहा |

“तुम गोरखपुर में कब तक हो?” रिमसा ने पूछा |

“अगले पचास वर्षों तक”, |

मेरी बातों पर वो हँसने लगी | मैं उसे लखनऊ जाने की बात बताना नहीं चाहता था क्योंकि मेरे लखनऊ जाने की ख़बर सुनकर वो रोने लगती थी और शायद मुझसे बिना बोले चली भी जाती |

हम दोनों कैफ़े से निकलकर बाइक की तरफ़ जाने लगे | अचानक वो दूसरी साइड जाने लगी |

मैंने उसके हाथ को पकड़ते हुए रोका और कहा, “मैडम हमारी बाइक उस तरफ़ है |”

उसने मेरा हाथ अपने हाथों के सहारे उठाते हुए एक बुक स्टाल के तरफ़ इशारा किया |

“ओ!” मैंने अपना मुँह बनाते हुए कहा |

मेरा हाथ पकड़े हुए बुक स्टाल तक ले गई, फिर वो दुकान में बुक देखने में बिज़ी हो गई | कुछ क्षण में ही उसने एक किताब का चुनाव कर लिया |

“यह कैसी किताब है?” मैंने पूछा |

उसने किताब को बैग में रखते हुए अपने दोनों हाथ से दिल बनाया | उसके द्वारा किए गए इशारे को मैं समझ गया था की वह लव स्टोरी टाइप की किताब की बात कर रही है | फिर भी में उसके मुँह से सुनना चाहता था |

“आपका इशारा मेरी समझ से परे है”, मैंने नादान बनते हुए कहा |

“अरे! पागल, लव स्टोरी टाइप की किताब है”, रिमसा ने कहा |

लड़कियों के शौक़ लड़कों से बिल्कुल ही अलग होते हैं | काम लायक किताबें तो हम लड़के पढ़ नहीं पाते हैं, बाकी किताबें पढ़ना तो दूर की बात है | सोचते हुए मैं दुकान में किताबों की तरफ़ देख रहा था |

“पार्लर चलें”, रिमसा ने कहा |

बाइक पर हम दोनों बैठ चुके थे | वहाँ से पार्लर की तरफ़ जाने लगे पर रोड पर ट्रैफिक का

@BOOKHOUSE1

जाम लगा हुआ था | "आराम से बैठी रहना बाइक पर", मैंने कहा |

वो तपाक से बाइक से उतर गई |

"शाम के वक़्त रिसीव करने आ सकते हो?" रिमसा ने पूछा |

मेरे बोलने से पहले उसने कह दिया, "आ जाना" फिर बाय बोलते हुए वो पार्लर के तरफ़ पैदल ही जाने लगी | क्या लड़की है यार, पूछ कर ख़ुद ही जवाब दे गई | लड़कियों को बढ़ावा देना ख़ुद को मुसीबत में फँसने जैसा होता है फिर भी मैं इन सारी बातों को बेकार मानता था क्योंकि मुझे पर एकतरफ़ा चाहत का जादू चल गया था |

मैं ट्रैफिक में फँसा हुआ था फिर भी अपनी बाइक हिलाते हुए रिमसा को देखने की कोशिश कर रहा था | ट्रैफिक जाम होने होने के कारण आखिरकर दो सौ मीटर उसे अपने पार्लर पैदल ही जाना पड़ा था |

पार्लर के टाइम आउट होने तक मैं शहर की गलियों में चक्कर काटता रहा | ये बिल्कुल हक़ीकत था की अगर मुझे रिमसा नही मिली होती तो मैं गोरखपुर शहर की सड़कों से वाक़िफ नहीं हुआ होता | यह अलग बात है कि मेरा जन्म, कर्म या मेरा घर गोरखपुर शहर ही में है |

इसके पहले मैं कभी गोरखपुर के खास - खास ज़गह से इतना वाक़िफ नहीं था, जितना कि मैं रिमसा को पाने के बाद हो चुका था | रिमसा का इंतज़ार करने के चक्कर में गोरखपुर के लगभग सारे रोड मैं घूम चुका था |

@BOOKHOUSE1

उसके पार्लर से छूटने से पहले मैं वहाँ पहुँच चुका था | कुछ देर बाद जब वो पार्लर से आती हुई दिखाई दी तो उसके साथ एक बच्चा भी था | उस बालक को देखकर मैंने अंदाज़ा लगाया लिया की उसकी उम्र तकरीबन आठ साल होगी |

"पुलिस स्टेशन चलो", रिमसा मेरे पास आते ही बोली |

"वहाँ ! क्या करने?" मैंने पूछा|

"ये बच्चा अपने माँ - बाप से बिछड़ गया है", |

"चलो फिर", मैंने कहा |

पुलिस चौकी में उपस्थित इंस्पेक्टर ने उस बच्चे की रिपोर्ट दर्ज़ कर लिया पर थानेदार बच्चे को रखने के लिए तैयार नहीं हो रहा था | रिमसा के निवेदन करने के बावज़ूद भी थानेदार अपनी बातों पर अड़ा रहा |

"देखिये इस बच्चे के माँ - बाप बहुत परेशान होंगे", रिमसा ने कहा |

"आप इस बच्चे को अपने घर ले जाइए बच्चे के जासूस की रिपोर्ट आते ही हम आपसे संपर्क करेंगे और इस बच्चे को उसके माँ - बाप को सौंप देंगे |

आप लोग के पास बच्चा ज्यादा सुरक्षित भी रहेगा इस चौकी की तुलना में", एक इंस्पेक्टर

ने कहा |

पुलिस चौकी से चलने के लिए रिमसा ने अपनी आँखों से इशारा कर दिया | बालक को साथ लेकर हम दोनों चौक आ चुके थे |

“बच्चा कितना सुंदर है ना”, रिमसा अपने हाथ से बच्चे का गाल खींचते हुए बोली |

“ठीक है, तुम इस सुंदर बालक से शादी कर लेना”, मैंने कहा |

“अफ़सोस कर लेती पर पछतावा इस बात का है कि, पहले तुम मुझे मिले हो | ये बच्चा तो अब मिला है”, उसने मुझे चिढ़ाते हुये कहा |

“कोई बात नही हम चले जाते हैं”, मैंने कहा |

“तुम्हें इस बालक से जलन क्यों है?” रिमसा ने भावुक होकर कहा |

“सुंदर बोली इसलिए”,|

“तुम भी तो सेक्सी हो पर अंदर से |”,

प्यारे बच्चे की तरफ़ रिमसा इशारा करते हुए बोली – “क्या ख़्याल है आपका इस बच्चे के बारे में, कहाँ सेटल किया जाये?”,

“जब तक मैं यहाँ हूँ, ये मेरे घर आराम से रह सकता है|”

@BOOKHOUSE1

“ठीक है, बाय बोलते हुए उसने बच्चे को मेरे बाइक पर बैठा दी और ख़ुद ऑटो में जाकर बैठ गई अपने घर जाने के लिए |

बच्चे को लेकर मैं अपने घर पहुँचा | “किसका बच्चा उठा लाए हो?” माँ ने पूछा |

“गोल घर वाले चौराहे के पास ये अकेले भटक रहा था बेचारा”, मैंने कहा |

“बच्चे को पुलिस चौकी ले जाना चाहिए”, माँ ने कहा |

“मैं वहाँ गया था  पर पुलिस वालों ने रिपोर्ट दर्ज़ करके बच्चे को पास रखने से मना कर दिया है ”, मैंने कहा |

“जो अपनों के नहीं होते वो किसी के भी नहीं होते है बेटा”, माँ ने कहा |

शाम का वक़्त था | तभी एम्बुलेंस जैसा साईरन बजता हुआ घर के बाहर सुनाई दिया |

माँ ने घबराते हुए कहा, “लगता है पुलिस की गाड़ी आई है|”

जब मैं घर से बाहर निकला तो मेरे घर के सामने दो गाड़ियां खड़ी थी | एक पुलिस की थी, रात के अंधेरे में गाड़ी पर लगी लाइट चमचमा रही थी तथा दूसरी गाड़ी सफ़ेद कलर की सफारी थी |

“’अमन श्रीनेत’ का घर कौन सा है?” एक हवलदार ने पूछा |

“आप ठीक जगह खड़े हैं और आप जिसका नाम पूछ रहे हैं वो बंदा आपके सामने खड़ा है”, मैंने कहा |

तभी एक महिला ने चीखते हुए कहा – “मेरा एक आठ साल का बच्चा था, जो गोल घर चौराहे पर मुझसे बिछड़ गया है |”

वो बच्चा मेरी माँ के साथ घर से बाहर निकला, बच्चा अभी दरवाज़े तक आया था कि अचानक वो “माँ कहते हुए चिल्लाया”, और दौड़ने लगा |

दौड़ते-दौड़ते वो उस महिला के पास चला गया जो बिलखते हुए रो रही थी | रात के समय गाँव में पुलिस का आना मामूली सी बात नहीं है, इसलिए मेरे घर के आस-पास बहुत सारे लोग इकट्ठे हो चुके थे |

उस बच्चे के माँ - बाप मुझेपर आभार व्यक्त कर रहे थे | तभी एक इंस्पेक्टर ने ऊँची आवाज़ में बोलो – “आप सभी गाँव वालों को ‘अमन श्रीनेत’ पर गर्व होना चाहिए क्योंकि उसने एक बिछड़े हुए बालक को उसके माँ - बाप तक पहुँचाकर एक नेक काम किया है |”

वहाँ पर जितने लोग इकट्ठे हुए थे, वो सारे लोग तालियाँ बजा रहे थे | मुझे उस वक़्त रिमसा पर गर्व हो रहा था क्योंकि उस पल जो भी हो रहा था सब रिमसा के कारण ही हो रहा था |

जो इंस्पेक्टर मेरे सामने खड़ा था उसने ही रिपोर्ट लिखवाया था, अपने थानेदार से कहकर |

@BOOKHOUSE1

इंस्पेक्टर धीरे-धीरे मेरे पास आया |

“आपकी मैंडम कहाँ हैं?” उसने धीरे से मेरे कान में कहा |

“वो अपने घर होंगी” मैंने हल्की मुस्कराहट के साथ कहा |

“मेरे लिए कोई सेवा हो तो ज़रूर याद करना”, इंस्पेक्टर ने गाड़ी की तरफ़ जाते हुए कहा |

बच्चा अपने माँ - बाप के पास खड़ा होकर चिल्लाया – “दीदी कहाँ है?”

सारे लोग सोचने लगे ये “दीदी कौन है?”

मैं तो डर गया था कि बच्चा आगे कुछ ना बोले वरना मेरा और रिमसा की पोल सबके सामने खुल जायेगा |

“सब अपने-अपने घर जाओ!” इंस्पेक्टर ने पुलिस-गिरी आवाज़ में चिल्लाया |

सैकंडो में लोग वहाँ से अपने - अपने घर चले गए | मेरे घर के सामने से दोनों गाड़ियां दफ़ा हो चुकी थी |

“तुम पर गर्व है बेटा”, पिताजी ने कहा |

माँ मेरी पीठ पर थप-थपाते हुए अंदर चली गई | सुबह होते ही मैं शास्त्री चौक पहुँचकर

रिमसा का मैं बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था, ताकि रात वाली बात मैं उसे बता सकूँ |

वाक़ई चाहत वाला इंतज़ार बहुत बुरा होता है | उसे ऑटो से उतरते ही मैंने देख लिया, उसने भी मुझे देख ही लिया था |

शास्त्री चौक पर उसके स्टोपेज के किनारे मैं बाइक लगाकर खड़ा था ताकि वो मुझे आसानी से ना देख सके पर उसकी निग़ाहें शायद मुझ पर ही टिकी थी | मेरे करीब आकर बाइक पर बैठ गई |

“कुछ वक़्त के लिए खाली हो?” मैंने पूछा |

“हाँ, पर क्यों?”

“कैफ़े चलना है”,|

“चलो फिर”, उसने मेरे कंधे पर अपना हाथ रखते हुये कहा |

चौक से हम दोनों कैफ़े वाली दुकान के सामने पहुँच चुके थे | बाइक से उतरते ही वो टर्न होने के बदले सीधी जाने लगी |

“पिछली बार वाला कैफ़े इधर है”, मैंने कहा |

“पिछली बार तथा हर बार वाला बुक स्टाल उधर रहा”, उसने कहा |

मेरी बातों की धज्ज़ियाँ उड़ा कर वो पहले अपना ही काम सलटाना चाहती थी | उसके साथ मैं भी बुक स्टॉल तक पहुँच चुका था |

पिछले बार की ली हुई किताब उसने वापस की और दूसरी किताब खरीदते हुए अपने बैग में रख ली |

“पिछली बार की किताब तुमने पढ़ ली क्या?” मैं चौंकते हुए बोला |

“इसमें चौंकने वाली क्या बात है?” रिमसा ने कहा |

उसकी किताब पढ़ने की रफ़्तार को सुनकर मैं अपने सिर के बाल को खींचने लगा |

“किसी उलझन में फँस गए क्या?” उसने पूछा |

“इतनी मोटी किताब, इतनी जल्दी कैसे पढ़ ली”, मैंने कहा |

“मैं कोई भी किताब आधी ही पढ़ती हूँ”, उसने कहा |

“पर आधी ही क्यों?”|

“ये मेरा शौक है” |

“आधी किताब पढ़ना कौन सा शौक है?” मैंने पूछा |

“जिनके शौक पूरे हो जाते हैं, उनके सपने अधूरे रह जाते हैं | और मैं ये नहीं चाहती हूँ की मेरा सपना अधूरा रहे क्योंकि मेरा सपना किसी से जुड़ा हुआ है”, उसने कहा |

@BOOKHOUSE1

उसकी बातें सुनकर मुझे सदमा सा लगा |

“क्या तुम मुझे छोड़कर चली जाओगी?” मैंने कहा |

“पागल, मैं तुम्हे कभी नहीं छोड़ सकती हूँ और अगर तुमने ऐसा कुछ किया तो मैं तुम्हारी जान ले लूँगी”, उसने गम्भीरता से कहा |

मुझ पर जब भी वो अपना हक़ ज़ाहिर करती थी उस वक़्त मुझे बहुत ही अच्छा लगता था |

फिर भी मैं सस्पेंस में पड़ा हुआ था आखिर वो किस सपने की बात कर रही थी |

“तुम्हारा सपना किससे जुड़ा है?” मैंने भावुकता से पूछा |

“वक़्त आने पर तुम्हें पता चल जाएगा | मेरे लिए सिर्फ इतना ही करना की मैं तुम्हारे दिल में बनी रहूँ | मेरे लिए इतना ही बहुत है क्योंकि तुम्हारे अलावा मेरा इस दुनिया में कोई भी खाश अपना नहीं है |

सब लोग मुझसे अपने स्वार्थ के लिए मतलब रखते हैं, मामा, मौसी और जो भी हैं |”

वो अपने बारे में कुछ बताना नहीं चाहती थी, लेकिन अगर बताना भी शुरु करती तो परेशान हो जाया करती थी | “तुम इतना परेशान क्यों हो जाती हो?” मैंने पूछा |

“सब यहीं पूछ लोगे”, रिमसा ने कहा |

@BOOKHOUSE1

“सॉरी”, बोलते हुए हम किताब वाली दुकान से कैफे वाले दुकान में दाखिल हो चुके थे | फिर एक सिस्टम के सामने हम दोनों बैठ गए | मैंने उसके चेहरे से पता कर लिया था कि पहले के लिहाज़ा उसके चेहरे पर उदासी नहीं दिख रही थी | “तुम कुछ स्वार्थी लोगों के बारे में कुछ बताना चाहती थी”, मैंने कहा |

“मेरे माँ-बाप जाते-जाते मेरे लिए बहुत सारे फ्लैट, प्रॉपर्टी छोड़ गए हैं | मेरे पिताजी एक बिल्डर थे | ‘सौ’ से अधिक फ्लैट मेरे पिता जी के हैं | सारे फ्लैटों का भाड़ा मुझे मिलता है, जिसे पाने के लिए मेरे मौसा-मौसी तथा मामा मुझ से मतलब रखते हैं | मौसा जी की दिल्ली में ट्रैवल एजेंसी है, जिसमें सारी गाड़ियाँ मेरे पिताजी के पैसे की ही है | मेरे यहाँ होने के कारण मामाजी फ़्लैटो का भाड़ा वसूली करके मनमानी खर्चा करते होंगे | मैं अगर यहाँ हूँ तो सिर्फ तुम्हारे लिए” बोलते ही वो मायूस हो गई |

उसकी आवाज़ लड़खड़ाते हुए निकल रही थी | उस वक़्त ऐसा लग रहा था कि वो कैफ़े में ही रो देगी |

“तुम मुझे भूल तो नहीं जाओगे ना लखनऊ जाकर”, उसने दोबारा कहा |

“मरने के बाद भी नहीं भूल सकता हूँ”, मैंने कहा |

मैं उसके मासूम चेहरे को निहार रहा था | मेरा ध्यान भटकाते हुए उसने मुझे डेस्कटॉप की तरफ़ इशारा करते हुए कहा - “तुम कैफ़े में हो किसी पार्क में नहीं |”

मैं की–बोर्ड और माउस के द्वारा ऑनलाइन पेमेंट करने लगा |

“किसके अकाउंट में पैसा ट्रांसफर कर रहे हो?” उसने पूछा |

“अपने कॉलेज के अकाउंट में कर रहा हूँ | मेरी सीट लॉक हो चुकी है | अगले दिन मुझे लखनऊ जाना है”,|

इतना सुनते ही उसके चेहरे पर मातम सा छा गया | वो मुझसे दूर होना नहीं चाहती थी पर नियति ने हम दोनों को मज़बूर कर दिया था, एक दूसरे से अलग होने के लिए |

“उस बालक का क्या हुआ?” उसने पूछा |

“अरे हाँ! मैं उस बालक के बारे में तुम्हें बताने ही वाला था पर तुमसे मिलते ही मैं ख़ुद को भी भूल जाता हूँ”, मैंने कहा |

“ठीक है बाबा, क्या हुआ बताओ तो सही ?”, उसने कहा |

“शाम के वक़्त पुलिस के साथ बच्चे के माँ - बाप मेरे घर आए हुए थे | पुलिस की गाड़ी की आवाज़ सुनकर गाँव के सारे लोग वहाँ इकट्ठे हो गए थे | जिस इंस्पेक्टर ने रिपोर्ट दर्ज़ करवाया था, वो तुम्हारे बारे में पूछ रहा था और प्रशंसा भी कर रहा था | जाने से पहले बालक ने चिल्लाते हुए तुम्हारा ज़िक्र किया दीदी कहते हुए |

सारे लोग शांत हो गए थे बच्चे की आवाज़ सुनकर | मैं तो बिल्कुल डर ही गया था कि बच्चा हम दोनों की पोल सबके सामने ना खोल दे |

@BOOKHOUSE1

तब तक इंस्पेक्टर ने बचाव करते हुए चिल्लाया और वहाँ के सभी लोगों को घर जाने को कहा | फिर इंस्पेक्टर अपनी दोनों आँखें मटकाते हुए वहाँ से चला गया | लोगों की उपस्थिति मे अगर वो इंस्पेक्टर ना होता तो, हमारी पोल खुल जाती सारे गाँव के लोगों के सामने |

सारे पुलिस वाले एक जैसे नहीं होते है, उसने यह साबित कर दिया था | फिर जब मैं अपने घर के अंदर गया तो माँ - बाप भी मेरी प्रशंसा कर रहे थे पर उस वक़्त मुझे तुम्हारी कमी खल रही थी |”

मेरे बातों को सुनकर उसके चेहरे पर थोड़ी सी मुस्कान दिखाई पड़ रही थी, पर ना जाने वो सचमुच हँस रही थी या मेरे सामने दिखावा कर रही थी क्योंकि कुछ ही देर पहले वो मेरे लखनऊ जाने की ख़बर सुनकर ख़ामोश थी |

मेरी ओर देखते हुए उसने अपना सिर मेरे कंधे पर रख दिया | कुछ देर में ही पेमेंट सक्सेसफुल हो गया |

“तुम्हें पार्लर जाना होगा?” मैंने कैफ़े से बाहर निकलते हुए पूछा |

“उतना खास ज़रुरी नहीं है, जितना की तुम समझ रहे हो”, रिमसा ने कहा |

उसके साथ रहने से इतना तो मुझे पता चल चुका था की वो मेरे किसी भी बात पर खुलकर

विरोध नहीं करती थी |

कैफ़े से बाहर आकर वो मेरे बाइक पर बैठ गई फिर मैं बाइक ड्राइव करते हुए शास्त्री चौक होते हुए, राजघाट पुल पार कर ही रहा था तभी अचानक रिमसा तपाक से बोल पड़ी - "हम दोनों जा कहाँ रहे हैं?"

"मेरे घर", मैंने कहा |

"तुम्हारे घर!", उसने घबराते हुए कहा |

फिर वो शांति से मेरे बाइक पर बैठी रही | एन० एच०-29 रोड होते हुए मैं अपने घर पहुँच गया | हम दोनों घर में दाख़िल हुए | मैं रिमसा को अपने रूम में ले गया |

"घर तो खाली है", रिमसा बेड पर बैठते हुए बोली |

"माँ - बाप दोनों लोग मंदिर गए हुए हैं ताकि मुझे आसानी से एडमिशन मिल जाये , इसलिए वो लोग मंदिर गए हुए हैं",|

"अब तुम लखनऊ चले जाओगे ना", रिमसा ने मायूस होते हुए कहा |

मैंने कोई जवाब नहीं दिया तभी गलियारों से होते हुए दरवाजे के तरफ से दस्तक हुई |

"बेटा तुम कहाँ हो?" माँ की आवाज थी |

"माँ, मैं रूम में हूँ |

@BOOKHOUSE1

"तेरे एडमिशन का क्या हुआ?" रूम में प्रवेश लेते हुए माँ ने पूछा |

"मेरा एडमिशन हो गया है | कॉलेज के अकाउंट में मैंने फीस भी ट्रांसफर कर दिया है",|

मेरे माथे पर माँ ने ख़ुश होकर चूम लिया |

"अरे! ये लड़की कौन है?" रिमसा के तरफ इशारा करते हुये बोली |

"ये मेरी दोस्त है, इसी के दुकान से मेरा एडमिशन वाला काम हो पाया है", मैंने कहा |

"ठीक है, पर एक लड़की किसी जवान लड़के की दोस्त नहीं हो सकती | सिवाए बीवी या बहन होने के", माँ ने कहा |

"तुम भी ना माँ", मैंने कहा | और कैसे भी करके माँ को रिमसा के सामने से दूर करना चाहा क्योंकि मुझे पता था की मेरी उपस्थिति के बावज़ूद वो रिमसा को ज़रूर डाटेंगी | मैं वहाँ इधर-उधर की बातें गपशप करने लगा |

"शांत हो जाओ चाय लाती हूँ", बोलते हुए माँ किचन में चली गई |

"रिमसा, मेरे माँ की बातों का बुरा मत मानना", मैंने कहा |

"तुम्हें डाँटने वाली तुम्हारी माँ है पर मुझे डाँटने वाला तो कोई नहीं है, फिर मैं बुरा क्यों मानूँगी आंटी की बातों को ", रिमसा ने कहा |

किचन से माँ ने मुझे फिर बुलाया और किचन में ही मुझे लेक्चर देने लगी |

“देखो दोस्ती यारी पर कम ध्यान दो | मेरा कहना भूल गए क्या?” माँ ने कहा |

“मुझे याद है और अगले दिन ही मुझे यहाँ से जाना है”, माँ से कहते हुए मैं किचन से अपने रूम में चला आया जहाँ रिमसा बैठी हुई थी |

किचन से सारी बातें रिमसा सुन चुकी थी पर वो बिस्तर पर रखी डायरी के पेज़ को ऐसे पलट रही थी जैसे कि डायरी पढ़ने में वो कितना बिज़ी है |

“रिमसा”, मैंने उसे आवाज़ दी |

“क्या है?” उसने चौकते हुए कहा |

उस वक़्त वो नाटक ही कर रही थी, ये दिखाने के लिए की उसने किचन की कोई बात नहीं सुनी है |

“ये डायरी किसकी है?” रिमसा ने पूछा |

“है तो मेरा, पर तुम भी अपना समझ सकती हो”, मैंने कहा |

उस डायरी में ‘रिमसा’ के अलावा ‘रिय’ का भी ज़िक्र था | मैं उसे अपनी डायरी पढ़ने के लिए मना भी नहीं कर सकता था क्योंकि वो कुछ और ही समझ जाती |

मेरे डायरी को पढ़कर वो हँस रही थी क्योंकि ‘कॉलर काटने वाली रिया’ की सारी करतूतें मैं उस डायरी में लिख दिया था | कुछ ही देर में उसने मेरी डायरी पढ़ ली |

“रिया से तुम्हारा कोई चक्कर तो नहीं है ना?” रिमसा ने पूछा |

“इतनी मुलाक़ात के बावज़ूद तुम मुझ पर बेकार का शक़ कर रही हो”, मैंने कहा |

“नहीं जी सिर्फ पूछ रही थी”, उसने मुस्कुराते हुए कहा |

माँ टेबल पर चाय रखी और रिमसा को तिरछी नज़र से घूरते हुए रूम से बाहर चली गई |

“मुझे घर भी जाना है” रिमसा ने कहा |

वो भी जाना नहीं चाहती थी क्योंकि उसे पता था की अगले दिन मेरी ट्रेन है और यह हमारी अंतिम मुलाक़ात होगी इस साल की, फिर भी वो मेरे सामने जाने का दिखावा कर रही थी |

“घर जाने की कोई जल्दी है क्या? इसे भी अपना घर समझ सकती हो”, मैंने कहा |

“पानी मिलेगा”, उसने कहा |

मैं पानी लेने किचन में चला गया | किचन में वो कब पहुँच गई मुझे पता ही नहीं चला | उसने मुझे अपनी बाँहों में पीछे से पकड़ लिया फिर मैंने अपने हाथों से उसे पानी पिलाया | कुछ देर बाद रूम में हम दोनों वापस आकर बातें करने लगे | शाम की लाली ढलने से पहले मैं उसे बाइक से सेवई बाजार तक छोड़ने गया था |

@BOOKHOLIC21

बाइक से उतरकर मेरे पास कुछ पल तक वो चुपचाप खड़ी थी |

“कल मैं जा रहा हूँ”, मैंने कहा |

वो इतनी शांति से खड़ी थी जैसे की वो गूंगी हो गई हो |

“कुछ तो बोलो”, मैंने कहा |

“जाने से पहले तुम रिया से मिल लेना”, रिमसा ने हकलाते हुए कहा |

तब तक ऑटो आ गया फिर वो ऑटो में बैठकर चली गई | उस पल मैं रिमसा की हर एक चीज़ को ध्यान से देख रहा था क्योंकि रिमसा से अगली मुलाक़ात छह-सात महीने बाद ही होना संभव था |

ऑटो के तरफ़ जाते वक़्त वो एक बार भी बार मेरे तरफ़ पलट के पीछे नही देखी और ऑटो में बैठकर मेरी आँखों के सामने से ओझल हो गई | उसके पीछे ना पलटने से ये कन्फर्म हो गया था कि वो रो रही होगी | इसके पहले भी मैंने उसे रोते हुए देखा था | मैं सोचने लगा की आखिर रिया और रिमसा में कनेक्शन क्या है, जो रिमसा हमेशा रिया की प्रशंसा सुनने के बावज़ूद भी उससे जलती नहीं थी, जबकि सारी लड़कियां ऐसी नहीं होती हैं |

रिया से मिलना मैं भूल गया और अगले सुबह मैं अपने शहर गोरखपुर से प्राइवेट बस के द्वारा लखनऊ पहुँच चुका था | कॉलेज में अपने सारे डाक्यूमेंट्स का वेरिफिकेशन कराकर सबमिट कर चुका था |

@BOOKHOUSE1

हॉस्टल अलॉट करने के बाद मैं गोरखपुर रिटर्न आ चुका था क्योंकि मेरे कॉलेज में अभी सारे स्टूडेंटस का सर्टिफिकेट वेरिफिकेशन चल रहा था | क्लासेस स्टार्ट होने में दो हफ़्ते का टाइम था |

अगली सुबह मैं शास्त्री चौक पहुँच चूका था रिमसा को सरप्राइज देने के लिए, पर वो आई नहीं | उसके आने का टाइम ओवर हो चुका था | मैंने परम को फोन किया |

“हाँ,अमन बोलो |”

“कहाँ हो?” मैंने पूछा |

“गोल मार्केट में गर्लफ्रेंड के साथ हूँ”, परम ने कहा |

“नेचुरल स्पा वाले पार्लर के सामने जल्दी पहुँचो साथ में अपनी गर्लफ्रेंड को ले लेना”, कहते हुए मैंने कॉल कट कर दिया |

जब मैं रिमसा के पार्लर के सामने पहुँचा तो, परम अपनी गर्लफ्रेंड गीता के साथ मेरा इंतज़ार कर रहा था |

“तुम इतने परेशान क्यों हो?” परम ने पूछा |

“रिमसा का पता लगाना है”, मैंने कहा |

“ये मेरी गर्लफ्रेंड ‘गीता’ है”, परम ने अपनी गर्लफ्रेंड से मेरा इंट्रो कराया पर मैं सबसे पहले अपनी रिमसा का पता लगा लेना चाहता था | मुझे डर इस बात था की कही वो अपने मामा के घर न चली गई हो |

“मेरी एक हेल्प कर सकती हो”, मैंने गीता के तरफ देखते हुये कहा |

“हाँ क्यों नहीं कर सकती”, |

“सामने वाले पार्लर में रिमसा नाम की एक लड़की आती थी | उसके बारे में पता करना है”, मैंने कहा |

गीता पार्लर में जा चुकी थी | उसके लौटने का मैं इंतज़ार करने लगा मुझे घबराहट सा हो रहा था ये सोचकर की कही रिमसा अपने मामा के पास ना चली गई हो | गीता पार्लर से बाहर निकलकर हम दोनों की तरफ़ आने लगी |

मैं रिमसा की ख़बर सुनने के लिए उसकी तरफ़ तेज़ी से बढ़ने लगा | मेरे साथ-साथ परम भी चल रहा था |

“क्या हुआ, कुछ पता चला?” मैंने गीता के तरफ देखते हुये कहा |

“नहीं, ‘रिमसा’ सात-आठ दिनों से पार्लर नहीं आ रही है”,|

“धन्यवाद!” मैंने कहा |

@BOOKHOUSE1

मैं दौड़ता हुआ बाइक के पास पहुँचा | फिर जल्दबाज़ी करते हुए बाइक स्टार्ट करके मैं जाने लगा |

“तुझे हो क्या गया है?” परम ने चिल्लाते हुए कहा |

“शाम को मेरे घर आना”, बोलते हुए मैं वहाँ से रिया के घर जाने के लिए तेज़ी से बाइक ड्राइव करने लगा क्योंकि रिमसा अंतिम मुलाक़ात के दौरान रिया से मिलने के लिए बोली थी | पर सीरियस ना होते हुए रिया से मिले बिना मैं लखनऊ चला गया था |

“बड़े दिनो के बाद आए हो, कोई चक्कर तो नहीं है ना”, रिया ने कहा |

“उस चक्कर का नाम रिमसा है, वो बिल्कुल तुम्हारी जैसी ही दिखती है | पर वो इस वक़्त कहाँ है? कुछ पता नहीं” |

मेरी साँसें तेज़ी से चल रही थी | गिलास में पानी भरते हुए रिया ने मुझे दिया |

“धन्यवाद!”

“सच में तुम्हारी ‘रिमसा’ मुझ जैसी दिखती है”, रिया ने कहा |

“इसके पहले मैंने तुम्हें रिमसा समझकर ही छेड़ा था | क्या तुम भूल गई?” मैंने कहा |

“कैसे भूल सकती हूँ कि तुम मुझे मारने के लिए एक छोटे बालक से मेरे पास पत्थर भिजवाये थे | वो तो मुझे हमेशा याद रहता है”,|

“क्या तुम रिमसा को जानती हो?” मैंने पूछा |

“नहीं, पर मेरे अपनों ने बताया है कि मेरी जैसी शक्ल वाली एक और भी लड़की है और तुमने आज उस लड़की का नाम भी बता दिया”, रिया ने कहा |

“तुम दोनों को एक साथ खड़ा कर दिया जाए तो मैं कंफ्यूज़ हो जाऊँगा, अपनी रिमसा को पहचानने में”, मैंने कहा |

“मैं तुम्हारी ‘रिमसा’ की ज़गह ले सकती हूँ?” रिया ने हल्की मुस्कान के साथ पूछा |

“कभी सोचना भी मत | रिमसा कहाँ और तुम कहाँ”, मैंने कहा

अच्छा ऐसा है क्या ?

रिया का मुँह देखकर मुझे एहसास हो रहा था की मैंने कुछ ग़लत बोल दिया है |

“मेरे कहने का मतलब वह नहीं है जो तुम समझ रही हो | तुमने मुझे ख़ुद कहा था कि हम सिर्फ दोस्त रहेंगे | क्या तुम अपनी कही हुई बात भूल गई?” मैंने कहा |

“मुझे याद है पर मेरा प्रमोशन भी तो ज़रूरी है”, |

मैंने कोई जवाब नहीं दिया |

“ये तुम्हारे लिए एक लेटर आया हुआ है और रिमसा कहीं गई नहीं है | घर पर ही होगी”, रिया ने कहा |

@BOOKHOUSE1

“उसके बारे में तुम्हें कैसे पता?” |

“ये लेटर तुम्हारी रिमसा ने ही मेरे पास भिजवाया था तुम्हारे लिए पर तुम आज आए हो”, रिया ने कहा |

“इस लेटर में क्या लिखा है?” मैंने पूछा |

“खुद ही पढ़ लो”, बोलते हुए उसने मेरे हाथ में रिमसा का लेटर थमा दिया |

मैं लेटर खोला और पढ़ने लगा |

“हम दोनों का मिलना तय है पर अभी मुश्किल है | तुम चाहे मुझसे कितना भी दूर चले जाओ, तुम्हारी उपस्थिति को मैं महसूस कर लूंगी, चाहे तुम जहाँ भी रहोगे” |

उसका लेटर पढ़कर मैं यक़ीन नहीं कर पा रहा था कि, वो मुझसे अगली बग़ावत से पहले मिल पाएगी या नही क्योंकि मैंने उसे यही बताया था कि हमारी अगली मुलाक़ात बग़ावत के वक़्त ही होगी | मेरी सांसे तेज़ी से चल रही थी |

“इतने परेशान क्यों हो रहे हो?” रिया ने पूछा |

“मैं रिमसा को सरप्राइस देना चाहता था | इसलिए मैं उसे चौबीस घंटे में वापसी वाला बात मैंने उसे नही बताया था ”, मैंने कहा |

“तुम्हें अपने प्यार पर भरोसा नहीं है ?” रिया ने कहा |

“बहुत है पर कैसे यक़ीन करलूँ कि अगले पल रिमसा मुझे मिलने वाली है”, मैंने कहा |

“तुम अपनी रिमसा से जहाँ मिला करते थे वहाँ समय से पहुँच जाना, वो ख़ुद मिल जाएगी”, रिया ने कहा |

“तुम इतने कॉन्फिडेंस के साथ कैसे कह सकती हो?” |

“लेटर ठीक से पढ़ो और थोड़ा धीरज रखो”, |

मैं रिया के घर से निकलकर ग्राउंड के बाहर खड़ा होकर मैच देखने लगा | ग्राउंड में सब लड़के मैच खेल रहे थे | तभी एक लड़का रिया के घर के अंदर से गेंद लेकर निकला, उसके शर्ट का कॉलर कटा हुआ था |

परम ने मुझे मैच खेलने के लिए बुलाया पर मैं वहाँ से सीधे अपने घर आ गया | रिमसा के लेटर को मैं बार-बार पढ़ता रहा |सौ से भी अधिक बार मैं उस लेटर को पढ़ चुका था | लेकिन लेटर वाला बात मुझे सिर्फ कल्पना करने जैसा लग रहा था | शाम के वक़्त परम बियर लेकर आया था | अपना बियर पीने के बाद मैं परम का भी बियर गटक गया |

“तुझे हो क्या गया है यार?” परम ने कहा |

“यार रिमसा कहाँ चली गई है? उसका कुछ पता नहीं चल रहा है”, मैंने कहा |

“तुम कितनो भी बियर पी लोगे, फिर भी रिमसा के प्यार के नशे के सामने सब कुछ फ़ीका पड़ जाएगा”, परम ने कहा |

“कल तुम खाली है?” मैंने कहा |

“पूछकर मुझे शर्मिंदा क्यों कर रहे हो, काम बताओ”, परम ने कहा |

“शास्त्री चौक पर इंतज़ार करना है किसी का”,|

“ठीक है”, बोलते हुए परम चला गया |

अगली सुबह मैं और परम चौक के पास रिमसा के आने का इंतज़ार करने लगे | ज्यों-ज्यों समय दस बजने के करीब होता जा रहा था उतना ही मैं घबराया जा रहा था, क्योंकि अगर वो चौक पर दस बजे तक नहीं पहुँची, तो मैं उसे कहाँ ढूँढूंगा |

यही सब सोचकर मैं परेशान हो रहा था | मेरे फ़ोन में दस बज चुके थे | मेरा ध्यान उस स्टॉपेज पर आने वाले सारे ऑटो पर केंद्रित था | तभी पीछे से एक लड़की ने गोल मार्केट जाने का रास्ता पूछा | “यार इस लड़की को पता बता दो”, मैंने परम से कह दिया और चौक की तरफ़ देखने लगा |

“ठीक है”, परम ने कहा |

उस वक़्त चौक पर आने वाले ऑटो के सिवाए मुझे कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था |

@BOOKHOUSE1

“किसे देख रहे हो?” परम ने पूछा |

“जानते हुए भी अनजान क्यों बन रहे हो?”|

“अच्छा, भाभी की राह देख रहे हो”, परम ने हँसते हुए कहा |

मेरे पीछे से फिर एक लड़की ने आवाज़ लगाई - “इधर कोई पार्लर है क्या?”

“ये लड़की अभी गई नहीं क्या?” मैंने कहते हुए तेज़ी से पीछे की ओर अपना सिर घुमाया | “दो बार एड्रेस पूछने वाली लड़की रिमसा ही थी”,परम और रिमसा दोनों हँस रहे थे |

“कहाँ चली गई थी?” मैंने पूछा |

“घर पर ही थी और घर से ही आ रही हूँ | वैसे भी तुम तो ‘दो सौ दिन’ बाद वापस आने वाले थे”, रिमसा ने कहा |

“मैं तुम्हें सरप्राइज़ देने वाला था | तुम पार्लर जाना बंद कर दी?” मैंने कहा |

“हाँ, थोड़ी तबीयत खराब हो गई थी”, उसने कहा |

“अच्छा सात-आठ दिन वाला आपका तबीयत खराब हो गया था”, परम ने हल्की मुस्कान के साथ कहा |

परम की बातों पर वो अपना सिर झुकाकर मुस्कुरा रही थी |

@BOOKHOUSE1

“ये सात-आठ दिन वाला तबीयत खराब होने का क्या मतलब है?” मैंने परम की तरफ़ देखते हुए पूछा |

“गीता की बात भूल गए | जब वो पार्लर से लौटी थी तो उसने यही कहा था कि रिमसा मैडम सात-आठ दिनों से पार्लर नहीं आ रहीं हैं”,|

“हाँ तो इसमें हँसने वाली कौन सी बात है?” मैंने पूछा |

“वक़ालत की धाराओं के बारे में जानने के साथ-साथ बायोलॉजी के नियमों को भी जाना कीजिए”, परम ने कहा | “उस वक़्त रिमसा अपने मुँह पर हाथ लगाकर हँस रही थी |

“अब तो मैं जा ही सकता हूँ”,परम ने कहा |

“तुम अकेले कहाँ जाओगे?” मैंने कहा |

“गीता के पास”,परम धीरे से मेरी तरफ़ आँख मारते हुए चौक से चला गया |

“तुम्हें तो पार्लर जाना होगा”, मैंने कहा |

“कोई ज़रूरी नहीं है | तुम चाहो तो बिग बाज़ार भी चल सकते हो”, उसने कहा |

“सचमुच”, |

हल्की मुस्कान के साथ रिमसा ने हामी भर दी | मैं बाइक को स्टार्ट किया फिर वो मेरे पीछे बैठ गई | चौक से होते हुए, छात्र संघ चौराहा पार करते हुए “मोहद्दीपुर” वाले बिग

बाज़ार में हम दोनों पहुँच चुके थे | मॉल के अंदर स्टील चेयर पर हम दोनों बैठ गए |

चौक पर तुम्हें इंतज़ार करते वक़्त पसीना क्यों आ रहा था?" रिमसा ने पूछा |

"मैं डर गया था कि तुम अपने मामा के पास ना चली गई हो, क्योंकि तुम्हें तो यही पता था की मैं लखनऊ से बग़ावत के वक़्त ही लौटूँगा | बस यही सोचकर मैं परेशांन था |"

"लेटर को ध्यान से नहीं पढ़े क्या?"

"तुम्हारे लेटर को मैं सौ से भी अधिक बार पढ़ चुका हूँ", मैंने कहा |

"इतना कुछ खास भी नहीं था उस लेटर में की उसे सौ बार कोई पढ़े", उसने कहा |

"तुम डायरेक्ट मुझे भी तो लेटर दे सकती थी",|

"दे सकती थी, पर उस वक़्त मेरे हालात ठीक नहीं थे", रिमसा ने कहा |

"लेटर देने में हालात से क्या लेना-देना है?" |

वो अपने हाथ को मेरे मुँह पर रखते हुए बोली – "जिस दिन जान जाओगे, तुम अपने आप को रोक नहीं पाओगे |"

"तुम मेरी कमज़ोरी का फ़ायदा मत उठाओ", मैंने कहा |

"तुम्हें जितना बुरा मेरे बारे में सोचना है सोच लो, मैं कोई सफ़ाई पेश नहीं करुँगी", रिमसा ने अपना सिर ऊपर करते हुए कहा |

@BOOKHOUSE1

"मुझे बुरा सिर्फ इस बात पर लगा की तुम्हारा लेटर मुझे रिया से मिला है", तुम हमकों डायरेक्ट भी दे सकती थी |

"मैं अपनी बात तुम तक पहुँचाना चाहती थी | परम और रिया के अलावा मैं तुम्हारे अन्य किसी दोस्त को नहीं जानती हूँ | इसलिए मैं रिया से तुम तक लेटर भिजवा दि |

"रिया से तुमने लेटर क्यों भिजवाया?" मैंने कहा |

"एक ही बात को बार-बार मत दोहराओ, वरना मैं यहाँ से सच-मुच चली जाऊँगी हमेशा के लिए", इतना कहकर वो मेरे कंधे पर अपना सिर रखकर सिसकने लगी |

मैं अपने हाथों को उसके दोनों गालों पर रखकर, उसके सिर को उठाया तो वो रो रही थी | उसकी आँखों से आँसू आ रहे थे |

"यही चाहते थे ना", उसने मेरे आँखों में देखते हुये कहा |

उस वक़्त मैं अपने आप पर ग्लानि महसूस कर रहा था | मेरी वज़ह से वो रो दी थी |

"सॉरी यार", मैंने कहा |

"तुम जानना चाहते थे ना की वो लेटर तुम्हें मैं डायरेक्ट क्यों नहीं दे पाई थी? लास्ट टाइम जब तुम मुझे अपने घर से सेवई बाज़ार तक छोड़ने आए थे, उस वक़्त तुम्हारे

लखनऊ जाने की बात से मैं ख़ामोश थी और शायद रो भी रही थी |

इसलिए मैंने वो लेटर रिया के पास भिजवा दिया | जाते-जाते मैं तुमसे बोली भी थी की तुम रिया से ज़रूर मिल लेना”,|

उसकी बात सुनकर मैं बिल्कुल शांत हो गया था | उस दिन से  मैं अपने आप से कसम खाया था की कोई भी बात पूछने के लिए मैं उससे ज़िद नहीं करुँगा |

उसकी ख़ामोशी वाली बातों से मैं भाँप गया था कि कोई राज़ की बात वो मुझसे छुपा रही है, पर उस वक़्त मैंने उससे बात करना उचित नहीं समझा, क्योंकि मेरी थोड़ी सी ज़िद की वज़ह से उसे रोना पड़ा था |

“रिया हमारे प्यार के बीच की मीडिएटर है”, रिमसा ने कहा |

“सॉरी यार, मेरी वज़ह से तुम्हें रोना पड़ा”,|

“वक़ील जी, बच्चों के जैसे किसी बात को बार-बार मत पूछा कीजिए नहीं तो मैं चली जाऊँगी”, उसने अपने हाथ को हवा में उठाते हुए कहा था |

“क्या तुम सच में मुझे छोड़कर चली जाओगी?” मैंने कहा |

वो अपने हाथ से मेरे नाक को पकड़कर हिलाते हुए बोली – “आप किसी बात को लेकर बार-बार ज़िद करोगे तो मैं ज़रुर चली जाऊँगी | फिर भी मेरे दिल में तुम हमेशा बसे रहोगे |”

@BOOKHOUSE1

“हम दोनों के बीच मीडिएटर की क्या ज़रुरत है?” मैंने कहा |

“वक़्त आने पर तुम समझ जाओगे और तुम रिया से मिलते रहना”, |

“क्या रिया - रिया लगा रखी हो तुम”,|

“फिर किये ज़िद”, उसने कहा |

“ओ शिट!” बोलते हुए मैंने अपना सिर सामने घुमा लिया |

मेरे अंदाज़ को देखकर वो हँसने लगी |

“मैं  रिया से मिलना नहीं चाहता हूँ और तुम दोनों को मैं एक साथ खड़ा करके देखना चाहता हूँ ताकि तुम दोनों में जो भी अंतर हो सामने से मुझे नज़र आ सके”, मैंने कहा |

“वक़्त से पहले तुम्हें अंदाज़ा लग जाएगा”,|

“ठीक है, हमे भी इंतज़ार रहेगा”, |

“तुम्हें एक सरप्राइज़ देना है, पर सही वक़्त आने पर ही मैं तुम्हें दे सकूँगी”,|

“अभी बताओ ना”, मैंने कहा |

“अगर अभी बता दूंगी तो तुम पागल हो जाओगे |”

“तुम्हारी उस बात को सुनने के लिए मैं कुछ पल के लिए पागल भी बनने को तैयार हूँ”,|

“पर मैं नहीं चाहती की तुम पागल बनो”, उसने मुहं बनाते हुये कहा |

“कर ली ना अपनी वाली”,|

“इंतज़ार करो ब-बुआ”, उसने कहा |

एक बात मुझे बिल्कुल भी समझ में नहीं आता था की हर बात बताने के लिए वो मुझे इंतज़ार करने का क्यों कहा करती थी?

“कॉलेज कब जाने वाले हो?” उसने कहा |

“बस कुछ घंटो का मेहमान हूँ”, |

मैं उसे ये बताना नहीं चाहता था की मेरा थोड़ा भी मन नहीं करता लखनऊ जाने का, पर माँ के चक्कर में मैं मज़बूर था |

“मुझे पार्लर भी जाना होगा”,|

“ठीक है चलो फिर”,|

“बुक स्टाल वाले रास्ते की तरफ़ से चलना”, उसने कहा |

“बिग बाज़ार से निकलकर बाइक से बुक स्टाल पर हम दोनों पहुँच चुके थे | उसने पिछली किताब को वापस किया और फिर दूसरी किताब रिलीज़ करा ली | किताब बेचने वाले भी लड़के - लड़कियों को अलग नज़रिये से देखते हैं |

@BOOKHOUSE1

अगर कोई लड़का पुरानी किताब वापस करने किसी बुक सेलर के पास जाए, तो दुकान वाले जल्दी वापस नहीं लेंगे, पर लड़कियों के लिए सारे रास्ते खुले हैं | रिमसा पुरानी किताबें वापस किया करती थी और नई किताबें ले लिया करती थी थोडा सा रक़म चुकाकर |

जब वो दुकान से किताबें खरीदा करती थी, उस वक़्त मैं किताब का कवर और नाम ज़रुर देखता था | दुकानदार के सामने लड़कियाँ स्माइल करके रेट में डिस्काउंट कराने में माहिर होती है |

किताब वाली दुकान से उसको पार्लर छोड़कर मैं घर वापस आ गया |

शाम के वक़्त मैं पार्लर जाने की कोशिश करता था, पर माँ का कहना था की - “सुबह – शाम मार्केट क्या करने जाते हो?”

रिमसा भी यही चाहती थी की मैं शाम के वक़्त उसके लिए परेशान ना होया करू | लखनऊ जाने से एक दिन पहले मैं सुबह के वक़्त चौक ना जाकर शाम को गया था रिमसा को लिफ्ट देने | उसके पार्लर के सामने अपनी बाइक खड़ी करके मैं बैठा हुआ था |

वो पार्लर से निकलते ही चौक की तरफ़ तेज़ी से अपने कदमों द्वारा जाने लगी | मैं बाइक

उसके पीछे-पीछे चला रहा था | हॉर्न देने के बावज़ूद वो एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देख रही थी |

मैं बाइक उसके करीब ले जाकर बोला – "मैडम थोड़ा साइड में चलिए ना" |

वो पीछे मुड़ते हुए बोली - "अरे! तुम कब आये?"

वो मुझे अचानक देखकर चौक गई |

"पार्लर से ही तुम्हारा पीछा कर रहा हूँ", मैंने कहा |

"मुझे लिफ्ट देने सुबह क्यों नहीं आए?" |

मैं उसे कैसे बताता की माँ ने मेरे मार्केट आने पर रोक लगा दिया है |

"कुछ बोलते क्यों नहीं?"

बहाना करते हुए मैंने कह दिया - "पिता जी के साथ किसी काम से चला गया था |"

"सिर्फ बात ही करोगे या बाइक पर बैठने के लिये परमिशन भी दोगे", उसने कहा |

"बैठ जाओ, तुम्हें हमेशा परमिशन है", मैंने कहा |

वो मुस्कुराते हुए बाइक पर बैठ गई | चौक पर हम दोनों पहुँच चुके थे | तभी ऑटो वाले ने आवाज़ लगाई जाने के लिए | वो ऑटो की तरफ़ बढ़ने ही वाली थी |

@BOOKHOUSE1

अचानक मेरे मुहं से निकल गया, "कल लखनऊ जाना है", |

मेरी बात सुनते ही उसके कदम जस के तस रुक गए | अपनी जगह से वो दो कदम पीछे होकर मेरे सामने आकर खड़ी हो गई |

"इस बार तुम सचमुच में जा रहे हो ना", |

मैंने बाइक पर बैठे हुए अपना सिर हिला दिया |

"तुमसे बहुत सारी बातें करनी है, पर हमारे बीच गहराई से लगाव होने के कारण मैं तुमसे अपने दिल की बात शेयर ना कर सकी |

अगली बार मैं अपनी दिल के किस्से तुम्हें फाइनली सुना दूंगी", उसने कहा |

उस वक़्त उसका चेहरा बहुत ही मासूम सा लग रहा था |

"क्या छुपा रही हो तुम अपने दिल में?"|

"वक़्त से पहले किसी काम को अंजाम देना गुस्ताखी होगी | तुम्हें इंतज़ार करना ही पड़ेगा |

अगली बार तक सारा सच तुम्हारे सामने होगा", उसने कहा |

"मैं सुबह यहाँ से चला जाऊँगा और जाने वालो को ख़ुश करके भेजा जाता है", मैंने कहा |

तुम अपनी माँ के सपने से खिलवाड़ मत करना | अपना सारा ध्यान पढ़ाई पर लगाना,

इससे बढ़कर मेरे लिए कोई ख़ुशी नहीं होगी",|

"बग़ावत तक में वापस आऊँगा | तब तक तुम कहाँ रहोगी?" मैंने पूछा |

"मैं जहाँ भी रहूँगी, तुम्हारे आने से पहले मैं यहाँ हाज़िर हो जाऊँगी", उसने कहा |

मेरे लखनऊ जाने की वज़ह से वो ख़ामोश ज़रूर दिख रही थी | फिर भी मेरे सामने आँखों में आँखें डालकर बातें कर रही थी |

कभी-कभी उसकी आवाज़ लड़खड़ा रही थी  पर वो तुरंत संभालने की कोशिश कर लेती थी | "जाने से पहले तुम रिया से मिल लेना", बोलते हुए वो ऑटो में जाकर बैठ गई |

मैं उसके ऑटो के पीछे-पीछे राजघाट पुल पार करते हुए एन० एच०-29 के रास्ते आगे बढ़ता रहा | फिर सेवई बाज़ार से हम दोनों के रास्ते अलग हो गए | मैं घर पहुँचकर अपना पैकिंग करके शाम के वक़्त रिया से मिलने चला गया |

"इतने खोए - खोए क्यों लग रहे हो?" रिया ने पूछा |

"मैं लखनऊ जा रहा हूँ एल० एल० बी० की पढ़ाई करने", मैंने कहा |

"इसमें मुरझाने वाली क्या बात है?" रिया ने कहा |

"तुमने  कभी किसी से प्यार  किया है?"|

@BOOKHOUSE1

"नहीं तो", रिया ने कहा |

"फिर कैसे समझोगी, की दो दिलों के बिछड़ने से क्या होता है?", |

"कॉलेज में किसी को सेट कर लेना", रिया ने कहा |

"तुम अभी बच्ची हो", मैंने कहा |

"अगर रिमसा तुम्हें छोड़कर चली जाए, तो तुम क्या करोगे ?"|

मैंने कुछ जवाब नहीं दिया |

"तुम उसे भूल जाओ", रिया ने कहा |

"सनकी लड़की, मैं जा रहा हूँ", बोलते हुए रिया के पास से मैं अपने घर आ चुका था |

रिमसा से दूर होना मेरे लिए एक नया तथा खुला हुआ चैलेंज जैसा लग रहा था | उससे दूर रह पाना मुझे मुश्किल लगा रहा था|

अगले पल क्या होने वाला था मुझे उस पल का थोड़ा भी अंदाज़ा नहीं था | सुबह होते ही गोरखपुर के रोडवेज़ से मैं लखनऊ के हॉस्टल में पहुँच चुका था | कॉलेज में मेरा मन बिल्कुल नहीं लग रहा था | क्लासेस स्टार्ट हो चुके थे | क्लास के मॉनिटर से मैं मिला, फिर मैं मॉनिटर से रिक्वेस्ट किया की "सितंबर का मेरा सारा अटेंडेंस लगवा दे" मॉनिटर मेरे बातों को मान गया | मैं उसे "धन्यवाद" बोलकर वहाँ से चल दिया | हॉस्टल आकर अपना

सारा समान बैग में समेट लिया | फिर पॉलिटेक्निक चौराहे पर आकर मैं लोकल बस पकड़ लिया |

गोरखपुर आने की ख़ुशी में मैं ए०सी० तथा नॉन-एसी० बस का ध्यान ना दिया, जो सामने आया उसमें मैं बैठ गया | फिर परम को फोन किया |

“बोलो वक़ील जी!”

“कहाँ हो?” मैंने पूछा |

“मार्केट में हूँ”,

“मेरे रहने का इंतज़ाम कर देना | मैं शाम तक गोरखपुर बस स्टैंड पर मिलूंगा | तुम आ जाना रिसिव करने”,

परम कुछ और भी कहने वाला था पर मैं कॉल कट कर दिया | उस समय रिमसा के प्यार में मैं इतना दीवाना हो गया था की मैं अपने कॉलेज को अलविदा कहते हुए वापस अपने घर चल दिया था | मैं ख़ुद को बचाने के लिए रास्ते भर बहाना सोचता रहा और सोचते-सोचते मैं गोरखपुर पहुँच चुका था | बस स्टैंड पर परम मेरा पहले से इंतज़ार कर रहा था |

“इतनी जल्दी क्यों आ गए?” परम मुझे गले लगाते हुए कहा |

“यार मेरा वहाँ रिमसा के बिना मन नहीं लग रहा था“, |

“करा-लिये ना अपने बड़ों की बेइज़्ज़ती”, परम ने कहा |

“तू यार है या कसाई? मुझ पर नहीं कम से कम मेरे इस नादान दिल पर तो रहम करो”, मैंने कहा |

“घर चलें फिर”, परम ने कहा |

डायरेक्ट घर चलने की बात पर मैं उसे घूरने लगा |

“गलती करके भी सीना जोरी करते हो”, परम ने कहा |

मेरे बैग को वो साइकिल पर रखते हुए आगे की तरफ़ बढ़ने लगा |

“हम पैदल ही चलें”, मैंने कहा |

“शुक्र मनाओ साइकिल मिल गई है, वरना बैग को सर पर रखना पड़ता”, परम ने कहा |

“कुछ दूर तक हम दोनों पैदल चलते रहे |

“और कितना दूर चलना है?” मैंने पूछा |

परम ने कोई जवाब नहीं दिया | छात्र संघ चौराहे को पार करते हुए हम दोनों तपती धूप में पैदल चल रहे थे |

“और कितना चलाओगे यार”, मैंने दोबारा पूछा |

@BOOKHOUSE1

“तुम्हारा पिछला पाँच घंटे वाला सफ़र कैसा रहा?” परम ने कहा |

“इस पल से तो कई गुना बेहतर था | किसी दोस्त की गाड़ी भी तो ला सकते थे”, |

“पैसे वालों को पैसे वाले मिलते हैं और गाड़ी वालों को गाड़ी वाले.... तेरे दादा जैसे मेरे पूर्वज हम लोगों के लिए रियासत नहीं छोड़ गए हैं, कि हम अपनी ज़िन्दगी ऐशो-आराम से जी सके ”, |

“बेतियाहाता चौराहे से दाऊदपुर मोहल्ले के चौहान जी के मकान में परम अपनी साइकिल अंदर किया और मेरा बैग लेते हुए सीढ़ियों पर चढ़ने लगा |

मैं भी परम के पीछे-पीछे चल रहा था | सेकंड फ्लोर पर पहुँचकर परम ने एक रूम का ताला खोला | उसके दरवाज़ा खोलते ही मैं रूम में तेज़ी से प्रवेश करते हुए बिस्तर पर लेट गया | ऐसा लग रहा था की वर्षों बाद मुझे बिस्तर से भेंट हुआ है |

“किसका रूम है?” |

“एक फ्रेंड का हैं जो अभी गाँव गया हुआ है”, परम ने कहा |

रिमसा से मिलने के लिए मैं बेताब हो गया था | रात का वक़्त करवट बदलते हुए कैसे भी करके व्यतीत हुआ |

सुबह साइकिल लेकर मैं चौक पर पहुँचकर रिमसा का बेसब्री से इंतज़ार करने लगा | कुछ देर बाद ऑटो से उतरकर रिमसा पार्लर के रास्ते ना जाकर, वो सीधे दूसरे तरफ जाने लगी |

@BOOKHOUSE1

उसे दूसरी तरफ़ जाते देखकर मुझे यह लगा की उसने पार्लर चेंज कर दिया होगा | फिर मैं उसका पीछा करते हुए साइकिल धीरे-धीरे चला रहा था | अचानक वो बुक स्टाल की तरफ़ मूड़ गई |

मैं समझ गया की किताब लेने गई होगी | दूर से खड़ा होकर मैं उसे देख रहा था | किताब लेकर वो वापस आने लगी और मैं उसके सामने पड़ गया |

“अमन..!”, बोलते हुए वो अचंभित हो गई, मुझे अचानक देखकर उसकी आइब्रो थोड़ी तन गई थी |

“तुम कब आए?” उसने मेरा ऊपर से नीचे तक मुआयना करते हुए पूछा |

“सारी बातें रोड पर ही पूछ लोगी”, मैंने कहा |

“अब थोड़ी सी बात के लिए पार्क चलना पड़ेगा क्या?”

“पार्लर जाना ज़रुरी है क्या?” |

“उसने कोई जवाब नही दिया”,|

“थोड़ा वक़्त है मेरे लिए तुम्हारे पास?” मैंने कहा |

“वक़ील जी, आपकी बात तो मानना ही पड़ेगी, वर्ना आप कोर्ट में वक़ील बनकर मुझे सजा भी सुना सकते हैं”, |

हम दोनों मुस्कुराने लगे | मैं उसे साइकिल पर बैठाकर रूम की ओर ले जाने लगा | उस वक़्त मैं संकोच कर रहा था की मेरे साथ साइकिल पर बैठकर वो क्या सोच रही होगी |

“साइकिल पर बैठकर तुम्हें कैसा लग रहा है?” मैंने पूछा |

“तुम्हारी बाइक से हज़ार गुना अच्छा लग रहा है इस साइकिल से सफ़र करने में”, उसने कहा |

“और तुम्हारी  मौसा जी की न्यू पल्सर बाइक से?”

“उससे तो लाख गुना अच्छा है, इस साइकिल पर सफ़र करना”, उसने कहा |

मैं उसकी बातों को भाँप नहीं पाया की वो कितना सच बोल रही थी या झूठ | हम दोनों चौहान जी के घर पहुँच चुके थे, जिस घर में परम ने मुझे कुछ दिनों के लिए एक रूम में शिफ्ट कराया था | साइकिल अंदर करते हुए सीढियों के रास्ते सेकंड फ्लोर पर मैं उसे रूम में ले गया |

रूम में जाते ही उसने उस रूम की तारीफ़ करते हुए पूछा, “ये किसका रूम है?”

“मेरे दोस्त का है | वैसे ये रूम मिलने के लिए अच्छा ज़गह है”, मैंने कहा |

उसने मुस्कुराते हुए अपना सिर हिला दिया |

“तुम  इतना जल्दी क्यों आ गए अपने कॉलेज से?”

“मेरे कॉलेज में कैंपस के लिए ट्रेनिंग चल रहा है | जो अगले बीस दिनों तक जारी रहेगा और मेरे सारे टीचर छुट्टी पर हैं |” मैं एक साँस में पूरी सफाई दे दिया |

“सच बोल  रहे हो ना? अपने कॉलेज का नंबर दो मुझे बात करनी है”, उसने कहा |

“तुम्हें  मुझ पर भरोसा नहीं है क्या?”उसके सामने मैं बिल्कुल ओवर कॉन्फिडेंस के साथ बोला रहा था |

“मैं  क्लियर करना चाहती हूँ”, |

उस वक़्त पहली बार रिमसा ने मेरी बातों का विरोध किया था |

“चाय पीकर भी तुम मेरे कॉलेज के ‘रिसेप्शनिस्ट’ से बात कर सकती हो”, मैंने धीरे से कहा |

“ठीक है”, |

चायपत्ती लेने के बहाने मैं रूम से बाहर निकलकर सीढियों से नीचे चला आया | नीचे परम को पहले से ही मैं खड़ा होने को कहा था  क्योंकि उस रुम में किसी लड़की को ले जाना अलाउड नहीं था |

@BOOKHOUSE1

बवाल होने के नाते परम मकान मालकिन को उलझाया हुआ था ताकि उसे पता न चल सके की ऊपर वाले रूम मे लड़की लाई गई है |

“तुम नीचे क्यों आए हो?” परम ने पूछा |

“कुछ देर बाद रिमसा कॉल करेगी तुम्हारे नंबर पर | तुम मेरे कॉलेज के रिसेप्शनिस्ट बनकर बोल देना छुट्टी चल रही है”, मैंने कहा |

परम मानने को तैयार नहीं था |

“दोस्ती के लिए इतना भी नहीं कर सकते हो”, |

“ठीक है जाओ ट्राई करता हूँ”, परम मेरी बात मान गया |

मैं खुशी से सीढ़ियों पर छलांग लगाते हुए सेकंड फ्लोर वाले रूम में पहुँच गया, जिस रूम में रिमसा बैठी हुई थी |

“क्या हुआ?” उसने पूछा |

“बगल वाली दुकान बंद है”, |

“कोई बात नहीं पानी पीकर काम चला लेंगे | नंबर दो अपने कॉलेज का”, |

मैंने परम का नंबर रिमसा को दे दिया | उसने अपने सेमसंग फोन से कॉल करके हैंडफ्री कर दि |

@BOOKHOUSE1

ट्रिंग - ट्रिंग करके रिंग के बजने की आवाज़ आ रही थी, कुछ सेकंड बाद परम ने कॉल रिसीव किया |

“जी आप लखनऊ बी० बी० डी० ए० यूनिवर्सिटी से बोल रहे हैं?” रिमसा ने पूछा |

“जी, मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?” परम का बनावटी आवाज़ आ रहा था |

“सर, हॉलीडे चल रहा है क्या?” रिमसा ने पूछा |

“जी अगले एक महीने तक”, बोलते हुए परम ने फोन कट कर दिया |

“हो गई तसल्ली”, मैंने कहा |

रिमसा ने अपना सिर हिला दिया | झूठ हमेशा पकड़ा जाता है पर आप पूरे कॉन्फिडेंस के साथ अगर झूठ भी बोलते हैं, तो सामने वाला यक़ीन कर लेगा की आप सच ही बोल रहे हैं | बोलने की कला सामने वालों को जालिम बना देती है |

“चलो फिर मुझे पार्लर भी जाना है”, रिमसा ने कहा |

“हाँ चल सकती हो”,|

मैं भी और अधिक समय तक रिमसा को रूम में रखकर कोई रिस्क नहीं लेना चाहता था |

बायचांस मकान मालकिन को अगर पता चल गया तो, वो बवाल करने के साथ रूम भी

ख़ाली करा देगी | मैंने परम को संकेत दे दिया कि मैं रिमसा को रुम से बाहर नीचे ले जा रहा हूँ |

मैं जल्दी - जल्दी करके रिमसा का हाथ पकड़कर घर से बाहर लाया | "तुम इतनी जल्दी में क्यों हो?" रिमसा ने पूछा |

"इस घर में लड़की लाना बिल्कुल भी अलाउड नहीं है", मैंने कहा |

वो जोर-जोर से हँसने लगी | साइकल पर बैठाते हुए मैं उसे पार्लर की तरफ़ ले जाने लगा | उसे साइकिल पर बैठाकर मुझे अजीब सा लग रहा था पर उसे साइकिल पर ही मज़ा आ रहा था |

उसे पार्लर छोड़कर जब मैं रूम में पहुँचा तो मकान मालकिन परम से बहस कर रही थी | मैं अपना पैर फर्श पर दबाते हुए सीढियों द्वारा रूम में जाकर बैठ गया | कुछ देर बाद जब परम रूम में आया तो वो मुझे घूर रहा था |

"क्या हुआ बताओगे भी?" मैंने पूछा |

"मकान मालकिन को शक़ हो गया है कि इस रूम में लड़की लाई गई थी | इसलिए वो बहस कर रही थी", |

"शक़ अगर हो गया है तो दूर करने का जुगाड़ बताओ",|

"शुक्र मनाओ सिर्फ शक़ हुआ है उस नागिन को, वर्ना अभी तक सामान के साथ-साथ हम दोनों सामने वाले रोड पर होते", परम ने कहा |

@BOOKHOUSE1

"मकान मालकिन को पटाने का कोई रास्ता बताओ",|

"इस नागिन की अपने पति से नहीं पटती है, तो तू क्या कर पायेगा?" परम ने कहा |

"वक़ालत की पढ़ाई कर रहा हूँ | यार, कुछ तो इज़्ज़त करो मेरा ", |

"अगली बार रिमसा को इस रूम में लाने के बारे में मत सोचना", परम ने कहा |

रूम से निकलकर हम दोनों सेकंड फ्लोर की बालकनी पर बातें कर रहे थे | तभी नीचे मेन गेट को खोलने के लिए एक आदमी बाहर से खड़ा होकर घंटी बजा रहा था |

"ये कौन है?" मैंने गेट के बाहर खड़े आदमी की तरफ़ इशारा करते हुए पूछा |

"मकान मालकिन का गुलाम पति है" परम ने हँसते हुए कहा |

मकान मालकिन का पति बाहर से खड़ा होकर गेट को पीट रहा था खोलने के लिए, और सामने गलियारे में मकान मालकिन एक कुर्सी पर बैठकर स्मोकिंग कर रही थी |

बाहर से उसका पति गेट खोलने के लिए घंटी बजाने के साथ-साथ अपने हाथ से गेट पर भी पीट रहा था पर मकान मालकिन सिगरेट पीने की धुन में मगन थी |

"मकान मालकिन को सुनाई नहीं देता क्या?" मैंने परम से पूछा |

“धीरे बोलो वर्ना सुन लेगी तो बवाल करने लगेगी”, परम ने धीरे से कहा |

सिगरेट ख़त्म होने तक वो औरत परवानो के अंदाज़ में सिगरेट से धुँआ उड़ाती रही | सिगरेट ख़त्म होते ही वो गेट खोलने के लिए आगे बढ़ी |

“कितना देर लगा दी गेट खोलने में?” आदमी गेट के अंदर आते हुये पूछा |

“थोड़ा इंतज़ार नहीं कर सकते थे”, मकान मालकिन ने ऊँची आवाज़ में कहा |

बेचारा उसका पति चुपचाप अन्दर चला गया | अपने पूरे भारत में सारे घरों का एवरेज़ निकाला जाए तो सारे घरों की लुगाइया अपने पति पर भारी पड़ती हैं और इन लुगाइयों की ही चलती है |

वाकई इन लुगाइयों के सामने किसी की नहीं चलती है | मकान मालकिन को पटाने का रास्ता मुझे समझ में आ गया था | बस उसकी सिगरेट या माचिस ख़त्म होने का मुझे इंतज़ार था |

परम से कहकर मैंने सिगरेट और माचिस दुकान से मंगवा लिया था | कुछ ही देर बाद वो गलियारे में एक कुर्सी पर बैठकर सिगरेट पीना चाही | उसका सिगरेट का पैकेट खाली दिख रहा था, मैंने ऊपर की बालकनी से खड़ा होकर देख लिया था |

उसने अपना मुँह बनाते हुए सिगरेट के खाली पैकेट को फेंक दिया | मैं जिस मौके की तलाश में था वो मौका मुझे सामने दिख रहा था |

@BOOKHOUSE1

मैंने बालकनी से तुरंत ही सीटी बजाते हुए उस औरत की तरफ़ सिगरेट का पैकेट दिखाते हुए इशारा किया, उसने मुझे इशारों से नीचे बुलाया |

मैं झटपट सीढियों को फादते हुए मकान मालकिन के पास जा पहुँचा |

“तुम्हें तो पहले कभी नहीं देखा | किसके साथ रहते हो?” मकान मालकिन ने पूछा |

“जी मैं परम के साथ”, |

“ठीक है, बैठ जाओ”, मकान मालकिन ने कुर्सी की तरफ़ इशारा करते हुए कहा |

मैं उसे सिगरेट का पैकेट थमाते हुए बगल की कुर्सी पर बैठ गया | एक साथ दो सिगरेट सुलगाकर एक सिगरेट वो मुझे देना चाही पर मैंने सिगरेट लेने से मना कर दिया |

“मेरे सामने शर्मा रहे हो क्या?” उसने कहा |

मैंने चुपचाप उस औरत के हाथ से एक सिगरेट ले लिया और उसके साथ धुआं उड़ाने लगा |

“ऐसे रेंट वाले लड़के मुझे सालों में एक बार मिलते हैं”, मकान मालकिन ने कहा |

“मेरे रूम में सब अलाउड है सिवाय लड़की लाने के”, मकान मालकिन ने कहा |

मैं तो उस औरत को पटाने का जाल बिछाया था | इसलिए मैं उसकी बातों को ध्यान से सुन रहा था और हाँ में हाँ मिलाए जा रहा था |

“पिछली  बार एक लड़का अपनी गर्लफ्रेंड को मेरे ऊपर वाले कमरे में लाया था | तुम जानना चाहोगे मैंने क्या किया?”|

मैं अपना सिर हिलाते हुए हामी भर दिया |

“सौ नंबर पर कॉल करके पुलिस को बुलायी, फिर उन दोनों प्रेमी-प्रेमिका को पुलिस के हवाले कर दिया”, |

उसकी बात सुनकर मैं हक्का-बक्का सा रह गया | मैं सोचने लगा कि वाकई ये औरत बड़ी खतरनाक किस्म की नागिन जैसी है |

मैं भगवान से प्रार्थना करने लगा की अच्छा था रिमसा को इस रूम में लाने की ख़बर इस औरत को नहीं हुई, वर्ना हम दोनों का पर्दाफ़ाश हो जाता |

“क्या सोच रहे हो?” उस औरत ने पूछा |

“कुछ नहीं खाना बनाना था पर मेरा मन नहीं कर रहा है”, मैंने उसके सामने बहाना बनाते हुए बोला |

“मुस्कुराते हुए वो मुझे अपने कमरे में ले गई | फिर मेरे सामने एक थाली में दाल – चावल और सब्जी के साथ सलाद भी रख दिया | उस औरत की करतूत सुनकर मैं उसे नागिन समझा बैठा था, पर उसका व्यवहार मुझे बहुत पसंद आया था |

“भोजन करना शुरू करो”, उसने मेरी थाली की तरफ़ इशारा करते हुए कहा |

मैंने खाना खाना शुरु किया | अभी पहला ख़ुराक़ मैं मुँह में डाला था, तभी उसने रंगीली बात कह दी- “तुम्हारी कोई गर्लफ्रेंड है?”

उस औरत के द्वारा बताई गई पुलिस वाली बात मेरे दिमाग़ में सेट हो चुका था | मेरे मुँह में भोजन होने के बावज़ूद मैंने सिर हिलाते हुए ना कह दिया |

“तुम्हें झूठ बोलते हुए देखकर मुझे अच्छा लगा”, मकान मालकिन ने मुस्कुराते हुए कहा |

मेरे द्वारा बोले गए झूठ को शायद उसने परख लिया था | मैं खाना खाकर सेकेंड फ्लोर वाले रूम में चला गया |

“कहाँ चले गए थे?” परम ने पूछा |

“नीचे”,|

“मकान मालकिन से बचकर रहना | उसके आगे इस पूरे मोहल्ले में किसी की नहीं चलती है”, परम ने मुझे चेतावनी देते हुए कहा |

मैं यह तय कर चुका था की मकान मालकिन के कहने पर भी रिमसा को इस रूम में कभी नहीं लाऊँगा, किसी भी शर्त पर |

मेरा सारा कोशिशों पर पानी फिर चूका था | मकान मालकिन को पटाने का ख़्याल मैंने

@BOOKHOUSE1

अपने दिमाग़ से निकाल दिया | पर मकान मालकिन दिल से मुझे अच्छी लगी थी |

उसने मुझे भोजन करकार मुझपर एहसान किया था, क्योंकि अनजान लोग को हर कोई खाना नहीं खिलाता है | मैं चुपचाप रूम में बिस्तर पर लेटा रहा | शाम को छः बजने से पहले मैं और परम रिमसा के पार्लर पैदल टहलते हुए पहुँच चुके थे | कुछ देर बाद रिमसा पार्लर से निकलकर हम दोनों के पास आकर खड़ी हो गई |

"साइकल कहाँ है?" रिमसा ने पूछा |

"तीन लोग साइकिल पर नहीं बैठ सकते, इसलिए हम दोनों पैदल ही आ गए, चौक से होते हुए", परम ने कहा | परम की बुद्धिमानी देखते हुए मैंने उसकी पीठ पर थप-थपा दिया |

"अच्छा लगा तुम दोनों दोस्तों को एक साथ देखकर", रिमसा ने कहा |

"हम तीनों लोग चौक की तरफ़ पैदल चलने लगे | चौक से उसे रोड पार करके अपने स्टोपेज पर जाना था पर, वो दूसरे तरफ टर्न हो गई | उसके टर्न होने से मैं समझ गया की वो किताब लेने जा रही होगी | दुकान से किताब लेकर हम तीनों चौक के स्टोपेज पहुँच चुके थे | जहाँ से गाँव जाने के लिए ऑटो मिला करता था |

"हम तीनों एक साथ चल रहे हैं ना", रिमसा ने कहा |

परम कुछ कहने वाला था, तभी मैंने तपाक से परम की बात को दबाते हुए कह दिया – "हम दोनों पिताजी के साथ आये हुये हैं |"

@BOOKHOUSE1

फिर वो ऑटो में बैठकर चली गई | चौक से ऑटो जा चुकी थी | मैं और परम दाऊदपुर वाले रुम की तरफ़ जाने लगे | कुछ देर बाद मेन गेट के अंदर प्रवेश करते ही मकान मालिक ने हम दोनों को अपने पास बुलाया |

"तुम दोनों कहाँ से आ रहे हो?" मकान मालिक ने पूछा |

"जी! मार्केट से आ रहे हैं", परम ने कहा |

उस वक़्त वो औरत कुर्सी पर बैठकर सिगरेट पी रही थी |

"सच बोल रहे हो या झूठ?" उस औरत ने हम दोनों को घूरते हुये कहा |

"जी हम दोनों मार्केट से ही आ रहे हैं", मैंने लड़खड़ाते हुए कहा |

"कल बारह बजे तक अगर तुम अपनी गर्लफ्रेंड को यहाँ नहीं लाये, तो तुम दोनों के आलावा रूम में रखे गए सामान को बाहर सड़क पर फेंक दूंगी", उस औरत ने सिगरेट की राख को उंगली से झाड़ते हुए कहा |

उस वक़्त वो औरत किसी बॉलीवुड फिल्म की विलन लग रही थी |

"आप ऐसा नहीं कर सकती", मैंने कहा |

फिर परम मुझे पकड़ते हुए वहाँ से गलियारे की तरफ़ ले जाने लगा और सीढ़ियों से होते

हुए हम दोनों रूम में आकर अपना - अपना मुँह लटकाए हुए बैठ गये |

“इस मोहल्ले की परमाणु बम है ये औरत”, परम ने कहा |

मैं डिसाइड नहीं कर पा रहा था की वो औरत अच्छी है या बुरी है, क्योंकि दोनों ही गुण उस औरत में कूट-कूट के भरे हुआ था |

“कल क्या किया जाएगा?” मैंने कहा |

“रात को रूम से मैं दफा हो जाऊँगा”, परम ने हँसते हुए कहा |

“निभा दिये ना दोस्ती”, |

“एक काम करते हैं कल एक भाड़े वाली लड़की ले आएंगे”, परम ने कहा |

“भाड़े पर लड़की कहाँ मिलेगी?” मैंने पूछा |

“स्टेशन के बगल से यार |”

मैं समझ गया था की परम किस तरह की लड़की लाने की बात कर रहा था |

“मात्र पाँच सौ रुपए में काम बन जाएगा”, परम ने कहा |

मैं भाड़े पर लड़की नहीं लाना चाहता था क्योंकि ऐसा करने पर अगर मकान मालकिन ने पुलिस के हवाले कर दिया तो, मेरे लिए बहुत ज्यादा नुकसानदायक होता |

परेशान होकर मैं अपने सिर में अँगुली कर रहा था | “परेशानी तुम्हारे साथ है, मैं तो घर चला जाऊँगा”, परम ने दोबारा ताना मारा |

मैं तुरंत अपने घर नहीं जा सकता था, क्योंकि कॉलेज छोड़कर मैं वापस आ चुका था |

अभी मेरे घरवालों को यह पता भी नहीं था कि मैं गोरखपुर में ही हूँ | पूरी तरह से मैं फँस चुका था | गहराई से मंथन करने के बाद मैं ये फैसला ले चुका था की रूम में मैं रिमसा के सिवाय किसी और लड़की को नहीं लाऊँगा |

“इतना  सोच-बिचार क्या रहे हो? लड़की का चार्ज मैं दे दूंगा”, परम ने कहा |

“रूम में रिमसा ही आएगी | कल वाला दिन वाकई यादगार रहेगा मेरे लिए, क्योंकि जो घटना कल घटने वाली है उसे सुनकर इस मकान में रहने वाले सब दंग रह जाएंगे”, |

“तुम पागल हो गए हो”, परम ने कहा |

“मैं अपना फैसला ले चुका हूँ”, |

“तुम अभी मकान मालकिन को जानते नहीं हो, वो पुलिस को भी बुलाकर हम दोनों को फँसा सकती है”, परम ने कहा |

“इश्क़ की बात है रिस्क लेना ही पड़ेगा”, |

परम अपने ज़ेब से पाँच सौ रूपए का नोट निकालते हुए मुझे दे दिया |

@BOOKHOUSE1

मैं अपनी ज़ेब में पाँच सौ रूपए का नोट रख लिया फिर भी मेरी फटी हुई थी |

अगले सुबह मैं साइकल से चौक पहुँच चुका था | चौक पर पहली बार मैं डरता हुआ रिमसा का इंतज़ार कर रहा था |

उस पल मुझे थोड़ा भी ख़ुश होने का एहसास नहीं हो रहा था, क्योंकि अगले पल मकान मालकिन के जादू का शिकार होने का मुझे डर सता रहा था | उस परिस्थिति में भी मैंने रिस्क ले लिया था | तभी एक ऑटो से रिमसा निकलते हुए मेरे पास आते ही साइकिल पर बैठ गई |

"चलो", साइकिल पर बैठते हुए उसने कहा |

"मैडम कहाँ चले?" |

"कहीं भी चल सकते हो सिवाय पार्लर के", उसने मुस्कुराते हुए कहा |

मैं रूम की तरफ़ जाने के लिए साइकिल को चलाने लगा |

"थोड़ी तेज़ चलाओ", बोलते हुए वो साइकल पर अपने दोनों हाथों को फैलाई हुई थी | कुछ ही देर में मकान मालकिन के घर के सामने हम पहुँच चुके थे | हम दोनों मकान में मेन गेट से अंदर की ओर प्रवेश किये |

तभी मकान मालकिन गेट पर आई और रिमसा का हाथ पकड़कर अंदर ले जाने लगी |

मैं उस वक़्त ऊँची आवाज़ में कुछ बुद-बुदाया ताकि मकान मालकिन रिमसा का हाथ पकड़कर ज़बरजस्ती अपने साथ ना ले जाये | मेरी बुद-बुदाहट को सुनकर वो औरत मुड़ी और सीरियस होते हुए बोली - "तुम उपर अपने रूम में जाओ |"

मैं समझ नहीं पा रहा था की क्या कहकर उस औरत से माफ़ी मागूँ की वो रिमसा को छोड़ दे | मैंने तो कोई ज़ुल्म भी नहीं किया था | रिमसा के सामने मैं उस नागिन औरत के आगे घुटने टेकना नहीं चाहता था |

अगर आप भी अपनी गर्लफ्रेंड के साथ हो और उसके सामने किसी से माफी माँगनी हो तो यह संभव नहीं है | आप अपनी प्रेमिका के सामने दबंग ही बने रहना पसंद करेंगे, भले ही आप कितनो डरपोक हो | मेरे पैर काँप रहे थे |

काँपते हुए मैं सीढ़ियों से होते हुए सेकंड फ्लोर वाले रूम में पहुँचा | परम आराम से बिस्तर पर बैठा हुआ था | उस वक़्त दो लोगों की उपस्थिति में भी रूम में मातम सा छाया हुआ था | मैं और परम बिस्तर पर अपने-अपने सिर पर हाथ रखकर बैठे हुए थे |

उस वक़्त सिर्फ साँसों की आवाज़ का आभास हो रहा था, क्योंकि मैं जोर-जोर से साँसे ले रहा था | तभी सीढ़ियों में चहल कदमी सी चलने की आवाज़ आई | मैं डर गया की मकान मालकिन ने पुलिस को तो नहीं बुला लिया | फिर पायलों की झन-झनाने की आवाज़ आई | उस वक़्त मैंने सुबह से पानी नहीं पिया था, वर्ना उस सिचुएशन में हमारी पैंट गीली हो गई होती | फिर दरवाज़े पर दस्तक हुई | रूम का दरवाज़ा सिर्फ सटाया गया था |

@BOOKHOUSE1

बाहर से किसी ने अपने हाथों से दरवाज़े पर जोर लगाया | दरवाज़ा सट्टे होने के कारण खुल गया | जब मैंने अपना सिर उठाया तो मेरे सामने मकान मालकिन अपने हाथ में एक पानी का जग पकड़ी हुई थी | उसके पीछे रिमसा अपने दोनों हाथ से ट्रे पकड़ी हुई थी |

"तुम दोनों सिर पर हाथ रखकर क्यों बैठे हो? आपस में झगड़ा किया हो क्या", मकान मालकिन ने मुस्कुराते हुए कहा |

उसके चेहरे पर मुस्कान देखकर मुझे पता चल गया था की वो हम दोनों के मज़े ले रही है | उस समय परम का भी हाल नाज़ुक हो गया था | परम का चेहरा गर्मी से लतपत हो चुका था |

"तुम दोनों इतने शांत क्यों हो?" रिमसा ने पूछा |

मैंने कोई जवाब नही दिया |

मकान मालकिन और रिमसा हम दोनों के बीच शामिल हो गई | एक रूम में हम चारों चाय पीने लगे | हँसी वाली बात पर भी मैं और परम नहीं हँस पा रहे थे | हम दोनों वाकई में डरे हुए थे पर धीरे-धीरे हालात बदलते गए |

थोड़ी देर बाद मकान मालकिन रूम से नीचे चली गई | उसके जाते ही मैं और परम अपने-अपने सीने पर हाथ रखकर जोर-जोर से साँसे लेने लगे |

@BOOKHOUSE1

"आज तुम दोनों को हो क्या गया है?" रिमसा ने पूछा |

हम दोनों सीने पर हाथ रखकर लम्बी-लम्बी साँसे लेने में बीज़ी थे | रिमसा की मौज़ूदगी में भी मैं और परम उससे बात नहीं कर पा रहे थे |

"तुम दोनों की हालत ठीक नही है", बोलते हुए रिमसा खड़ी हो गई जाने के लिये |

मैं और परम सीने से हाथ हटाते हुए आराम से बैठ गये और एक दूसरे को देखकर हँसने लगे |

"मकान मालकिन कितनी अच्छी है ना", रिमसा धीरे से बोली |

मैं और परम रिमसा को गौर से देखने लगे | जहाँ तक मुझे याद है की उस वक़्त रिमसा को देखते हुए मेरा मुँह खुला हुआ था |

"तुम दोनों मुझे इतना ताड़ क्यों रहे हो?" रिमसा ने कहा |

"रिमसा, बैठ जाओ ना प्लीज़", मैंने कहा |

"इस घर की मालकिन सचमुच बहुत ही अच्छी है", रिमसा ने दोबारा कहा |

परम उसकी बातों पर ठहाका लगाते हुए हँसने लगा |

"तुम दोनों आज पागल हो गए हो", इतना बोलते हुए रिमसा रूम से नीचे चली गई |

मैं और परम एक दूसरे को देखकर हँस रहे थे, फिर हँसते - हँसते बिस्तर पर लेट गए |

लोगों की आँखों में आँसू तब आते हैं जब वो रोते हैं, पर उस दिन तो मेरी आँखों में आँसू हँसते - हँसते आ गए थे |

उस वक़्त की घटना आज तक मेरे दिलो - दिमाग़ में घूमती रहती है |

“इतना बड़ा दांव मैं सपने में भी नहीं खेलता”, परम मेरे पीठ पर थप-थपाते हुए कहा |

अच्छा |

“तू वाक़ई जिगर वाला है”, परम ने कहा |

“पर हूँ तो तेरा ही दोस्त”, |

“मुझे तुम पर ख़ुद से ज्यादा गर्व है”, परम ने अपनी छाती को पीटते हुए कहा |

अचानक सीढ़ियों से पायल की आवाज़ आती हुई सुनाई दी | थोड़ी ही देर में सटाया हुआ दरवाज़ा खुला, सामने मकान मालकिन और रिमसा खड़ी थी | एक के हाथ में ट्रे, तो दूसरे के हाथ में पानी से भरा बोतल | चार छोटे छोटे बाउल में पास्ता रखा गया था |

“पास्ता खाने से पहले तुम दोनों कुछ कहना चाहोगे”, मकान मालकिन ने हल्की मुस्कान के साथ कहा |

”आप बहुत महान है | आपकी महानता की तुलना किसी से नहीं की जा सकती”, हम दोनों के मुँह से एक ही तरह की बात निकल पड़ी |

@BOOKHOUSE1

ऐसा नहीं था की मैं और परम उस लाइन को बोलने के लिए साथ में प्रेक्टिस किये थे | ऐसा लग रहा था, मेरी और परम की  बुरी हालत के बारे में उस औरत को पता चल चुका था |

“हम चारों एक साथ पास्ता खाना शुरू करते तो अच्छा होता”, रिमसा ने कहा |

मैं, परम, मकान मालकिन और रिमसा अपने-अपने बाउल से पास्ता खाने लगे | मकान मालकिन की नज़र मेरे और परम पर गड़ी हुई थी और हल्की मुस्कान के साथ वो हम दोनों को निहारते हुए पास्ता खाए जा रही थी | हम दोनों को देखने के चक्कर में उसके बाउल से एक-दो पास्ता फर्श पर गिर जा रहे थे, फिर भी वो हम दोनों को देखने में बिजी थी |

“तुम दोनों एक दूसरे को कब से जानते हो?” औरत ने पूछा |

“बचपन से हम दोनों दोस्त हैं”, परम ने तपाक से कहा |

वो औरत मेरी और रिमसा की तरफ़ देखने लगी | मैं समझ गया की वो मेरे और रिमसा के बारे में पूछ रही है |

मेरे बोलने से पहले ही रिमसा ने बोल दिया, “पिछले तीन साल से हम दोनों एक दूसरे को जानते हैं |”

“तुम्हारा आशिक़ वाक़ई तुम्हें बहुत चाहता है”, उस औरत ने रिमसा की तरफ़ देखते हुए कहा |

उस वक़्त मैं चुप-चाप पास्ता खा रहा था |

“तुम वाक़ई हिम्मती लड़कों में से एक हो”, उस औरत ने मुझे अपना अँगूठा दिखाते हुए कहा |

“जल्दी से नीचे आ जाओ, खाना तैयार है”, बोलते हुए वो औरत रूम से नीचे चली गई | उसके साथ रिमसा भी नीचे चली गई |

“जादू सा हो गया”, परम हँसते हुए बोला|

मैं ये सोच के हैरान था कि जब रिमसा मेरे घर आई थी, उस वक़्त मैं जितनी खातिरदारी नहीं कर पाया था, उससे कई गुना ज्यादा रिमसा की खातिरदारी मकान मालकिन ने किया था | वाक़ई उस औरत में बहुत सारे गुण विद्यमान थे | इसलिए मैं मकान मालकिन को दो-तीन नामों से जानता था |

“हमें नीचे चलना चाहिए”, डर को भगाते हुए परम ने कहा |

“हाँ - हाँ क्यों नहीं”, मैंने भी बेफ़िक्र होते हुए कहा |

हम दोनों सीढ़ियों से नीचे आकर मकान मालकिन के रूम में बैठ गए | फिर खाना खाने के बाद मैं और परम ऊपर वाले रुम में जाकर रिमसा को आने का इंतज़ार करने लगे, पर वो शायद मकान मालकिन के साथ गप-शप करने में बिज़ी थी | हम लड़कों में दोस्ती इतनी जल्दी नहीं हो पाती, जितनी जल्दी पल-भर में लड़कियां आपस में गहरी दोस्त बन जाती हैं | काफ़ी वक़्त हो चुका था रिमसा का इंतज़ार करते हुए, पर वो नीचे ही बिज़ी थी | अचानक दरवाज़ा खुला और वो सामने खड़ी हो गई |

“अब फुर्सत मिली है”, मैंने कहा |

“प्लीज़, मुझे पार्लर तक छोड़ दो ना”, रिमसा ने कहा |

वास्तव में इस धरती पर लड़कियाँ बहुत ही चालू चीज़ है | मैंने उसके लिए कितना बड़ा रिस्क लिया था फिर भी वो मुझे अपना वक़्त देने के बदले पार्लर छोड़ने के लिए कह रही थी | इस सबके बावज़ूद मैं उसकी बातों का विरोध नहीं करना चाहता था और मैं उसे पार्लर छोड़ने के लिए राज़ी हो गया |

सीढ़ियों से नीचे उतरकर मैं साइकिल से उसे पार्लर तक छोड़ने चला गया | वो रास्ते भर मकान मालकिन की प्रशंसा कर रही थी | उसके मुँह से मकान मालकिन की प्रशंसा सुन-सुनकर मेरे कान पक चुके थे | उतना प्रशंसा तो रिमसा ने कभी मेरा नही की थी | उसे पार्लर छोड़कर मैं तुरंत रूम में वापस आ गया |

“एक बात बोलूँ”, परम ने कहा |

“यार कुछ भी बोल सकते हो”, |

“जो इंसान इस मकान मालकिन का दिल जीत सकता है, वो सारे असंभव कार्य को संभव कर सकता है और तुमने उस औरत का दिल जीत लिया है |

©BOOK HOUSE1

आज पहली बार कोई जवान लड़की इस रूम में आई हुई थी", परम ने कहा |

"वाक़ई मकान मालकिन साफ़ दिल तथा फ्रेंक दिमाग़ वाली औरत है", बोलते हुए मैं बिस्तर पर लेट गया |

उस वक़्त तीन बज रहे थे | दो घंटे के लिए मैं सो जाना चाहता था, ताकि छः बजे से पहले मैं रिमसा के पार्लर तक जा सकूँ चौक तक उसे लिफ्ट देने के लिए|येही सब सोचते हुये मैं सो गया | कुछ देर बाद जब मेरा नींद खुला तो रूम की दीवार पर लगी हुई घड़ी में सिर्फ चार बज रहे थे | मैं अपनी आँख मसलते हुए घड़ी की सुई को ध्यान से देखने लगा | घड़ी की सुई ठीक से चल रही थी, मैं फिर सो गया | कुछ देर बाद जब मेरा नींद खुला तो रूम वाले घड़ी में पाँच बज रहे थे |

मैं फ्रेश होकर रिमसा को लिफ्ट देने पार्लर के लिए निकल ही रहा था तभी परम ने आवाज़ दिया - "कहाँ जा रहे हो?" |

"रिमसा को रिसीव करने जा रहा हूँ",|

"टाइम तो देख लो", परम ने दीवार पर लगी हुई घड़ी की तरफ़ इशारा करते हुए कहा |

"समय क्या देखना है | एक घंटे पहले जा रहा हूँ",|

"पहले नहीं, देर कर चुके हो | रूम में लगी हुई घड़ी थोड़ी स्लो है", परम ने कहा |

@BOOKHOUSE1

मैंने मोबाइल में समय देखा तो सात बज चुके थे | मुझे शक़ हो रहा था कि परम ने रूम में लगी हुई घड़ी के साथ छेड़खानी की है | फिर मैं उसके साथ बहस करने लगा | उस वक़्त परम शांति से बैठा रहा और मेरे बातों को चुप-चाप सुनता रहा |

उसके हाव - भाव से मुझे यक़ीन हो गया था की घड़ी से छेड़खानी परम ने ही किया है, पर वो मानने को तैयार नहीं था | कुछ देर बाद वो अपनी जग़ह से उठा और दो कदम चलकर दरवाज़े के पास जाकर खड़ा होकर बोला |

"एक लड़की के चक्कर में तुम मुझपर शक़ कर के गलती कर रहे हो", बोलता हुआ परम रूम से चला गया | मैं परम को रोकना चाहा पर वो नीचे जा चुका था | परम से बहस करके मैं पछता रहा था, क्योंकि परम ही ऐसा था जो मुझे किसी भी दशा में मेरे साथ रहता था पर मैं करता भी क्या, रिमसा के प्यार में मैं बिल्कुल बावड़ा हो चूका था |

मुझे यक़ीन था की परम बाद में मान जाएगा, क्योंकि वो मेरा लंगोटिया यार है | मैं उस रुम में और अधिक समय तक रुकना ठीक नहीं समझा और अपना बैग लेकर चौक पहुँच गया | ऑटो स्टैंड पर ऑटो वाले सेवई बाज़ार जाने के लिए चिल्ला रहे थे | एक ऑटो में बैठकर मैं अपने घर पहुँच चुका था | उस वक़्त माँ बाहर ही खड़ी थी |

"तुम्हारा कॉलेज अभी बंद है क्या?" माँ ने चौकते हुए कहा |

"मेरे पास स्पोर्ट्स का सर्टिफिकेट ना होने के कारण मुझे एडमिशन नहीं मिल कैंसिल हो गया है", मैं झूठ बोलते हुए माँ के सामने खड़ा रहा |

“पर तुमने तो कॉलेज में पेमेंट भी कर दिया था”, माँ ने कहा |

“हाँ, दो चार दिनों में पेमेंट रिटर्न हो जाएगा”,|

उस वक़्त माँ खुद को संभालते हुए वहाँ से चुपचाप अंदर चली गई | उनके चेहरे की उदासी से ये साफ़ झलक रहा था की उन्हें अपने बेटे के एडमिशन के बारे में सुनकर कितना सदमा लगा था | माँ के बुरी हालत को देखकर मैं अपनी गलती पर पछता रहा था |

मैं अपनी पढ़ाई छोड़कर बहुत बड़ी गलती कर रहा था, हलाकि उस वक़्त भी मेरे पास कॉलेज ज्वाइन करने का मौका था पर रिमसा की चाहत ने मुझे दिवाना बना दिया था | मेरे झूठ बोलने की बात अगर मेरे माँ को पता चल जाता, तो वो बिलख-बिलख के मर जाती |

इस बात से मैं बिल्कुल वाकिफ़ था, फिर भी लखनऊ ना जाने का मैं संकल्प ले चुका था | उस दिन जैसा शान्ति मेरे घर में कभी देखने को नहीं मिला था |

“घर में बैठने से काम नहीं चलेगा | तुम जल्द से जल्द स्टेडियम ज्वाइन कर लो”, माँ ने कहा |

मैं चुपचाप उनके उदास चेहरे को निहार रहा था | रणभूमि में जीत से ख़ुशी तथा हार से सीख मिलती है | “अगली स्टेज के लिए तुम तैयार हो जाओ”, माँ ने कहा |

वाक़ई जो गलती मैंने किया था वो माफ़ करने लायक नहीं था पर माँ का दिल बेटे के लिए दुनिया में सबसे निराला होता है |

@BOOKHOUSE1

“बेटा एक बार और कोशिश करो”, माँ ने मेरे सामने मुस्कुराते हुए कहा था |

अच्छे अध्यापकों की श्रेणी में माँ-बाप का भी बहुत महत्व होता है | माँ ने मुझे उस दिन एहसास दिला दिया था | माँ के कहने पर मैंने अगले दिन से गोरखपुर रीज़नल स्टेडियम ज्वाइन कर लिया था, पर स्पोर्ट्स में मेरा कोई दिलचस्पी नहीं था |

अगली सुबह मैं चौक पर रिमसा से मिला |“आजकल कहाँ रह रहे हो?” लिफ्ट देने भी नहीं आ रहे हो”, रिमसा ने कहा |

“मैंने स्टेडियम ज्वाइन कर लिया है”, |

“क्यों तुम्हें अपनी एल० एल० बी० की पढ़ाई के लिए लखनऊ नहीं जाना है ?” |

“कट-ऑफ हाई जाने के कारण सारी सीट फुल हो गई है | स्पोर्ट्स कोटे में सिर्फ दस सीटें हैं, जिसमें स्पोर्ट्स कोटे वाले को ही एडमिशन मिलना सम्भव है |

मेरे पास स्पोर्ट्स कोटे का कोई सर्टिफिकेट ना होने के कारण मेरा एडमिशन कैंसिल कर दिया गया है”, मैंने फूल कॉन्फिडेंस के साथ रिमसा के सामने झूठ बोला था |

“तुम सच कह रहे हो या कहानी सुना रहे हो?” रिमसा ने सीरियस होते हुए पूछा |

“तुम्हें मुझ पर यक़ीन नहीं है तो कॉलेज के नंबर पर पता कर लो”, |

उस वक़्त झूठ भी मैं पूरे कॉन्फिडेंस के साथ बोल रहा था पर मुझे ऐसा यक़ीन हो गया था की वो मेरे द्वारा बोले गए झूठ को नाप चुकी थी |

"मुझ  पर तुम्हे भरोसा नहीं है क्या? जाओ आज के बाद मैं तुमसे कभी नहीं मिलूँगा", नाराज़गी का दिखावा करते हुए मैं बोल पड़ा |

"मेरे कहने का मतलब वो नहीं था | मेरे सामने ही तुमने अपने कॉलेज के अकाउंट में पैसे ट्रांसफर किए थे",|

"सारा पेमेंट मेरे खाते में वापस आ चुका है", मैंने कहा |

मेरे कॉन्फिडेंस लेवल को देखकर रिमसा को थोड़ा बहुत यक़ीन हो गया था की मैं सच बोल रहा हूँ | फिर भी वो थोड़ा सस्पेंस में दिख रही थी |

"तुम स्टेडियम रेगुलर जा रहे हो ना?" रिमसा ने पूछा |

"रेगुलर स्टेडियम जाने के कारण ही मैं तुम्हें लिफ्ट देने नहीं आ पाता हूँ", मैंने कहा |

"मेरी चिंता मत करो, मैं मैनेज़ कर लूँगी पर तुम्हारा एक साल बेकार हो गया है | इस स्पोर्ट्स सर्टिफिकेट के चक्कर में", उसने कहा |

"मैंने भी नहीं सोचा था की कट-ऑफ इतना हाई जाएगा", |

"स्टेडियम रेगुलर जाना जारी रखना और कल से तुम मुझे लिफ्ट देने चौक नहीं आओगे | सिर्फ संडे को हम दोनों मिलेंगे", उसने कहा |

@BOOKHOUSE1

"बीच-बीच में नहीं मिल सकते क्या?" मैंने कहा |

"मिलना कोई ज़रुरी तो नहीं है और वैसे भी अभी आप वक़ील तो बने नहीं हो कि मैं आपसे किसी बात की पैरवी करने आऊँ |

अच्छा यही रहेगा की आप स्टेडियम रेगुलर जाएँ ताकि अगली बार आपका एडमिशन कैंसिल करने के लिए आपके कॉलेज वालों को कोई मौका ना मिल सके | मैं भी थोड़ी बिज़ी हो गई हूँ, सिर्फ संडे को फुर्सत मिलता है मुझे ", |

उसकी बातों का चाहकर भी मैं विरोध नहीं कर सका | स्टेडियम ज्वाइन करने वाली बात रिमसा को बताकर मैं पछता रहा था | सात दिन में वो सिर्फ एक संडे को मिलने के लिए बोली थी |  हफ़्ते में दो बार मिलने के लिए मैंने उससे निवेदन किया |

"अपनी माँ के सपने को सीरियस्ली लेना शुरू कर दो | अगर तुम संडे के अलावा इस चौक से लेकर पार्लर के बीच मुझे दिख गये, तो मैं हमेशा के लिए मामा के पास चली जाऊँगी", गुस्से से कहते हुए वो अपने पार्लर चली गई |

उसके द्वारा चले जाने की धमकी ने मेरे दिल को झकझोर दिया था | मैं रिमसा से दूर नहीं होना चाहता था, इसलिए तो मैं अपना कॉलेज छोड़ चूका था |

मैं किसी तरह की गलती नहीं करना चाहता था, जिससे उसे बुरा लगे और वो अपने मामा

के पास जाने के लिए मज़बूर हो जाए | मैंने भी तय कर लिया था की संडे को ही उससे मिलने चौक या पार्लर जाया करूँगा, पर सात दिन मेरे लिए बहुत दुखदाई थे जो जल्दी व्यतीत नहीं होते थे |

संडे के अलावा अगर मैं उसे देखने के बहाने चौक या पार्लर जाता और बाइचाँस वो मुझे देख लेती, तो शायद वो सच-मुच अपने मामा के घर चली जाती | उसने पहले ही ऐसी मुझे चेतावनी दे रखी थी |

मैं चाहते हुए भी उसे देखने नहीं जा सकता था | उससे मिलने के लिए मुझे संडे का इंतज़ार करना पड़ता था | बाकी दिन मैं बेमन से स्टेडियम में फुटबॉल खेलने का प्रैक्टिस किया करता था |

उस पल मैं अपने आप को खाली-खाली महसूस करता था | जब वो संडे को मिलती थी तो चौक से पार्लर तक जाते वक़्त ही बाते हो पाती थी | उसके अलावा वो मुझे समय ही नहीं देती थी | पहले जैसे वो मेरे साथ बात भी नहीं करती थी और ना ही मेरे साथ मिलने के लिए अलग से टाइम निकालती थी | उसके व्यवहार से मैं उदास रहता था |

मैं स्टेडियम में भी प्रैक्टिस ठीक से नहीं कर पाता था और अक्सर स्टेडियम में समय ओवर होने तक मैं ग्राऊंड में बैठा रहता था |

एक दिन मैं रिया के पास पहुँचा |

@BOOKHOUSE1

“अरे! तुम कब आए?” रिया ने पूछा |

“मुझे आए हुए तो महीनो हो गए”,|

“तुमने लखनऊ वाली पढ़ाई छोड़ दी क्या?” उसने पूछा |

“नहीं यार, स्पोर्ट्स सर्टिफिकेट के चक्कर में मेरा एडमिशन कैंसिल हो गया है”,|

“इसीलिए तुम उदास लग रहे हो”, रिया ने कहा |

मैंने कोई जवाब नही दिया |

“तुम इतने उदास क्यों हो?” रिया ने दोबारा पूछा |

“यार एक तो मुझे एडमिशन नहीं मिला | दूसरा में रिमसा बहुत बदल गई है”, मैंने कहा |

“उसने तुम्हें छोड़ दिया क्या?” रिया ने पूछा |

“वो पहले से बहुत बदल गई है | ना मुझसे मिलना चाहती है और ना ही बात करना चाहती है | मुझसे भी मिलने के लिए उसके पास टाइम नहीं है सिवाय संडे के और ये संडे भी कमबख़्त छः दिन के बाद ही आता है”, |

“गाँव की लड़कियों पर भरोसा नहीं किया जाता है”, रिया ने कहा |

“पर रिमसा शहर में रहने वाली लड़की है”, मैंने कहा |

“फिलहाल तो वो गाँव में ही रह रही है | देखो तुम भी उसे प्यार करना कम कर दो | तुम्हारी स्मार्टनेस पर बहुत सी लड़कियाँ अपना दिल लुटाने के लिए तैयार हो जाएँगी |

रिमसा का पीछा करना छोड़ दो और लखनऊ में ही सेटिंग कर लो”, रिया ने कहा |

“मैं रिमसा से बहुत प्यार करता हूँ | उसके अलावा और कोई लड़की मेरी लाइफ में नहीं आ सकती है | अगर कोई लड़की आ भी गई तो वो सिर्फ दोस्त हो सकेगी और कुछ नहीं”, |

“तुम्हारी रिमसा अगर बेवफ़ा निकली तो तुम बर्दाश्त नहीं कर पाओगे”, |

“ज़िस्म से हज़ारों होकर गुज़र जाते हैं, पर रूह तक कोई एक ही पहुँच पाता है”, |

रिया मेरे बातों को सुनकर थोड़ी देर तक शांत रही, फिर बोली -“इस समय तो तुम खाली ही होगे |”

“नहीं मैंने स्टेडियम ज्वाइन कर लिया है, वो भी बिना दिलचस्पी के, मन ही नहीं लगता है | चलोगी मेरे साथ?” मैंने मज़ाक के मूड में पूछा |

“रिमसा की जग़ह, मुझे अपने दिल में दे सकोगे?” रिया ने कहा |

“सपने में भी मत सोचना”, |

“रिमसा में इतना खास क्या है?” रिया ने पूछा |

“उसके गाल पर काले कलर का तिल है, जो तुम्हारे गाल पर नहीं है”, |

“उस तिल वाली लड़की को जितनी जल्द तुम अपने दिल से निकाल दोगे, उतना ही तुम्हारे लिए अच्छा होगा”, रिया ने कहा |

“चुप कर सनकी”, कहते हुए मैं अपने घर वापस आ गया |

रिमसा के इतने करीब होने के बावज़ूद मुझे उसकी कमी खल रही थी | उससे मिलने के लिए मैं बहुत बेचैन रहता था, पर यह कमबख़्त संडे सात दिन का इंतज़ार करवाता था |

वो मुझसे दो कारणों से दूर हुई थी, या उसे किसी लड़के से प्यार हो गया था या फिर मेरे झूठ का उसे पता चल चुका था, पर उसने मुझसे कुछ भी ज़ाहिर नहीं किया था | चक्कर वाली बात मुझे उसके बारे में सोचना अच्छा नहीं लग रहा था, क्योंकि मैंने ख़ुद उसे रोते हुए देखा था मेरे लखनऊ जाने की बात पर |

अगली सुबह मैं स्टेडियम पहुँच चुका था और पहले की तरह ग्राऊंड की घास पर बैठकर मैं आसमान की तरफ देख रहा था, तभी ग्राऊंड में दूर से मुझे एक लड़की दिखी |

मैं बार-बार अपनी आँखें मसल-मसल कर उस लड़की को पहचानने की कोशिस करने लगा | वो काफ़ी दूर खड़ी होकर स्टेडियम के कोच से बात कर रही थी | दूरी होने के कारण मैं ये क्लियर नहीं कर पा रहा था की वो लड़की रिया है या रिमसा | क्योंकि इन दो लड़कियों के अलावा कोई तीसरी लड़की तो हो नहीं सकती थी सेम शक़्ल वाली | मैं झटपट उठा और उस लड़की की तरफ़ जाकर कोच से बात करने लगा | कोच से बात करते वक़्त मैं बार-बार

@BOOKHOUSE1

उस लड़की की तरफ़ देख रहा था, ताकि उस लड़की को मैं ठीक से पहचान सकूँ | उस लड़की के गाल पर तिल नहीं दिख रहा था क्योंकि उसने धूप के कारण दुप्पटे से अपने चेहरे को ढक रखा था |

जिससे उस लड़की को मैं पहचान नहीं पा रहा था | कोच के वहाँ से चले जाने के बाद उस लड़की ने अपने सिर से हँसते हुए अपना दुपट्टा हटाया | उसके सिर से दुपट्टा हटते ही उसके गाल पर काले कलर का तिल दिल देखते ही मैंने रिमसा को पहचान लिया |

“तुम यहाँ कैसे?” मैंने चौंकते हुए पूछा |

“मेरा यहाँ आना अलाउड नहीं है क्या?” रिमसा ने मुस्कुराते हुए कहा |

“मेरे पूछने का मतलब यह नहीं था | तुम्हें तो पार्लर में होना चाहिए”, |

“अपनी फिटनेस के लिए रनिंग ज्वाइन की हूँ”, |

इतना सुनते ही मेरे शरीर के खून की रफ़्तार तेज़ हो गई और मेरी ख़ुशी का ठिकाना ना रहा |

“स्टेडियम आने वाली हो, ये बात तुम मुझे बताई क्यों नहीं?” मैंने कहा |

“सरप्राइस देना था यार”,|

अचानक उसमें हुए परिवर्तन को देखकर मैं दंग था |

@BOOKHOUSE1

“तुम्हारे आने का टाइमिंग क्या है?” मैंने पूछा |

“07:30 बजे से मेरी रेस की प्रैक्टिस शुरू हो जाती है”,|

उसके स्टेडियम ज्वाइन करने से मैं वाक़ई बेहद ख़ुश था | कम से कम संडे का झंझट तो ख़त्म हुआ |

जहाँ तक मुझे याद है की मैं कभी एग्ज़ाम के वक़्त 04:00 बजे सुबह पढ़ने के लिए नहीं उठा था, पर उसके स्टेडियम ज्वाइन कर लेने से मैं सुबह 04:00 बजे उठ जाया करता था और सुबह 06:00 बजे स्टेडियम में दाखिल हो जाया करता था | 06:00 बजे से मेरे फुटबॉल की प्रैक्टिस शुरू हो जाता था और 07:30 बजे तक चलता था |

फुटबॉल में जो लड़का अधिक गोल करता था, उसे कोच सर के द्वारा सबके सामने हाथ उठाकर विजेता घोषित किया जाता था, ताकि सभी खिलाडियों का मनोबल बना रहे | उस वक़्त रनिंग में शामिल होने के लिए रिमसा स्टेडियम में पहुँच जाया करती थी |

मेरे फुटबॉल की प्रैक्टिस समाप्त होने के बाद मैं रेस में भी शामिल हो जाया करता था, क्योंकि रनिंग में लड़के लड़कियां सब एक साथ दौड़ा करते थे |

फाइनली रेसिंग किसी खास की मौज़ूदगी के कारण मैंने जॉइन किया था | गेम समाप्त होने के बाद भी मैं उसके साथ ग्राऊंड में बैठकर बातें किया करता रहता था | मैं फुटबॉल का बेस्ट प्लेयर कब बन गया मुझे कुछ पता ही नहीं चला |

फुटबॉल की प्रैक्टिस में मैं सबसे ज्यादा गोल शूट करता था | फिर स्टेज़ पर कोच सर द्वारा मुझे सबके सामने विजेता घोषित किया जाता था |

स्टेडियम के सारे खिलाड़ी जोर जोर से ताली बजाया करते थे और उसी भीड़ में खड़ी होकर रिमसा अपने हाथ से अंगूठा दिखा दिया करती थी जैसे मानो वो फेसबुक के पेज़ को लाइक कर रही है |

वो मेरे जीत पर तारीफ़ भी किया करती थी, ये कहकर कि "तुम जैसा गोल शूटर स्टेडियम में कोई नही है |"

मैं भी बराबरी के लिए बोल दिया करता था "तुम जैसी खूबसूरत हसीना इस पूरे पूर्वांचल में नही है |"

वो मेरे बातों पर हँस दिया करती थी | एक दिन स्टेडियम वाले कोच सर किसी काम से बाहर चले गए थे | जिसके कारण ग्राऊंड बिल्कुल खाली था | उस दिन मैं और रिमसा ग्राऊंड में बैठकर बातें कर रहे थे |

उसके पैर पर मैं अपना सिर रखकर घास पर लेटा हुआ था |

"तुम वक़ालत  कब तक पूरी कर लोगे?"

"अगले दो साल तक |"

@BOOKHOUSE1

"तुम्हें अपनी वक़ालत की पढ़ाई जल्द से जल्द पूरी कर लेना चाहिए | अगर तुम्हारा एडमिशन कैंसिल ना हुआ होता तो एक साल पूरा हो चुका होता", |

"न्यू सेशन में मैं पूरी जी जान लगा दूँगा", मैंने कहा |

अचानक उसने अपना सिर झुका दिया | उसकी खुले हुए बाल मेरे चेहरे पर बिखरने लगा | उसके बाल खुले होने के कारण हवा में उड़ रहे थे | उसके झुकने से मेरे होंठ उसके नाक को स्पर्श करने लगे | मैंने अपने आप को थोड़ा सा एडज़स्ट किया | तब उसके गुलाबी होंठ से मेरे होंठ स्पर्श करने लगे | मैं उसे किस करने लगा वो भी अपनी आँखें बंद करके मेरा साथ देने लगी |

जिस एंगल से हम दोनों आपस में लगे हुए थे | मेरा माने तो आप इस तरह के स्टंट को कभी ट्राई मत करना वर्ना एक्सीडेंट हो जाएगा | कुछ देर बाद वो अपना सिर ऊपर कर ली और अपना सिर ग्राऊंड के चारों तरफ़ घुमाने लगी | मेरे ख़्याल से उसे ऐसा लग रहा था की हम दोनों को कोई देख रहा हो |

"क्या हुआ? "|

"कहीं भी शुरू हो जाते हो", उसने कहा |

लड़कियों के मूड़ को कुछ कह नहीं सकते कि इनके दिमाग़ में क्या-क्या चलता रहता है | इनका मन तो करता है फिर भी ज़ाहिर नहीं करती हैं | ग्राऊंड की लम्बी मुलाकात से मुझे एहसास हुआ कि मेरा गोरखपुर में रहना थोड़ा सा फलित हुआ है | फिर हम दोनों स्टेडियम

से घर आ चुके थे |

कुछ दिनों तक स्टेडियम में मेरी फुटबॉल की प्रैक्टिस और रिमसा के साथ रेसिंग जारी रही | सुबह 06:00 बजे मैं स्टेडियम पहुँच जाया करता था और 07:30 बजे तक फुटबॉल की प्रैक्टिस चलता था |

फिर 07:30 से 9:00 बजे तक मैं रिमसा के साथ रनिंग किया करता था | घर से सुबह 06:00 बजे मैं स्टेडियम के लिए निकल जाता, पर घर पहुँचने का कोई फिक्स टाइम नहीं था |

रिमसा ने भी शायद पार्लर छोड़ दिया था क्योंकि जब वो मेरे साथ स्टेडियम से वापस आती तो, वो चौक से सीधे ऑटो के द्वारा अपने घर चली जाया करती थी | स्टेडियम से छूटने के बाद मैं कभी-कभी मार्केट में नाना जी के दुकान पर भी चला जाया करता था | एक दिन स्टेडियम से मैं नाना जी के दुकान पर चला गया |

मैं दुकान में बैठ हुआ था तभी वहाँ राणा आ गया |

“इस दुकान पर कितनी बार आया, पर तुमसे मिल नहीं पाया”, राणा ने कहा |

“लो आज मिल गए”, मैंने कहा |

“मेरे घर लक्ष्मी आई है | तुम्हें शाम को दावत करने आना है”, राणा ने कहा |

@BOOKHOUSE1

मैं उसकी बात सुनकर अपने बालों में ऊँगली करते हुए सोचने लगा सचमुच राणा के घर लक्ष्मी आई है |

“इतना सोच क्या रहे हो? मेरी पहली संतान लड़की हुई है और उसी ख़ुशी में मैंने अपने घर छोटा सा पार्टी रखा है | तुम आओगे ना?”|

“हाँ- हाँ ज़रूर आऊँगा |”

“तुम्हारा इंतज़ार करूँगा”, बोलते हुए राणा दुकान से चला गया |

आख़िरकर इतना अच्छा मौक़ा मैं भला कैसे छोड़ सकता हूँ, मैंने अपने मन में सोचा क्योंकि राणा ने मुझे उसी जग़ह बुलाया था | जिस शादी में मैं पहली बार रिमसा से मिला था | फिर मैं वहाँ जाना कैसे भूल सकता था?

दोपहर के वक़्त जब मैं दुकान से वापस अपने घर पहुँचा, तो परम मेरा इंतज़ार कर रहा था | मुझे देखकर परम बेवज़ह हँस रहा था |

“लॉटरी लग गई है क्या तुम्हारी?” मैंने पूछा |

“जो काम तुम अभी तक नहीं कर पाए हो, वो काम मैंने सटाक से कर दिया है”, परम ने हल्की मुस्कराहट के साथ कहा |

“मुझे भी तो बताओ तुमने कौन सा काम सटाक से कर दिया है?” |

“अपनी वाली से रिलेशनशिप बनाकर डायरेक्ट तुम्हारे पास आ रहा हूँ ”, परम ने कहा |

“हटो गंदे बच्चे”, |

“तुम भी कर लो मेरे जैसे, वर्ना तुम्हारी रिमसा तुम्हे छोड़कर चली जाएगी”, परम ने कहा |

“वो मुझे छोड़कर कहीं नहीं जाएगी”,|

“लडकियों को अपने बस में करने के लिए ऐसा करना पड़ता है | आगे सोच लो”, कहते हुए परम मेरे घर से चला गया |

शाम को मैं अपने पिताजी की पुरानी बाइक से राणा के घर पहुँच चुका था | मेरी निगाहें रिमसा को ढूँढ रही थी | तभी कुछ दूर खड़ी होकर रिमसा मुस्कुराते हुए दिखी, शायद उसने मुझे देख लिया था | उस रात में राणा के घर रुकने की तरक़ीब सोचने लगा | वो बेवज़ह मेरे सामने मुस्कुराते हुए धीरे-धीरे मेरे पास आकर खड़ी हो गई |

“कब आये हो? देर रात तक नही रुकना जल्दी ही चले जाना, रात को ठंडी लगने लगेगी”, उसने कहा |

“रात को मिल सकती हो?” मैंने पूछा |

“आज कोई शादी नहीं है की हम दोनों मिल पाएंगे | किसी की नज़र पड़ गई तो मेरी छुट्टी कर दी जाएगी यहाँ से ”,|

“किसी को कुछ पता नहीं चलेगा”, मैंने कहा |

“यहाँ रुकने के लिए किसी से विनती करोगे क्या?” रिमसा ने मुस्कुराते हुये कहा |

किसी की शादी में रात भर रुकना आसान है पर बर्थडे पार्टी में किसी के घर रुकना बिल्कुल शोभा नहीं देता है | पर मैं राणा के घर उस रात अपनी शहज़ादी से मिलने की ख़ातिर वहाँ रुकने के लिए अपने दिमाग़ में उपाय सोचने लगा | तभी मेरा ध्यान पार्टी में नाच रहे बच्चों पर पड़ा | फिर मैं एक बच्चे का हाथ पकड़कर अपने साथ  बाइक की तरफ़ ले जाने लगा |

“इस बच्चे को कहाँ ले जा रहे हो?” रिमसा ने पूछा |

“ये बच्चा जादू करने वाला है, हम दोनों को मिलाने के लिए”, |

मेरा बात उसे मज़ाक लग रहा था और वो हँसती जा रही थी | मैंने बच्चे को बाइक से हवा निकालने के लिए इशारा कर दिया और बच्चे को अपनी बाइक के पास छोड़कर रिमसा के पास आकर खड़ा हो गया | बच्चा मज़े लेते हुए मेरी बाइक का हवा निकालने लगा |

“मान गए वक़ील जी, पागल होने के साथ-साथ चालाक भी हो आप”, उसने आँख मटकाते हुये कहा |

बाइक के अगले चक्के से बच्चा हवा निकालकर जा चुका था | पार्टी में मैं राणा के साथ खाना पीना खा चुका था | मुझे बाइक तक छोड़ने के लिए मेरे साथ दो-तीन महिलाएँ भी आई हुई

@BOOKHOUSE1

थी, क्योंकि मैं राणा की शादी में भी जा चूका था और शादी से पहले मैंने राणा को अपना ब्लड डोनेट करके बचाया भी था | इसलिए राणा के घर जितने भी लोग रहते थे, मुझे सब बहुत मानते थे |

“तुम्हारा अगला चक्का तो पंचर है”, राणा ने कहा |

“क्या?” मैंने चौंकते हुए कहा |

उस वक़्त मैंने सबके सामने दिखावा बेहतर ढंग से कर दिया था |

“रात का वक़्त है, ठंड लग जाएगी | आज रात तुम यहीं रुक जाओ”, राणा ने कहा |

“मैं धीरे-धीरे चला जाऊँगा”, मैंने कहा |

“तू कहीं नहीं जाऐगा, इस वक़्त काफी रात हो चुकी है बेटा”, राणा की माँ ने ऊँची आवाज़ में कहा |

मैं शांति से खड़ा रहा | उस वक़्त मैं अपने प्लान में सफल हो गया था फिर राणा मुझे सीढ़ियों से होते हुए सेकेंड फ्लोर पर ले गया और एक रूम की तरफ़ इशारा करते हुए उसने कहा कि – “ये रहा तुम्हारा रूम |”

“धन्यवाद!” |

“गुड नाइट!” बोलते हुए राणा नीचे चला गया |

@BOOKHOUSE1

वो वही रूम था जिसमें राणा के शादी के वक़्त रिमसा मुझे पार्टी से खींचते हुए लाई थी और मेरे बाहों में समा गई थी | उस रूम में मेरी पुरानी यादें ताज़ा हो गयी | मैं खिड़की खोलकर आसमान की तरफ़ देखने लगा, फिर बिस्तर पर बैठकर रिमसा के आने का इंतज़ार करने लगा | मेरे मन में असमंजस की स्थिति बन हुआ था, कि रिमसा मेरे रूम में आएगी या नहीं | फिर भी मेरे दिल के एक कोने से ये आवाज़ आ रहा था, की रिमसा ज़रूर मिलने आएगी | रूम का दरवाज़ा मैंने खोल रखा था | उस वक़्त रात के 12:00 बज रहे थे | चारों तरफ़ सन्नाटा छाया हुआ था, तभी किसी के आने की आहट हुई | मेरी निगाहें दरवाज़े के तरफ टिकी हुई थी | एक लड़की सलवार सूट पहनी हुई रूम में आई | उसका चेहरा दुपट्टे से पूरा का पूरा ढकां हुआ था | उसके हाव भाव से रिमसा नहीं लग रही थी | वो लड़की विवाहित थी या नहीं ये भी अंधेरे में पता करना मुश्किल था | उसके हाथ में पानी की बोतल था | मैं अंधेरे में उस लड़की को पहचानने की कोशिश कर रहा था | पानी की ज़रूरत हो तो ले लेना कहते हुए वो बोतल को मेज़ पर रख दी | उसकी बनावटी आवाज़ को मैं पहचान गया की वो लड़की कोई और नही बल्कि रिमसा ही है | फिर वो जाने के लिए मुड़ी |

“मिस पार्लर”, मैंने पुकारा |

उसने मुड़ते हुए अपने सिर से दुपट्टा उठाया और हँसने लगी |

“पहचान लिये”, |

“अच्छी एक्टिंग कर लेती हो”, |

“ये रूम तुम्हें याद है”, उसने कहा |

“मेरा प्यार इसी रूम में मिला था | मैं भला कैसे भूल सकता हूँ”, |

“ तब तो पिछली मुलाक़ात तो याद ही होगी”,|

“याद तो पूरा है, पर आज के बाद कभी नही भूलेगा”,|

मेरी बातें सुनकर वो मुस्कुरा दी | परम की शैतानी हरकत मेरे दिमाग़ में गूँज रही थी |

“तुम्हें याद है पिछली बार इसी बेड पर तुम मेरे पैर पर अपना सिर रखकर लेटी हुई थीं”, मैं उसे उकसाने की कोशिश कर रहा था |

“तुम उस वक़्त मेरी आँखें बंद करवाकर पिछली बगावत वाली बातें बता रहे थे | मुझे अच्छे से याद है”, रिमसा ने कहा |

“इतनी दूर क्यों खड़ी हो, पास भी तो आ सकती हो”,|

“इस अंधेरी रात में क्यों बुलाये हो?” मेरे पास बेड पर बैठते हुए बोली |

“मुझे मिलने का मन कर रहा था”,|

“स्टेडियम में हम दोनों रोज़ मिलते हैं | आज भी तो मिले थे, क्या तुम भूल गए?” उसने कहा |

@BOOKHOUSE1

“इतना भाव क्यों खा रही हो?” |

“थोड़ा बहुत तो भाव खा ही सकती हूँ“, उसने मुस्कुराते हुए कहा |

मैंने उसका हाथ अपने हाथ में थाम लिया |

“तुम्हारा हाथ गरम है | तुम्हें बुखार है क्या?” |

“इस वक़्त डॉक्टर की ज़रूरत नहीं है”, उसने मुस्कुराते हुए कहा |

मन-ही-मन उस अंधेरी रात में, मैं उसकी बेमिसाल ख़ूबसूरती की तारीफ़ कर रहा था | मैं अपना एक हाथ उसके कंधे पर रखा हुआ था तथा दूसरे हाथ से मैं उसका एक हाथ थामा हुआ था |

उस वक़्त मेरे भीतर कुछ नए क़िस्म के अरमान जागने लगे थे | कुछ अज़ीब सा महसूस हो रहा था | बहुत बार हम मिल चुके थे पर उस रात की तरह कभी नहीं हुआ था |

मैंने अपना सिर झुकाकर उसे किस करना चाहा पर वो अपना चेहरा हटाते हुए बिस्तर पर पलटी मार गई | वो समझ चुकी थी की मैं उसे किस करने के मन से झुका था | बेड पर पलटी मारने के अलावा उसने कोई विरोध नहीं किया | वो बेड पर चुपचाप लेटी रही |

उसकी आँखों की पलकों को मैं देख रहा था, बेवज़ह वो मुस्कुरा रही थी | सामान्यत:

लड़कियों के मुस्कुराते ही सारे रास्ते क्लियर समझे जाते हैं, पर मेरी वाली का पता ही नहीं चलता था की उसके मुस्कुराने का क्या मतलब समझा जाये | कुछ देर बाद मैं भी बेड पर लेट गया | कुछ मिनटों बाद मैं अपना मुँह उसके सामने करते हुए पलट गया | उसकी दोनों आँखें बंद थी |

उस पल ये पता करना मुश्किल था कि वो जगी है या सो चुकी है | हल्की जमाई लेते हुए मैं छत की तरफ़ देखने लगा | तभी मेरे पैर के निचले हिस्से पर कुछ स्पर्श होता हुआ महसूस हुआ|

मैं चौकते हुए उठकर बैठ गया और अपने पैर की तरफ़ देखा तो उसका पैर था जो मेरे पैर पर पड़ा हुआ था |

मैंने तुरंत उसकी आँखों की तरफ़ देखा, पर उसकी आँखें बंद थी | कुछ सेकेंड देखने के बाद भी उसकी आँखें नही खुली, मुझे आभास हुआ की वो सो चुकी है और उसका पैर गलती से मेरे पैर के ऊपर आ गया होगा | फिर उसका पैर अपने पैर से उतारकर बेड पर रखते हुए मैं बिस्तर पर लेट गया |

कुछ देर बाद उसने अपना हाथ मेरे कमर पर रखा दिया | उसकी सोने की पोज़ीशन एक जैसी बनी हुई थी, सिर्फ उसके हाथ पैर ही इधर उधर हो रहे थे | मैं  उसके बिल्कुल ही करीब हो गया और उसके वक्ष के महज़ करीब मेरा छाती था | उसकी साँसों का चलना मुझे महसूस हो रहा था क्योंकि अंधेरे के वक़्त चारों तरफ़ शांति का माहौल पसरा हुआ था |

@BOOKHOUSE1

उसका थोड़ा सा हिलना मेरे लिए लॉटरी लगने जैसा था | उसने एक बार मेरे होंठ को चूम लिया | मैंने तुरंत थोड़ा सा अपना सिर पीछे करके उसकी आँखों की तरफ़ देखा लेकिन उसकी दोनों आँखें बंद थी |

मैं सोचने लगा कि दुनिया में ऐसी कौन सी लड़की होगी जो नींद में सोते हुए अपने प्रेमी को किस करती होगी | फिर मैं उसके होठों को चूमने लगा | उस सिचुऐशन में किस करना कितना गलत था उसका अंदाज़ा मुझे बिल्कुल नहीं था | उसने भी मेरा साथ देना शुरू कर दिया | जब मैंने उसकी आँखों की तरफ़ देखा तो उसकी पलकें झपक रही थी | कुछ देर बाद वो पीछे हो गई |

“तुम तो सो चुकी थी ना”, मैंने कहा |

“कोशिश तो बहुत की सोने की  पर तुम्हारी मौज़ूदगी ने मुझे सोने नहीं दिया”, |

उसके द्वारा की गई सोने की एक्टिंग बिल्कुल परफेक्ट थी | लड़कियों को वरदान प्राप्त है लड़कों को उल्लू बनाने का |

मैं उससे बात करके समय को बर्बाद नहीं करना चाहता था, क्योंकि परम की बात मुझे बार-बार उलझा रहीं थीं | मैं जानबूझकर अपनी आँखें बंद करके लेट गया |

“मेरी नींद उड़ा कर खुद सोने की कोशिश मत करो”, उसने कहा |

सारी लड़कियाँ एक जैसी होती है, जो शायद बेवज़ह ही इल्ज़ाम लगा दिया करती हैं | मैं अपनी आँखें खोलते हुए झटपट उसकी तरफ़ लपकते हुए किस करके दीवार से टेक लेकर बैठ गया |

"बिना परमिशन अलाउड नहीं है", उसने मुस्कुराते हुए कहा |

"क्या मुझे तुम पर हक़ नहीं है?" मैंने नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए कहा |

बिस्तर से तुरंत उठकर वो मेरे तरफ़ आते हुए, मुझे अपने दोनों हाथों से मेरे गले में राउंडिंग करते हुये वो अपना सिर मेरे सीने पर रख दि|

"मैं तुम्हारी ही थी और आगे भी रहूँगी | तुम्हारा मुझ पर पूरा अधिकार है | तुम जो चाहो कर सकते हो, क्योंकि मैंने तुम्हारा कभी विरोध नहीं किया है और ना कभी करुँगी |

बस जहाँ तुम्हारी भलाई की बात आयेगी उसके लिए मैं अपनी रूह से लेकर दिल को दहलाने तक ख़ुद को खफ़ा कर लूँगी", उसने लम्बी साँसे लेते हुए कहा था |

मैं उसकी बातें सुनकर परम की गंदी बातों को अपने दिमाग़ से तुरंत हटा दिया | वैसे भी मैं परम के बहकावे में आ गया था | मैं भी यही सोच रहा था की जब तक मैं और रिमसा पूरी कसौटी के साथ एक नहीं हो जाते, तब तक मैं उसके साथ रिलेशनशिप नहीं बनाऊँगा |

उस वक़्त मैं उसकी बातों को सुनकर गदगद हो गया था | ये बात बिल्कुल सच है की अगर आप भी किसी लड़की से सच्चा प्यार करते हो तो, फाइनली उसके साथ रिलेशनशिप बनाने के बारे में आप बिल्कुल नहीं सोचोगे, बशर्ते जब तक आपका कोई शरारती दोस्त आपको उकसाए नहीं, यह बात शत प्रतिशत सही है | मैं भी तो अपने उसी शरारती दोस्त के कारण रिलेशनशिप बनाने के बारे में सोचा रहा था, पर उसकी बातें, मुझ पर जादू चलने जैसा था |

हम दोनों बिस्तर पर सीधे लेटकर छत की तरफ़ पंखे को देखने लगे | मैं थोड़ा पलटा और उसे अपने ऊपर उठाने की कोशिश करने लगा |

"क्या कर रहे हो?" |

"मैंने एक हाथ को बेड तथा दूसरे हाथ को उसकी कमर के बीच में डालते हुए बिस्तर से उसको उठाकर अपने ऊपर सुला लिया | दस सेकंड भी नहीं हुए होंगे, वो तुरंत कूदकर फर्श पर खड़ी हो गई |

"पागल, क्या कर रहे थे?", |

"तुम्हें तोलने की कोशिश कर रहा था, कि तुम कितने किलो की हो", मैंने कहा |

"बताओ फिर कितने की हूँ?" उसने मुस्कुराते हुए पूछा |

"मैडम, मशीन खराब है", |

वो जोर-जोर से हँसने लगी | रात के कारण रूम में उसकी हँसी गूँज रही थी | उसे चुप

©BOOKHOUSE1

कराने के बावज़ूद वो हँसे जा रही थी |

मशीन का अर्थ पता नहीं वो क्या सोच बैठी थी? उसकी हँसी रुक नहीं रही थी | कुछ देर बाद उसने हँसना बंद किया |

“तुम्हारी तोलने वाली मशीन कब ठीक होगी?” उसने पूछा |

“तुम एक बार बोलो तो सही मैं अभी ठीक कर दूँगा”,|

“ठीक है, दो मिनट है तुम्हारे पास”, |

टेबल पर रखा गये पानी की बोतल की तरफ़ मैंने इशारा किया | हँसते हुए बोतल मुझे दे दी | मैं गटा-गट पानी पीने लगा | बोतल का आधा पानी मैं अकेले पी गया | मुझे लगा था कि सचमुच रिमसा मेरे ऊपर सोयेगी, तभी उसने मुझे दो मिनट का समय रेडी होने को लिए दिया था |

उसने ऐसा सचमुच किया तो मैं बिना सोचे समझे पैतीस किलो उसका वेट बता दूँगा |

“टाइम ओवर मिस्टर”, उसने कहा |

“मैं रेडी हूँ”,|

वो हँस-हँसकर क्या बोली जा रही थी, मैं समझ नहीं पा रहा था |

“पहले हँस लो फिर बोलना”,|

@BOOKHOUSE1

हँसी दबाते हुए उसने अपनी बात जारी रखी - “इस घर के बगल में एक बैल रहता है | उस बैल को अपने ऊपर चढ़ाकर मुझे उसका वज़न तुम बता सकते हो|” इतना कहते हुए वो टेबल पर बैठकर हँसने लगी |

उसकी बात सुनकर मैं भी हँसने लगा पर मैंने पैतीस किलो ही वज़न सोच रखा था वो भी रिमसा के लिए |

पहली बार मैं उसके चेहरे पर उतना हँसी देखा था | हँसी के कारण वो अपना शरीर नहीं संभाल पा रही थी | उसने थोड़ा सा मेरा बेइज़्ज़ती ज़रूर किया था पर मुझे कोई ऐतराज़ नहीं था |

दीवार पर लगी हुई घड़ी की तरफ़ उसने इशारा किया, उस समय सुबह के 04:00 बज रहे थे |

“मैं जा रही हूँ”, बोलते हुए वो टेबल के सामने खड़ी हो गई |

“इतनी जल्दी क्या है?” |

“मौसा-मौसी को इस रूम मैं मेरी उपस्थिति के बारे में थोड़ा भी पता चल गया, तो वो लोग मुझे फ़ौरन यहाँ से भगा देंगे”, उसने अपना हाथ हवा में उठाते हुए कहा |

वैसे गाँव के लोग सुबह 04:00 बजे तक उठ जाते हैं और टहलना या एक्सरसाइज़ करना

शुरू कर देते हैं |

कुछ लोग सुबह में गाय और भैंस को चारा खिलाने के लिए जग जाते हैं | रुम से जाने से पहले मैं उसे एक बार अपनी छाती से लगाना चाहता था |

“तुम सच में जा रही हो?” मैंने पूछा |

“जाना तो पड़ेगा ही, अपना प्यार जारी रखने के लिए”,|

मैं बेड से उतरकर उसके करीब जाने के लिए खड़ा हुआ | वो झटपट आकर मेरी बाहों में समा गई | कभी-कभी तो मुझे ऐसा लगता था की मेरे मन की बात उसके पास ब्लूटूथ द्वारा पहुँच जाया करता है, जैसे की मैं सोच रहा था उसे गले लगाना, पर वो खुद आकर मुझसे लिपट गई थी |

“जाने की इच्छा तो मुझे भी नहीं है, पर जाना ही पड़ेगा”, उसने धीरे से मेरे कान में कहा |

मैं उसके पीठ तथा कमर से अपने हाथ को नीचे कर लिया | वो मुस्कुराते हुये रूम से बाहर चली गई | उसके चले जाने के बाद रूम में सूना – सूना सा लग रहा था | मैं सीढ़ियों द्वारा नीचे उतर ही रहा था तभी अचानक राणा मेरे सामने आ गया |

“चाय तो पी लो”, राणा ने कहा |

“धन्यवाद! मुझे जाना होगा”, बोलते हुए मैं राणा के घर से अपनी बाइक लेकर घर वापस आ गया |

@BOOKHOUSE1

स्टेडियम में मैं रोज़ उसके साथ रेस में शामिल हो जाया करता था | रेस ओवर होने के बाद भी हम दोनों ग्राऊंड में बैठकर बातें किया करते थे फिर भी हम दोनों को एक दूसरे से बहुत लगाव बना हुआ था | फ़रवरी का वक़्त था | बग़ावत होने में एक दिन बाकी रह गया था |

मैं शाम को अपने घर के सामने खड़ा था| उसी वक़्त गाँव की सड़कों पर गाड़ियों की चहल-पहल होना शुरू हो गया था | मैंने अंदाज़ा लगा लिया की एजेंट (मेरे चाचा) का अमीर मित्र “चड्ढा” आ चुका है अपने पालतू आदमियों के साथ| बग़ावत होने में कुछ ही घंटे बाकी रह गए थे |

एजेंट तथा चड्ढा में इतनी गहरी मित्रता थी की चड्ढा जी चौबीस घंटे पहले ही आ चुका था अपनी मित्रता निभाने अपना लखनऊ का कारोबार छोड़कर |

पिछले बार से 2012 वाला बग़ावत कुछ ख़ास था , क्योंकि इस बग़ावत में अड़तालीस प्लॉट बांटे जाने थे, और ये संख्या पिछली बार के प्लॉटों की संख्या से चार गुना अधिक था |

मैं स्टेडियम में फुटबॉल की प्रैक्टिस करके ग्राऊंड में बैठा हुआ था | तभी रिमसा के साथ एक लड़की आती हुई दिखी, वो लड़की रूपा थी | रूपा को दूर से देखते ही मैंने पहचान लिया |

“हाय जेंटलमैन!” रूपा ने कहा |

“तुम दोनों एक दूसरे को जानते हो क्या?” रिमसा ने पूछा |

“बिल्कुल नहीं”, रूपा ने हँसते हुए कहा |

लड़कियों को अपने बॉयफ्रेंड्स पर भरोसा नहीं होता है | चाहे उसका बॉयफ्रेंड अपनी जान उस लड़की को देने के लिए किसी भी हालत में तैयार हो| फिर भी लड़कियाँ हमेशा शक़ के दायरे में रहती हैं |

“किसी नौजवान के मारे जाने पर तुम पिछली बार शायद रो रहे थे”, रूपा ने कहा |

“जो नौजवान मारा गया था वो मेरा भाई था और मेरे भाई को चड्ढा जी ने मरवाया था एजेंट के कहने पर”, मैंने कहा |

“जिसे तुम चड्ढा जी समझते हो वो मेरे पापा है”, रूपा ने कहा |

“मुझे पता है”,|

“सॉरी! यार”, रूपा ने कहा |

“कोई बात नहीं”, |

“एक्सक्यूज़ मी” बोलकर रूपा थोड़ी दूर जाकर अपने सेल फोन पर हँस-हँसकर बातें करने लगी |

@BOOKHOUSE1

“उसके पापा वाक़ई अमीर और क्रिमिनल हैं पर रूपा अच्छी लड़की है”, रिमसा ने कहा |

“इसका बॉयफ्रेंड तो ज़रूर होगा”, मैंने कहा |

“रूपा, बिल्कुल मॉडर्न लाइफ जीती है | जो चीज़ें हम सब छुप-छुपाकर करते हैं, वो सारी चीजें रूपा ओपेंली करती है |

इसका चार लड़कों से चक्कर है पर रूपा सभी लड़को से प्यार करने का दिखावा करती है | सबसे ख़ास बात यह है की रूपा कई लड़कों के साथ रिलेशनशिप बना चुकी है”, रिमसा अपना सिर झुकाते हुए बोली |

इन देशी लड़कियों की ख़ासियत है की वो इंपॉर्टेंट चीज़ करने में शर्मा जाती हैं और बोलने में भी हिच-किचाती है|

“रुपा, बहुत ही कमीनी है”, मैंने कहा |

“धीरे से बोलो सुन लेगी | मुझे भी यही राय देती है की प्यार-व्यार के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए | इसमें सिर्फ बर्बादी होती है”, रिमसा ने कहा |

“तुमने किसी से प्यार किया है?” मैंने पूछा |

“मुझे प्यार-व्यार करके बर्बाद थोड़ी ना होना है”, रिमसा ने मुस्कुराते हुये कहा |

इतने में रूपा हम दोनों के बीच शामिल हो गई |

“एक बात क्लियर कर सकती हूँ?” रूपा ने पूछा |

“हाँ – हाँ क्यों नहीं”, |

“आपस में बँटवारा होते हुए मैंने बहुत देखा है और सुना भी पर यह पत्थर की बग़ावत मुझे समझ में नहीं आती है”, रूपा ने मेरी तरफ़ देखते हुए कहा |

मैंने पत्थर से होने वाली बग़ावत के रूपों को समझाना शुरू किया |

“जिस वक़्त हमारा भारत अँग्रेज़ों का गुलाम था, उस वक़्त मेरे दादा जी अँग्रेज़ों के साहूकार थे | जो हलकों की लगान वसूली करते थे |

अँग्रेज़ों के जाने के बाद यहाँ की सारी बंजर तथा फसलों वाली भूमि मेरे दादा जी की हो गई | उनके पास बहुत अधिक प्लॉट थे, इसलिए वो अपनी रियासत को पुराने ख़्यालो की तरह बग़ावत कराना चाहते थे, जैसे पत्थर पर लिखे गए नामों को किसी अनजान इंसान से प्लॉट पर रखवा दिया जाता है | फिर जिस नाम का पत्थर जिस प्लॉट पर चला जाता है वो प्लॉट उस पत्थर पर लिखे गए नाम वाले के हिस्से हो जाता है |

अगले दिन होने वाली बग़ावत को तुम पूरी तरह समझ सकोगी, मुझे उम्मीद है |”

“हमें चलना चाहिए” रूपा ने कहा |

रूपा और रिमसा दोनों एक साथ स्टेडियम से चली गईं | मैं भी वहाँ से वापस घर आ चुका था | मैं अभी अपने रूम में प्रवेश करने ही वाला था, तभी माँ मेरा हाथ पकड़कर घर के अंदर एक रूम में ले जाने लगी | मैं तो डर गया था की मेरा कौन सा गलती माँ को पता चल गया है, जो मुझे गुनहगारों की तरह पकड़ते हुए अन्दर ले जा रहीं है | अंदर वाले रूम में लेजाकर मेरा हाथ छोड़ते हुए माँ लम्बी - लम्बी साँसें लेने लगी |

“क्या हुआ माँ? मैंने पूछा |

“अगले पल बग़ावत होने वाला है | एजेंट चाहे कोई भी चाल चले, तुम किसी तरह का कोई विरोध नहीं करोगे”,|

“हाँ बेटा, अपने भाई की बात तो तुम्हें याद ही होगी”, पिताजी ने कहा |

मैं उनकी बात को चुप-चाप सुनता रहा और हाँ में हाँ मिलाता रहा | सुबह होते ही लोगों का आना जाना लगा हुआ था | कुछ लोग इकट्ठे हुए थे, “पत्थरों की किस्मत” वाली बग़ावत देखने के लिए |

एजेंट के घर के सामने बहुत सारे लोग सूट- बूट पहनकर खड़े थे और बहुत सारे वी०आई पी० लोगों का आना जाना लगा हुआ था | बग़ावत का कार्यक्रम शुरु हो चुका था | अड़तालीस प्लॉट् को तीन लोगों में बाँटना था | हर एक हिस्सेदार को सोलह प्लॉट मिलना तय था पर किसको बड़ा प्लॉट मिलेंगा और किसको छोटा प्लाट मिलेंगा यह तो उनकी किस्मत का खेल था |

अड़तालीस पत्थर पर सबके नाम लिखे जा चुके थे |

सोलह पत्थरों पर एजेंट का नाम अंकित किया गया था |

सोलह पत्थरों पर अपाहिज़ चाचा का नाम अंकित किया गया था |

सोलह पत्थरों पर मेरे पिताजी का नाम अंकित किया गया था |

पत्थरों की संख्या अधिक होने के कारण चार- पाँच अनजान लोगों की आवश्यकता थी, ताकि अनजान लोग के द्वारा टोकरो से पत्थर निकालकर प्लॉट में रखवाया जा सकें और सबको अपने - अपने भाग्य का पता चल सके तथा हिस्सेदारों को अपना प्लॉट मिल सके |

तभी चार आदमी दो बाइक से जा रहे थे | उन्हें देखकर लग रहा था की वो चारो राहगीर कहीं जा रहें हैं | फिर उनको बुलाकर टोकरो से अड़तालीस पत्थरों को निकलवाकर एक-एक प्लॉट में रखवा दिया गया | जहाँ तक मुझे याद था की उन चार अनजान लोगों को मैंने पहली बार देखा था |

मुझे यक़ीन नहीं हो रहा था की एजेंट इस बार कुछ चाल नहीं चला होगा | उसके बावज़ूद मेरे पिताजी को बग़ावत में सारे छोटे-छोटे ही प्लॉट मिले थे | मैंने यही सोचा की किस्मत भी हम लोगों का साथ नहीं दे रही है, क्योंकि सारे के सारे छोटे प्लॉट मेरे पिताजी को ही मिले थे | मुझे समझ में नहीं आ रहा था की ऊपर वाला भी कितना खिलाफ़ है हमारे घर वालों के |

जबकि सारे बड़े प्लॉट अपाहिज तथा एजेंट को मिले थे | बग़ावत समाप्त हो चुका था| चारो अनजान आदमी अपने बाइक से सफ़र के लिए जा चुके थे | मैं प्लॉट के तरफ़ देखकर यही सोच रहा था की आखिर मेरे पिता जी कितने पनौती है, कि सारे के सारे छोटे प्लॉट उन्हें ही मिले हैं | तभी मेरे सेल फोन पर नये नंबर से कॉल आया |

“हैलो कौन?” |

“रूपा बोल रही हूँ |”

“मेरे लिए कोई सेवा?” मैंने कहा |

“जिन चार लोगों ने प्लॉट पर पत्थर रखा है, उन्हें तुम जानते हो?”

“नहीं वो चारो लोग राहगीर थे और मैंने उन्हें पहली बार देखा है”, मैंने कहा |

“वो चारो अनजान लोग मेरे पापा के ऑफिस के ऑफिसर थे |”

“तुम सच बोल रही हो?” मैंने पूछा |

“मेरा यक़ीन मानो”, कहते हुए रूपा ने कॉल कट कर दिया |

मेरा शक़ सच निकला मैं दौड़ते हुए अपनी माँ के पास गया |

“इतना हाँफ़ क्यों रहे हो?” माँ ने पूछा |

“दलाल अपने अमीर मित्र चड्ढा से मिलकर इस बग़ावत में भी हम लोगों के साथ चाल

चलने में कामयाब हो गया", मैंने कहा |

"मुझे पहले ही शक़ हो गया था", माँ ने कहा |

"फिर भी आप चुप रहीं?"|

"तुम्हें भी चुप रहना पड़ेगा | तुम्हारे भाई का क्या हाल हुआ था क्या तुम भूल गए?" |

"मुझे अच्छे से याद है", |

"तुम अपने पिताजी को वक़ील बनकर ही बग़ावत का हिस्सा दिला सकोगे | मात्र कानून के ज़रिये |

उसके अलावा तुम एजेंट का कुछ नहीं कर सकते हो, क्योंकि उसके साथ अच्छे लोगों से अधिक बुरे लोग हैं, जो एजेंट का साथ देने से पीछे नहीं हटेंगे | हम लोगों के पीछे कोई नहीं है बेटा",

माँ की बात मैं सुनकर सोचने लगा की कोई ऐसा नहीं है, जो एजेंट को मात दे सके | क्या वो इतना शक्तिशाली है? मैं भी नियति के सहारे छोड़कर शांत हो गया | अचानक घर के बाहर से किसी के चीखने की आवाज़ आई | मैं दौड़ता हुआ घर के बाहर गया तो, दलाल के घर के सामने किसी लड़की को दो लोग उठाते हुए स्कॉर्पियो में बैठा रहे थे |

जब मैं स्कॉर्पियो के पास गया तो वो लड़की रूपा थी, शायद वो बेहोश हो चुकी थी | रूपा को स्कार्पियो से एजेंट तथा उसके लोग हॉस्पिटल ले जा रहे थे |

@BOOKHOUSE1

मैं भी अपनी पुरानी बाइक से हॉस्पिटल तुरंत पहुँचा | एजेंट तथा उसके सारे लोगों के चेहरे पर शांति का माहौल पसरा हुआ था |

मैं तत्काल चड्ढा जी के पास गया | वो एक जगह कोने में अपने सिर पर दोनों हाथ रखकर बैठे हुए थे |

"रूपा को क्या हुआ है सर?" मैंने चड्ढा जी से पूछा |

"जाओ जाकर ज़श्न मनाओ | बग़ावत में तुम लोगों को छोटे-छोटे प्लॉट मिले हैं", चड्ढा जी ने चिल्लाते हुए कहा |

"दिल के मामले में मैं तुमसे बहुत अमीर हूँ, आज़मां कर देख लो", मैंने शांत स्वभाव से कहा |

"आज हम बर्बाद होने वाले हैं", चड्ढा ने कहा |

"बर्बाद करने वाले अगर बर्बाद हो जाए तो इसमें कोई बड़ी बात नहीं है, फिर भी अगर आप चाहो तो मुझे आज़मां सकते हो | मैं तुम्हें बर्बाद होने से शायद बचा लूँ", मैंने कहा |

चड्ढा मेरा हाथ पकड़कर खीचते हुए डॉक्टर के केबिन में मुझे छोड़कर वापस चला गया |

"तुम हो किडनी डोनर?" डॉक्टर ने पूछा |

“किडनी डोनर ?,” सुनते ही मैं डर गया |

“ये मुमकिन है पर इस लड़की को बचाने के लिए और कोई रास्ता नहीं है”, डॉक्टर ने कहा |

“मैं तैयार हूँ |”

डॉक्टर मेरे बहादुरी को देखकर दंग हो गया और वो मेरे पीठ पर थप-थपाते हुए मुझे अंदर वाले वार्ड में ले गया, जहाँ रूपा को बेड पर लेटाया गया था | उस वक़्त रूपा की आँखें बंद थी |

रुपा के बगल वाले बेड पर मुझे लिटा दिया गया | अचानक मेरा ध्यान काँच के तरफ़ गया | वार्ड के बाहर एजेंट और चड्ढा आपस में बात कर रहे थे | जो मुझे काँच के उस पार दिखाई दे रहा था | उस घनघोर मुश्किल में चड्ढा हँसता हुआ, एजेंट का पीठ थप-थपा रहा था | कुछ देर पहले तो चड्ढा की हालत मुरझाई हुई थी |

मैंने गेस कर लिया कि एजेंट ने अपना नाम कमाने के लिए चड्ढा से ये कहा होगा की किडनी डोनेट करने वाले बन्दे को वो खुद लाया है, ताकि चड्ढा को ये पता चल सके कि एजेंट की बदौलत ही उसके की बेटी का जान बच सकी है | शायद चड्ढा को ये हक़ीकत पता नहीं था की मैं रूपा को दोस्ती के कारण अपनी किडनी डोनेट कर रहा हूँ | कुछ पलों के लिए मुझे बेहोश कर दिया गया |

@BOOKHOUSE1

घंटो बाद मुझे होश आया रूपा और मेरे अलावा वार्ड में कोई नहीं था | काँच के उस पार भी कोई दिखाई नहीं दे रहा था | मुझे पहले से ही पता था कि रूपा की जान बचाने के बदले चड्ढा जो भी देगा, वो एजेंट तक ही रह जाएगा | मैं कुछ ऐसा चाहता था जिससे की रूपा को बाद में ये पता चले की आखिर उसे किसने बचाया है | उस वक्त रुपा की आँखें थोड़ी-थोड़ी खुल रहीं थी | मैं अपने बेड से उतरा| मेरा शरीर पहले के लिहाज़ा हल्का सा लग रहा था | रूपा अपने ऊँगली में चमचमाती अंगूठी पहन रखी थी |

मैंने उसका हाथ उठाते हुए उसके झपकते पलकों के सामने किया | उस वक़्त रुपा की आवाज़ नहीं निकल रही थी | वो होश में थी या नहीं ये भी मैं नहीं कह सकता था पर उसके आँखों की दोनों पुतलियाँ झपक रहीं थी |

झपकती पलकों के सामने मैं उसके अँगुली में से अंगूठी निकाल लिया, फिर उसका हाथ बेड पर रखते हुए हॉस्पिटल में किसी डॉक्टर को बिना बताये मैं वहाँ से निकल गया |

अंगूठी लेकर मैं अपने घर पहुँच चुका था | रुपा की अंगूठी मैंने चोरी के मन से नहीं निकाला था | जबकि मेरा श्रेय यह था कि एक दिन हक़ीकत सबको पता चले की रुपा की जान मैंने ही बचाई है, क्योंकि एजेंट ने चड्ढा से चापलूसी करते हुए अपने नाम का डंका बजा रखा था की रुपा की जान उसने ही बचाई है | रूपा को डॉक्टर ने दस दिनों तक सफ़र ना करने को कहा था | रुपा के साथ वार्ड में अंतिम वक़्त मैं ही मौज़ूद था | अगर अंगूठी चोरी होने की बात एजेंट तक पहुँचेगी तो एजेंट मेरे घर पुलिस का छापा जरुर डलवा देगा |

इसलिए रूपा की अंगूठी को किसी भी क़ीमत पर मैं अपने घर नहीं रखना चाहता था या फिर अपने पास नहीं रखना चाहता था | अंगूठी लेकर मैं रिया के पास पहुँचा |

“सब ठीक तो है?” रिया ने पूछा |

“मेरा एक काम कर सकती हो”, |

“आज़मां सकते हो”, रिया ने कहा |

“इस अंगूठी को रिमसा तक पहुँचाना है”, मैंने उसे रूपा का अंगूठी दिखाते हुये कहा |

“इतने छोटा काम के लिए आज़माना चाहते हो”, रिया ने कहा |

उस अंगूठी से उसकी नज़र नहीं हट रही थी |

“अंगूठी के बारे में किसी को ख़बर नहीं चलनी चाहिए और इस चमचमाती अंगूठी को अपने पास रखे रहना |

जब रूपा और उसके पिताजी के सारे लोग यहाँ से चले जाए, तब जल्द से जल्द रिमसा तक ये अंगूठी पहुँचा देना”, मैंने कहा |

“ तुम कहाँ से लाए हो? अंगूठी तो बहुत क़ीमती लग रही है”, |

“बाद में बता दूँगा”, मैंने कहा |

@BOOKHOUSE1

अंगूठी पाकर वो ऐसे ख़ुश थी, जैसे की वो चमचमाती अंगूठी मैंने उसके लिए दिया हो |

“एक बात बोलूँ, बुरा तो नहीं मानोगे ना”, रिया ने कहा |

“बिल्कुल नहीं, कहो तो पहले”, |

“ अपने रिमसा की प्रॉमिस करो”, रिया ने कहा |

“हाँ बाबा, पर इस अंगूठी को ना माँग बैठना”,|

“ ठीक है, ये अंगूठी मुझे तुम अपने हाथ से एक बार पहना दो”, रिया ने कहा |

“मैं रिमसा के लिए लाया था”, |

“देखो रूपा और उसके पापा के लोगों के जाते ही मैं ये अंगूठी तुम्हारी रिमसा तक पहुँचा दूँगी”, रिया ने कहा |

मैंने उस अंगूठी को रिया के हाथ में पहना दिया | अंगूठी पहनकर रिया बेहद ख़ुश नज़र आ रही थी | उसके पागलपन को देखकर मैं भी मुस्कुरा दिया, फिर मैं वहाँ से वापस अपने घर आ गया | तभी रुपा के नंबर से मेरे मोबाइल पर फोन आया |

“मिस्टर कहाँ हो?” रुपा ने पूछा |

“घर पर हूँ”, मैंने कहा |

“मैच वाले ग्राऊंड में जल्दी आ जाओ | अगले दिन मैं लखनऊ चली जाऊँगी”, रुपा ने कहते हुए कॉल कट कर दिया |

जब मैं ग्राऊंड में पहुँचा तो रूपा और रिमसा दोनों टहल रही थी |

“रूपा, आप कैसी हो?” मैंने पूछा |

“ठीक हूँ पहले के लिहाजा |”

“लाख-लाख धन्यवाद उस किडनी डोनेट करने वाले का”, मैंने कहा |

“उस लड़के का पता नहीं चला की आखिर वो लड़का कौन था | जिसने मेरी जान बचाई”, रूपा ने कहा |

“उस लड़के को याद करने की कोशिश करो”, मैंने कहा |

“अभी कुछ याद नहीं आ रहा है | बाद में ट्राई करुँगी, उस लड़के को पहचान भी लूँगी जब वो मेरे सामने आएगा”, रूपा ने कहा |

“कैसे?” |

“बचाने वाला लड़का चुप-चाप मेरी जान बचाकर मेरे पास से चला गया, पर ये एजेंट अपना नाम करने के लिए झूठ-मूठ का ढिंढोरा पीटते हुए मेरे पापा से यह कह दिया है की किडनी डोनेट करने वाले लड़के को एजेंट ने ही बुलाया था | उसकी बात पर मेरे पापा जी को यक़ीन हो गया है और मेरी जान बचाने के बदले में मेरे पापा जी ने एक बड़ी कंपनी का कॉन्ट्रैक्ट दे दिये हैं | एजेंट के प्लॉट पर एक बड़ी सी हवेली बनाने के लिए |

अज़ीब है ना ! किया किसी और ने और मिल रहा है किसी और को”, रूपा ने उदास मन से कहा |

“ऐसा बिल्कुल नहीं होगा”, मैंने कहा |

“जिसने तुम्हें बचाया वो तुम्हारा हीरो है”, रिमसा ने कहा |

“हाँ, काश ! मैं उस राजकुमार को देख पाती”, रूपा अपनी इच्छा जाहिर करते हुये बोली |

“एक दिन तुम्हारा राजकुमार जरुर मिलेगा”, मैंने कहा |

“तुम इतने कॉन्फिडेंस के साथ कैसे कह सकते हो?” |

“कुछ बातें लफ्ज़ो से बयां नहीं की जा सकती है”, मैंने कहा |

“अच्छा ये बात है”, रिमसा ने अपना सिर हिलाते हुए कहा |

“तुम्हें एक तोहफ़ा मिलने वाला है”, मैंने रिमसा के तरफ देखते हुये कहा |

“कैसा तोहफ़ा? मेरी उपस्थिति में भी तो बता सकते हो”, रूपा ने हँसते हुए कहा |

“मैंने तपाक से रिमसा के गाल पर किस कर दिया |

“यही है तुम्हारा तोहफ़ा”, रूपा ने कहा | तभी अचानक वहाँ एजेंट आ जाता है |

“रूपा आप यहाँ क्या  कर रही हो?”|

“टहलने आई थी”, रूपा ने कहा |

“चलिए”, कहते हुए एजेंट रूपा को वहाँ से ले जाने लगा | रुपा के साथ रिमसा भी चली गई |

मैं ग्राऊंड से वापस घर जाते हुए यह सोच रहा था की एजेंट ने रुपा के साथ मुझे और रिमसा को बात करते हुए देखा लिया है | मेरे खिलाफ़ वो कोई चाल जरुर चलेगा | अगली सुबह रूपा और उसके पिता जी अपने लोगों के साथ लखनऊ चले गए |

मैं टाइम सें स्टेडियम पहुँच चूका था लेकिन रिमसा के इंतज़ार के चक्कर में फुटबॉल का प्रैक्टिस  नहीं कर पाया था | कीमती अंगूठी को उसके हाथ में पहनाने के लिए बहुत ही उतावला हो रहा था | तभी उसने ग्राऊंड में एंट्री की और अपने कदमों से धीरे-धीरे चलकर मेरे पास आकर खड़ी हो गई |

“रिया ने तुम्हें कुछ दिया है?” मैं उस वक़्त ऐसे बोला था जैसे मानो ताजमहल उसके नाम से करने वाला हूँ |

“तुम  कितने स्वार्थी हो? बैठने के लिए भी नहीं पूछे”, उसने कहा |

“बैठ जाओ! बैठ जाओ!”,

वो मुस्कुराते हुए घास पर बैठ गई |

अंगूठी मिलने के बारे में मैं उससे तुरंत ही पूछना चाहता था, जब वो मेरे पास आकर खड़ी हुई थी, पर उसके बैठने के बाद ही पूछ पाया था |

“अपनी आँखें बंद करो”, उसने कहा |

“रिया ने तुम्हे कुछ दिया है?” मैंने पूछा |

“पहले अपनी आँखें बंद करो”, उसने दोबारा कहा |

रिया ने तुम्हें कुछ दिया है |

“पहले अपना आँख बंद करो” उसने कहा |

जब मैं अपना आँख बंद करके खोला तो वो अपने अँगुली में रूपा का अंगूठी पहन रखी थी| पर एक बात का मुझे सस्पेंस बना हुआ था की जिस अंगुली में मैंने रिया को अंगूठी पहनाया था सेम उसी अँगुली में रिमसा ने अंगूठी पहन रखी थी |

“इतने गौर से क्या देख रहे हो?” उसने पूछा |

“इस अँगुली में अंगूठी तुम्हें किसने पहनाया  है?”|

“मैं दूसरी अँगुली में पहन रही थी पर रिया ने इसी अँगुली में अंगूठी पहनने को बोली और

@BOOKHOUSE1

मैं इसी ऊँगली में पहन ली", उसने मुस्कुराते हुए कहा |

कभी-कभी तो मुझे ऐसा लगता था की हिंदी फिल्मो की तरह मेरे सामने एक ही लड़की दो रोल निभा रही है पर दोनों लड़कियों में थोड़ा सा ही अंतर था और इतना बड़ा धोख़ा मेरे साथ रिमसा बिल्कुल नहीं कर सकती थी इसलिए मैंने सस्पेंस में जीना छोड दिया |

"अंगूठी कैसी लगी?" |

"अच्छी है ! बहुत कीमती होगी ना?" उसने पूछा |

"तुमसे कीमती नही है",|

"कुछ भी बोल देते हो, सच बोलो कितने की है? बताओ !"

"इस अंगूठी की कोई क़ीमत नहीं है", |

"मुझे भी नहीं बता सकते हो | वैसे मैं तुम्हारी होती भी कौन हूँ", उसने नाराज़गी दिखाते हुए अपना चेहरा मेरी तरफ़ से घुमा लिया |

रिमसा को मैं हक़ीकत बताने लगा | जिस दिन बग़ावत हुआ था उस रात अचानक रुपा बेहोश हो गई थी | उसे हॉस्पिटल ले जाने पर पता चला की उसकी किडनी बेकार हो चुकी है |

रूपा को बचाने के लिए मैं अपने किडनी डोनेट करने का फैसला कर लिया फिर कुछ पलों के लिए मुझे बेहोश कर दिया गया | जब मुझे होश आया तो उस वार्ड में मेरे और रूपा के अलावा कोई नहीं था | मौका देखकर मैंने उसके हाथ से अंगूठी निकाल लिया और चुप चाप मैं हॉस्पिटल से अपने घर चला आया |

"तुमने अपना किडनी डोनेट कर दिया ", रिमसा अंदर की तरफ़ गहरी साँस लेते हुए बोली |

उसकी आवाज़ बहुत ही धीरे निकल रही थी |

"वो तुम्हारी दोस्त है ना", मैंने कहा |

"तुमने ऐसा क्यों किया, अगर तुमको कुछ हो जाता तो", |

"जब तक तुम्हारा प्यार मुझ पर बना रहेगा, तब तक मुझे कुछ नहीं होगा", मैंने कहा |

मेरा गला दबाते हुए बोली "अगर तुम्हें कुछ हो जाता तो मैं जीते जी मर जाती | तुम अपना ख़्याल नहीं रख सकते हो तो कम से कम मेरा ख़्याल तो रखा करो" उसने चिल्लाते हुए कहा |

तुमने ऐसा क्यों किया ?

मैंने कोई जवाब नही दिया |

"देखो मैं रूपा के हाथ से अंगूठी इसलिए निकाला हूँ, ताकि आख़री पल में इस अंगूठी को

रूपा को दिखाकर मैं उसे याद दिला सकूँ कि उसका किडनी डोनर मैं ही हूँ, पर वो अपनी अंगूठी भूल गई है", मैंने कहा |

"हाँ, अंगूठी का ज़िक्र उसने मुझसे भी नहीं किया", रिमसा ने कहा |

"कुछ वक़्त के लिए इस अंगूठी को छुपाकर ही रखना होगा | वक़्त आने पर ये अंगूठी एक दिन एजेंट की पोल खोलने में हमारी सहायता करेगी", |

"एजेंट तुम्हारे साथ धोखा कर रहा है", उसने कहा |

"एजेंट की एजेंटगिरी एक दिन ख़त्म हो जाएगी | पर इस अंगूठी को तुम रूपा के सामने तभी पहनोगी, जब मैं उपस्थित रहूँ, प्रॉमिस करो", |

मेरे सिर पर वो अपना हाथ रखकर बोली "अपने प्यार की कसम, जैसा तुम बोलोगे, मैं वैसे ही करुँगी", फिर वो अपना हाथ नीचे करते हुए हँसने लगी |

अंगूठी वाली बात मैंने सच सच रिमसा को इसलिए बता दिया क्योंकि वो मुझसे बहुत प्यार करती थी और रूपा की अंगूठी के बारे में मुझसे पहले किसी और से अगर रिमसा को सच पता चलता, तो रिमसा शायद मुझसे नाराज़ हो जाती |

तभी परम का फोन आया की माँ को हॉस्पिटल में एडमिट कराया गया है| मेरे साथ रिमसा भी हॉस्पिटल चलने के लिए रेडी थी | माँ के पास मैं और रिमसा हॉस्पिटल पहुँच चुके थे |

"ये लड़की तुम्हारे साथ आई है?" माँ ने मेरी ओर इशारा करते हुए पूछा |

@BOOKHOUSE1

मेरे बोलने से पहले रिमसा ने बोल दिया – "नहीं..नहीं, बगल वाले वार्ड में मेरी मौसी जी एडमिट है, मैं उन्हीं के पास बैठी थी | अमन को आते देखकर मैं आपके पास आ गई |"

उसके बोलने का तरीका मुझे अच्छा लगा था |

"तुम्हारे लखनऊ जाने का समय आ चुका है | अपने डॉक्यूमेंट जल्द से जल्द इकट्ठा कर लो और दोस्ती-यारी पर कम ध्यान दो", माँ ने रिमसा की तरफ़ घूरते हुए कहा |

"आंटी, मेरे आने का मतलब आपको परेशान करना नहीं था", माफ़ी माँगते हुए रिमसा वार्ड से बाहर चली गई |

माँ को मैं रिमसा के बारे में बता देना चाहता था, पर हिम्मत नहीं जुटा पाया | रिमसा वहाँ से बाहर जा चुकी थी | शायद माँ की बातों का वो बुरा मान गई थी |

जिस बेड पर माँ लेटी हुई थी मैं उसी पर बैठ गया |

"बेटा दो साल के लिए तुम्हें सारे त्याग करना ही पड़ेंगे, अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए |"

सीरियस होते हुए मैं माँ के सामने हामी भर दिया |

"मेरे लिए पानी लाओ ज़रा, सरकारी पानी पी-पी कर मैं तंग आ चुकी हूँ", माँ ने कहा |

मैं यही चाहता था की बाहर जाने का कोई बहाना मिले ताकि रिमसा को जाकर मना सकूँ

| जब मैं हॉस्पिटल से बाहर निकला तो रिमसा एक पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठी हुई थी |

“सॉरी” बोलते हुए मैं उसके पास बैठ गया |

“सॉरी क्यों बोल रहे हो?” उसने पूछा |

“अभी कुछ देर पहले तुम्हे डाँट पड़ी थी, क्या तुम भूल गई?”|

“मुझे मेरी माँ के अलावा कोई डाँटने वाला नहीं था और जब आँटी मुझे डाँटती है, तो मुझे मेरी माँ की याद आ जाती है”,|

“मेरी माँ की वज़ह से तुम्हें वहाँ से बाहर आना पड़ा”, |

“कोई बात नहीं यार”, उसने मुस्कुराते हुए कहा |

दुकान से मैं दो बोतल पानी खरीदकर, एक बोतल परम से माँ के पास भिजवा दिया तथा दूसरी बोतल से हम पानी पीने लगे |

“आंटी को छुट्टी कब तक मिलेगी?” उसने पूछा |

अचानक परम ने आवाज़ लगाई, “डॉक्टर ने डिस्चार्ज कर दिया है घर चलने की तैयारी करो |”,

एक गाड़ी में माँ को लिटा दिया गया, फिर उन्हें संभालते हुए रिमसा उनके पास गाड़ी में बैठ गई | मैं और परम हॉस्पिटल में पेमेंट करने लगे | मेरे साथ रिमसा को देखकर माँ हमेशा उसे घूरती रहती थी, पर हॉस्पिटल से जाते वक़्त रिमसा ही माँ को संभालते हुए गाड़ी में बैठी थी |

मुझे पूरा उम्मीद था की माँ उस स्थिति में रिमसा को नहीं घूरेंगी | जब मैं वापस घर गया तो रिमसा नहीं थी |

“जो लड़की आपके साथ आई थी, वो कहाँ है?” मैंने माँ से पूछा |

“वो मुझे छोड़कर उसी गाड़ी में ही चली गई”,|

मुझे यक़ीन हो गया की माँ की डाँट सुनने के डर से वो पहले ही चली गई होगी | अगले दिन बग़ावत में मिले हुये हंटर को लेकर मैं चौक पर उसका इंतज़ार कर रहा था | वो ऑटो से उतरी और तेज़ी से चौक को राउंडिंग करते हुए रोड पार करने के लिए आने - जाने वाली गाड़ियों के तरफ देखने लगी| मैं उसे आवाज़ दे रहा था, पर गाड़ियों के आने - जाने की आवाज़ से उसे मेरा आवाज़ सुनाई नहीं दे रहा था |

मैं अपने हंटर को चौक के राउंड करते हुए उस पार कर लिया, जिस तरफ़ से होकर वो स्टेडियम जाया करती थी | अचानक उसका ध्यान मुझ पर पड़ा |

“नाइस हंटर”, उसने कहा |

मुझे थोड़ा ख़ुशी मिला | मेरे पुराने बाइक की उसने कभी तारीफ़ नहीं की थी, पर कम से

कम बग़ावत में मिले हुये हंटर की  तारीफ़ उसने कर दि थी |

“ये हंटर किसकी  है?” |

“मेरी ही समझ सकती हो कुछ पल के लिए| इस हंटर पर मेरे पिताजी के अलावा आपहिज चाचा और एजेंट का भी अधिकार है और कुछ दिन बाद एजेंट का हो जाएगा”, मैंने कहा |

“तुम स्टेडियम क्यों नहीं गए?” उसने पूछा |

“हंटर में बैठकर भी पूछ सकती हो”, मैंने कहा |

“तुम स्टेडियम क्यों नहीं गए?” उसने दोबारा हंटर में बैठते हुए कहा |

“माँ की दवा लेनी थी |”

मैंने उससे झूठ बोला क्योंकि स्टेडियम ना जाने का मैं कोई ठोस बहाना नहीं करता तो वो मुझ पर भड़क जाती क्योंकि वो मुझे हमेशा कामयाब होते देखना चाहती थी |

“हंटर क्यों लाए,  लम्बी दूरी पर चलना है क्या?”  |

लड़कियों का बहुत कुछ करने का मन करता है, पर वो अपनी बातें सीधे - सीधे नहीं कह सकती हैं | बातों को घुमाकर कहना ही उनकी आदत है | सिविल लाइन होते हुए छात्र संघ चौराहा पार करते हुए ‘लेक झील’ के किनारे  मैं हंटर रोक दिया | उसके पूछने से पहले ही मैं वाटर पार्क की तरफ़ इशारा कर दिया |

@BOOKHOUSE1

“यहाँ क्यों आए हो?” फिर भी उसने पूछा ही दिया |

“तपती धूप को मैं ये बताना चाहता हूँ की धरती पर चाहे कितनी भी कड़क धूप हो, इंसान चाहे तो कुछ पल के लिए तपती धूप और उच्च तापमान से बचाव कर सकता है:, |

मेरी बातों को सुनकर वो हँसने लगी | हम दोनों वाटर पार्क में प्रवेश कर चुके थे | स्विमिंग पूल में नहा रहे कपल की तरफ़ रिमसा को दिखाते हुए मैंने इशारा किया |

“तुम्हें अकेले पानी में जाना है तो जाओ, मुझे नहीं जाना है”, उसने कहा |

मैं उसे स्विमिंग पूल में चलने के लिए फोर्स करता तो, वो मुझसे दूर चले जाने की धमकी ज़रूर देती मुझे पता था इसलिए मैं अकेले ही पानी में डुबकी लगाने लगा |

मेरे अलावा सारे लड़के अपने गर्लफ्रेंड के साथ स्विमिंग पुल में मज़ा ले रहे थे | तभी सीटी बजाता हुआ एक आदमी मेरे पास आया| वो कोच ही लग रहा था |

“तुम अकेले क्यों नहा रहे हो?” कोच ने पूछा |

“साहब, मैं उस जोरू का गुलाम हूँ”, रिमसा की तरफ़ इशारा करते हुए कहा |

“तुम पागल हो गर्लफ्रेंड साथ आई है फिर भी तुम अकेले पानी में भटक रहे हो”, |

“वो मेरे साथ पानी में आने के लिए तैयार नहीं है”,  |

“सिगरेट और गर्लफ्रेंड का मज़ा लेने के लिए दोनों को वक़्त के अनुसार सुलगाना पड़ता है”, कोच ने कहा |

“सर,मैं अपनी वाली से वाकिफ़ हूँ,वो बहुत क्रुर है”, |

“मैं इस वाटर पार्क में पिछले दस सालो से कार्यरत हूँ, तुम उसके पास तौलिया लेने के बहाने से जाओ और बिना पूछे उसे अपने गोद में उठाकर पानी में लेकर कूद जाओ | वाक़ई वो लड़की तुमसे प्यार करती होगी तो मान जाएगी”, कोच ने मुझे उकसाते हुए कहा |

मैं कोच की बातों में आ गया और रिमसा के पास तौलिया लेने के बहाने से खड़ा हो गया | दूर से कोच सिटी बजा-बजाकर मुझे इशारा कर रहा था | मैंने तपाक से रिमसा को उठाया और पानी में लेकर कूद गया | उसके कपड़े भीग जाने के कारण शरीर से सट्ट गए थे |

पानी में वो बहुत ही सेक्सी लग रही थी | कपड़े भीग जाने के कारण वो चीख़ रही थी | मैं उसके सामने नाराज़ होने का नाटक करते हुए पानी से बाहर जाने लगा | वो मेरी तरफ़ लपकते हुए मेरे करीब आ गई | मैंने उसे गले लगाया पर उसने अपने आप को छुड़ा लिया और उस स्विमिंग पूल में उपस्थित कोच की तरफ़ इशारा करने लगी |

“तुम इतना शर्मा क्यों रही हो?” मैंने पूछा |

उसने अपना कंधा उच्चका दिया | लड़कियों के नख़रे बहुत होते हैं | उनकी ना में भी हाँ होती है |

@BOOKHOUSE1

“तुम्हें लखनऊ कब जाना है?” रिमसा ने पूछा |

“दस बारह दिन में”, मैंने कहा |

“तुम्हारी माँ कैसे डॉक्यूमेंट कलेक्ट करने के लिए बोल रहीं थी, जब वो हॉस्पिटल में एडमिट थी”, उसने कहा | “ओह! मैं तो भूल ही गया था”|

पर मैं स्विमिंग पूल में रिमसा से सिर्फ रोमांटिक बात करना चाहता था पर वो बार-बार बात को घुमा दे रही थी | कभी-कभी पानी के अंदर उसके शरीर से मेरा शरीर स्पर्श हो रहा था |

उस ठंडे पानी में भी उसका शरीर गर्म लग रहा था | हम दोनों पानी से बाहर निकल चुके थे |

कोच मुझे इशारे से बुला रहा था | मैं समझ गया की कोच अपनी तारीफ़ सुनने का इच्छुक है | मैं कोच के समीप गया और उसके गुणगान करने लगा|

“तुम्हारे साथ वाली लड़की तुम्हारी गर्लफ्रेंड है या सिर्फ फ्रेंड है?” कोच ने पूछा |

“आप दोनों समझ सकते है”, |

“उसके साथ पानी में मौज़ूद होकर तुम्हें कैसा लगा?” कोच ने पूछा |

मैंने ख़ुशी से कोच को अपने गले लगाते हुए “थैंक्स” बोला और रिमसा के पास वापस आ

गया |

“वो आदमी तुम्हरा रिश्तेदार है क्या?” रिमसा ने पूछा |

“नहीं पर काम लायक बंदा है”, मैंने मुस्कुराते हुए कहा |

“तुम्हें पार्लर जाना होगा?” मैंने पूछा |

“नहीं तुम कहाँ जाने वाले  हो?” |

“मुझे हॉस्पिटल जाना है हेल्थ सर्टिफिकेट बनवाने के लिए |”

“मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी”, |

मैं उसे अपने साथ हॉस्पिटल नहीं ले जाना चाहता था, क्योंकि गलती से भी वो मेरा हेल्थ सर्टिफिकेट देख लेती तो, उसे यह  पता चल जाता की मैं पिछले साल एल॰ एल॰ बी॰ फर्स्ट ईयर की पढ़ाई जान-बूझकर छोड़ दिया था बीना कोई एप्लीकेशन दिए हुए | मैं अपने साथ उसे किसी भी क़ीमत पर नहीं ले जाना चाहता था, पर मैं उसे डायरेक्ट मना भी नहीं कर सकता था | क्योंकि मेरे मना करने से वो कुछ और समझ जाती |

“हॉस्पिटल में काफ़ी वक़्त लग जाएगा मुझे सर्टिफिकेट बनवाने में”, मैंने बहाने बनाते हुए कहा |

“मैं मैनेज़ कर लूँगी”,|

@BOOKHOUSE1

ना चाहते हुए भी मैं उसे अपने साथ लेकर हंटर से सुभाष चौक होते हुए एक प्राइवेट हॉस्पिटल पहुँचा | रिमसा को बाहर प्रतीक्षा कक्ष में बैठाकर मैं डॉक्टर के केबिन में गया |

पाँच सौ रूपए का नोट डॉक्टर की टेबल पर रखते हुए मैं उनसे एक मेडिकल सर्टिफिकेट बनाने की रिक्वेस्ट किया, ताकि मुझे आराम से एडमिशन मिल सके |

“मेडिकल सर्टिफिकेट क्यों बनवा रहे हो?” डॉक्टर ने पूछा |

“सर, पिछले साल मैं लखनऊ के एक कॉलेज में एडमिशन लिया था पर शुरुआत के दूसरे महीने में ही मैं वहाँ से चला आया बिना कोई एप्लीकेशन दिए हुये |”

“आने का कोई ख़ास मक़सद”, डॉक्टर ने पूछा |

“नहीं सर, मेरे आने का कोई ख़ास मक़सद नहीं था”,| उस वक़्त बोलते हुए मैं थोड़ा लड़खड़ा गया |

“मुझे तो तुम सच बता ही सकते हो, क्योंकि मैं तुम्हारी सहायता कर रहा हूँ |”

टेबल से पाँच सौ रूपए का नोट डॉक्टर ने उठाया | तभी केबिन के बाहर बैठी रिमसा की तरफ़ मैंने इशारा कर दिया |

“ये बात है | चलो फिर अब जी भर गया है तुम्हारा”, डॉक्टर ने मुस्कुराते हुए कहा |

डॉक्टर भी मजाकिया होते हैं ये मुझे पहली बार पता चला था |

“और भी कोई सीरियस बात हो तो बताना | लेडीज़ डॉक्टर के अलावा लेडीज़ नर्स भी इस हॉस्पिटल में मौज़ूद है”, डॉक्टर सर ने कहा |

“नहीं, नहीं सर ऐसा कुछ नहीं है |”

मैं डॉक्टर की बात से भाँप गया की वो मुझसे किस हद तक का मज़ाक कर रहें हैं |

कुछ देर बाद - “आइए! आपका सर्टिफिकेट तैयार हो जाएगा | गैपिंग की डेट इस कागज़ पर लिख दो”, डॉक्टर ने कहा |

सादे कागज़ पर 30 सितम्बर 2011 से 15 अगस्त 2012 तक की गैपिंग डेट लिखकर डॉक्टर के केबिन से मैं बाहर रिमसा के पास जाकर बैठ गया |

“डॉक्टर तुमसे बात करके हँस क्यों रहे थे? तुम उन्हें जानते हो क्या?” रिमसा ने पूछा |

“मैं उन्हें नहीं पहचानता हूँ | डॉक्टर मुझसे ये कह रहे थे की जो लड़की मेरे साथ आई है वो बहुत सुंदर है”, |

मेरी बात को सुनकर वो हँसने लगी |

मुझे बाथरूम लगा हुआ था पर मैं रिमसा के पास से नहीं जाना चाहता था क्योंकि मैं वहाँ से चला जाता और गलती से भी मेरा हेल्थ सर्टिफिकेट उसके हाथ लग जाता, तो मेरा सारा पोल खुल जाता | इसलिए मैं चुपचाप उसके पास बैठा रहा | मेरे झूठ का पता अगर उसे हो गया तो वो फाइनली मुझे छोड़कर चली जाएगी | इतना मुझे कम्फर्म था | मुझे से कंट्रोल नहीं हो पा रहा था |

“यहीं बैठी रहना”, बोलते हुए मैं हल्का होने के लिए टॉयलेट की तरफ़ चला गया | कुछ देर बाद जब मैं वापस आया तो देखा की रिमसा एक पेपर को बड़े ध्यान से पढ़ रही है | मैं दौड़ता हुआ उसके पास पहुँचा |

मैं उसके हाथ से पेपर छीनना चाहता था, क्योंकि वह पेपर हेल्थ सर्टिफिकेट ही था जिसे पढ़ने में वो बिज़ी थी | मुझे डर ये लग रहा था की अगर रिमसा ने उस पेपर में लिखे गए सारे मैटर को पढ़ लिया तो मेरे सारे झूठे कारनामे उसे पता चल जाएंगे | मैं तुरंत ही जबरदस्ती खासने लगा |

“ये लो अपना सर्टिफिकेट”, उसने गहरी सांस लेते हुए कहा |

“यह पेज कब मिला?” मैंने पूछा |

“अभी तुरंत ही नर्स दे कर गई है”,|

“क्या तुमने इस पेज पर लिखे हुए मैटर को पढ़ लिया?” मैंने हकलाते हुए पूछा |

“अभी पढ़ना शुरू ही किया थे, तभी तुम आ गए हो” |

@BOOKHOUSE1

उसके बात करने के तरीके से मुझे लगा की पेपर पर लिखे हुए मैटर को वो पढ़ नहीं पाई है | अच्छा हुआ मैं वक़्त पर वापस आ गया था, वर्ना मेरा क्या होता, मुझे ख़ुद भी नहीं पता चलता ?

उस वक़्त वो बिल्कुल शांति से कुर्सी पर बैठे हुई थी | मुझे कंफर्म हो गया था की सर्टिफिकेट का मैटर वो सचमुच नही पढ पाई है |

"बाहर चले?" |

हंटर पर जाकर वो बैठ गई | मैं दुकान से दो पेटिज लेकर उसके पास हंटर गाड़ी में बैठ गया | पर उसने पेटिज खाने से इंकार कर दिया | दोनों पेटिज मुझे ही खान पड़ा |

"लखनऊ तुम्हें कब जाना है?" उसने पूछा |

"दो दिन बाद फिर मैं दस दिनों के लिए लखनऊ से गोरखपुर वापस आ जाऊँगा, क्योंकि अभी सिर्फ एडमिशन चल रहा है और सारे लड़कों का डॉक्यूमेंट वेरिफ़िकेशन होना बाकी है", मैंने कहा |

"तुम्हें एक ज़रूरी बात बतानी है", उसने कहा |

"बताओ डियर", |

"मैं अपने मामा के पास जा रही हूँ", |

@BOOKHOUSE1

"पर क्यों?"

"मैं अठारह की होने वाली हूँ, इसलिए पापा की सारी प्रॉपर्टी मेरे नाम से कराना है | मामा-मामी के बीच भी तलाक हो गया है | इसलिए कुछ समय तक मुझे अपने मामा की देखभाल भी करनी होगी, क्योंकि मेरे मॉ-डैड के चल बसने के बाद मामा ने ही मेरी परिवरिश की थी", उसने कहा |

"तुम वापस कब आओगी?" |

"मैं कुछ कह नहीं सकती पर तुम्हारा एल० एल० बी० की पढ़ाई पूरी होने तक मैं शायद अपनी सारी ज़िम्मेदारी निभा कर लौट आउंगी |

"अपने मॉम-डैड से मैं भी प्यार करती थी", कहते हुए वो रोने लगी |

मैं चाहकर भी उसकी बातों का कोई विरोध नहीं कर पाया |

"तुम रिया से मिलते रहना | मैं आखरी सांस तक उसके कांटेक्ट में बनी रहूँगी", उसने अपने आँसू को पोछते हुए कहा |

"और अगली बार आउंगी तो तुम्हारी दोस्त रिया से ज़रूर मिलूँगी", उस वक्त रिमसा जबरदस्ती मुस्कुराते हुए बोल रही थी |

"कब जाने वाली हो अपने मामा के पास?" |

“तुम्हारे जाने के एक दिन बाद”, |

“दो साल के पहले भी तो आ सकती हो”, मैंने कहा |

“आ सकती हूँ पर कंफर्म नहीं है”, |

मैं उसके सारे लोग जैसे मामा-मामी का कांटेक्ट नंबर ले लेना चाहता था  पर उसने इंकार कर दिया देने से |

मेरे ज़िद करने पर भी उसने यह कह दिया की – “मामा के पास पहुँच जाऊंगी, तो तुम्हें कॉल कर दूंगी | तुम चाहो तो वो नंबर सेव कर लेना |”

पुराना वाला नंबर उसने अपनी मौसी को दे दिया था |

“क्या तुम अगले दिन भी मिलना चाहोगी?” मैंने पूछा |

“क्यों नहीं ज़रूर, पर तुम रिया से मिलते रहना”, |

हॉस्पिटल से सर्टिफिकेट लेकर मैं उसे चौक पर छोड़ दिया और राजघाट पुल होते हुए एन० एच०- 29 के रास्ते हुते हुये मैं अपने घर पहुँच गया |

शाम के वक़्त मैं रिया से मिलने उसके घर पहुँच चूका था |

“तुम इतने उदास क्यों हो?” रिया ने पूछा |

“रिमसा, मुझे छोड़कर जा रही है”, मैंने कहा |

“क्यों?” |

“फैमिली मैटर है”, मैंने कहा |

“तुम उसे भूल ही जाओ | आख़िर कब तक तुम उसके बिना उदासी में जीते रहोगे | लखनऊ जाकर कोई कॉलेज वाली गर्लफ्रेंड बना लेना”, |

“मैं जीते जी किसी अन्य लड़की को रिमसा के अलावा सिर्फ दोस्त बना सकता हूँ | मैं उसे तहे दिल से प्यार करता हूँ और मैं शादी भी रिमसा से ही करूँगा, इसीलिए आज तक मैंने उसके साथ रिलेशनशिप नहीं बनाया है |

मेरे ख़ास मित्र ने मुझे उकसाने की कोशिश किया था पर मैंने ऐसा नहीं किया”, |

“तुम कुछ दिनों के लिए एक नई गर्लफ्रेंड बना लो | जब पढ़ाई पूरी करके आना तो अपनी रिमसा से शादी कर लेना”, रिया ने कहा |

“ज़िस्म तक हर कोई पहुँच जाता है पर रूह तक कोई एक ही पहुँच पाता है”, |

रिया मेरी बातों को सुनकर ऐसे मुस्कुरा रही थी जैसे की मैं उसके बारे में बात कर रहा हूँ |

“मुस्कुराकर मेरा मज़ा ले रही हो”, मैंने कहा |

“काश! मुझे भी कोई इतना चाहने वाला मिल जाता, मैं तो जान दे देती उसके लिए ”,

@BOOKHOUSE1

रिया ने कहा |

“तुम्हें अपने दोस्त पर तरस नहीं आ रहा है, मुस्कुराए जा रही हो”, मैंने कहा |

“अभी कुछ देर पहले तो मैं तुम्हें समझा रही थी”, |

“मुझे जाना चाहिए कहते हुए”, रिया के घर से बाहर निकला | तभी एजेंट ने मुझे देख लिया | मुझे थोड़ा डर लगा की मैं तो यहाँ से जा रहा हूँ पर एजेंट रिया के साथ कुछ तीन पाँच ना कर दे, क्योंकि एजेंट ने मुझे उसके घर से आते हुए देख लिया था | मुझे लखनऊ जाना था इसलिए स्टेडियम जाना बंद कर दिया था |

रिमसा ने भी स्टेडियम जाना बंद कर दिया था | शायद उसने पार्लर भी जाना बंद कर दिया था क्योंकि उसे भी अपने मामा के घर जाना था |

मैं अपने कॉलेज दस दिन बाद ही जाना चाहता था, क्योंकि मेरे कॉलेज में सारे स्टूडेंट्स के सर्टिफिकेट का वेरिफ़िकेशन चल रहा था | मैंने डिसाइड किया की दस दिन तक और मैं अपने घर ही रहूँगा | पता नहीं दो साल के पहले मैं रिमसा से मिल पाऊँगा की नहीं| वाक़ई दो साल का वक्त मुझे बहुत लम्बा लग रहा था पर मैं उसके आगे मज़बूर था |

मुझे थोड़ा सा इस बात पर राहत मिला चुका था की जब मैं और रिमसा अगली बार मिलेंगे तो रिया भी साथ होगी फिर मैं इन दोनों हमशक़्ल वाली लड़कियों में जो भी अंतर होगा, उसे नज़दीक से देख सकूँगा, क्योंकि मुझे कभी कभी शंका होता की रिमसा ने ‘रिया’ को ही क्यों हम दोनों के बीच मीडिएटर बनायी है |

वो प्रिया को या परम को भी तो बना सकती थी, पर मुझे रिमसा पर ख़ुद से ज्यादा भरोसा था | इसलिए मैंने ज्यादा दिमाग़ नहीं लगाया | मैं लखनऊ जाने से पहले रिमसा से आखरी बार मिलना चाहता था |

उसने चौक आना बंद कर दिया था | मैं उसका नंबर ट्राय कर रहा था पर वो बंद आ रहा था, फिर मैंने प्रिया के नंबर पर कॉल किया |

“हेलो! बड़े दिनों बाद याद आई आपको अपनी साली की”, प्रिया ने बोला |

“यार रिमसा से बात करनी थी”, |

“बात कराती हूँ |”

कुछ देर बाद आवाज़ आई- “हेलो!”

मैं रिमसा की आवाज़ पहचान लिया |

“तुम लास्ट टाइम मिलना चाहोगी?” |

कुछ देर तक उसकी आवाज़ नहीं आई |

“कुछ तो बोलो |”

@BOOKHOUSE1

“शाम को 05:00 बजे स्टेडियम के बगल वाली गली में मिलना”, बोलते हुए उसने कॉल कट कर दिया |

कोई लड़की अगर अपने आशिक़ से सच्चा प्यार करती होगी तो, वो अपने आशिक़ की किसी भी बात का विरोध नहीं करेगी और सारी परिस्थितियों में वो साथ देने को तैयार रहेगी | प्यार हर किसी को होता है पर कुछ लोगो के साथ दिखावा होता है या कुछ लोगो के साथ दिल्लगी हो जाती है |

शाम के वक्त 05:00 बजने से पहले मैं अपने हंटर के साथ स्टेडियम वाली गली में पहुँच चुका था |

बैंक रोड को पार करते हुए मेरे पास आई और हंटर के ड्राइविंग वाली सीट पर बैठ गई | मैं उसके करीब जाकर खड़ा हो गया | चौक से पैदल आने के कारण उसके माथे पर गर्मी के कारण पसीना आ गया था |

“आज बहुत जच रहे हो”, उसने कहा |

“दो साल से पहले भी तो तुम मिल सकती हो”, |

“ज्यादा बात मत करो”, उसने ऊँची आवाज़ में कहा |

“तुम्हें कोई मिल गया है क्या?”, मैंने पूछा |

“हाँ और वो मेरे सामने खड़ा है | देखो दो साल तक तुम बिल्कुल सीरियस हो जाओ| अपने माँ के सपनों के साथ खिलवाड़ मत करो और मेरी नाक मत कटवाना | अपनी पढ़ाई को पूरा करके ही लौटना| मेरी भी उम्मीद तुमसे लगी हुई है”, उसने कहा |

@BOOKHOUSE1

उस वक़्त वो बहुत सीरियस लग रही थी |

“मैं अभी तुम्हें अपने साथ चलने को नहीं कह सकता, लेकिन जब मैं यहाँ दोबारा लौटकर आऊँगा, तब तुम मेरे साथ चलने के लिए तैयार रहोगी”,

“और तुम कब लौट कर आओगे?” वह धीरे से लजाती हुई बोली |

“ज्यादा से ज्यादा दो साल | मैं लौटकर आऊँगा और हमेशा-हमेशा के लिए तुम्हारा हाथ थाम लूँगा | फिर ऐसा कोई भी एजेंट नहीं होगा, जो हम दोनों को एक होने से रोक सके |”

“तुम्हें अपनी माता के बारे में क्या ख़्याल है”, वो धीरे से हँसकर बोली |

“वो आराम से हम दोनों को अपना लेंगी”,|

“लखनऊ जाने से पहले रिया से ज़रुर मिल लेना”, उसने कहा |

“रिया से तुम्हारा क्या कनेक्शन  है?” |

“अगली बार जब हम तीनों मिलेंगे, तो तुम सब समझ जाओगे और उस वक़्त बहुत बड़ा सरप्राइज़ तुम्हें मुझसे मिलेगा”,|

“मरे जाने की ख़ुशी में बता दो वो सरप्राइज़ क्या है?” |

“अभी नही क्योंकि तुम सरप्राइज़ सुनकर लखनऊ नहीं जा पाओगे”,|

“मेरा लखनऊ जाना तय है, कल सुबह मेरी ट्रेन है”, |

“कितना झूठ बोलोगे”, उसने चिल्लाते हुए कहा |

मैं उस वक़्त सोच में पड़ गया की अचानक उसे हो क्या गया है | इससे पहले मुझसे कभी उसने ऊँची आवाज़ में बात नहीं की थी |

मैं सोचने लगा की कही उसे यह पता तो नहीं चल गया की जो मैं पिछली बार अपना कॉलेज जान बूझकर मिस कर दिया था |

“तुम ठीक तो हो?” मैंने पूछा |

“तुम मुझे ठीक रहने देना चाहते हो तो, अपनी एल० एल० बी० की पढ़ाई पूरी करके ही गोरखपुर आना, वर्ना तुम मुझे भूल जाना”, उसने अपना हाथ मेरे गाल पर रखते हुए कहा |

सीरियस वक़्त में प्यार का अहसास वाक़ई बहुत मज़ेदार होता है | रीज़नल स्पोर्ट्स स्टेडियम वाली गली में सन्नाटा छाया हुआ था | मैं उस सन्नाटे वाली गली में उसे कुछ कर देना चाहता था तभी गली के दोनों तरफ से दो-तीन लोग आते हुए दिखाई दिये | मैं उन लोगों के चले जाने का इंतज़ार करने लगा | अचानक उन लोगों ने मुझे पकड़ लिया |

रिमसा चिल्लाते हुए बोली, “अमन भाग जाओ! भाग जाओ! सामने से एजेंट आ रहा है”,

पर मैं वहाँ से उसे अकेले छोड़कर भला कैसे भाग सकता था?

पाँच लोगों ने मुझे पकड़ भी लिया था | एजेंट अपने साथ पुलिस भी लाया था | पुलिस वालों को कुछ देकर एजेंट मुझे फँसाना चाहता था क्योंकि एजेंट को पता चल गया था की मैं वक़ालत की पढ़ाई करने लखनऊ जा रहा हूँ | मुझे पुलिस वालों ने पकड़ लिया था |

रिमसा को छोड़ दिया गया | रिमसा मुझे बचाने के लिए एक इंस्पेक्टर से रिक्वेस्ट कर रही थी | हालांकि वो इंस्पेक्टर हम दोनों को पहचान रहा था, फिर भी रिमसा पर वो रहम नहीं कर रहा था |

पिछली बार जब हम दोनों बिछड़े हुये बालक को पुलिस के पास देने गए थे, तो उसी इंस्पेक्टर ने उस बालक का रिपोर्ट दर्ज़ करवाया था | इंस्पेक्टर ने रिमसा के कानों में कुछ कहा |

उस वक़्त रिमसा शांत हो गई और मेरी तरफ़ आँख मारते हुए इशारा कर दि | मैं समझ गया की ऑफिसर को दया आ गई और वो समझौता कर लेगा |

“इस लड़के को थाने में लाइए”, बोलते हुए एजेंट वहाँ से चला गया | पुलिस वाले मुझे अपनी गाड़ी में बैठाकर ले जाने लगे | मैं आखरी पल रिमसा को देखा तो वो अपने दोनों

@BOOKHOUSE1

हाथों को जोड़कर इंस्पेक्टर से विनती कर रही थी मुझे छोड़ने के लिए | इंस्पेक्टर ने अपना अंगूठा दिखाते हुये रिमसा की तरफ़ इशारा किया और गाड़ी आगे बढ़ने लगी |

बैंक रोड पर कुछ दूर चलने के बाद, वो पुलिस इंस्पेक्टर गाड़ी रोककर मुझसे बात करने लगा |

"तुम जल्द से जल्द गोरखपुर छोड़कर चले जाओ कुछ दिनों के लिए", इंस्पेक्टर ने कहा |

"कल सुबह मेरा टिकट है लखनऊ के लिए", मैंने कहा |

"मैंने तुम्हें छोड़ भी दिया तो एजेंट तुम्हें ढूँढ़वाकर दूसरे पुलिस वालों से गिरफ्तार करवा देगा और मोटी रक़म देकर तुम्हें जेल में भिजवा देगा", उस इंस्पेक्टर ने कहा |

"शाम को मेरा एक लड़की से मिलना बेहद ज़रूरी है", मैंने कहा |

"ठीक है |"

उस इंस्पेक्टर ने सादे पेपर पर समझौते वाली बात लिखते हुए दिया और बोला की- "अगर कोई पुलिस वाले तुम्हें तंग करे तो कहन की लड़की के घर वाले आए थे और समझौता हो चुका है | और वो फिर भी ना माने तो यह समझौते वाला पेपर दिखा देना", कहते हुए इंस्पेक्टर ने ए-4 साइज़ वाला पेपर मुझे दे दिया | उस पेपर को सँभालते हुए मैं अपने ज़ेब में रख लिया और जाने के लिए वहाँ से आगे बढ़ा |

@BOOKHOUSE1

"एजेंट से बच के रहना", बोलते हुए इंस्पेक्टर चला गया |

मैं हवालात में फँसने से बच गया | अगर उस इंस्पेक्टर ने मुझ पर दया नहीं दिखाई होती तो मेरा क्या होता मुझे ख़ुद भी नहीं पता था?

रात के वक़्त होते ही मैं रिया के घर की तरफ़ जाने लगा, क्योंकि रिमसा ने कहा था जाने से पहले रिया से मिल लेना | रीज़नल स्टेडियम वाली गली में एजेंट का आना एक संयोग था पर वो अपने साथ मुझे गिरफ्तार करने के लिए पुलिस भी लाया था | यह बेहद सोचने वाला बात था | आख़िर हम-दोनों के मिलने के बारे में एजेंट को कैसे पता चला था | मैं इसी बात से हैरान था | वो तो रिमसा के गिड़-गिड़ाने पर पुलिस ऑफिसर ने मुझे छोड़ दिया था | मैं दौड़ता हुआ रिया के पास पहुँच गया | पसीने से मेरा चेहरा लबालब हो चुका था |

"जो हुआ बुरा हुआ", रिया मुझे देखते ही बोली |

उसकी बात सुनकर मैं दंग हो गया की रिया को सारी बातें कैसे पता लग गया है?

"तुम कहना क्या चाहती हो?" मैं अंजान बनते हुए पूछा |

"एजेंट और उसके सारे चमचो ने पूरे गाँव में यह हल्ला कर दिया है की तुम रास्तें में रिमसा को छेड़ रहे थे | जिसके कारण पुलिस तुम्हें उठा कर ले गई है",|

रिया की बातों को सुनकर मैं दंग हो गया |

"रिमसा ने कुछ भिजवाया है, मेरे लिए?" मैंने पूछा |

“अब तो मान जाओ, उस लड़की ने तुम्हें इतना ज़लील करवा दिया, फिर भी तुम उसे नहीं भूल पा रहे हो”, रिया ने कहा |

“मैं उसे मरते वक़्त तक नहीं भूल पाऊँगा | रिमसा मेरे दिलो-दिमाग़ में जगह बना चुकी है और उस जगह पर किसी और को जगह लेना नामुमकिन है”, |

“बच्चों जैसी बात मत करो | मैं तुम्हारी भलाई के लिए कह रही हूँ”, |

“रिमसा से मेरा प्यार और भी गहरा हो गया है पर क्या - क्या जानना चाहोगी?” मैंने चिल्लाते हुए कहा |

“ठीक है, उसके बारे में जो भी इंफॉर्मेशन होगी | मैं परम के माध्यम से तुम तक पहुँचा दूंगी | रिमसा ने तुम्हारे लिए लेटर भिजवाया है”, मेरे हाथ में रिया लेटर देते हुए बोली |

उस लेटर को मैं वहीं पढ़ना चाहता था, पर रिया ने वहाँ पढ़ने से मना कर दिया | मैं वहाँ से अपने घर वापस पहुँचा | रूम में प्रवेश करते ही माँ मेरे सामने आकर खड़ी हो गईं |

“यही चाहते थे ना” माँ ने कहा |

उस वक़्त मेरा आवाज़ ही नहीं निकल रहा था, की मैं उनसे कैसे माफ़ी माँगू |

“मेरे सपनों के लिए नहीं पढ़ सकते हो, कम से कम एजेंट से अपना बदला लेने के लिए ही लग जाओ | ज़िंदगी ने तुम्हें एक मौका दिया है खड़े होने के लिए”, माँ कहते हुए किचन में चली गईं और खाना लाकर मेरे सामने रख दि|

@BOOKHOUSE1

उस घनघोर विपत्ति में खाना कोई कैसे खा पाता, पर माँ की उपस्थिति में मुझे जबरदस्ती भोजन करना पड़ा | उस वक़्त माँ ने मुझे बहुत हौंसला दिया |

“तुम इस कदर काबिल बन जाओ की एजेंट से अपना बदला ले सको”, बोलते हुए माँ रूम से बाहर चली गईं | मैंने कभी सपने में भी ऐसा नहीं सोचा था की रिमसा और मेरे बीच अचानक मुसीबत आएगी, जो हम दोनों को अलग होना पड़ेगा | रूम का दरवाज़ा मैंने बंद किया और रिमसा का लेटर में खोलकर पढ़ने लगा | उसका लैटर पढ़कर मेरे शरीर से पसीना निकलने लगा | एक तरह से रिमसा ने गलती भी करी थी, उसके बावज़ूद उसने लेटर में कहीं ‘सॉरी’ नहीं लिखी थी | आख़िर एजेंट को पता कैसे चला की हम दोनों शाम को 05:00 बजे ही मिलने वाले है, वो भी रीज़नल स्टेडियम वाले गली में! |

इस बात को मैं विश्वास के साथ कह सकता था की रिमसा की लापरवाही के चलते ही एजेंट को पता चला होगा | एजेंट का उस गली में आना एक संजोग हो सकता था पर उसके साथ पुलिस भी थी | जिससे यह कंफर्म हो गया था की एजेंट को पहले से ही पता चल चुका था की हम दोनों वहाँ मिलने वाले है | मिलने वाली बात रिमसा ज़रूर किसी से शेयर की होगी| जो भी था, मैं अनजान था पर इंस्पेक्टर के सामने रिमसा ही गिड़गिड़ा कर मुझे बचाने के लिए रिक्वेस्ट की थी |

रिमसा के लेटर में लिखा गया लेख -

“हम दोनों का मिलना किस्मत के हाथ में है, पर तुम दो साल बाद अपनी एल० एल० बी० की पढ़ाई पूरी करके, इस 8052XXXXXX पर कॉल कर लेना”,

तुम्हारी “रिमसा”, रिया की दोस्त |

उसके लेटर को मैं फाड़ना चाहता था पर उस लेटर में एक कांटेक्ट नंबर लिखा गया था | मैंने तुरंत ही उस नंबर पर कॉल किया पर वह नंबर बंद आ रहा था | उस रात अपनी डायरी में समझौता वाला पेज़ तथा रिमसा का लेटर फोल्ड करके रख दिया | वो मेरे विरुद्ध इतना क्रूर हो सकती है मैंने कभी सोचा भी नहीं था | इसके बावज़ूद मैं उससे प्यार करता था | लखनऊ जाने से पहले मैं रिमसा के मुँह से सॉरी सुनना चाहता था पर वो इतना क्रूर हो चुकी थी की मैं उसके क्रूक व्यवहार कोअंदाज़ा भी नहीं लगा पा रहा था| आख़िर वो किसके बहकावे में आ गई थी, जो ऐसी लेटर मेरे  पास लिखकर भेजी थी | उसके कठोर व्यवहार के बाद भी मैं उसके प्यार में लिप्त था |

उस दिन की रात मेरे लिए बहुत ही दुखद रहा, क्योंकि अगली सुबह मुझे लखनऊ जाना था | वो मुझे हमेशा सरप्राइज़ देने वाली बात कहा करती थी | शायद मुझसे दूर जाना चाहती थी, वही उसका सरप्राइज़ था मेरे लिए | रात को मैं ख़ुद से बात करता हुआ सो गया |

परम मेरे घर सुबह ही आ चुका था | जब वो मुझे स्टेशन छोड़ने आया था, तो मैं अपने बैग से अपनी डायरी परम को दे दिया |

“इसका क्या करूँ?” परम ने पूछा |

“संभाल के रखना | जब तुम लखनऊ कभी आना तो इसे ज़रुर लाना | डायरी में दो पेज़ हैं, गायब नहीं होना चाहिए”, |

“ठीक है |”

गोरखपुर स्टेशन के सामने खड़े होकर हम स्टेशन की ख़ूबसूरती को ध्यान से देख रहे थे | पूर्वांचल के सबसे अधिक बिज़ी रहने वाले स्टेशन के सामने मैं खड़ा था | उस वक़्त मुझे यक़ीन ही नहीं हो रहा था कि मैं सच-मुच किसी चर्चित स्टेशन के सामने खड़ा हूँ |

गोरखपुर स्टेशन के बाहर यात्रियों का चहल-पहल लगा हुआ था | गोरखपुर से कुछ ही दूर के बाद नेपाल का बार्डर शुरू हो जाता है | मेरे सामने से कुछ नेपाली पुरुष तथा महिला आपस में अपनी लोकल भाषा में बात करते हुए जा रहे थे | मैं और परम उनके नेपाली भाषा को समझ नहीं पाए | फिर हम दोनों हँसते हुए स्टेशन के बाहर वाले लिफ्ट से प्लेट फॉर्म नंबर दो पर पहुँच चुके थे |

प्लेटफॉर्म नंबर दो से आगे बढ़ते हुए सीढियों द्वारा हम दोनों प्लेट फॉर्म नंबर चार पर पहुँच चुके थे | उस वक़्त लगभग 05:00 बज रहे थे | सुबह का वक़्त होने के कारण प्लेट फॉर्म यात्रियों से खचा-खच भरा हुआ था | कुछ देर इंतज़ार करने के बाद लखनऊ बरौनी आई | परम ने मेरे बैग को सीट पर रख दिया और मेरे गले लगते हुए कहा –“लड़ाई में खुद

@BOOKHOUSE1

को अकेला मत समझना, मैं तुम्हारे साथ हूँ", परम ने मेरे कान में धीरे से कहा और सामने खड़ा हो गया |

ट्रेन चलने के लिए हॉर्न दे चुकी थी परम ट्रेन से उतर गया और खिड़की के बाहर से बाय करने लगा | मैं उस वक़्त भी इतने सदमे में था की मैं परम को बाय तक नहीं कर पाया | रिमसा से दूर होते वक़्त मुझे उसके क्रूर लेटर ने अंदर से झकझोर दिया था |अगर दिल टूटने की आवाज़ होती तो मेरे दिल से एक एटम बम के धमाके जैसी आवाज़ होती |

@BOOKHOUSE1

◆ ◆ ◆

# लखनऊ

भाग

*02*

@BOOKHOUSE1

तकरीबन दोपहर को मैं लखनऊ चारबाग स्टेशन पहुँच चुका था | ओला टैक्सी बुक करके कॉलेज के कैंपस में पहुँच गया और रात होते-होते हॉस्टल में शिफ्ट हो गया | अपनी पढ़ाई पूरी करने तक रिमसा को भूलने के लिए मैं अपने आप को बिज़ी रखने लगा पर उसके क्रूर पत्र व्यवहार वाली बात मैं चाहकर भी नहीं भूल पा रहा था |

एजेंट से बदला लेने के लिए मेरे माँ ने मेरे शरीर के भीतर के हौसले को जगा दिया था | एजेंट के कारण हम दोनों एक दूसरे से अलग होकर बिछड़े थे |

रिमसा, हमेशा मुझे अव्वल आते देखना चाहती थी | इसलिए मैं पूरे तन मन से पढ़ाई में लग गया | ख़ुद को सारा दिन मैं बिज़ी रखने लगा | ग्रेजुएशन वाले स्टूडेंट्स को ट्यूशन देने के बाद कॉलेज के ग्राऊंड में जूनियरों को मैं फुटबॉल सिखाता था | शाम को मैं इतना थक जाता की बिस्तर पर पड़ते ही सो जाया करता था |

उस वक़्त शारीरिक थकान से मैं ग्रस्त था | मेरे क्लास के सारे बैचमेट के पास गर्लफ्रेंड थी | मेरे फिटनेस के कारण मुझे बहुत सी लड़कियों के प्रपोज़ल आए थे, पर मैं गर्लफ्रेंड बनाने के मूड़ में बिल्कुल भी नहीं था |

@BOOKHOUSE1

एल० एल० बी० फर्स्ट ईयर का रिज़ल्ट आ चूका था | मेरे बैच में कुछ लड़के तथा लड़कियों मुझसे अधिक नंबर पाए थे, पर खास बात यह था की मैं बिना किसी बैक के फर्स्ट समेस्टर पास हुआ था | पर सारे स्टूडेंट् को एक या दो सब्जेक्ट में बैक लग गया था | सेकंड सेमेस्टर का क्लासेस शुरू हो चुका था |

मेरा पढ़ाई सुचारु रुप से जारी रहा | कुछ महीनों बाद सेकंड सेमेस्टर के एग्ज़ाम शुरू हो चूका था | सारे स्टूडेंट् पुरे तयारी के साथ अपना अपना एग्जाम दे चुके थे, फाइनल रिजल्ट आ चुका था | मेरे बैच में पाँच बच्चो ने मुझसे अधिक अंक हासिल किए थे, पर सबका एक या दो सब्जेक्ट में बैक लगा हुआ था | यूपी की पढ़ाई में बैक आना एक नॉर्मल सी बात है, इसलिए सबको बैक आना कोई बड़ी बात नही है |

रिज़ल्ट अनाउंसमेंट के लिए सारे स्टूडेंट्स को कॉलेज मे बुलाया गया था और जो स्टूडेंट् टॉप-टेन लिस्ट में शामिल थे उन्हें इनाम भी दिया जा रहा था | टॉप टेन के लिस्ट में मेरा भी नाम छठवें नंबर पर दर्ज़ था | मेरे अलावा लिस्ट के सारे स्टूडेंट् को स्टेज़ पर बुलाकर उन्हे पुरुस्कार से पुरस्कृत किया जा चुका था, पर मेरा नाम अनाउंस नहीं हुआ था | टॉप टेन की लिस्ट में शामिल सारे स्टूडेंट्स को पुरुस्कार दिया जा चुका था सिवाए मेरे |

शायद मेरा नाम अनाउंसमेंट करने वाले सर भूल गए थे तभी स्टेज पर होने वाले अनाउंसमेंट ने मुझे चौंका दिया | मुझे डायरेक्ट प्रिंसिपल के ऑफिस में बुलाया गया |

मैं यह समझ नहीं पाया की सिर्फ मुझे ही प्रिंसिपल के केबिन में क्यों बुलाया गया है |

जब मैं प्रिंसिपल के ऑफिस में दाखिल हुआ, तो कॉलेज के प्रिंसिपल के साथ रूपा भी बैठी हुई थी |

"रूपा तुम!" मैं चौंकते हुए बोला |

"एक साल से पढ़ रहे हो एक भी बार तुमने मुझे कॉल क्यों नहीं किया?" रूपा ने कहा |

"मुझ पर प्रेशर आ गया था", मैंने कहा |

"मुबारक हो मेरे कॉलेज में बिना किसी बैक के तुमने फर्स्ट ईयर क्लियर किया है |"

"धन्यवाद, पर ये कॉलेज तुम्हारा!" मैंने चौंकते हुए कहा |

"मेरे पिताजी का शेयर है इस कॉलेज में", |

"हम दोनों का मिलना वाक़ई एक संयोग है", मैंने कहा |

"नहीं नहीं, तुम्हारी गर्लफ्रेंड ने बताया था मुझे", रूपा ने कहा |

"तुमने अपने बैच में रिकॉर्ड बना दिया है, पार्टी तो बनती है",|

"हाँ हाँ बिल्कुल", |

कॉलेज के मेन गेट से निकलते हुए रुपा अपने साथ मुझे मर्सिडीज़ गाड़ी में लेकर जा रही थी |

@BOOKHOUSE1

लखनऊ की चमचमाती सड़कों पर मैं पहली बार लक्ज़री गाड़ी में सफ़र कर रहा था | चिनहट चौराहे से पहले ही रूपा गाड़ी टर्न करते हुए शहीद पथ होते हुए "द अंसल प्रॉपर्टीज़" पहुँच चुके थे |

गाड़ी पार्क करने के बाद मैं रुपा के साथ एक फ्लैट में पहुँच चुका था | वो जगह ग्रीन सिटी थी | लखनऊ शहर से थोड़ा किनारे है, पर बेहद अच्छा लग रहा था |

"ये फ्लैट तुम्हारा ही होगा?" मैंने फ्लैट के अंदर पहुँचते ही रूपा की तरफ़ इशारा करते हुए पूछा |

"ये फ्लैट मैं पापा की चोरी चुपके से ख़रीदी हूँ | चाहो तो तुम यहाँ रह सकते हो", |

"हॉस्टल ही ठीक है कम से कम खाना तो नहीं बनाना पड़ेगा ",|

"तुम्हारी मर्ज़ी | मेरे शहर में तुम मौज़ूद हो| तुम्हारे लिए इतना तो कर ही सकती हूँ", |

"उस रात रूपा के फ्लैट में पार्टी हुई | मेरे और रुपा के अलावा एक उसकी सहेली थी जिसका नाम 'गुगु' था |

उसकी आँखें काफ़ी भूरी थी | गुगु से मिलवाते हुए रूपा मुझसे दोस्ती करने को बोली थी पर मैं दोस्ती करने को तैयार नहीं हुआ | रुपा ने उस वक़्त मुझे फोर्स नहीं किया |

“गाँव कब जाना है?” रूपा ने पूछा |

“आज शाम को जाना है”, मैंने कहा |

“ठीक है, वापस आना तो कॉन्टैक्ट करना”,

फिर रूपा मुझे अपनी मर्सिडीज़ गाड़ी से मेरे कॉलेज के कैंपस में छोड़ कर चली गई | कॉलेज के टॉप लिस्ट में मेरा नाम होने के कारण कुछ लड़के मुझसे जलने लगे थे | जो मुझे दोस्त से दुश्मन मान बैठे थे |

एल० एल० बी० फर्स्ट ईयर की पढ़ाई समाप्त हो चका था | न्यू सेशन स्टार्ट होने में तीन महीने बाकी थे | समर वेकेशन के लिए सारे स्टूडेंट्स अपने अपने घर जा चुके थे |

जब मैं गोरखपुर पहुँचा तो परम मुझे बस स्टैंड पर रिसीव करने आया था | वाक़ई एक साल कितना जल्दी बीत चुका था, मुझे कुछ पता भी नहीं चला था |

जब हम अपने घर पहुँचे तो ऐसा लग रहा था की दो पल के लिए रिमसा मुझसे ज़रूर मिलेगी क्योंकि उसने ही रुपा को मेरे कॉलेज का नाम बताया था, जिससे रूपा मुझे मिलने के लिए प्रिंसिपल के केबिन में  बुलायी थी |

मेरा अच्छा रिज़ल्ट देखने के बावज़ूद भी माँ ख़ुश नज़र नहीं आ रहीं थी | मैंने माँ से उनके दुखी होने का कारण पूछा तो, वो मेरा हाथ पकड़कर पिताजी वाले कमरे में मुझे ले गईं | पिताजी का एक हाथ को प्लास्टर किया गया था |

@BOOKHOUSE1

उनके हाथ को देखकर मैंने घबराते हुए पूछा - “आपका हाथ कैसे टूटा?”

“तुम लखनऊ में वक़ालत की पढ़ाई कर रहे हो, इसकी खबर एजेंट तक पहुँच गई है | इसलिए वो तुम्हारे हौंसलों को तोड़ना चाहता है |”

पिताजी की बात सुनकर मैं फर्श पर बैठ गया | मेरे हौंसले को डगमगाने के लिए एजेंट अपने बड़े भाई (मेरे पिताजी) का हाथ फैक्चर करवा सकता है, मुझे इसकी उम्मीद नहीं थी |

मेरे कॉलेज में कुछ जूनियर लड़के थे, जो मेरी ख़बर एजेंट को बताया करते थे | मेरा बैग अभी खुला भी नहीं था तभी माँ ने मुझे अगली सुबह लखनऊ जाने की बात कह दी |

“मुझे घर आए हुए चौबीस घंटे भी नहीं हुए हैं, आप मुझे इतना जल्दी लखनऊ क्यों भेज रही हैं?” मैंने पूछा |

“एक साल और रह गया है तुम्हारा एल० एल० बी० का पढ़ाई”, माँ ने कहा |

“अभी कॉलेज बंद है”,|

“तुम अपनी एल० एल० बी० की पढ़ाई पूरी करके ही एजेंट से बदला ले सकते हो”, |

माँ का कहना गलत नहीं था, पर मैं कुछ दिन अपने घर रहकर रिमसा का पता लगाना चाहता था | एक रात का समय था मेरे पास रिमसा को ढूँढ़ने के लिए | मैं रात को रिया के

पास पहुँचा |

“तुम कब आए और पढ़ाई कैसी चल रही है?” रिया ने पूछा |

“ठीक है और पढ़ाई भी अच्छे से चल रही है | अपने बैच के टॉपर लिस्ट में मैं चुना गया हूँ”, मैंने कहा |

“तुम्हारा अच्छा रिज़ल्ट आने की ख़ुशी में रिमसा ने मेरे पास मिठाई भी भिजवाई थी | कुछ दिन पहले वो यहाँ आई थी पर अब वो अपने मामा के पास चली गई है”, रिया ने कहा |

“रिमसा ने पिछले एक साल से मुझे एक भी बार कॉल नहीं किया है | उसके पुराने नंबर पर कॉल करने पर उसकी मौसी उठाया करती हैं | जाने से पहले उसने कहा था की वो अपने मामा के पास पहुँचकर मुझे कॉल करेगी, पर शायद वो मुझे भूल गई है”,|

“वो भूल गई होती तो तुम्हें पास होने की ख़ुशी पर मुझे मिठाई क्यों भिजवाती? “रिमसा” तुम्हारी ख़बर हमेशा लेती रहती है”, रिया ने कहा |

“पिछली बार जब वो आई थी तो वो कैसी दिख रही थी?” मैंने पूछा |

“तुम ख़ुद एहसास करके पता कर लो”, |

“जब कभी रिमसा आए तो उससे बोलना मैं उससे बात करना चाहता हूँ”, |

“ठीक है, इतना तो कर ही सकती हूँ दोस्ती के लिए”, |

“तुम्हें यहाँ कितने दिन रहना है?” |

“आज रात तक रुकना है | कल मैं लखनऊ चला जाऊँगा”, बोलते हुए मैं खड़ा हुआ जाने के लिए |

अचानक तेज़ी से आकर रिया मेरी बाहों में समा गई | मैंने सीरियस नहीं लिया मुझे लगा की रिया भी अच्छी दोस्त है, फिर गले लगना इतनी बुरी बात तो है नहीं | तब तक रिया ने मेरे गाल पर किस कर दिया |

रिया को पीछे धक्का देते हुए मैंने तेज़ी से उसके गाल पर एक जोर से थप्पड़ मारा |

“तुम पागल हो गई हो? भले ही तुम रिमसा की तरह दिखती हो, पर तुम उसकी जगह कभी नहीं ले सकती हो”, मैंने कहा |

अपने गाल पर हाथ रखकर रिया चुपचाप खड़ी थी | वाक़ई मैंने रिया को जोर से थप्पड़ मार दिया था, पर रिया अपने गाल पर हाथ रखकर शांति से खड़ी होकर मुझे मासूमियत भरी निगाहों से देख रही थी |

उसको देखकर ऐसा लग रहा था की मानो वो अभी रो देगी | मैं उसे चाँटा मारकर पछता रहा था | प्यार की उलझन कुछ ऐसी ही होती है की गुस्सा किसी और पर आता है और हम सब निकालते किसी और पर हैं | फिर मैं वहाँ से अपने घर आ गया | सुबह की लाली के

@BOOKHOUSE1

पहले ही परम मेरे घर आ चुका था, शायद उसे माँ ने बुलाया था, मुझे बस स्टैंड तक छोड़ने के लिए | मेरे जाने के लिए माँ ने नाश्ता पैक कर दिया और जाने की इज़ाज़त दे दी | उस वक़्त मुझे ऐसा लग रहा था की माँ मुझे अपने घर से निकाल रहीं हैं, वो भी कुछ दिनों के लिए |

मेरा बैग परम हंटर में रख चुका था और चलने के लिए आवाज़ लगा रहा था | माँ का पैर स्पर्श करते हुए मैं गाड़ी में परम के साथ बैठ गया | एक साल बाद मैं अपने घर कॉलेज की छुट्टी मनाने नहीं गया था, बल्कि रिमसा के बारे में पता लगाने के मन से आया हुआ था, पर एजेंट की वज़ह से चौबीस घंटे के अंदर मुझे मज़बूर होकर लखनऊ वापस जाना पड़ रहा था| उस वक़्त मुझे ऐसा लग रहा था की मुझे कोई ज़बरजस्ती मेरे घर से भगा रहा है | हंटर को परम ड्राइव कर रहा था मैं उसके साइड वाले सीट पर चुपचाप बैठा हुआ था |

"वक़ील जी, मेरे लिए भी कुछ वक़्त चाहिए", परम ने कहा |

"मेरी डायरी ठीक से रखे हो ना?" |

"हाँ, मैं अपने मम्मी के शादी वाले बक्से में तुम्हारा डायरी रख दिया हूँ", परम ने कहा |

उसके बातों पर मुझे थोड़ा हँसी आया पर मैं सीरियस ही रहा |

"रिमसा की याद अभी भी आती है?" परम ने पूछा|

"वो भूलती ही कहाँ है की मैं उसे याद करूँ", |

"उसके हिसाब से एक साल बीत चुका है, एक साल का और इंतज़ार करना है, फिर एक नन्हा बालक मेरी गोद में", परम ने हँसते हुए कहा |

"तूने मेरी डायरी क्यों पढ़ी?" |

"मेरा तुम दोनों पर पूरा हक़ है", |

बात करते हुए हम दोनों गोरखपुर के बस स्टैंड पहुँच चुके थे | परम ने हंटर से मेरा बैग बस तक पहुँचा दिया फिर मैं अपनी सीट पर बैठ गया | स्लीपर बस होने के नाते आराम से लेट कर भी सफ़र किया जा सकता था |

कांच के बाहर जब मैंने देखा तो परम हंटर में बैठकर मुझे 'बाय' कर रहा था | पिछली बार की तरह मैं गलती नहीं करना चाहता था | मैंने भी परम को बस में बैठे-बैठे 'बाय' कर दिया | बस चलने तक परम हंटर के पास खड़ा रहा कुछ देर बाद एक झटका सा लगा | मुझे यक़ीन हो गया की बस चलना शुरू कर दिया है | तकरीबन दोपहर में हम लखनऊ के बस स्टैंड पहुँच चुके थे| जब मैं बस से बाहर निकला तो ऐसा लगा की किसी आग की खदान में आ गया हूँ |

दोपहर के दो बज रहे थे | गर्मी और धूप दोनों ही चरम सीमा पर थी | मैं प्राइवेट ऑटो लेते हुए हॉस्टल के कैंपस पहुँच चूका था | जितना थकान मुझे अपने घर से लखनऊ बस स्टैंड तक आने में नहीं हुआ था, उससे ज्यादा थकान तो मुझे लखनऊ के बस स्टैंड से अपने

@BOOKHOUSE1

हॉस्टल पहुँचने तक हुआ था |

मैं हॉस्टल के रूम में जाते ही बिस्तर पर लेट गया | लखनऊ पहुँचने के बाद भी रिया को चाँटा मारने वाली बात मुझे खल रही थी | शायद रिया मुझसे नाराज़ हो चुकी होगी और रिमसा तक पहुँचने के लिए एकमात्र रिया ही सहारा थी, पर वो भी नाराज़ हो चुकी थी | हॉस्टल पूरा का पूरा खाली था क्योंकि फर्स्ट ईयर का फाइनल रिज़ल्ट आने के बाद सारे स्टूडेंट घर जा चुके थे |

अपने घर गया तो मैं भी था पर दुर्भाग्य से मुझे चौबीस घंटो के भीतर वापस आना पड़ा | गार्डन और कुकर के अलावा हॉस्टल में कोई नहीं था | हॉस्टल में मैं भी अकेले बोर हो रहा था | तभी मेरे सेल फोन की घंटी बजी | रुपा के नंबर से कॉल आ रहा था |

"हैलो!"|

"कहाँ हो?"

"अपने कॉलेज के हॉस्टल में हूँ", मैंने कहा |

"कॉलेज के मेन गेट के पास जल्दी आ जाओ", रुपा ने कहते हुए कॉल कट कर दिया |

कॉलेज के मेन गेट के सामने मैं खड़ा होकर रूपा के आने का इंतज़ार करने लगा | तभी मेरे सामने एक चम-चमती हुई बीएमडब्लू रुकी |

@BOOKHOUSE1

बीएमडब्लू चारों ओर से पैक था | काले शीशे होने के कारण अंदर कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन बीएमडब्लू को ड्राइव करने वाला या वाली बार-बार हॉर्न पर हॉर्न दे रहा था | मैं रूपा का इंतज़ार कर रहा था | तभी बीएमडब्लू की खिड़की का काँच नीचे हुआ, मैंने थोड़ा झुककर देखा तो स्टेरिंग वाले सीट पर रूपा बैठी हुई थी | वही बार-बार हॉर्न बजा रही थी | मैं झटपट जाकर बीएमडब्लू में बैठ गया |

कार का अभी सेंट भी नहीं उड़ा था, ऐसा लग रहा था की बीएमडब्लू अभी-अभी शोरूम से निकाली गई है |

"तुमने न्यू गाड़ी कब ली?" |

"चौबीस घंटे पहले ही फाइनेंस करायी हूँ | पापा की पुरानी मर्सिडीज़ चला-चलाकर थक गई थी", तुम तो घर जाने वाले थे, नहीं गए क्या?" रूपा ने पूछा |

"गया तो था मैं अपनी रिमसा का पता लगाने के लिए, पर एजेंट के अत्याचार से मुझे वापस आना पड़ा", मैंने कहा|

"रूपा ने बीएमडब्लू को शहीद पथ की तरफ़ टर्न किया | मैं समझ गया की वो मुझे फ्लैट पर ले जा रही है |

"आज जमकर पार्टी करेंगे", रूपा ने कहा |

अच्छी सड़क पर अच्छी गाड़ी को रफ़्तार से चलाना बुरी बात नहीं है अगर आपके पास

लक्ज़री गाड़ी हो तो | फ्लैट पर रूपा ने चंद मिनटों में पहुँचा दिया | फ्लैट का मेन गेट अंदर से बंद था | बेल बजाने के बाद एक लड़की ने दरवाज़ा खोला | वो लड़की रूपा की सहेली गुगु थी | उस लड़की से मैं पहले भी मिल चुका था | मैं, रूपा और गुगु गोलाकार मेज़ के किनारे कुर्सी पर बैठकर गपशप करने लगे|

"जब तक मैं वापस ना आ जाऊँ, तब तक तुम इसी फ्लैट में रहना है", रूपा ने कहा |

"ठीक है, पर तुम जा कहाँ रही हो?" |

"अपने राजकुमार के लिए तुम्हारे गाँव जा रही हूँ और एजेंट फिर से चुनाव जीत गया है", रूपा ने कहा |

हॉस्टल पूरी तरह से खाली हो चुका था, इसलिए मैंने रूपा के फ्लैट में ही रहना उचित समझा |

रूपा को अभी तक तलाश थी उस किडनी डोनर वाले लड़के की, पर उसने अभी तक अपनी चमचमाती अंगूठी का ज़िक्र नहीं किया था | मैं उस पल के इंतज़ार में था की जब रूपा मुझसे अंगूठी खोने की बात ज़ाहिर करेगी, तब मैं उसे सच-सच बताऊँगा की उसके जान को मैंने ही बचाया था और वो किडनी डोनर मैं ही हूँ |

"नई कार लेने की ख़ुशी में तुमने पार्टी नहीं दी", गुगु' रूपा की तरफ़ देखते हुए बोली |

"सॉरी, अपने राजकुमार के गाँव जाने के चक्कर में मैं तो भूल ही गई थी", रूपा कहते हुए रूम से बाहर चली गई|

@BOOKHOUSE1

उसके पीछे गुगु भी रूम से बाहर चली गई | कुछ देर बाद वो दोनों वापस रूम में आई तो दोनों के हाथों में पार्टी करने वाली चीज़ें थी |

चिल्ड पानी और गिलास गुगु के हाथ में था और फौरन ब्रैंड टाईप की शैम्पेन रूपा के हाथ में थी | वैसी बोतल से मैंने किसी को पीते हुए नहीं देखा था | मेरा ध्यान उस फौरन ब्रैंड की बोतल से हट ही नहीं रहा था |

"क्या देख रहे हो? इंडिया का ब्रांड नहीं है", रूपा ने कहा |

तीन गिलास में रूपा ने पटियाला पैक बना दिया | मैं विदेशी ब्रांड के नाम पर पूरा पैग एक ही बार में गटक गया | मैं आज तक ऐसी टेस्टी दारु कभी नहीं चखा था | अपना पैग पीने के साथ-साथ, मैं रूपा की भी दारू पी जा रहा था |

"अब रहने भी दो", गुगु ने मेरी तरफ़ देखते हुए कहा |

"मैं तुम्हारी बात क्यों मानूँ?" |

"क्योंकि वो तुम्हारी दोस्त है", रूपा ने कहा |

"फौरन ब्रैंड की दारू का टेस्ट चखते-चखते मैं चार पैग पी चुका था | वाक़ई मुझ पर अँग्रेज़ी ब्रांड वाली दारू हावी हो चुका था | मैंने नाटक करना शुरू कर दिया |

“इंसान अगर प्यार से मात नहीं खाए तो, वो चड्ढा जी जैसा अमीर बन सकता है”, मैंने कहा |

चड्ढा रूपा के पिता का नाम था, फिर भी वो मेरे बातों पर मुस्कुरा रही थी | हालांकि गुगु ने मेरे बातों का विरोध करते हुए, अपने पैर से मेरे पैर को धक्का देते हुए मुझे चुप रहने का इशारा किया, पर मैं गुगु के इशारे को नज़रअंदाज़ कर दे रहा था |

“इसलिए मेरे पापा, माँ के अलावा किसी दूसरी महिला से प्यार नहीं किये | मैं भी उनके जैसी ही हूँ”, रूपा ने चंद मुस्कराहट के साथ कही |

“दिल्लगी की होती तब पता चलता”, मैंने कहा |

“चार-चार लड़कों से मेरा चक्कर है”, कहते हुए रूपा हँस रही थी |

मैं उस वक़्त नशे में ज़रूर था, पर रूपा का हँसना मुझे दिख रहा था | मैं जानबूझकर आलतू - फ़ालतू की बातें बोल रहा था ताकि मैं ये पता लगा सकूँ कि आख़िर रूपा अपने राजकुमार को किस हद तक चाहती है |

“मेरे पास एक जादू है, जिसे तुम अपना दिल मुझे दे बैठोगी”, मैंने रूपा की तरफ़ देखते हुए कहा |

“अपना दिल तुम्हें तो नहीं, पर मुझे किडनी डोनेट करने वाला लड़का मिल जाए तो मैं उसे ज़रूर देना चाहूँगी क्योंकि मैं उस राजकुमार को बहुत मिस करती हूँ”,|

“तुम्हारा राजकुमार तुम्हें अगली बग़ावत तक ज़रूर मिल जाएगा”, मैंने कहा |

“तुम इतने आत्मविश्वास के साथ कैसे कह सकते हो?” रूपा ने पूछा |

“दिल की बात है मैडम, आपके पल्ले नहीं पड़ेगा”, |

“तुम सो जाओ | अँग्रेज़ी ब्रांड तुम पर चढ़ गया है”, गुगु कहते हुए रूपा को अपने साथ दूसरे रूम में लेती गई |

मैं थोड़ा नशे में ज़रूर था, पर मैं जानबूझकर थोड़ा ड्रामा कर रहा था की रूपा के दिल में उसको बचाने वाले की अहमियत है या नही ये सारी बातें जानने के लिए मैं ड्रामा कर रहा था |

रुपा के बात करने के तरीके से मैंने अंदाज़ा लगा लिया था की रुपा अमीर होने के साथ साथ वफ़ादार लड़की भी है, क्योंकि वो अपनी जान बचाने वाले लड़के को मन ही मन अपना राजकुमार मान चुकी थी | फिर मुझे नींद कब आ गई, मुझे कुछ पता ही नहीं चला | जब मैं सुबह उठा तो 10:00 बज रहे थे |

मैं रूम के बाहर निकला तो बालकनी में बैठकर रूपा और गुगु दोनों चाय कि चुस्की ले रहीं थी | मैं अपना आँख मसलता हुआ उन दोनों के पास जाकर बैठ गया | रूपा और गुगु दोनों मुझे देखकर हँसने लगी |

@BOOKHOUSE1

“इतना हँस क्यों रही हो तुम दोनों?” मैंने पूछा |

“पीने के बाद कुछ भी बोल देते हो”, गुगु ने कहा |

“मुझे पता नहीं चला | किसी को बुरा लगा हो तो सॉरी”, |

“रूपा को तुमने क्या-क्या बोला था कुछ याद भी है?” गुगु ने पूछा |

“सॉरी”, बोलते हुए मैंने रूपा की तरफ़ इशारा कर दिया |

“कोई बात नहीं, तुम्हारे बात करने का स्टाइल मुझे अच्छा लग रहा था कल रात में | आज भी साथ में हम तीनों पटियाला पैग बनाते पर अभी पापा के साथ मुझे तुम्हारे गाँव एजेंट की पार्टी में जाना है”, रूपा ने कहा |

रूपा बाहर की तरफ़ जाने लगी | दरवाज़े से रूपा आवाज़ लगाई – “अमन का ध्यान रखना”, कहते हुए रूपा चली गई |

“मैं बैठे-बैठे रूम में बोर हो रहा था | गुगु किसी सी० ए० के ऑफिस में रिसेप्शनिस्ट का जॉब करती थी | वो भी ऑफिस जा चुकी थी | मैं डिस्कवरी चैनल देखते - देखते पूरा दिन बिता दिया | तभी शाम को बेल बजा |

मैं दरवाज़ा खोला तो सामने गुगु खड़ी थी | वो अंदर आ चुकी थी | रात के वक़्त मैं और गुगु खाना खा रहे थे | तभी रूपा ने कॉल करके बताया कि –“तुम्हारी जान को ख़तरा है | उस फ्लैट से बाहर किसी भी क़ीमत पर ना निकलना | मैं सुबह ही आ रही हूँ”, कहते हुए रूपा ने कॉल कट कर दिया |

@BOOKHOUSE1

मैं समझ गया की रूपा एजेंट की पार्टी में पहुँच चुकी है और वहीं से मुझे उसने कॉल किया है | मुझे फ्लैट में रहने से कोई प्रॉब्लम नहीं थी | गुगु खाना बना दिया करती थी | उस वक़्त हॉस्टल में रहना मेरे लिए ठीक नहीं था, क्योंकि एजेंट मेरे पीछे पड़ चुका था |

मुझे एक तरफ़ से डर भी लग रहा था यह सोचकर कि एजेंट और चड्ढा दोनों बिज़नेस मित्र हैं | एजेंट का सपोर्ट पूरी तरह से चड्ढा करेगा ही, अगर रूपा ने अपने पापा का साथ दे दिया तो मैं आराम से एजेंट के हाथ पकड़ा जाऊँगा |

वैसे भी कोई लड़की अपने फ्रेंड का साथ देने की तुलना में अपने बाप का साथ देना ठीक समझेगी | डर के कारण मुझसे खाना नहीं खाया जा रहा था |

“इतना परेशान क्यों हो?” गुगु ने पूछा |

“मेरा दुश्मन सक्रिय हो गया है”,|

“तुम टेंशन मत लो, तुम्हें बचाने के लिए रूपा अपनी पूरी ताक़त लगा देगी | तुम्हारे बारे में रूपा बहुत कुछ मुझे बता चुकी है | तुम्हारा प्रशंसा सुन-सुनकर मैं तुम्हारी कायल हो चुकी हूँ”, गुगु ने लम्बी साँसे लेते हुए कहा |

हम दोनों अपने - अपने रुम में चले गए | रात को मुझे नींद नहीं आ रही थी ये सोचकर की

आख़िर एजेंट मुझसे चाहता क्या है? एजेंट के चक्कर में ही मैं और रिमसा एक दूसरे से दूर हुए थे |

सुबह होते ही दरवाज़ा की बेल बजी | उस वक़्त मैं जगा हुआ था, फिर भी दरवाज़ा खोलने गुगु गई थी|

“परेशान होने की ज़रूरत नहीं है” कहते हुए रूपा मेरे रूम में दाख़िल हुई, उसके पीछे गुगु भी खड़ी थी |

“तुम इतनी जल्दी क्यों आ गईं?” मैंने पूछा |

“तुम्हें बचाने के लिए”, |

मुझे यक़ीन हो गया था की रूपा एजेंट का सपोर्ट ना करके मेरा सहायता करेगी |

“मेरी बात ध्यान से सुनो, जिस कॉलेज में तुम पढ़ते हो उस कॉलेज में मेरे पिताजी का शेयर है और उस कॉलेज के सारे स्टूडेंट् का डाटा एजेंट को दिया जा चुका है | मैं तुम्हें खुलकर सपोर्ट नहीं कर सकती क्योंकि अगर मैंने ऐसा किया तो पापा नाराज़ हो जाएँगे | फिर 2016 में होने वाले बग़ावत में मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर पाऊँगी | अच्छा यही रहेगा की तुम कुछ दिनों तक एजेंट और मेरे पापा के लोगों से बचकर ही रहो और इस बार तुम्हें अपना कॉलेज छोड़ना पड़ेगा”, रूपा ने कहा |

“सेकंड ईयर की पढ़ाई किसी भी क़ीमत पर मैं नहीं छोड़ना चाहता हूँ”,|

“एक बार कहने पर समझ में नहीं आता तुम्हें”, रुपा ने चिल्लाते हुए कहा |

उसकी चिल्लाहट से रूम गूँज गया | मैं समझ गया की रूपा मुझे एजेंट से बचाना चाहती है | मैं चुप-चाप रूपा के सामने बैठा रहा |

“कल गुगु के साथ उसके ऑफिस चले जाना, रूम में अकेले बोर नहीं होगे”, कहते हुए रुपा बालकनी में चली गई |

मैं भी रूपा के बगल वाली कुर्सी पर जाकर बैठ गया |

“तुम्हारे और रिमसा के साथ जो हुआ, वो एजेंट के वज़ह से हुआ था”, रूपा ने कहा |

“मेरे और रिमसा के बारे  में तुम क्या जानती हो?” |

“रिमसा की कोई गलती नहीं थी | जो भी तुम्हारे साथ गलत हुआ है उसके पीछे एजेंट का हाथ था”,|

“तुमसे  रिमसा मिली थी?” |

“वो ज्यादा वक़्त मेरे साथ नहीं रुकी, पर वो बहुत मायूस लग रही थी | रिमसा कुछ पल के लिए मेरे साथ थी| वो तुम्हारे हाल-चल पूछकर तुरंत चली गई | कभी-कभी मेरे नंबर पर कॉल करके वो तुम्हारा ख़बर लिया करती है”, रूपा ने कहा |

@BOOKHOUSE1

“रिमसा का नंबर मुझे दे सकती हो?” मैंने कहा |

“नंबर लेकर कोई फ़ायदा नहीं होगा | उस नंबर पर सिर्फ आउट गोइंग चालू है | पिछली बार तुम रिमसा से कब बात किये थे ”, रूपा ने कहा |

“एक साल से ज्यादा हो चुका है उससे बात किए हुए”, मैंने कहा |

“एक साल से ज्यादा हो चुका है पर  क्यों?” |

“आखिरी मुलाक़ात के वक़्त रिमसा ने मुझसे कहा था की मामा के घर पहुँचते ही वो मुझे कॉल करेगी, पर उसने आज तक कोई कॉल नहीं किया”,|

मेरी आवाज़ उस वक़्त लड़खड़ा रही थी |

“एजेंट शायद रिमसा पर हावी हो गया हो, तुमसे दूर करने के लिए”, रूपा ने कहा |

“अगली बार रिमसा फोन करे तो, उससे ज़रुर बोलना मैं उसकी आवाज़ सुनना चाहता हूँ”, |

“ठीक है, बाय”, बोलते हुए रूपा चली गई |

फ्लैट मैं सिर्फ मैं और गुगु रहते थे | कभी-कभी रूपा आया करती थी, वो भी पार्टी करने के मूड़ में | कॉलेज में न्यू सेशन स्टार्ट हो चुका था | मैं मास्क लगाकर विथआउट ड्रेस में कॉलेज पहुँचा |

@BOOKHOUSE1

उस वक़्त कॉलज के मेन गेट पर हो रहे कारनामे को देखकर मेरा सिर चकरा गया | कॉलेज के अंदर जो भी छात्र प्रवेश कर रहे थे, गेट पर खड़े होकर कुछ बदमाशों का गैंग मेरे फोटो से सारे लड़को के चेहरे को मिलाने के बाद ही, स्टूडेंट् को कॉलेज में एंट्री दे रहे थे | सारे बदमाशों के हाथो में 10 x11 साइज़ का मेरा फोटो था | मैं तुरंत ही वहाँ से फ्लैट पर वापस आ गया | एक दो बार मैंने कॉलेज जाने का प्रयास किया, पर मेन गेट पर एजेंट और चड्ढा जी के लोगो की छानबीन के कारण मैं कॉलेज नहीं जा पा रहा था |

मेरा एल० एल० बी० सेकेंड ईयर की पढ़ाई अप्सेंट हो रहा था | मुझे अफ़सोस नहीं था की एल० एल० बी० की पढ़ाई एक साल के लिए ब्रेक हो रहा था | बात यह था की रिमसा का कहना था कि मैं अगली बार उसके सामने वक़ील बनकर ख़ुद को पेश करूँ, और रिमसा का यह फाइनल डिसीज़न था |

जब तक मैं अपना वक़ालत पूरा नहीं कर लेता, तब तक वो अपनी सूरत मुझे नहीं दिखाएगी | उसकी ज़िद के सामने मैं मज़बूर था | अपना पढ़ाई पूरा करने के लिए मैं कोई भी रिस्क लेने को तैयार था | उससे मिलने के लिए मैंने अपने आप को बेताब कर रखा था |

आखिरी मुलाक़ात के वक़्त उसने कहा था – “तुम्हारी वक़ालत पूरी होते ही, हम दोनों एक दूसरे के हो जाएँगे | मैं किसी भी हालत में सेकंड ईयर का सेशन मिस नहीं करना चाहता था |

मैंने रूपा के नंबर पर मैसेज़ कर दिया, -“मेरा एडमिशन फॉर्म फिल करने के लिए अपने

एमडी से कह दे | ताकि मौका मिलते ही मैं एग्ज़ाम दे सकूँगा |"

"डन ओके! उसने तुरंत रिप्लाई कर दिया |"

मैंने दो-तीन बार ट्राई किया कॉलेज जाने के लिए पर मैं जा ना सका, क्योंकि कॉलेज के मेन गेट पर मेरा छानबीन अभी भी जारा था |

मैं गुगु के साथ उसके ऑफिस गया हुआ था | मुझे कुछ डॉक्यूमेंट दिए गए थे | केड़िया सर के पास देने के लिए | मैं समझ नहीं पा रहा था की रूपा ने मुझे गुगु के साथ घूमने के लिए भेजा है या जॉब करने के लिए, क्योंकि उस दिन मेरा पहला दिन था और मैं बिना सी० वी० का गया हुआ था | डॉक्यूमेंट लेकर मैंने केड़िया सर के केबिन में प्रवेश किया |

"वेलकम टू केड़िया ग्रुप आज से आप हमारे पर्सनल असिस्टेंट चुने जा चुके है, रूपा मैडम की बदौलत" केबिन में बैठे हुए एक शख़्स ने कहा |

मैं डॉक्यूमेंट को टेबल पर रखकर, केड़िया सर के केबिन से निकलते हुए तेज़ी से रिसेप्शन काउंटर पर पहुँचा, जहाँ गुगु बैठी हुई थी |

"मैं यहाँ जॉब करने नहीं आया हूँ", मैंने कहा |

"रूपा का फोन होल्ड पर है बात कर लो", कहते हुए गुगु ने अपना सेल फोन मुझे दे दिया |

गुगु का सेल फोन लेकर मैंने अपने कान पर लगा लिया-

"एजेंट के लोग कॉलेज के चारों तरफ़ लगे हुए हैं | दिमाग़ से काम लो, तुम्हारी अनुपस्थिति में एजेंट को यह लगेगा की तुम लखनऊ छोड़ कर चले गए हो | तब तक केड़िया सर के पर्सनल असिस्टेंट बने रहो | ऑफिस तक ना एजेंट पहुँच पाएगा और ना ही उसकी बदमाश गैंग",

सेल फोन को मैं अपने कान के पास लगाकर चुप-चाप रूपा की बात सुन रहा था | वो मुझे बोलने का वक़्त ही नहीं दे रही थी, सिर्फ वही बोले जा रही थी |

"आज पार्टी करेंगे", बोलते हुए रुपा ने कॉल कट कर दिया |

मेरे जॉब का पहला दिन और पता भी नहीं था की मैं गुगु के साथ जॉब करने गया था | केड़िया सर का ऑफिस हज़रतगंज चौराहे जीपीओ (प्रधान डाकघर) के सामने सेकंड फ्लोर पर स्थित है |

केड़िया सर के ऑफिस में कम से कम बीस लोग जॉब करते थे, मुझे छोड़कर | इतने बड़े सी० ए० का मैं पर्सनल असिस्टेंट चुना जा चुका था, बिना कोई इंटरव्यू दिए हुए, सिर्फ रूपा के कहने पर | इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है की जब रूपा के पास इतना पॉवर है तो उसके पिताजी के पास कितना पॉवर होगा | इन्हीं सब पॉवर का एजेंट फ़ायदा उठाता है | अगर इतना पॉवर मुझे मिल जाता तो मैं पल भर में ही एजेंट को निपटा देता, पर चड्ढा जी का पॉवर मुझे मिल पाना एजेंट के होते हुए नामुमकिन था | शाम के वक़्त मैं गुगु के साथ फ्लैट पर आ चुका था |

@BOOKHOUSE1

मैं केड़िया सर के ऑफिस गुगु के साथ नियमित जाने आने लगा | केड़िया सर के ऑफिस के डॉक्युमेंट्स मेंटेन करते-करते मेरा सारा दिन कैसे निकल जाता था कुछ पता ही नहीं चलता था | गुगु के साथ मैं रोज ऑफिस जाता आता रहा पर मुझे गुगु में किसी तरह से दिलचस्पी नहीं रहा था |

गुगु कई बार कोशिश की थी की हम  दोनों की दोस्ती गहराई तक पहुँच सके, पर मैं इग्नोर कर दिया करता था | एक दिन जब मैं और गुगु ऑफिस से लौट रहे थे, उसी वक़्त मूसलाधार बारिश होने लगी | स्कूटी ड्राइव करने का हम दोनों के बीच यही तय हुआ था की फ्लैट से ऑफिस जाने तक स्कूटी गुगु ड्राइव करेगी और ऑफिस से फ्लैट वापस आने के लिए स्कूटी मैं ड्राइव करूँगा |

बारिश से बचने के लिए मैंने रुकने को कहा पर गुगु बारिश में ही चलने को बोली | मैं बारिश में ही स्कूटी ड्राइव कर रहा था | उसने अपने दोनों हाथों से मेरी कमर को पकड़ लिया था | अचानक मेरे पीठ पर गर्माहट सी महसूस हुई | वो स्कूटी पर मुझसे बिल्कुल सटकर बैठी हुई थी |

मुझे कुछ अज़ीब सा महसूस हो रहा था | स्कूटी पर मैं थोड़ा आगे की तरफ़ खिसक गया, कुछ दूर आगे चलने के बाद  वो भी मेरी तरफ़ खिसक गई | बारिश होने के कारण सड़क पर ट्रैफिक क्लियर था | तेज़ी से स्कूटी चलाते हुए अंसल वाले फ्लैट में हम दोनों पहुँच चुके थे |

उसके कपड़े पूरे भीग चुके थे | वो जींस और टी-शर्ट पहन रखी थी जो उसके शरीर से चिपक गए थे | उस वक़्त गुगु वाक़ई हॉट लग रही थी, पर मैं उसे इग्नोर करते हुए अपने रूम की तरफ़ जाने लगा |

“तुम्हें भी ठंड लग रही है?” गुगु ने पूछा |

“हाँ, अगर गरमा-गर्म कॉफ़ी मिल जाता तो, मैं बारिश की ठंड से लड़ पाता”, बोलते हुए मैं अपने रूम में चला गया |

गुगु भी अपने रूम में जा चुकी थी | भीगे शर्ट पैंट को मैंने निकाल दिया और हाफ कैप्री के साथ एक टी-शर्ट पहनकर मैं सोफे पर बैठ गया | तभी गुगु मेरे रूम में आते ही टेबल पर कॉफ़ी का प्याला रखकर सोफे पर मेरे बिल्कुल नज़दीक बैठ गई |

“तुम कॉफ़ी नहीं पीओगी?” मैंने पूछा |

“एक ही कप से दोनों काम चला लेंगे”, गुगु ने मुस्कुराते हुए कहा |

उस वक़्त गुगु वाक़ई कातिल लग रही थी | हाफ शर्ट के साथ हाफ पेंट पहन रखी थी | उस वक़्त गुगु के दिमाग़ में क्या चल रहा था, उसके हाव -भाव से मैं बिल्कुल वाकिफ़ हो चुका था |

वो मेरे करीब आकर मेरे दोनों पैर पर बैठ गई और मुझ पर भिड़ गई | मैं उस वक़्त ख़ुद को रोक पाता यह कह नहीं सकता, क्योंकि हम दोनों के अंग्रेजो जैसे किस करना शुरू कर दिए थे | तभी गेट की बेल बजी, गुगु सोफे से ऊठकर खड़ी हो गई |

©BOOKHOUSE1

“फक!” बोलते हुए अपनी नाक सिकुडाते हुये मेरे रूम से अपने रुम की तरफ़ तेज़ी से चली गई | मैं दरवाज़ा खोलने चला गया | रूपा मुझे देखते ही मुस्कुराने लगी | उसके हँसने की वज़ह मैं नहीं समझ सका |

रूपा मेरे रूम में आकर सोफे पर बैठ गई | मैं उसके सामने बेड पर बैठा हुआ था |

“मेरे आने से पहले यहाँ क्या चल रहा था?”|

“कुछ भी तो नहीं”, मैं अनजान बनते हुये कहा |

“दो कपल के मिलने की सुगंध आ रही है”, रूपा ने कहा |

कैसी सुगंध ? मैं अपनी सफ़ाई पेश करने लगा |

“मिस्टर, दुनिया के सारे चोर कोई न कोई सबूत छोड़ जाते हैं”, कहते हुए रुपा ने शीशे की तरफ़ इशारा किया | जब मैं शीशा के सामने खड़ा हुआ तो मेरे गाल पर लिपिस्टिक लगी हुई थी |

लड़कियों को लिपिस्टिक इतनी पसंद क्यों आती है? पहले से ही इनके होंठ इतने गुलाबी होते है फिर भी लड़कियाँ अपने होंठों की डेंटिंग-पेंडिंग करने में लगी रहती हैं | तभी गुगु रूम में उपस्थित हुई, उसे देखकर मेरी आँखें तन गई | वो बिल्कुल ही सिंपल ड्रेस पहनी हुई थी | गुगु अपने कपड़े इतने जल्दी चेंज कर सकती थी मैं सोच भी नहीं सकता था क्योंकि लड़कियों को तैयार होने में कितना वक़्त लगता है, यह बात तो आप सभी जानते ही होंगे |

@BOOKHOUSE1

“तुम कब आईं?” गुगु ने रुपा की तरफ़ देखते हुए बिल्कुल अनजान होते हुए पूछा |

“जब तुम इस रूम से सरपट भाग रहीं थी तभी”, |

“आग लगने से पहले ही तुमने उसे बुझा दिया | थोड़ी देर से नहीं आ सकती थी”, गुगु ने कहा |

गुगु की बातों पर रुपा हँसने लगी पर मैं सीरियस रहा |

“पार्टी कर लो, फिर जितना चाहे आग लगाती रहना”, रूपा ने हल्की मुस्कान के साथ कहा |

फिर दोनों हँसते हुए रूम से बाहर चली गईं | मैं समझ गया की अगले पल क्या होने वाला है | तभी रुपा अपने हाथ में अंग्रेज़ी ब्रांड लेकर रूम में उपस्थित हुई |

उसके पीछे गुगु गिलास के साथ पानी की बोतल पकड़ी हुई थी | फिर रूपा पटियाला पैग बनाने लगी | पिछली बार की तरह ड्रामा करने के लिए मैंने चार पैग लगा लिया |

“तुमने कभी किसी लड़की के साथ रिलेशनशिप बनाया है?” रूपा ने मुझे उकसाते हुए पूछा |

“जितना मज़ा दिल लगाने में है, उतना मज़ा रिलेशनशिप बनाने में नहीं”,|

“रिलेशनशिप वाला मज़ा ले लोगे, तो फाइनली तुम रिमसा से दिल्लगी करना भूल जाओगे”, रूपा ने कहा |

“मुझे रिलेशनशिप बनाकर तुम्हारी तरह नहीं बनना है | तुम एक-दो लडको के साथ रिलेशनशिप बनाकर जितना ख़ुशी नहीं रहती होगी, उसे से अधिक तुम अपने राजकुमार से ना मिलकर दुखी रहती होगी”,|

“अमन, तुमने मेरे दिल की बात कह दी आज”, रूपा भावूक हुते हुये बोली |

“एक दिन तुम्हारा राजकुमार तुम्हें ज़रूर मिलेगा”, मैंने कहा |

“मेरा राजकुमार तुम्हारे सपने में आता है  क्या?” |

“बिल्कुल नहीं पर वो राजकुमार तुम्हारे सामने अभी आ जाए, तो तुम क्या  करोगी?” |

“तुम दोनों की मौज़ूदगी के बावज़ूद मैं अपने राजकुमार को किस तो ज़रूर करुँगी”, रुपा ने कहा |

मैं रुपा की तरफ़ सरकते हुए अपने एक हाथ से उसकी आँखें बंद किया और अपनी छाती पर उसका सिर चिपका लिया |

“क्या कर रहे हो?” रूपा ने पूछा |

“तुम्हें कैसा महसूस हो रहा था कुछ सकेंड पहले ?”  मैंने उसका सिर अपने सिर के सामने करते हुए पूछा |

@BOOKHOUSE1

“पागल, मुझे तुम्हारे धड़कते दिल से क्या मतलब है?” रूपा ने कहा |

“मेरा दिल जब तक धड़कता रहेगा, तब तक तुम्हारे राजकुमार से मिलने के चान्सेस बना रहेंगा”,|

रूपा मेरी बात समझ नहीं पा रही थी, कि मैं सच बोल रहा हूँ या नशे में बोले जा रहे हूँ पर मेरे बातों को सुनकर रूपा सिर्फ हँसे जा रही थी | कुछ देर बाद गुगु ‘रूपा’ को सम्भालते हुए अपने रूम में लेकर चली गई |

मैं भी वही सो गया क्योंकि हमेशा की तरह पार्टी मेरे ही रूम में होता था | सुबह जब मैं उठा तो मुझे देखकर दोनों हँस रहीं थी | मैं समझ गया की मेरे रात के कारनामे पर दोनों हँस रहीं हैं |

“तुम्हारा एडमिशन हो चुका है, पर तुम कॉलेज नहीं जा सकते हो | मैं तुम्हारे कॉलेज के एम्० डी० सर से बात कर चुकी हूँ”, रुपा ने कहा |

“आपका राजकुमार जल्द मिल जाए, मैं रब से दुआ करूँगा”, मैंने कहा |

“बात-बात पर मेरे राजकुमार का तुम मज़ाक मत बनाया करो”, रूपा ने हल्की मुस्कान के साथ कहा |

“फर्स्ट ईयर का रिज़ल्ट कॉलेज से मुझे मिल जाता तो अच्छा होता”,|

“चलो फिर ! इसी बहाने तुम अपने कॉलेज की चारदीवारीयों को देख भी लोगे |”

तभी रूपा के सेलफोन की घंटी बजी |

उसने मुझे चुप रहने का इशारा किया और लाउडस्पीकर ऑन करते हुए कॉल रिसीव किया |

किसी लड़की की आवाज़ आई “कैसी हो रूपा ?”|

आवाज़ सुनते ही मैंने पहचान लिया की रिमसा ने फोन किया है, उस वक़्त उसकी आवाज़ से अधिक साँसो के चलने का ज्यादा आभास हो रहा था | उसकी आवाज़ फोन पर रुक-रुककर आ रही थी |

“अमन सचमुच लापता है, उसका कुछ पता नही चला अभी तक” रिमसा ने कहा |

उसकी बात सुनकर ऐसा लग रहा था की कोई जबरदस्ती उससे फोन पर बोलने के लिए फोर्स कर रह था | रुपा कुछ ना बोलकर चुप-चाप सिर्फ रिमसा की बातें सुन रही थी |

मैं तुरंत बोल पड़ा “रिमसा मैं लापता नहीं हूँ”,

इतने में रूपा ने कॉल कट कर दिया |

“तुमने कॉल क्यों कट कर दिया?” मैं चिल्लाते हुए बोला |

“पागल हो गए हो | एजेंट के कहने पर रिमसा बात कर रही थी”, रुपा ने कहा |

“मैं फोन पर बोलकर छोटी सी गलती कर बैठा था | रिमसा फोन पर बात करते वक़्त हाँफ रही थी, मैं उसके संकेतो को समझ ना सका | हालांकि उस वक़्त रुपा ने मुझे शांत रहने को बोला था पर उस वक़्त मैंने तपाक से बोल दिया था |

मेरे बोल देने से मुझ पर मुसीबत आने वाली थी, क्योंकि फ़ोन पर मेरा आवाज़ एजेंट सुन चुका था| अब वो बिना एक्शन लिए नहीं मानेगा, पर एक शब्द ही रिमसा से बात हो जाने से मैं बहुत ख़ुश था |

उसकी आवाज़ सुनकर मुझे ऐसा लग रहा था की मुझे रिमसा की आवाज़ कितने वर्षों बाद सुनाने को नसीब हुआ है | एजेंट को जो भी अच्छा बुरा करना था मेरे साथ करे, वो रिमसा को परेशान ना करे, मैं भगवान से विनती करते लगा |

काश! रिमसा मुझसे एक बार यह कह देती की लौट आओ अपना एल० एल० बी० की पढ़ाई छोड़कर पर रुपा ने समय ही नहीं दिया था मुझे उससे बात करने के लिए | मेरे पूरा बोलने से पहले ही रूपा ने कॉल कट कर दिया था |

मेरे साथ अगले पल क्या होता, इसकी चिंता मुझे बिल्कुल नहीं था, बस मैं फ़ोन पर थोड़ी और रिमसा से बात करना चाहता था | इतने अच्छे संयोग से रिमसा ने रुपा को कॉल किया था, वो भी मेरे उपस्तिथि में | सालों बाद ऐसा पहली बार हुआ था | मेरे मोबाइल

@BOOKHOUSE1

पर उसने आज तक मिसकॉल तक नहीं किया, ना जाने वो किस बात को लेकर मुझसे नाराज़ है |

रुपा ने अपने सेलफोन से सिम को बाहर निकालते हुए दो टुकड़ों में तोड़ दिया | उस वक़्त रुपा बहुत गुस्से में दिख रही थी | वो मुझे अपने साथ कॉलेज ले गई कॉलेज पहुँचते ही मेरा रिज़ल्ट एम० डी० सर ने मुझे दे दिया | जल्दबाज़ी करते हुए रुपा कॉलेज से मुझे फ्लैट के सामने वापस लाकर बीएमडब्लू रोक दी | मैं उसकी बीएमडब्लू में बैठ रहा |

“गाड़ी से निकालो और सीधे फ्लैट में जाओ”, रूपा अपने स्मार्टफ़ोन में कुछ टाइपिंग करते हुए बोली |

“तुम नाराज क्यों हो?” |

“आज तक मैंने किसी की इतनी सहायता नहीं की है, जितनी की मैं तुम्हारी सहायता कर पा रही हूँ”, रूपा ने कहते हुये स्टेरिंग के बगल से बटन दबाते हुए बीएमडब्लू का दरवाज़ा खोल दिया |

मैं बीएमडब्लू से बाहर निकलकर धीरे से दरवाज़ा बंद कर दिया | फ्लैट से कहीं बाहर मत जाना कहते हुए रूपा अपनी बीएमडब्लू से चली गई |

“तुम चाहे कितनी भी हमारी हेल्प कर लो, फिर भी तुम हमारी कर्ज़दार रहोगी”, मैंने कहा |

@BOOKHOUSE1

उस वक़्त रूपा वहाँ से जा चुकी थी | तभी मेरे मोबाइल पर मैसेज़ आया | मैसेज़ पढ़ने के बाद तुरंत अपना रिज़ल्ट रूम में रखकर मैं चारबाग स्टेशन चला गया | मुझे फ्लैट से निकलने के लिए रुपा ने मना किया था, पर दोस्ती और प्यार के लिए मैं सारी परिस्थितियों में रिस्क लेने के लिए तैयार था |

प्राइवेट टैक्सी से होते हुए मैं चारबाग स्टेशन के सामने पहुँच चुका था | सामने से दौड़ता हुआ परम मेरे पास आया और मैंने उसे गले लगा लिया | वर्षों बाद मैंने प्यार को तो नहीं बल्कि दोस्त को गले लगाया था |

“मेरे लखनऊ में होने की ख़बर तुम्हें कैसे पता चला?” |

“एजेंट के चमचों से सुनते ही मैं लखनऊ चला आया”, परम ने कहा |

मैं और परम चारबाग से अंसल प्रॉपर्टीज़ में पहुँच चुके थे, जहाँ रूपा का फ्लैट था |

“ये फ्लैट तुमने कब लिया?” परम ने पूछा |

“मेरा नहीं है पर जिसका ये फ्लैट है, उसे तुम देखते ही पहचान लोगे”, |

“फ्लैट के सामने रुपा की बीएमडब्लू लगी हुई थी | अंदर जाने के लिए मैंने बेल बजाई | बेल बजाने के तुरंत बाद ही दरवाज़ा खुला | मुझे रूपा वहीं पर घूरने लगी |

“कहाँ चले गए थे?” रूपा ने पूछा |

“शहीद पथ वाले चौराहे पर अपने दोस्त को रिसीव करने चला गया था”,|

परम के लिए मैंने रूपा से झूठ बोला था क्योंकि यदि मैं सच बोल देता तो वो बिल्कुल ही भड़क जाती |

“तुम्हारे दोस्त को मैं भी रिसीव कर सकती थी”, नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए रुपा अंदर रूम के तरफ जाने लगी |

उसके पीछे मैं भी परम को लेकर रूम में दाखिल हुआ |

“अरे! ये तो तुम्हारे गाँव का लड़का है”, रूपा ने अपना हाथ परम की तरफ़ दिखाते हुए कहा |

“परम मेरा जिगरी मित्र है”, मैंने रूपा से कहा |

रूपा उस वक़्त मुझ पर भड़क गई थी, क्योंकि उसने मुझे गाँव के किसी भी व्यक्ति से संपर्क ना रखने को बोली थी | परम टेबल पर अपना बैग रखकर बेड पर बैठ गया | रुपा परम के बैग की छानबीन करने लगी |

उसने परम के बैग से एक डायरी निकाली जिसको देखते ही मैं पहचान गया की परम अपने साथ मेरे डायरी को लाकर एक नेक कार्य किया है | डायरी के साथ चार - पाँच फोटो को रूपा बड़े ध्यान से देख रही थी | जिसमें से एक फोटो रुपा के हाथ से नीचे फ़र्श पर गिर गया |

@BOOKHOUSE1

मैंने दूर से ही फ़र्श पर गिरे फोटो को पहचान लिया की परम रिमसा का ही फोटो ला सकता है | फोटो को पास से ही देखने से यह कंफर्म हो पाता कि वो फोटो रिया का है या रिमसा का, पर रिया का फोटो भला परम मेरे लिए क्यों लाएगा | मेरा लफड़ा किससे है, परम से बेहतर कौन जानता है |

मैं कुर्सी से कूदते हुए फ़र्श पर गिरे हुए फोटो की तरफ़ लपका | फोटो तक पहुँचने से पहले ही रुपा ने डायरी को टेबल पर रखते हुए फोटो को बैग में रखकर रूम से बाहर बालकनी के खिड़की पर बैग को फेंक दिया और चिल्लाते हुए बोली – “दो पागल इकट्ठे हो गए हैं मेरे फ्लैट में |”

मैं फोटो को देखने के लिए बालकनी की तरफ़ तेज़ी से आगे बढ़ा, पर रूपों ने मेरा हाथ पकड़ लिया | मैंने तत्काल उसे धक्का दे दिया | रूपा फ़र्श पर गिर गई |

तभी परम ने चिलाया – “फोटो मैंच वाले ग्राऊंड के पास मुझे मिला था ” |

परम की बात सुनते ही मेरे पैर जहाँ के तहाँ रुक गए | ना तो मेरे पैर आगे बढ़ रहे थे और ना ही पीछे हट रहे थे | जस के तस मैं खड़ा हो गया | मैंच वाले ग्राऊंड के पास रिया का घर था, पर मैं रिमसा का फोटो समझ बैठा था और गलती से रूपा को मैंने धक्का दे दिया था |

परम पहले बता दिया होता की बैग वाला फोटो ग्राऊंड से मिला है, तो मैं रुपा को धक्का नहीं देता | मुझे लगा था की परम रिमसा का फोटो लाया होगा |

मैं दूर से फोटो देखकर यह कन्फर्म नहीं कर पाया था की फोटो किसकी है? रिया और रिमसा के सस्पेंस में, मैं रुपा को धक्का देकर बहुत बड़ी गलती कर बैठा था | रूपा ने उस फोटो को रिमसा का फोटो समझकर ही बालकनी के खिड़की पर फेंक दिया था |

रूपा ने उस बैग को बालकनी के खिड़की पर फेककर ये साबित कर दिया था कि वो मेरा कितना ख़्याल रखती है |

मैं फोटो के सस्पेंस के चक्कर में उसे धक्का दे दिया था | मैं किस मुँह से रूपा से माफ़ी माँगू? मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था | उस वक़्त मैं ऐसे गुनाहगारो की तरह खड़ा था जैसे की मैं थोड़ी देर पहले किसी की हत्या करके लौटा हूँ |

परम रुपा के सामने माफ़ी माँग रहा था, पर रुपा चुपचाप रूम से निकलते हुए बाहर चली गई |

मुझे उस वक़्त ऐसा लग रहा था की मेरे शरीर में किसी ने बारह हज़ार वोल्ट का झटका दे दिया है | मैं और परम बिस्तर पर लेटे हुए थे | रुपा को धक्का देने से मुझे बहुत बड़ा नुकसान होने वाला था | मेरे पागलपन के कारण रुपा बिना बोले फ्लैट से जा चुकी थी | मैं उससे माफ़ी माँगने के लिए संकोच कर रहा था |

@BOOKHOUSE1

एल० एल० बी० के सेकेंड ईयर का फर्स्ट सेमेस्टर की परीक्षा मैं रुपा की बदौलत दे चुका था | सेकंड सेमेस्टर की एग्ज़ाम होने में अभी काफ़ी समय था | रुपा ने अगर मेरी गलतियों को माफ़ कर दिया, तब तो ठीक, वरना मेरे लिए एल० एल० बी० के सेकंड सेमेस्टर की परीक्षा देना मुश्किल लग रहा था |

तभी बेल बजी, मेरे ख़्याल से गुगु होगी, क्योंकि उसके ऑफिस से लौटने का समय हो रहा था | मैंने परम को बोला की दरवाज़ा खोल दो | परम दरवाज़ा खोलने चला गया | गलियारे में एक साथ पाँच -छः पैरों के चलने की आवाज़ हुई | मेरा ध्यान दरवाज़े पर टिका हुआ था | रुपा और गुगु को एक साथ रूम में आते देखकर, मेरा आँख खुला का खुला रह गया, क्योंकि उन दोनों के हाथ में पानी की बोतल, गिलास और अँग्रेज़ी ब्रांड थी |

रूपा को देखकर मुझे थोड़ा तसल्ली मिला, ये सोचकर की रुपा मेरे हरक़तों से नाराज़ होने के बाद भी मेरे साथ पार्टी करने को तैयार थी | रुपा से माफ़ी माँगने का अच्छा मौका था | वैसे भी मैं नशे में अच्छा खासा रुपा के सामने ड्रामा कर लेता था | कुछ देर बाद रुपा ने पटियाला पैग बनाना शुरु कर दिया |

पैग बनते गए, जाम लड़ते गए | नए ब्रांड से परम बिल्कुल अंजान था, इसलिए वो बेचारा डर-डर के पी रहा था | मैं उसका फ़ायदा उठाते हुए, परम का भी दारु गटक ले रहा था | परम अपना मुँह खोलकर मुझे देख रहा था | मैं रुपा के बोलने का इंतज़ार कर रहा था, ताकि मैं अपना ड्रामा शुरू कर सकूँ और अपनी गलती की उससे माफ़ी माँग सकूँ |

“रंगारंग माहौल में इतनी शांति क्यों फैली हुई है?” गुगु ने पूछा |

“किसी के प्यार की निशानी को बालकनी के खिड़की पर मैंने फेंक दिया है, क्या तुम नहीं जानती हो?” रुपा ने गुगु के साथ अपना गिलास लड़ाते हुए कहा |

मैं समझ गया की रूपा मुझ पर ही निशाना लगाते हुये बोली है | मुझे बोलने का मौका मिल चुका था |

मैंने फ़र्श पर सरकते हुए रुपा के पास जाकर उसका हाथ अपने धड़कते हुए दिल पर रखते हुये बोला- “तुम भी अपने राजकुमार के लिए आख़िरी पल में तड़पोगी”,

मैं उसे यह एहसास कराने की कोशिस कर रहा था की उसके राजकुमार का दिल भी ऐसे ही धड़कता होगा |

“पागल, मेरा हाथ छोड़ो”, बोलते हुए रूपा अपना हाथ पीछे खींचते हुए मुस्कुराने लगी |

“किसी के राजकुमार का पता मैंने लगा लिया है”, |

मेरी बातों पर रुपा हँस रही थी | उसे लग रहा था की मैं नशे में बोल रहा हूँ, पर मैं सारी बातें होश में रहकर कर रहा था | यह अलग बात था की मैं एक फुल पियक्कड़ की तरह ड्रामा कर रहा था |

एक बात तो तय था रुपा मेरे बातों को सुने या ना सुने पर, जब मैं थोडा बहुत पी लेता था, उस वक़्त रूपा मेरे बातों को बड़े ध्यान से सुना करती थी |

@BOOKHOUSE1

मैं भी उस मौके को छोड़ना नहीं चाहता था | उसके दिल की सारी बात को मैं उससे उगलवा लेना चाहता था | पीने के नशे में, मैं कुछ भी बोल दिया करता था | मेरे द्वारा गलत बोलने पर भी कोई मेरा विरोध नहीं करता था, क्योंकि उस वक़्त मैं नशे में होने का दिखावा किया करता था | मेरी ऊटपटांग बातों पर भी रुपा बेहद ख़ुश नज़र आती थी |

“शराब और सिगरट पीना स्वास्थ के लिए हानिकारक है”, गुगु मेरे तरफ देखते हुये बोली |

मैंने कोई जवाब नही दिया |

गुगु,रुपा को अपने रुम में लेकर चली गई | उस वक़्त मैं यह महसूस कर रहा था की रुपा मुझे माफ़ कर चुकी है, क्योंकि पार्टी में रूपा ने  मुझे अपना निशाना बनाते हुए मेरा मज़ाक उड़ाया था |

नशे में मैं कुछ ऊटपटांग ज़रूर बोला था, पर मुझे यक़ीन था की रुपा मेरे बातों का बुरा नहीं मानेगी | जब मैं बोलता था उस वक़्त रूपा सिर्फ हँसा करती थी | मैं फर्श पर ही सो गया, पर सुबह जब मेरा नींद खुला तो बिस्तर पर लेटा हुआ था |

शायद बेड पर परम ने मुझे उठाकर सुलाया होगा | उसने ऐसा कब किया मुझे थोड़ा भी पता नहीं चला था |

सुबह मैं रुपा को ढूँढ़ रहा था ताकि मुझे पता चल सके की उसने मुझे माफ़ किया अथवा

नहीं | मैं गुगु के रूम में गया, तो गुगु के साथ रुपा बैठी हुई थी | मुझे देखते ही दोनों हँसने लगी | मैं समझ गया की रात को मैंने कुछ फ़ालतू ज़रूर बोला होगा, उसी बात पर वो दोनों ही हँसे जा रहीं थी | मैं उन दोनों के पास जाकर सोफे पर बैठ गया | रूपा उठकर रुम से बाहर जाने लगी |

"रूपा, प्लीज़", मैंने कहा |

"एजेंट से सम्भल के रहना | कुछ वक़्त के लिए मैं दिल्ली जा रही हूँ", रूपा ने अपना सिर मेरी तरफ़ घुमाते हुए बोला, फिर मुस्कुराते हुए फ्लैट से बाहर चली गई |

अगले दिन मैं और गुगु ऑफिस से फ़्लैट की तरफ आ रहे थे | उसी वक़्त एजेंट मुझे देखने से बाल - बाल बच गया |

उस वक़्त गुगु ने अगर अपना दुपट्टा मेरे चेहरे पर कुछ देर के लिए नहीं रखा होता तो एजेंट ने मुझे पहचान लिया होता | कॉलेज में एजेंट और चड्डा साहब के लोग छानबीन कर ही रहे थे, पर अब लखनऊ की रोड पर भी मेरा छानबीन शुरु हो चुका था | फ्लैट में पहुँचते ही रुपा को मैंने कॉल किया, पर उसका नंबर बंद आ रहा था |

रुपा ने मेरे सामने ही अपना सिम तोड़ा था | मैंने गुगु से रूपा का नंबर माँगा तो उसके पास भी रूपा का वही नंबर था जो ऑफ आ रहा था | मैं कुर्सी पर बैठा हुआ था, अपने दोनों हाथ सिर पर पर रखकर |

@BOOKHOUSE1

"तुम्हें गेम तो आता ही है, कुछ वक़्त के लिए तुम स्टेडियम ज्वाइन करलो", गुगु ने कहा |

उसकी बात मुझे परफेक्ट लगी | फुटबॉल का मैं एक अच्छा खिलाड़ी था, ख़ास बात यह था की स्टेडियम में सिर्फ खेलने वाले लड़के या लड़कियां आते जाते हैं और कभी कभार खेलने वाले बच्चों के गार्जियन अपने बच्चों की कम्प्लेन लेकर जाते हैं | मैं तत्काल लखनऊ के कामता वाले मिनी स्टेडियम को ज्वाइन कर लिया और बच्चों को फुटबॉल सिखाने लगा |

जितना मज़ा मुझे गोरखपुर के रीज़नल स्टेडियम में आता था, उससे भी कहीं अधिक मज़ा मुझे लखनऊ के मिनी स्टेडियम में आ रहा था | स्टेडियम में सिर्फ़ मुझे रिमसा की कमी खलती थी | स्टेडियम जाने का समय सुबह 06:00 बजे था तथा वापस आने का समय अपनी मर्ज़ी पर था | मैं ख़ुद को बिज़ी रखने के लिए और एजेंट के लोगों से बचने के लिए स्टेडियम में शाम तक रुकता था | तकरीबन शाम को 07:00 बजे मैं फ्लैट पहुँचता था |

मैं नियमित सुबह 6:00 बजे तक स्टेडियम में पहुँच जाया करता था और बच्चों को फूटबॉल सिखाने के बाद मैं वही टाइम पास किया करता था | फिर शाम को स्टेडियम से फ्लैट की तरफ़ वापस चला जाता था |

शाम के वक़्त मुझे एजेंट के लोगों से पकड़े जाने का कोई डर नहीं रहता था, क्योंकि उस वक्त अंधेरा हो जाता था | गुगु के फ्लैट में होने से मुझे ख़ास फ़ायदा हो जाया करता था | एक भी बार मुझे गुगु ने किचन में नहीं जाने दिया था | कोई काम करने के लिए कभी-कभी मैं उसकी मदद करना चाहता था, पर वो मुझे जबरदस्ती किचन से बाहर निकाल दिया

करती थी |

मेरे जॉब वाले जगह पर केड़िया सर का पर्सनल असिस्टेंट परम बन चुका था, और गुगु के साथ वो ऑफिस आया - जाया करता था | वो भी अपनी लाइफ से ख़ुश था | उस बीच परम गुगु को चाहने लगा था पर गुगु मुझ पर फ़िदा थी |

यह बात परम को नहीं पता था और उसने गुगु को अच्छा मौका देखते हुए प्रपोज कर दिया था, पर गुगु ने परम का दिल तोड़ दिया था मना करके | बेचारा परम मेरे से सोर्स लगवाना चाहता था |

मैंने परम को यह कह दिया कि "खाली कुर्सी पर तो कोई भी बैठ सकता है | दम है तो, कुर्सी पर बैठे बंदे को उठाकर ख़ुद बैठकर दिखाओ |"

परम मुझसे थोड़ी दूरी पर जाकर खड़ा हो गया | उसके दूर जाने का मैं मतलब नहीं समझ पाया | फिर परम ने मेरी तरफ़ दूर से अँगुली दिखाते हुए कहा की "एक दिन मैं दिखा दूँगा कि मैं रिमसा भाभी का ही देवर हूँ" कहते हुए वो भागने लगा |

परम की तरफ़ मैं दौड़ा ज़रूर था मारने के लिए, पर मुझे उसके कमिटमेंट अच्छे लगे थे | लखनऊ होने के बावज़ूद मैं कहीं घूमने नहीं जा पा रहा था | संडे के दिन परम और गुगु प्लानिंग करते रहे लोहिया पार्क घुमने जाने के लिए पर एजेंट की छानबीन वाली बात पर सारा प्लानिंग फेल हो जाया करता था |

@BOOKHOUSE1

परम किसी अच्छे मौका की तलाश में था की किसी तरह गुगु को लखनऊ के लोहिया या अंबेडकर पार्क में ले जा सके | जिससे वो गुगु को पार्क में उपस्थित अन्य कपल को दिखाते हुये उसे प्रपोज़ कर सके |

लड़कियां दो मैटर में पटती है !

पहला अभाव के चक्करमें..... मतलब यह की अगर किसी लड़की की सहेली के पास कोई बॉयफ्रेंड हो और उस लड़की को पता चले की मेरी सहेली के पास बॉयफ्रेंड हो सकता है तो मेरे पास क्यों नहीं !

दूसरा प्रभाव के चक्कर में..... अगर आप प्रशंसा योग्य हैं मतलब की कोई भी लड़की किसी भी लड़के का प्रशंसा बहुत सुन चुकी हो तब भी वो लड़की आपकी दीवानी हो जाएगी, अगर वो लड़की आपको थोड़ा भी जानती होगी तो |

गुगु को अपनी तरफ़ आकर्षित करना परम के सामने एक चैलेंज जैसा था, क्योंकि रूपा ने गुगु से मेरे बारे में इतना प्रशंसा कर चुकी थी कि गुगु मेरी दीवानी हो चुकी थी, यह अलग बात था की मैं गुगु को नहीं चाहता था |

मेरा एक ही प्यार था जो कोसों दूर था | एक दिन स्टेडियम में मैं लड़कों और लडकियों को फुटबॉल सिखा रहा था, तभी एक लड़का मेरे पास आया और अपने पिताजी से मुझे मिलने

के लिए रिक्वेस्ट करने लगा | मैंने उस लड़के को परमिशन दे दिया की वो अपने पिताजी को ग्राऊंड में बुला लाए |

उन सज्जन को देखते ही मैं पहचान गया की वो मेरे कॉलेज के एल० एल० बी० क्लास के लॉ एंड सोसाइटी सब्ज़ेक्ट के लेक्चरर हैं | टीचर अपने पढ़ाने वाले सारे बच्चों को नहीं पहचान पाते, पर दुनिया का हर बच्चा अपने टीचर को पहचान लेता है | चाहे वो लड़का उस टीचर से एक ही दिन क्यों ना पढ़ा हो |

वो मेरे तरफ धीरे धीरे आ रहे थे | मैं भी कुछ दूरी तय करके अपने टीचर के चरण को स्पर्श किया | ग्राऊंड में खेल रहे सारे लड़के लड़कियां देखकर आश्चर्यचकित हो गए की मैं इतने बड़े स्टेडियम का कोच होते हुए भी एक सिंपल इंसान के पैर क्यों स्पर्श कर रहा हूँ? बच्चों को क्या पता था की वो सज्जन मेरे क्लास के लॉ एंड सोसाइटी सब्ज़ेक्ट के लेक्चरर हैं |

सारे खिलाड़ियों ने अपने-अपने गेम को एक मिनट तक स्थगित कर दिया, टीचर और स्टूडेंट के बीच की रिस्पेक्ट को देखने के चक्कर में |

मैंने सीटी बजाते हुए चिल्लाया- "अपना - अपना खेल जारी रखो |" मेरे द्वारा बजाई गई सीटी से सारे खिलाड़ियों ने अपना गेम खेलना जारी कर दिया |

"बेटा मैंने आपको पहचाना नहीं | मैं भी एक टीचर हूँ पर मेरे स्टूडेंट मेरा इतना सम्मान कभी नहीं करते, जितना कि अभी इन बच्चों ने तुम्हें सम्मान दिया है",सज्जन सर ने कहा |

मैंने सज्जन सर को बताया की मैं भी आपका छात्र हूँ, पर उन्हें मेरे बात पर उनको यक़ीन नहीं हो रहा था | उनका कहना था की उन्होंने मुझे क्लास में कभी नहीं देखा है | जहाँ तक मुझे याद था कि कॉलेज गए हुए मुझे डेढ़ साल होने वाला था, रिज़ल्ट लाने वाले दिन को छोड़कर |

"मैं आपका छात्र ही हूँ", मैंने दोबारा मुस्कुराते हुए कहा |

फिर भी उन्हें मेरे बातों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था | ग्राऊंड में सारे लड़के-लडकियों का मेरे प्रति सम्मान देखकर वो मुझसे बहुत प्रभावित हुए थे |

मैं अपना सारा बात उन्हें विस्तार से बता दिया की किन कारणों से मेरा एडमिशन होते हुए भी मैं अपने कॉलेज नहीं जा सकता था | मेर सारा बात सुनकर सज्जन सर ने अपने घर का पता मुझे एक कागज़ पर लिखते हुए दिया | वो स्टेडियम आए हुए थे, अपने बच्चे की शिकायत करने, पर मेरे दुख भरी कहानी सुनकर वो अपने बच्चे की शिकायत करना भूल गए थे |

"एग्ज़ाम के दिन सुबह मेरे घर आ जाना", बोलते हुए सज्जन सर स्टेडियम से चले गए |

मेरा स्टेडियम में मेहनत करना सफ़ल दिख रहा था | उस दिन मैं बेहद ख़ुश था क्योंकि एग्ज़ाम दिलाने का जिम्मा सज्जन सर ने ले लिया था | एग्ज़ाम के वक़्त वो कैसे मैनेज़ करेंगे इसके बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था | लॉ एंड सोसाइटी सब्ज़ेक्ट वाले सर से मिलने के बाद मैं स्टेडियम से फ्लैट चला गया |

@BOOKHOUSE1

“क्या बात है, आज तुम जल्दी आ गए”, गुगु ने कहा |

“कुछ पल मैं तुम्हारे साथ बिताना चाहता हूँ”, |

“हां.. हां., कहते हुए वो मुस्कुरा दी | गुगु समझ गई थी की मैं उसे ख़ुश करने के लिए बोल रहा था |

“स्टेडियम में  कोई लड़की मिल गई क्या आज? समय से पहले आने के साथ-साथ तुम बहुत ख़ुश भी नज़र आ रहे हो”, गुगु ने कहा |

“रिमसा के अलावा मुझे कोई भी लड़की पसंद नहीं करती है वर्ना मैं उस लड़की पर टूट पड़ता”, मैंने कहा |

“भोली-भाली लड़कीयां तुम्हारी चाहत में अपना जान दे दे क्या ?  क्या तुम यही चाहते हो”, गुगु ने सीरियस होते हुए कहा|

मेरे और गुगु के बीच ऐसा माहौल उत्पन्न हो गया था की अगर मैं सीरियस्ली भी गुगु को “आई लव यू” बोल दूँ, तो भी उसे मज़ाक ही लगेगा क्योंकि वो पिछले बीस-बाइस महीनों से मेरे नटखट दिल और दिमाग से वाकिफ़ हो चुकी थी | फिर भी गुगु मेरा ख़्याल रखती थी |

अभाव वाला प्यार कुछ वक़्त तक ही रहता है पर प्रभाव वाला प्यार जिंदगी भर के लिए बुक हो जाता है, चाहे वो दूर रहें या पास | दिलों में याद हमेशा के लिए समां जाता है | सेम वैसे ही गुगु के साथ हुआ था, वो मेरी क़ायल हो चुकी थी | मैं कोशिश करता था की गुगु मेरे वज़ह से कभी ख़ामोश ना रहे, इसलिए समय -समय पर मैं  उसकी तारीफ़ कर दिया करता था | जिससे थोड़े वक़्त के लिए ही सही उसके चेहरे पर ख़ुशी खिल जाती थी |

@BOOKHOUSE1

प्यार करने वालों का दर्द कम करने के लिए काश किसी देश के वैज्ञानिकों ने कोई उपाय निकाला होता, तो शायद प्रत्येक साल कई लाख प्रेम-प्रेमियों का दर्द आसानी से कम कर दिया जाता, पर अफ़सोस कि आज तक ऐसा संभव न हो सका | मैंने स्टेडियम जाना बंद कर दिया था क्योंकि सेकेंड सेमेस्टर का  एग्ज़ाम शुरु होने ही वाला था | रूपा का कोई फोन या संदेश नहीं आया था |

पहली दफा ऐसा होने वाला था कि रूपा मुझसे लगातार चार - पाँच महीनों से दूर थी | उन पाँच महीनों के बीच मैं उसका नंबर पता करने के लिए बहुत कोशिश किया पर नाकाम रहा | रूपा ने एक बार भी मेरे एग्ज़ाम के बंदोबस्त के लिए मुझे कोई कॉल नहीं किया था | मुझे यक़ीन हो गया था, जो भी होगा सज्जन सर के द्वारा ही मेरा नईया पार हो सकेगा

एग्ज़ाम शुरु होने के दिन सुबह ही मैं सज्जन सर के घर चला गया | उनका घर लखनऊ के बादशाह नगर स्टेशन के बिल्कुल बगल में मौज़ूद है | मैं यह सोचकर गया था की अगर सज्जन सर मेरा मदद कर दिए तो ठीक वर्ना मैं वहाँ से डायरेक्ट अपने घर चला जाऊँगा, क्योंकि रूपा  भी मुझसे दूरी बना ली थी | उसका कोई अता-पता नहीं था, लेकिन जब मैं

सर के घर पहुँचा तो उनके घर के सामने प्रिंसिपल सर की बीएमडब्लू लगी हुई थी |

वॉचमैन मेरा नाम पूछकर अंदर गया, फिर वापस आया तो मुझे अंदर जाने की मंज़ूरी उस गार्ड ने दे दिया | मैं गेट के अंदर डरता हुआ जा रहा था, मुझे डर इस बात का था की मेरे कॉलेज में चड्ढा जी का शेयर होने के कारण कॉलेज के सारे फैकल्टी और मैंनेजमेंट संभालने वाले चड्ढा जी का ही साथ देते थे | कहीं ऐसा ना हो की सज्जन सर उन लोगों से मिलकर मुझे एजेंट तक पहुँचा दे | डरने के बावज़ूद मैं धीरे-धीरे उनके घर के अंदर प्रवेश किया, क्योंकि मेरे पास और कोई रास्ता नहीं था की मैं कुछ कर पाता | तभी सज्जन सर सामने दिखाई दिए | उन्होंने हाथ हिलाकर मुझे बुलाया |

मेरे पैर से छोटे-छोटे कदम ही उठ पा रहे थे | मैं उनके पास पहुँचकर उन्हें प्रणाम किया वो बात करते हुए बीएमडब्लू के पास मुझे लाए और पीछे बैठने के लिए उन्होंने मुझे परमिशन दे दिया |

उन्होंने गाड़ी के ड्राइवर वाले सीट पर बैठते हुए बेल्ट लगा लिया | उनके द्वारा बोली गई एक लाइन ने मेरे शरीर के भीतर का सारा डर ख़त्म कर दिया, - "तुम्हारे लिए ही मैं यह गाड़ी कल रात को मंगवाया था ",|

मैं उन्हें जोर से गले लगा लेना चाहता था, पर वो मेरे टीचर थे मैं वैसा नही कर सका | मैं समझ गया की प्रिंसिपल सर का बीएमडब्लू उन्होंने इसीलिए मंगवाया था ताकि कॉलेज के अंदर तक मुझे आसानी से पहुँचा सकें |

@BOOKHOUSE1

बादशाह नगर स्टेशन होते हुए पॉलिटेक्निक चौराहा पार करते हुए फैज़ाबाद रोड होते हुए कॉलेज पहुँचने वाले थे | कॉलेज के मेन गेट पर बहुत सारे स्टूडेंट की लाइन लगी हुई थी | तभी मैंने कांच से बाहर की तरफ़ देखा तो कुछ लफंगे लोग एक फोटो से सारे स्टूडेंट के चेहरे को मिलाते हुए, बारी-बारी से उन्हें अंदर जाने दे रहे थे |

वो फोटो मेरा ही था और मेन गेट पर खड़े लफंगे एजेंट और चड्ढा के लोग थे, जो मुझे खोजने की कोशिश कर रहे थे | कहीं से पता चल गया होगा की मैं लखनऊ में ही हूँ |

बीएमडब्लू को बिना किसी ने छानबीन किए हुए अंदर जाने दिया | कॉलेज के मेन गेट से एंट्री मिलते ही मुझे थोड़ा सा चैन मिला, और सज्जन सर ने अपने रिक्स पर मुझे आगे पीछे करते हुए स्टॉफ रूम तक पहुँचा दिया | कुछ देर बाद जब वो वापस आए तो अपने साथ परीक्षा का क्वेश्चन पेपर और आंसर शीट साथ में लाए थे |

मैं स्टाफ रूम में बैठकर आराम से प्रश्नों का उत्तर आंसर शीट में लिखने लगा | तीन घंटे का समय पूरे होते ही सज्जन सर मेरे हाथ से आंसर शीट को लेकर चले गए | मुझे एग्ज़ाम बिल्कुल ही लक्ज़री तरीके से सज्जन सर ने दिलवाया था | स्टॉफ रूम में मैं अकेले पेपर दिया करता था | मैं जो भी आंसर लिख पा रहा था, वो मेरे लिए बहुत संतुष्टि जनक बात था |

स्टॉफ रूम में मैं मुश्किल हालात में भी पेपर देने को तैयार था क्योंकि कॉलेज में पहुँच

पाना मेरे लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी | मेरे पेपर समाप्त होने के बाद कॉलेज खाली हो जाता था | सज्जन सर ने मुझे स्टाफ रूम से बाहर निकलने से मना किया था |

एक-एक करके मैंने एल० एल० बी० सेकेंड ईयर का सेकेंड सेमेस्टर का सारा पेपर स्टाफ रूम में ही रहकर दे चूका था | सज्जन सर की मेहरबानी से एग्ज़ाम समाप्त होने तक स्टॉफ रूम मेरे लिए एक घर जैसा बन गया था |

मैं चाहकर भी बाहर नहीं निकल सकता था | आप भी अनुमान लगा लीजिए की बीस दिनों तक अगर आपको एक रूम में ही बंद कर दिया जाए, तो उस वक़्त आप कैसा महसूस करेंगे? मुझे तो ऐसा लग रहा था की कोई अंतरिक्ष यान पर मुझे छोड़कर चला गया है दिन भर मैं गूंगों की तरह चुपचाप बैठा रहता था | वो पल भी मेरी ज़िंदगी का एक बेहद अजीब पल था |

खाने पीने की चीज़ें सज्जन सर मेरे लिए अपने घर से ला दिया करते थे | उन्होंने मुझ पर इतना एहसान क्यों किया था यह तो मैं नहीं समझ पाया था, पर धरती पर भगवान के कुछ दूत होने का एहसास मुझे हो गया था | वह मुझे अपने साथ रोज़ घर नहीं ले जा सकते थे, क्योंकि मेन गेट पर मेरे लिए जबरदस्त छानबीन हुआ करता था | वो तो मैं प्रिंसिपल सर की बीएमडब्लू की वज़ह से कॉलेज के अंदर जा पाया था | यह दिमाग़ भी सज्जन सर ने ही लगाया था |

सेकेंड सेमेस्टर के सारे पेपर समाप्त हो चुके थे | एजेंट और चड्ढा जी को लगा की अब तो पेपर समाप्त हो चुका है, अगर मैं कॉलेज पहुँच भी जाता तो कुछ कर नहीं पाता |

यह सोचकर उन लोगों ने अपने आदमियों से मेरा जासूस कराना बंद कर दिये थे | लास्ट पेपर के दिन सज्जन सर ने अपने बाइक से मुझे कामता चौराहे पर छोड़ दिया |

जाते वक़्त मैंने उनके पैर स्पर्श किए क्योंकि सज्जन सर ने मेरे लिए जो किया था, उसका क़ीमत मैं कभी नहीं चुका सकता था | मेरे पीठ थप-थपाते हुए वो अपने बाइक से जाने लगे | कामता मोड़ पर मैं खड़े होकर उन्हें आखिरी वक़्त तक जाते हुए देख रहा था |अच्छे से पेपर देने के बाद कॉलेज से बाहर होते ही मुझे ऐसा लग रहा था की मैंने कोई गोल्ड मेडल जीत लिया है |

कामता चौक से मैं फ्लैट की तरफ़ जाने के लिए बस का इंतज़ार कर रहा था, तभी अचानक एजेंट मेरे सामने आ गया | मैं एजेंट को ऐसे नज़रिये से देखने लगा की वो मुझे पहचान ना सके | तकरीबन बीस-पचीस दिन बाद मैं कॉलेज से बाहर निकला था | मेरी दाढ़ी कुछ ज्यादा ही बड़ी हो गई थी | मैं एजेंट को नज़रअंदाज़ करते हुए आगे बढ़ने लगा |

वो मेरी तरफ़ अपनी पलकें बिना गिराए हुए देख रहा था | तभी वहाँ पर एक बस आ गई | मैं बिना पीछे मुड़े आगे बढ़ते हुए बस के अंदर चला गया | अंदर जाकर मैंने बस की खिड़की से देखा तो दलाल की नज़र बस पर पड़ी हुई थी और उसकी निगाहें मुझे ढूढ़ रही थी |

दलाल मुझे देखकर कंफ्यूज हो गया था क्योंकि मैं उसके सामने ऐसी एक्टिंग किया था की

वो कंफ्यूज हो जाए कि मैं उसका दुश्मन नहीं बल्कि कोई दूसरा राहगीर हूँ | मेरी एक्टिंग को देखने के बाद वो सचमुच गुमराह हो गया था | यह मैं क्लियर नहीं कह सकता था, पर उस वक़्त एजेंट को चकमा देते हुए मैं वहाँ से जाने में कामयाब हो चूका था लेकिन मुझे पूरा यक़ीन था की वो मुझे खोज़ने के लिए अपने दिन रात एक कर देगा |

प्राइवेट बस से शहीद पथ पर अंसल गोल्फ सिटी वाले चौराहे पर उत्तरकर मैं दौड़ता हुआ फ्लैट की तरफ़ जाने लगा | दरवाज़े के पास पहुँचकर मैं बेल बजाने लगा | दरवाज़ा खुलते ही मैं चौंक गया | मेरे सामने रूपा दरवाज़ा खोलकर खड़ी थी |

“मैं तुम्हारा ही इंतज़ार कर रही थी”, रुपा ने कहा |

“मुझ पर मुसीबत आने वाली है | एजेंट ने मुझे देख लिया है”,|

“तुम्हें आराम की ज़रुरत है”, रूपा बोलते हुए अंदर जाने लगी |

“तुम कब आईं?” |

“पहले अंदर चलो फिर बात करना”, |

पाँच महीने बाद रूपा मुझसे मिली थी | उस वक़्त फ्लैट में सिर्फ मैं और रूपा उपस्थित थे | अपने रूम में जाकर मैं कुर्सी पर बैठ गया, मेरे सामने बेड पर रूपा बैठी हुई थी |

“सॉरी यार, पापा ने मुझे इतना सारा काम दे दिया था की मैं तुम सबको भूल ही गई थी”, रूपा ने कहा |

“मुझे एग्ज़ाम दिलाने की तुमने ज़िम्मेदारी ली थी, फिर भी तुम भूल गई| कहाँ चली गई थी? |

“दिल्ली चली गई थी | तुम्हारी एग्ज़ाम का क्या हुआ? रूपा ने पूछा |

“मेरी एग्ज़ाम बहुत ही अच्छे से संपन्न हो चुका है | तुम्हारे जैसे एक सज्जन सर की सहायता से मैं सेकंड सेमेस्टर का एग्ज़ाम बहुत आराम से दे चूका हूँ”, |

“यह ख़बर तो वाक़ई अच्छी है”, रूपा ने कहा |

अचानक दरवाज़े की बेल बजी |

मेरे ख़्याल से गुगु और परम ऑफिस से लौटे होंगे | दरवाज़ा खोलने रूपा चली गई | मैं आराम से बिस्तर पर लेट गया | कुछ देर बाद मेरे रूम में गिलासों का टकराने की आवाज़ आई |

मैंने सिर घुमाते हुए दरवाज़े के तरफ़ देखा तो, गुगु अपने हाथ में पानी की बोतल पकड़ी हुई थी और गिलास को बजाने का काम परम कर रहा था |

उसके हाथ में स्टील के गिलास थे और रूपा का हाथ खाली था | मैं सोचने लगा की पार्टी में मज़ा दिलाने वाली चीज़ तो रूपा लाना ही भूल गई | तभी रूपा बेड की तरफ़ झुकी और बेड के नीचे से एक फॉरेन ब्रैंड की बोतल निकालते हुए मुस्कुराने लगी |

@BOOKHOUSE1

मैं फटाक से बिस्तर से उतरता हुआ उन सबके साथ फर्श पर बैठ गया | रूपा पैग बनाने लगी | उसके पहले मैंने दारू कब पीया था यह तो याद नहीं था, बल्कि सिर्फ़ इतना याद था कि, पिछली बार मैं रूपा के हाथों से बनाया गया पैग पिया था | राउंडिंग में बैठकर एक-दूसरे से जाम लड़ाते हुए हम सब दारु पीने लगे | मैं अपना पैग पीने के बाद मौक़ा पाते ही परम का भी दारु गटक लिया करता था |

पार्टी में ड्रामा करने के लिए मैं थोड़ा ज्यादा ही दारू पी लिया करता था, क्योंकि उस वक़्त मैं जो भी चाहता था वो आराम से कह लेता था या फिर पूछ लेता था | मेरे बातों का कोई विरोध नहीं करता था, सब मज़ाक में ले लिया करते थे | मैं इंतज़ार कर रहा था रुपा के बोलने का ताकि मैं भी अपना ड्रामा शुरू कर सकूँ |

“कितने दिनों बाद तुम लौटी हो इस फ्लैट में”, गुगु ने रूपा की तरफ़ देखते हुए कहा |

“यार बहुत काम का प्रेशर था”, रूपा ने कहा |

रूपा के बोलते ही मैंने अपने शरीर के अंदर के शैतान को जगा लिया |

“आजकल के लोग अपने स्वार्थ से मतलब रखते है”, रुपा को उकसाते हुए मैंने अपनी बात जारी रखी |

“कोई लड़की  अपने दोस्तों का परवाह क्यों करेगी? अपने बॉयफ्रेंड के लिए उसके पास समय मिल जाता होगा पर अपने जिगरी दोस्तों के लिए समय नहीं मिल पता है, ” मैंने रूपा पर निशाना साधते हुए कहा |

@BOOKHOUSE1

मेरे बातों को रूपा समझ गई थी की मैं उसके बारे में ही बोल रहा हूँ पर वो मुस्कुराने के अलावा मेरे बातों का विरोध नहीं कर रही थी |

“तुम्हें चढ़ गई है”, गुगु ने कहा |

फिर मैं रूपा के पास सरकता हुआ गया और अपना हाथ उसके हाथ पर रख लिया |

“पागल, क्या कर रहे हो?” रुपा ने अपना हाथ पीछे खींचते हुए कहा |

“इन्हीं हाथों से मैंने तुम्हें धक्का दिया था, जो चाहे तुम इन्हें सज़ा दे दो पर मुझसे दूर मत जाया करो”, मैंने कहा | “तुमने कोई गुनाह नहीं किया, फिर सज़ा किस बात की दूँ?” रूपा ने अपने हाथ से मेरा हाथ दबाते हुए कहा |

“क्या  तुम अपने राजकुमार से मिलने चली गई थी? मैंने पूछा |

“उसकी तलाश तो मैं वर्षों से कर रही हूँ | एक बार भी मुझे मिल जाए तो मैं अपने राजकुमार से शादी कर लूँगी”, रूपा ने कहा |

“तुम्हारा राजकुमार जल्द ही मिलेगा”, |

रूपा और गुगु दूसरे रूम में चली गईं | मुझे रूपा से बात करके यक़ीन हो गया था की अभी भी रूपा उस राजकुमार की तलाश में है, जिस लड़के ने अपना किडनी रूपा को डोनेट

करके, उसे मरने से बचाया था |

मैं भी यही चाहता था की रूपा अपने राजकुमार के लिए तड़पती रहे क्योंकि रूपा जिसे अपना राजकुमार समझती थी उस राजकुमार को रूपा से बहुत बड़े सपोर्ट की ज़रूरत थी | वो रात मेरे लिए लखनऊ की आख़िरी रात थी, क्योंकि लखनऊ में मेरा रहना मुश्किल लग रहा था |

फ्लैट पर आते ही मैंने एजेंट के बारे में रूपा को बताया था पर उसने मेरे बातों पर ध्यान नहीं दिया था | शायद रूपा पहले से बदल चुकी थी | अगर उसने मुझे सपोर्ट नहीं किया तो मैं आसानी से एजेंट के हाथ लग जाऊँगा | रात भर मैं सोया नही और बार-बार घड़ी का समय देखता रहा |

जब सुबह के 02:00 बजे तो मैंने परम को उठाया, पर वो उठने को तैयार नहीं हो रहा था | रात को पीने के कारण नींद तो मुझे भी आ रही थी पर उलझन में फंसने की वज़ह से मेरी नींद उड़ गई थी | सोते हुए परम के मुँह पर मैंने पानी के छींटे मारे |

“सोने दे यार”, परम ने करवट बदलते हुए कहा |

“मेरा जान दांव पर लगा हुआ है और तू सो रहा है”, मैंने कहा |

इतना सुनते ही परम अपना आँख मसलते हुए उठकर बेड पर बैठ गया |

“कोई बुरा सपना देखे हो क्या?” |

“एजेंट मुझे देख चुका है, चारबाग स्टेशन मुझे छोड़ दो |”

“पर जाओगे कहाँ? अभी बग़ावत होने में भी दो महीना बाकी है |”

“यह बात हम स्टेशन पर डिसाइड करेंगे”, मैंने कहा |

फ्लैट से निकलने से पहले मैं अपना डायरी अपने बैग में रखते हुए परम के साथ चारबाग स्टेशन पहुँच चुका था | उस वक़्त परम भी अपने साथ एक बैग लिया था | चारबाग स्टेशन की बड़ी लाइन के सामने हम दोनों खड़े होकर चाँदनी रात में उत्तर प्रदेश के राजधानी के स्टेशन का नज़ारा को देख रहे थे |

उस वक़्त सुबह के 02:30 बज रहे थे जिसके कारण चारों तरफ़ सन्नाटा छाया हुआ था | स्टेशन के सामने वाली रोड पर कभी-कभार गाड़ियों का आना जाना लगा हुआ था | सोलर लाइट के उज्जियारे में चारबाग स्टेशन की ख़ूबसूरती वाक़ई देखने लायक थी | मैं और परम बात करते हुए स्टेशन की तरफ़ आगे बढ़े |

मैंने परम से कहा की, “दिल्ली के लिए एक टिकट काउंटर से ले लो|”,

“दिल्ली में कौन है?”|

मैंने अपने वॉलेट से कार्ड निकालते हुए धीरे से कहा “रिमसा के मौसा का वहाँ ट्रेवल एजेंसी है | मैं वहीं जा रहा हूँ|”

@BOOKHOUSE1

फिर मैं दिल्ली जाने वाली ट्रेन की लिस्ट देखने लगा | कुछ देर बाद परम टिकट काउंटर से लौटकर मेरे पास आ गया | लखनऊ की बड़ी लाइन पर प्लेटफार्म नंबर चार से 'गोमती एक्सप्रेस' दिल्ली के लिए रवाना होने वाली थी | मुझे ट्रेन तक परम छोड़ने आया था | ट्रेन का हॉर्न बजने के बावज़ूद परम मेरे बगल वाले सीट पर बैठा रहा | "ट्रेन चलने वाली है", मैंने कहा |

परम अपने ज़ेब से दो टिकट निकाला और मुझे दे दिया |

दोनों टिकट दिल्ली के थे| एक टिकट मैंने परम को देते हुए कहा की "दोस्ती निभाने का यह सही वक़्त नहीं है |" फिर मैं परम को ट्रेन से जबरदस्ती निकालने लगा | मेरी ज़िद के सामने उसकी एक न चली | फिर उसने मुझे अपने गले लगाते हुए मेरे कान में फुसफुसाया "अपना ख़्याल रखना |"

"तुम तब तक लखनऊ रहना, जब तक मैं यहाँ आ ना जाऊँ, और रिमसा की कुछ ख़बर मिले तो मुझे बताना", मैंने कहा |

तब तक ट्रेन ने रफ़्तार पकड़ ली | चलती ट्रेन से परम कूद गया | उसका बैग मेरे पास रह गया था | उसके बैग में एटीम कार्ड के अलावा और कुछ नहीं था | मैं दिल्ली के लिए रवाना तो हो गया था पर मेरा जान पहचान वाला वहाँ कोई नहीं था |

मेरे दिमाग़ में दो ख़्याल आ रहे थे या तो मैं एक नंबर का गुंडा बन जाऊँ ताकि एजेंट मुझसे खौंफ़ खाए, या फिर बहुत अमीर बन जाऊँ जिससे मेरे बारे में एजेंट गलत ना सोच सके | अमीर तो हम थे ही, सिर्फ़ बग़ावत सही तरीके से कर दी जाती तो, पर एजेंट ऐसा चाहता नहीं था | रात वाली नींद मैंने ट्रेन में पूरी किया | लखनऊ से मैं दिल्ली कब पहुँच गया कुछ पता ही नहीं चला था | सुबह जब मेरी नींद खुली तो मैं गाज़ियाबाद स्टेशन पार कर चुका था | ट्रेन अपनी रफ़्तार में चल रही थी | सुबह की ठंडी - ठंडी हवायें लग रही थी | ट्रेन में ही मैं फ्रेश हो चूका था |

@BOOKHOUSE1

◆ ◆ ◆

# दिल्ली

भाग *03*

@BOOKHOUSE1

जब मैं ट्रेन से दिल्ली स्टेशन के प्लेटफार्म पर उतरा तो रिकॉर्डिंग की आवाज़ आ रही थी | “दिल्ली के स्टेशन पर आपका स्वागत है | प्लेटफार्म को साफ़ सुथरा बनाए रखने में हमारी मदद करें |”

अनाउंसमेंट सुनते हुए मैं स्टेशन से बाहर निकला और कार्ड वाले एड्रेस पर जा पहुँचा | वहाँ पहुँचने के बाद कार्ड में दिए गए एड्रेस के अनुसार वहाँ कोई ट्रैवल एजेंसी मौज़ूद नहीं थी | मैं तो बड़ी मुसीबत में फँस गया |

@BOOKHOUSE1

जिसके भरोसे में दिल्ली आया था, उसका कुछ अता-पता वहाँ नहीं था | रिमसा की तरह उसके मौसा भी एक नंबर के 420 निकले |

मैं वहाँ बैठकर अपने बाल में अँगुली करने लगा | तभी एक वृद्ध ने मुझसे परेशानी का कारण पूछा | मेरे हाथ में कार्ड देखकर उसने बताया की ये ट्रैवल एजेंसी बंद हो चुकी है |

“तुम किसी नौकरी के लिए आए हो?” वृद्ध ने पूछा |

मैंने अपना सिर हिला दिया | यह अलग बात था की मैं वक़ालत पूरी कर चुका था, फिर भी मैं दिल्ली शहर में कोई भी काम करने के लिए तैयार था |

“यहीं बैठे रहना”, बोलते वृद्ध वहाँ से चला गया |

कुछ देर बाद बाइक से एक आदमी मेरे पास आकर खड़ा हो गया | शक्ल से वो बिल्कुल बदमाश लग रहा था |

“चलो मेरे साथ”, उसने मुझसे कहा |

“कहाँ? मैंने हिच-किचाते हुए पूछा |

“तुम्हारी सहायता करने के लिए आया हूँ”, बदमाश शक्ल वाले ने कहा |

दिल्ली शहर मुझे बेगाना सा लग रहा था, इसलिए मैं मज़बूर होकर उसकी बाइक पर बैठ गया | उसके साथ मुझे डर इस बात का लग रहा था की वो किसी से मुझे किडनैप ना करा दे, फिर भी मैं रिस्क लेने को तैयार था क्योंकि मेरे पास और कोई रास्ता नहीं था | कई रास्ते बीतते गए पर मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था की मैं करूँ तो क्या करूँ |

मैं चुप-चाप उसकी बाइक पर और वो बाइक तेजी से चलाता रहा | मुझे कुछ पता भी नहीं चल रहा था की वो मुझे बाइक पर बैठाकर ले कहाँ जा रहा है? अचानक उसने बाइक एक हॉस्पिटल के सामने रोक दिया |

@BOOKHOUSE1

“मैं कोई डॉक्टर नहीं हूँ”, मैंने कहा |

“कोई बात नहीं मरीज़ बन जाओ”, बदमाश शक्ल वाले बन्दे ने मुस्कुराते हुए कहा |

वो मुस्कुराते हुए भी ख़तरनाक लग रहा था | हॉस्पिटल के अंदर मुझे एक काँच के केबिन में बैठाकर, वो बदमाश चला गया |

कुछ लोगों को सूट - बूट पहने देखकर, मेरे दिमाग़ से डर बाहर हो गया | फिर एक आदमी उस काँच के ऑफिस में दाखिल हुआ | उसके आते ही मैं झट से खड़ा हो गया |

“बैठ जाओ, कोई प्रूफ है तुम्हारे पास”, उसने कहा |

मेरे बैग में जो भी डॉक्यूमेंट मौज़ूद थे | मैं सारे डॉक्यूमेंट उसके सामने पेश कर दिया | मेरे डॉक्यूमेंटस वो ऐसे देख रहे थे जैसे की मैंने कोई मर्डर किया हो और वो मेरे कागज़ात की जासूसी करने वाले कोई इंस्पेक्टर हैं | काफ़ी देर के बाद उन्होंने मेरे डॉक्यूमेंट वापस करते हुए ‘नो‘ बोल दिया |

“प्लीज़ सर, मुझे जॉब की बेहद ज़रुरत है”, मैंने कहा |

“वक़ील साहब, आपके लायक यहाँ कोई भी काम नहीं है”, उसने कहा |

“मैं कुछ भी काम करने के लिए तैयार हूँ”,|

“ठीक है, यहीं बैठे रहना”, कहते हुए वो चले गए |

काफ़ी वक़्त के बाद एक सुंदर सी लड़की केबिन में आई और काउंटर पर बैठ गई | काउंटर पर उसने अपना हाथ थपथपाते हुए मुझे आवाज़ दी “प्लीज़ कम” |

मैं उसकी टेबल के सामने कुर्सी पर जाकर बैठ गया |

“हॉस्पिटल के “होम केयर सर्विस” में आपका स्वागत है”, उस लड़की ने कहा |

“थैंक्स!”

वो लड़की उस हॉस्पिटल की रिसेप्शनिस्ट थी, ये बात वो मुझे ख़ुद बताई थी |

“आप मुझे प्यार से “नेहा-झा” कह सकते हैं”, रिसेप्शनिस्ट ने कहा |

मैं उस लड़की की बातों पर मुस्कुराने लगा |

“आप  किस बात के लिए हँस रहें हैं?” |

“आप भी मुझे ‘अमन’ कह सकती हैं, पर प्यार से नहीं”, मैंने कहा |

“पहले दिन से ही आपने विरोध करना शुरू कर दिया”,|

लड़कियाँ अपनी प्रशंसा सुनने के लिए हमेशा ही भूखी रहती है |“आपसे बात करके मुझे ख़ुशी हुई”, मुझे तारीफ करना पड़ा |

“आपको ऐतराज़ ना हो तो काम लायक बात करें”, रिसेप्शनिस्ट ने कहा |

लड़कियाँ बिल्कुल ही टेढ़ी होती है | अपनी बात करना चाहती है पर सामने वाले की बारी आने पर नख़रे करने लगती हैं |

“आई एम सीरियस”, मैंने हामी भर दी |

“मेरी  बात को ठीक से सुनो!  इस हॉस्पिटल की “होम केयर सर्विस” ख़ास तौर से अमीर लोगों के मरीज़ो को देख-भाल प्यार से करने के लिए दी जाती है”, ये बोलते हुए उसने मेरे हाथ में एक फाइल दे दिया |

उस फाइल को खोलकर मैंने पढ़ना शुरू किया | अमीर लोग धन-दौलत के मोहताज़ नहीं होते, पर उन्हें अपने माँ-बाप के साथ वक़्त बिताने का समय नहीं मिल पाता है |

वो तो दूर की बात है अमीर लोग अपने घर के बीमार पड़े लोगों को वक़्त नहीं दे पाते हैं, जो बेहद ही ज़रूरी होता है | रुपयों के सहारे उन अमीरों को यह सर्विस उनके घर जाकर दी जाती है | उसे ही ‘होम केयर सर्विस’ कहते हैं | इस सर्विस को जो भी एम्प्लॉई जॉइन करता है, उसे अमीरों के मरीज़ो की देखरेख करना होता है |

हॉस्पिटल के अलावा उनके घर पर भी उपस्थित रहकर मरीज़ो को समय - समय पर दवा देना होता है और उस मरीज़ की सारी ज़िम्मेदारी उस एम्प्लॉई की रहती है, जो होम केयर

@BOOKHOUSE1

सर्विस का जॉब ज्वाइन करता है | इसके बदले एम्प्लॉई को अच्छी ख़ासी रक़म दी जाती है |

उसके व्यवहार से अगर अमीर लोग ख़ुश हो गए, तो रातों - रात वो एम्प्लॉई करोड़पति बन सकता हैं | फाइल बंद करते हुए मैंने रिसेप्शनिस्ट को दे दिया |

“कैसा लगा हमारे हॉस्पिटल का जॉब?” रिसेप्शनिस्ट ने पूछा |

मैंने अपना मुँह सिकुड़ा लिया |

“ आप ज्वाइन कब से कर रहे हैं?”

“अभी से”, |

दिल्ली में रहने का मेरे पास कोई ठिकाना नहीं था, इसलिए मैंने तत्काल ही “होम केयर सर्विस” वाला जॉब ज्वाइन कर लिया और उस हॉस्पिटल में नीरू नामक बुड्ढी औरत की ज़िम्मेदारी मुझे सौंपी गई | दो-चार दिन तक उस बुड्ढी औरत को समय - समय पर मैं दवा पानी आदि हॉस्पिटल में ही देता रहा और उसकी देखरेख हॉस्पिटल में ही करता रहा | अगली शाम को उस औरत की छुट्टी कर दी गई |

उस बुड्ढी का देख-रेख करने के लिए मुझे भी नीरू नामक बुढ़िया के साथ उसके घर जाना पड़ा| जब मैं उसके घर पहुँचा तो मेरा सिर उसका घर देखकर चकरा गया| वाक़ई नीरू नामक बुढ़िया का आलीशान बंगला था, जो न्यू दिल्ली रेलवे स्टेशन से करीब पाँच किलोमीटर दूर उत्तम नगर ईस्ट में स्थित है |

बुढ़िया के बीमारी हालत में भी कोई उसे अपना समय देने वाला नही था | इतने बड़े आलीशान बंगले में उस बुढ़िया के अलावा तीन नौकरानियाँ थी, जो घर का काम काज़ देखा करती थी | खाना पकाने वाली कुक अलग से आया करती थी | मेरा सिर्फ़ काम इतना ही था की समय-समय पर बुड्ढी औरत को दवा देना और ब्लड प्रेशर को नापतें रहना था |

उस वक़्त मुझे यह एहसास हो गया था की जिनके पास करोड़ो की संपत्ति रहती है, उन्हें भी देखभाल करने के लिए दूसरों का ही सहारा लेना पड़ता है | मैं रोज़ उन्हें दवा देकर टीवी देखने लगता था |

एक दिन मैं टीवी देख रहा था, तभी उसने मुझे सामने वाले अलमारी की तरफ़ इशारा किया | मैं उस अलमारी को खोलने की कोशिश कर रहा था, पर वो अलमारी लॉक था इसलिए नही खुल रहा था | उसने मुझे खूंटी की तरफ़ इशारा किया | मैंने खूंटी से चाबी उतारते हुए लॉकर को खोल दिया |

लॉकर में बहुत सारी किताबें मौज़ूद थी | कुछ पल के लिए मैं सोचने लगा कि ये बुड्ढी औरत कही रिमसा की दादी तो नहीं है ना क्योकि, रिमसा भी किताबें पढ़ना बहुत पसंद करती थी |

“एलोन ओन्ली प्लीज़”, बुढ़िया ने कहा |

“एलोन ओन्ली” नामक किताब मैं अलमारी में ढूँढने लगा | उस अलमारी में बहुत सारी किताबें होने के कारण मुझे थोड़ा देर लग रहा था | वो किताब लेने के लिये बेड से ऊठकर अलमारी तक आना चाहती थी, पर बीमारी ने उसे जकड़ लिया था |

मैं तुरंत उसके बेड तक गया, फिर वो बुड्ढी मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए अलमारी तक पहुँचने के लिए उठी | मैं उसे संभालते हुए अलमारी के समीप ले गया | उसने अलमारी में एक बार अपनी नज़र किताबों पर दौड़ाई और तपाक से ‘एलोन ओन्ली’ नामक पुस्तक निकाल दी |

मैं ताजुब्ब में था यह देखकर कि उस बुड्ढी की उम्र पचासी से अधिक होने के बावज़ूद उसका दिमाग़ इतना फुर्तीला हो सकता है | मैं देखकर हैरान था |

“बेटा हम सब की ज़िंदगी में किताबों की बहुत अहमियत होती है,” |

“सारी किताबें आपकी हैं?” मैंने अलमारी की तरफ़ इशारा करते हुए पूछा |

“हाँ बेटा अकेलापन दूर करने के लिए मैं इन किताबों को पढ़ती रहती हूँ”, |

“सारी किताबें आपकी ही है?” मैंने दोबारा पूछा |

“हाँ बेटा सारी- किताबें मेरी ही हैं और मैं इन किताबों को पढ़ती रहती हूँ, क्योकि मेरे अलावा इस मकान में कोई नहीं रहता है सिवाय नौकरानियों के | अलमारी की सारी किताबें तीन-चार बार पढ़ चुकी हूँ”, बुढ़िया ने कहा | अलमारी में करीबन दो सौ से भी ज्यादा किताबें थीं, जिसे पढ़ना सबके बस की बात नहीं है |

“तुम मेरे बेटे के समान दिखते हो | तुम्हारा नाम क्या है?” बुढिया ने पूछा |

“मेरा नाम “अमन श्रीनेत” है | गोरखपुर से हूँ | इसी साल मेरा वक़ालत का पढ़ाई पूरा हुआ है, पर मेरे दुश्मन मुझ पर हावी होना चाहतें है, इसलिए मुझे भटकना पड़ रहा है”,|

उस बुड्ढी ने आहें भरते हुए दो लाइन पेश किया – “अगर आप सही हो तो कुछ भी साबित करने की कोशिश मत करो, बस सही बने रहो गवाही वक़्त ख़ुद दे देगा|”

उसकी बात सुनकर मैं उससे बहुत प्रभावित हुआ | उसके कहने पर मैं अलमारी में किताब ढूँढने लगा, ख़ुद के पढ़ने के लिए |

“कौन  सी किताब पढ़ना चाहोगे?” |

“जिस किताब को पढ़ने में मुझे बोरियत महसूस ना हो, या फिर लव स्टोरी टाइप की किताबे”, मैंने धीरे से कहा | “मुझसे नहीं शर्माओ, बेशक बोलो”, बुढिया ने कहा |

“लव स्टोरी टाइप की किताब का नाम बता दीजिए ताकि मैं अलमारी से निकाल लूँ”, मैं थोड़ा हिचकिचाता हुए बोला, क्योंकि मैं उस बुढ़िया से अभी क्लोज़ नहीं हो पाया था | इसलिए मैं अपना पर्सनल बात करने में संकोच कर रहा था|

फिर वो मुस्कुराते हुए बोली – "मैं समझ सकती हूँ, जवानी में सिंगल रहना कितना मुश्किल होता है," | फिर उसने अलमारी में एक बार अपनी नज़र दौड़ाई और तपाक से एक किताब निकालते हुए मुझे दे दी |

उसने जो किताब मेरे हाथ में दी थी, सेम उसी तरह की किताब मैंने रिमसा को एक बार गोरखपुर बुक स्टाल पर खरीदते हुए देखा था | किताब का फ्रंट कवर बिल्कुल सेम था, फिर मैंने उस बुड्ढी को बेड पर बैठा दिया |

वो दिवार से टेक लेकर बेड पर लेटी हुई थी | उसके द्वारा दिये हुये किताब को मैं अपने हाथ में लेकर कुर्सी पर बैठ गया |

"एक बात पूछूँ?" बुढ़िया ने कहा |

"हाँ ज़रूर", |

"किसी के साथ तुमने रिलेशनशिप बनाया है?" बुढिया ने पूछा |

थोड़ी देर के लिए मुझे लगा की यह पागल बुढ़िया रूपा की दादी ही होगी | दोनों की आदतें मैच करता है |

"क्या सोच रहे हो तुम? चाहो तो झूठ भी बोल सकते हो", बुढिया ने कहा |

"मैं आपसे झूठ क्यों बोलूँगा",|

"बताओ फिर", उस बुढ़िया ने दोबारा कहा |

"एक भी बार नहीं", मैंने शरमाते हुए कहा |

"मेरी सुनो, जब मैं तुम जैसी जवान थी, तो मैंने बीस का आंकड़ा पार कर दिया था | तुम्हें मज़ाक लग रहा होगा पर ये बिल्कुल सच है", बुढिया ने कहा |

"आप मुझसे मज़ाक क्यों करेंगी?" |

"तुम इतना सादा जीवन क्यों जीते हो, क्या तुम्हारे सीने में दिल नहीं है?" उस बुढ़िया ने कहा |

बुढिया के सामने मैंने थोड़ा खुल जाना ही बेहतर समझा, क्योंकि बहुत दिनों बाद कोई ऐसा मिला था जिससे मैं अपने दिल की बात शेयर करना चाहता था |

"मैं एक रिमसा नाम की लड़की से बेहद प्यार करता था पर वो मुझे बिना बताए मुझसे दूर चली गई है | मैं सिर्फ उसी को चाहता हूँ |

मेरे कॉलेज के दिनों में कुछ लड़कियाँ मुझ पर अपना दिल दे बैठीं थी, पर मैंने उन्हें सिर्फ दोस्ती तक ही सीमित रखा |"

मैंने अपने प्यार के बारे में थोडा बहुत बुढिया को बता दिया और एजेंट के बारे में भी कुछ बातें पेश कर दी | मेरे बातों को सुनकर कुछ देर तक वो ख़ामोश रही फिर वो सो गई |

@BOOKHOUSE1

उस बुढिया के दो बेटे थे | दोनों ही अपनी अपनी बीवियों के साथ अमेरिका में रहते थे | बेचारी लाचार बुढिया किताबों में ही डूबी रहती थी | किताबों को पढ़कर उसे बहुत सारा ज्ञान प्राप्त हो गया था | उस बुढिया से मैं बहुत प्रभावित हुआ था | उसके द्वारा बोली गई कई बातों के तर्क से मैं बिल्कुल सहमत था | बुड्ढी के द्वारा दी गई किताब मैं पढ़ने लगा |

उस किताब को मैंने दो बार पढ़ लिया था | ऐसा मैंने इसलिए किया क्योंकि उसी तरह की किताब रिमसा को मैंने खरीदते हुए देखा था | उस किताब में यही कहानी था की एक लड़के को अपनी माँ का सपना पूरा करना होता है, पर उसे एक लड़की से प्यार हो जाता है और प्यार इतना गहरा हो जाता है कि लड़का अपने माँ के सपनों के साथ खिलवाड़ करने लगता है |

लड़की को इस बात की ख़बर हो जाती है और वो लड़की उस लड़के से दूर हो जाती है ताकि उसका बॉयफ्रेंड अपनी माँ के सपनों को पूरा कर सके | उस किताब को पढ़ने के बाद मुझे ऐसा लग रहा था की रिमसा भी मुझसे इसीलिए दूर हो गई है क्योकि मेरी माँ का भी सपना था की मैं वक़ील बन जाऊँ और ये बात रिमसा को बात पता था | कहानी वाली बात कितना सच है, ये वक़्त आने पर ही पता चलेगा |

मैं जल्दबाज़ी करते हुए कुर्सी से उठकर अपने डायरी से वो लेटर निकाला, जिसमें रिमसा का कांटेक्ट मोबाइल नंबर लिखा हुआ था, पर उस नंबर पर ट्राई करने पर बंद आ रहा था | गुस्से में आकर मैंने उस लेटर को दो टुकड़े में फाड़ दिया और कुछ देर बाद मैंने ही टेप से चिपकाकर उस लेटर को अपनी डायरी में रख दिया |

@BOOKHOUSE1

लेटर देते हुए रिमसा ने दो साल कहा था, पर तीन साल के बाद भी उसका नंबर नहीं लग रहा था | मैं जोर से चिल्लाने लगा | तभी मेरा आवाज़ सुनकर बुढ़िया घबराते हुए उठ गई |

“चिल्ला क्यों रहे हो?” बुढ़िया ने चहकते हुये पूछा |

मैं वहाँ से उठकर बाहर की तरफ़ जाने लगा |

तभी उसने आवाज़ दी- “बाहर वाली मेज़ पर कुछ पत्रिका जैसी पतली किताबें हैं उसे लाओ |”

मैं बाहर वाले टेबल से मैग्ज़ीन लाकर बुड्ढी को दे दिया |

“बिना बताए जाने वालों का ज़रूर कोई बड़ा मक़सद होता है”, उस बुढ़िया ने कहा |

जिन बातों को मैं बुढ़िया को बताना नहीं चाहता था, वो बात उसे पता चल जाता था | वाक़ई बुढिया की तार्किक शक्ति बहुत ही अधिक था | बुढ़िया मेरे चेहरे को पढ़कर बता दिया करती थी की मेरा ध्यान कहाँ है |

“बिछड़ने वालों को कैसे ढूँढा जा सकता है?” मैंने पूछा |

“बिछड़ने वाला या वाली अपना कोई ना कोई साक्ष्य ज़रूर छोड़ जाता है”, बुढिया ने कहा |

मैंने परम को  तुरंत कॉल किया | “हैलो परम! कैसे हो?”

“ठीक हूँ | दिल्ली जाकर दिल वाले हो गये हो”, परम ने कहा |

“सुनो परम, चौक के पास किताब की दुकान पर रिमसा हर हफ़्ते किताब लेने के लिए जाया करती थी | कैसे भी करके उसका पता करो”,|

“पिछले साल वो आई थी पर फिर कहीं चली गई”, परम ने कहा |

“रिया से पता लगा लेना”, |

“वो तो पिछले दो सालो से लापता है”, परम ने कहा |

“बाय”, बोलते हुए मैंने कॉल कट कर दिया |

परम मुझसे और बात करना चाहता था, पर उस वक़्त मेरा मूड ठीक नहीं था |

“फोन पर किसी लड़की की बात कर रहे थे?” बुढ़िया ने पूछा |

“जिस लड़की से मैं प्यार करता था उसी का पता लगाने का कोशिश कर रहा हूँ, पर उसका कुछ पता ही नहीं चल पा रहा है कि वो कहाँ चली गई | वो हर हफ़्ते किताबें खरीदा करती थी एक दुकान से |

वही पता करने के लिए अपने दोस्त के पास फ़ोन किया था मैंने, पर वो अब उस दुकान पर नहीं आती है | पता नहीं किताब किसी और दुकान से खरीदने लगी है या किताब पढ़ना ही छोड़ दि है | मेरे और रिमसा के बीच एक लड़की मीडिएटर थी, जिसका नाम रिया है | वो बिल्कुल रिमसा की तरह दिखती थी | वो भी दो सालो से गायब है | जब तक रिया मेरे कांटेक्ट में थी, तब तक रिमसा के बारे में मुझे ख़बर बता दिया करती थी | जब से मैंने रिया को चाँटा मारा है तब से रिया ने आज तक मुझसे कांटेक्ट नहीं किया”, |

“रिमसा को किस चीज़ का शौक था, तुम्हारे अलावा?” बुढ़िया ने पूछा |

“उसे आधी अधूरी कहानी पढ़ने की शौक था”,|

“उसे कैसी कहानियाँ पसंद थी?” बुढ़िया ने पूछा |

“लव स्टोरी टाइप की किताबें उसे पसंद थी”,|

“क्या तुम कुछ किताबों का नाम बता सकोगे?” बुढ़िया ने पूछा |

जो किताब मैंने दो बार पढ़ा था, उस किताब को मैंने बुढ़िया को देना चाहा |

“इसके अलावा और कुछ भी है जो रिमसा ने मन से पढ़ीं हो?” बुढिया ने पूछा |

मैंने अपना डायरी उस बढ़िया को दे दिया |

मेरे डायरी को वो पढ़ने लगी | मैं चुपचाप बैठकर उसे निहार रहा था | बुढ़िया मेरे साथ एम्प्लॉई जैसा व्यवहार नहीं करती थी | वो अपनी बेटो की तरह ही मुझे मानती थी, क्योंकि मैं भी उस बुढिया का बहुत ख़्याल रखता था |

डायरी पढ़ने के बाद बुढिया ने मज़े से बिस्तर पर डायरी को पटका, फिर अपना सिर ऊपर करके पंखे की तरफ़ देखने लगी |

“तुम्हारी भी कहानी अधूरी है | रिमसा जहाँ - जहाँ से किताबें खरीदा करती थी, वहाँ - वहाँ तुम्हारी अधूरी कहानी को ठीक से छपवाकर पहुँचाना होगा”, बुढिया ने कहा |

“आधे - अधूरे तथ्य को छापना तो दूर की बात है, कोई बेचना भी पसंद नहीं करेगा”, मैंने कहा |

“इस धरती पर कोई ऐसा चीज़ नहीं है जो जी बिल्कुल ही नया है | सारी चीज़ें पहले से होती आ रही है, सिर्फ़ अंदाज़ अलग होना चाहिए करने का”, बुढ़िया ने कहा |

“ उस बुढ़िया के कहने पर ही मैं अपने डायरी को तब से इस होटल में छोड़ कर जाने लगा |

होटल का जो भी खर्चा होता है सारा पेमेंट बुढ़िया ही कर दिया करती है | उसका यह मानना था कि दिल्ली के बड़े होटलों में कभी कभार ऐसे भी लोग आते हैं, जिनका तार्किक ज्ञान अन्य लोगों से थोड़ा हटकर होता है, जिनके द्वारा मेरे अधूरे डायरी के तथ्य को अपने तार्किक ज्ञान से पूरा करके लिख सकेंगे |”

बुढ़िया के ज्ञान को देखकर कभी-कभी मैं दंग हो जाता था | मुझे ख़ुद से भी अधिक उस बुढ़िया पर यक़ीन था की वो मेरा ही भला चाहती है |

बुढिया का मानना था की एक दिन वो तार्किक ज्ञान वाला बंदा ज़रुर मिलेगा जो मेरे अधूरे डायरी को पूरा करके “हमारी अधूरी मुलाकातें” कहानी के नाम से बुक छपवाकर गोरखपुर के सारे बुक सेलर तक पहुँचायेगा | फिर मेरे कहानी को पढ़कर रिमसा मेरे पास ज़रूर लौट आएगी | बुढ़िया के फैसले से मैं सहमत था |

@BOOKHOUSEL

कुछ दिन पहले इसी रूम में मैं अपना डायरी छोड़कर चला गया था , लेकिन मुझे बुलाकर डायरी वापस लौटा दिया गया |

होटल के काउंटर से अपने डायरी को लेकर मैं बुढिया के पास चला गया | मैं अपने डायरी को होटल के रूम मे रखते-रखते थक चुका था

बुढ़िया की एक लाइन बात सुनकर मुझ में हिम्मत आ गई –
“आसमान के नीचे कुछ भी नया नहीं है | तुम जो भी करने जा रहे हो वो चीज़ें पहले भी हो चुकीं हैं, बस हिम्मत मत हारो और एक बार फिर कोशिश करो”, बुढिया ने मुझे यकीन दिलाते हुए कहा |

दिल्ली के लक्ज़री “द न्यू अशोका होटल” के रूम नंबर 143 में मैं फिर एक बार अपना डायरी रख के चला गया था, इस होटल के रूम में मैं कल ही अपने डायरी को छोड़कर गया हुआ था |

@BOOKHOUSE1

# द न्यू अशोका होटल न्यू दिल्ली,

शिवश्याम चौरसिया का रूम नंबर 143

“संयोग से आज आप मिल गए पता नहीं वो तार्किक ज्ञान वाले मुझे कब मिलेंगे? आप कुछ बोलते क्यों नहीं?” अमन मेरे तरफ देखते हुये बोला |

मैं बेड से सरकते हुए दीवार से टेक लेकर बैठ गया, और होटल के लैडलाइन से कॉल करके दो कप कॉफ़ी का ऑर्डर दे दिया | कुछ देर बाद रूम की बेल बजी | मैंने बेड से उठकर दरवाज़ा खोला, तो वेटर रूम में आकर टेबल पर कप रखते हुये खड़ा हो गया और होटल के रूम में बार-बार अपनी डायरी रखने वाले अमन बाबू को बडे ध्यान से देखने लगा |

“मुझे क्या देख रहे हो?” अमन ने वेटर को घूरते हुए कहा |

अमन के घूरने से बेचारा वेटर रूम से दौड़ता हुआ बाहर चला गया | हम दोनों कॉफ़ी की चुस्की लेने लगे | “रिमसा को गोरखपुर जाकर ढूँढना चाहिए”, मैंने कहा |

“मैं यहीं से उसका पता लगा रहा हूँ”, अमन ने कहा |

“तुम कितनी भी कोशिश कर लो, वो अपने मन से ही मिलेगी और ज़रूर मिलेगी”, मैंने कहा |

@BOOKHOUSE1

“आप कहना क्या चाहते हैं?” उसने पूछा |

मैं कॉफ़ी पी चुका था | दोपहर का वक़्त था | डिलीवरी में आई हुई डायरी को मैंने उसके हाथ में दे दिया |

“ये किसकी डायरी है?” उसने डायरी को अपने हाथ से बिस्तर पर फेंकते हुए पूछा |

“इस डायरी को पढ़ते ही तुम्हें अपनी रिमसा का पता चल जाएगा”, |

“जिसे मैं पिछले तीन सालों से नहीं ढूँढ़ पाया, उसे आप पाँच घंटों में कैसे ढूँढ़ लेंगे?” |

“तब वक़्त तुम्हारे साथ नहीं था, अब जल्दी आने वाला है |

“मेरा बात मानो और ये डायरी पढ़ना शुरू करो”, मैंने ऊँची आवाज़ में अमन से कहा |

मेरे द्वारा बोले गये लास्ट लाइन से वो कुछ पूछने के लिए बड़बड़ा रहा था | संकोच के मारे वह बिस्तर से डायरी नहीं उठा रहा था, क्योंकि कुछ देर पहले ही उसने डायरी को बिस्तर पर फेंका था |

“अब तुम्हारी मर्ज़ी | तुम्हें रिमसा तक पहुँचना है या रिया को छोड़ना है | यह डिसाइड कर लेना”, कहते हुए मैं बिस्तर पर लेट गया |

वो धीरे से बिस्तर पर से डिलीवरी में आई हुई डायरी को उठाकर पढ़ने लगा |

◆ ◆ ◆

@BOOKHOUSE1

# रिमसा कि डायरी,

@BOOKHOUSE1

2008 अप्रैल में,

मुझे डायरी लिखने का कोई शौक नहीं था, पर बिछड़ने वाले को मिलाने के लिए इससे बेहतर दूसरा कोई रास्ता नहीं है | सन 2008, में मैं पहली बार अपने मौसा जी के साथ उनके गाँव सेवई आई हुई थी | उसी वक़्त मौसा जी के घर से कुछ दूरी पर बहुत सारे लोग इकट्ठा हुए थे | उस भीड़ को देखने के लिए मैं भी अपनी मौसी जी के साथ गई हुई थी | पास जाकर देखा तो कुछ भाई अपने पिता की रियासत का आपस में बँटवारा कर रहे थे |

उस बँटवारे को देखने के लिए बहुत सारे लोगों की भीड़ इकट्ठा हुई थी | एक व्यक्ति ने टोकरी में रखे गए पत्थर को उठाकर प्लॉट् में ले जाकर रख दिया |

वैसा आपसी बँटवारा मैं कभी नहीं देखी थी | मेरे सामने ही सारी बग़ावत समाप्त हुआ, पर मैं कुछ भी समझ ना सकी | तभी एक नौजवान लड़के को किसी ने गोली मार दिया | उस लड़के की मौत हो जाने के कारण उसके घर वाले बहुत रो रहे थे | मरे हुए नौजवान को एक लड़का अपने गोद में लेकर चिल्ला रहा था | चिल्लाते हुए लड़के को देखकर मुझे दया आ गई, पर मैं कर भी क्या सकती थी | फिर मैं वहाँ से अपनी मौसी जी के साथ वापस घर आ गई |

अगली सुबह वही लड़का मेरी मौसी के लड़के को अपने बाइक से बेहोशी की हालत में लाया और तुरंत छोड़ कर वो लड़का बिना रुके अपनी बाइक को तेज़ी से चलाते हुए चला

गया |

मेरे मौसी के लड़के का नाम राणा था | राणा को बेहोशी हालत में वो लड़का लाया था | राणा विदेश से कमाकर घर आ रहा था | ट्रेन में कुछ बदमाश लोगों ने मिलकर ट्रेन में ही राणा का सारा सामान लूट लिया था |

उस लड़के की बदौलत ही राणा बेहोशी की हालत में अपने घर पहुँच सका था | उस लड़के के व्यवहार से मैं प्रभावित हो गई थी | मेरे मौसा - मौसी भी उस अनजान लड़के की प्रशंसा कर रहे थे | मैं उसी वक्त उसकी दीवानी हो गई | कुछ महीनों तक मैं अपने मौसा के घर रहकर उस लड़के को ढूँढना चाही, पर उस लड़के तक मैं पहुँच ना सकी | फिर मैं अपने मामा के पास बनारस चली गई | वो लड़का मेरे दिलो-दिमाग़ पर छा गया था क्योंकि उसका व्यवहार मुझे बहुत अच्छा लगा था |

2011 अप्रैल में,

तीन साल बाद अप्रैल के महीने में, मैं अपने मौसा के साथ उनके गाँव सेवई आ रही थी, रेड कलर की पल्सर बाइक से | रास्ते में एक पेट्रोल पंप पर बाइक में तेल लेने के लिए मौसा जी रुके | वहाँ पहले से ही वो लड़का मौज़ूद था, जिसकी मैं तीन साल पहले दीवानी हो चुकी थी |

@BOOKHOUSE1

उस लड़के को देखते ही मैं पहचान गई | वो अपने पिता के साथ उस पेट्रोल पंप पर अपनी बाइक में तेल भराने के लिए इंतज़ार कर रहे था | तभी पेट्रोल भरने वाले आदमी ने थोड़ी सी मिस्टेक कर दी |

एक हजार रूपए का नोट तेल भरने वाले बंदे को मेरे मौसा जी दिये और उस लड़के के पिता जी पाँच सौ रूपए का नोट बाइक में तेल भरने वाले बन्दे को दिया, पर बाइक में तेल भरने वाले बंदे ने पाँच सौ रूपए का तेल मेरे मौसा जी की बाइक में तथा उस लड़के के पिता जी की बाइक में एक हज़ार रूपए का तेल डाल दिया |

बाकी रूपए को लेकर कुछ देर तक मेरे मौसा जी और तेल भरने वाले बंदे में आपस में बहस चलती रही, क्योंकि जितने का तेल मेरे मौसा जी की बाइक में भरना था, उससे आधा ही तेल उनकी बाइक में फिल हुआ था |

पेट्रोल भरने वाला बंदा भी चालाक था, कुछ देर तक वह बिल्कुल शांत खड़ा रहा | सामने खड़े होकर उस लड़के के पिताजी मुस्कुरा रहे थे, क्योंकि उनकी बाइक में पाँच सौ रूपए के बदले एक हज़ार रूपए का तेल डाला जा चुका था |

वो लड़का मुझे बड़े ही गौर से देख रहा था पर मैं उसे इग्नोर करते हुए थोड़ी दूरी पर जाकर टहलने लगी | पेट्रोल भरने वाले बंदे ने मेरे मौसा जी को उस लड़के के पिता की तरफ़ इशारा किया, जिनकी बाइक में पाँच सौ रूपए के बदले हज़ार रूपए का तेल फील हुआ था |

“आप दोनों आपस में समझिए”, बोलता हुआ पेट्रोल भरने वाला बंदा चकमा देते हुए, वहाँ से चला गया | मेरे मौसा जी उस लड़के के पिताजी को बड़े ध्यान से देख रहे थे |

तभी वो सज्जन उस लड़के से बोले- “बेटा ‘अमन’ अपने बाइक के पास रूके रहना, मैं जल्दी आता हूँ”, बोलते हुए उस लड़के के पिताजी वहाँ से चले गए | कैसे भी करके मेरे मौसा जी पाँच सौ रूपए उन लोगों से वसूलना चाहते थे |

उस लड़के का नाम अमन है यह मुझे पता चल चुका था | कुछ देर बाद अमन के पिता जी आए और अपने बाइक की डिग्गी निकालकर मेरे मौसा जी को दे दिया |

मेरे मौसा जी ने हँसते हुए उनके बाइक की डिग्गी को लेकर मुझे दे दिया | अमन के पिता से मेरे मौसा जी बातें करने लगे उस तमाशे को देखकर मैं हँस रही थी |

अमन की निगाहें मेरी तरफ़ से हट नहीं रहीं थी | फिर मौसा जी ने मेरा नाम लेते हुए मुझे चलने के लिए बुलाया और मैं डिग्गी लेकर मौसा जी की बाइक पर बैठ गई | कुछ देर तक मेरे मौसा जी और अमन के पिता एक ही रास्ते से साथ साथ चलते रहें और आपस में बातें करते रहे |

अमन मुझे बार - बार पलट कर देख रहा था | सेवई बाज़ार से हम दोनों के रास्ते अलग हो गए |

@BOOKHOUSE1

मैं अपने मौसा के साथ उनके घर पहुँच चुकी थी | जिस लड़के की तलाश मुझे पिछले तीन सालों से थी, उसका नाम मुझे पता चल चुका था | मेरे मौसा जी का दो घर है | एक गाँव के बीच में तथा दूसरा घर सेवई बाजार के चौराहे से कुछ दूरी पर रोड के किनारे है, वहाँ कोई रहता नहीं था सिवाय वॉचमैंन के, क्योंकि उस घर में कुछ सामान रखा गया था | उस घर के ठीक पीछे एक ग्राऊंड था, जिसमें कुछ लड़के मैच खेलने आया करते थे, मैं ख़ुद का सुकून पाने के लिए वहाँ चली जाया करती थी |

ग्राऊंड वाले लड़को को पता चल गया था की पीछे वाले मकान में मैं रहती हूँ, फिर ग्राऊंड में खेल रहे सारे लड़के जानबूझकर मेरी छत पर गेंद मारा करते थे | मैं भी तंग होकर उन लड़कों को सबक सिखाया करती थी |

जो भी लड़का गेंद लेने मेरे घर आता था, मैं ख़ुद कैंची से उन लड़को के शर्ट का कॉलर काट दिया करती थी | ग्राऊंड के लड़के इतने शरारती थे कि मेरे द्वारा कॉलर काटने के बावज़ूद भी वो गेंद को मेरे घर के छत पर मारा करते थे | मैं भी उन लड़कों का कॉलर काट दिया करती थी |

एक दिन अमन भी गेंद लेने मेरे घर आया था | उसने मुझे देखते ही पहचान लिया की हम दोनों पेट्रोल पम्प पर मिल चुके है, पर मैं उस वक़्त अमन को नज़रअंदाज़ करते हुए यह साबित करना चाहती थी की मैं रिमसा नहीं हूँ, जोकि वो मुझे समझ रहा है |

मैं भी उसे जानना चाहती थी की आख़िर वो मुझे कितना चाहता है | उसकी सुगबुगाहट से

मैंने पता कर लिया था की मुझे जानने के लिए वो मेरा नाम पूछना चाहता है, पर मैं उसे कंफ्यूज कर दी थी की मैं कोई दूसरी लड़की हूँ |

वो ख़ुद अपनी शर्ट का कॉलर काटकर बाहर जाने लगा |

मैं उसे रुकने के लिए बोली, वो अपनी ज़गह मुड़कर खड़ा हो गया | फिर मैं गेंद को उसकी तरफ़ फेंक दि | गेंद लेकर अमन तुरंत मेरे घर से बाहर चला गया | उसके जाने के बाद मैं बहुत ख़ुश थी क्योंकि मेरी तलाश मेरे सामने थी जो अगले पल शायद पूरी होने वाली थी | कुछ वक़्त बाद ही मैं अमन को ये बताना चाहती थी की मैं वही हूँ, जो मुझे वो समझता है |

शायद उसे भी मेरी तलाश थी क्योंकि पिछली बार जब हम दोनों पेट्रोल पम्प पर मिले थे, उस वक़्त मेरे मौसा और उसके पिताजी की मौज़ूदगी में भी वो मुझे बार-बार देख रहा था |

कुछ घंटों बाद अमन गेंद लेने मेरे घर के अंदर दोबारा आया हुआ था | उस बार जब मैं गेंद देने के लिए उसके करीब गई तो, वो चुपचाप अपनी ज़गह पर खड़ा था | फिर मैं टेबल पर रखी हुई कैंची उठाई और अपनी हँसी को दबाते हुए अमन की बची हुई शर्ट का आधा कॉलर मैं काट दी | फिर गेंद को टेबल पर रखकर मैं अपने रूम की तरफ़ जाने लगी |

“क्या आपका नाम रिमसा है?” अमन ने लड़खड़ाते हुए पूछा |

मैं मुड़कर उसे घूरने लगी, फिर रूम में चली गई | अगले दिन मैं अमन के आने का इंतज़ार कर रही थी, क्योंकि मुझे पता था की वो अपना सस्पेंस दूर करने ज़रूर आएगा |

@BOOKHOUSE1

मैं उसके सामने ऐसी एक्टिंग की थी की मैं उसकी रिमसा नहीं हूँ, बल्कि सेम शक्ल वाली कोई दूसरी लड़की हूँ | वाक़ई अमन अगर मुझे चाहता होगा और सच्चे दिल से प्यार करता होगा तो मेरे नाम को जानने के लिए वो ज़रूर आएगा |

अगले दिन से मैच वाले ग्राऊंड में रामलीला का कार्यक्रम होने लगा | उस कार्यक्रम में मैं भी जाया करती थी क्योंकि अमन से लगाव मुझे पहले से ही हो चुका था |

रामलीला कार्यक्रम के दौरान अमन मेरा नाम कंफर्म करने के लिए रामलीला वाले स्टेज पर दस रुपए भिजवाकर, मेरे नाम से स्टेज पर एनाउंसमेंट भी करवाया था, फिर भी मैं उसे उलझाई रखी | वो भी कोशिश करता रहा मेरा नाम कंफर्म करने के लिए | फिर उसने एक छोटे बालक से मेरे पास लव लेटर भी भिजवाया था |

बच्चा ने लेटर देने के साथ-साथ कुछ पत्थर के टुकड़े मुझे दे दिया था |

अमन की तमाम कोशिश करने के बाद मैं समझ चुकी थी की वो मुझे कितना चाहता है | अब मैं भी उसे  बता देना चाहती थी की मैं ही उसकी रिमसा हूँ | जो ग्राऊंड के सारे लड़के मुझे कॉलर काटने वाली लड़की के नाम से जानते है |

रामलीला का कार्यक्रम समाप्त हो चुका था | अगले सुबह मैं अपने घर अमन का प्रतीक्षा कर रही थी, ताकि मैं उसे  बता सकूँ की जिसे वो कॉलर काटने वाली लड़की समझता है वो लड़की वाक़ई में उसकी शहज़ादी “रिमसा” ही है |

उसी दिन मेरे मौसा का लड़का राणा अपने बाइक से मेरे लिए गाँव वाले घर से नाश्ता ला रहा था | रोड क्रॉस करते समय उसकी बाइक सड़क पर एक ट्रैक्टर से टकरा ग, और वो घायल हो गया |

उसे बाइक से वहाँ के लोग हॉस्पिटल लेकर चले गए | उसके शरीर से बहुत ज्यादा ब्लड गिर चुका था | मैं भी हॉस्पिटल जाने के लिए निकल ही रही थी | तभी गेंद लेने के लिए अमन मेरे घर के अंदर आ गया |

अमन को गेंद के तरफ़ इशारा करते हुये मैं बाहर के तरफ़ जाने लगी, पर उसने मेरा नाम पूछ लिया | मैं उसके बातों को घुमाते हुए ख़ुद उसका नाम पूछ ली |

पहले तो वो थोड़ा बड़बड़ाया, फिर उसने अपना नाम अमन बताया | उसका नाम तो मुझे पहले से ही पता था | उस वक़्त मैं भी अपना नाम अमन को बता दि होती लेकिन राणा को देखने के लिए हॉस्पिटल जाना था |

अमन ने मेरा नाम दोबारा पूछा? "अगली बार हम मिलेंगे तो, तुम्हें जरुर बता दूँगी", बोलते हुए मैं रूम से बाहर चली गई | फिर ऑटो करके मैं उस हॉस्पिटल पहुँच चुकी थी जहाँ राणा को एडमिट किया गया था |

जब मैं राणा के वार्ड में पहुँची तो उसके बेड के बगल में अमन लेटा हुआ था | अमन का आँख उस समय बंद था और उसके शरीर से ब्लड निकाला जा रहा था राणा का जान बचाने के लिए | अमन ने उसे ब्लड डोनेट करने का फैसला किया था | अमन की वज़ह से ही राणा का जान बच सका |

@BOOKHOUSE1

मैं पूरे दिल से अमन पर निसार हो गई थी और मैं तुरंत हॉस्पिटल से अपने घर आ गई | अमन का चेहरा मेरे दिलो-दिमाग़ में समा गया था |

अगली सुबह मैं छत से खड़ी होकर अमन को ग्राऊंड में ढूँढ़ रही थी, पर उस दिन अमन ग्राऊंड में मैच खेलने नहीं आया था |

ग्राऊंड में उसके ना होने से मुझे घबराहट हो रही थी, यह सोचकर कि अमन  राणा का जान बचाने के लिए अपने शरीर से ब्लड देकर कहीं ख़ुद तो बीमार नहीं पड़ गया | दो दिनों तक मैं छत पर खड़ी होकर अमन के ग्राऊंड में आने की राह देखती रही, पर वो ग्राऊंड में मैच खेलने नहीं आया |

मैं उससे मिलकर अब बता देना चाहती थी कि मैं ही उसकी रिमसा हूँ, जो नौसढ वाले पेट्रोल पम्प पर मिली थी |

एक हफ्ता बीतने के बाद अगले दिन  राणा का शादी था जो गाँव वाले घर से हो रहा था | उस दिन भी मैं शाम तक ग्राऊंड में अमन को आने की प्रतीक्षा करती रही, पर उस दिन भी अमन मैच खेलने ग्राऊंड में नहीं आया था | फिर शाम के वक़्त मैं वहाँ से मौसी के गाँव वाले घर पहुँच गई | राणा की शादी का कामकाज़ कराने में जुट गई |

मेरा मन बिल्कुल भी नहीं लग रहा था | काले कलर का तिल जैसा स्टिकर प्रिया ने मेरे

गाल पर चिपका दिया था | प्रिया मेरी ख़ास दोस्त थी | मैं आंगन में बैठी हुई थी की अचानक राणा अपने साथ दो लड़कों को गलियारे में लेकर आया और प्रिया से उन दोनों लड़को की खातिदारी करने के लिए कहा | फिर राणा वहाँ से चला गया |

उन दो मेहमानों में से एक लड़का अमन था और दूसरा लड़का शायद उसका दोस्त होगा | कुछ देर बाद अमन ने मुझे देख लिया पर वो मुझे देखकर कंफ्यूज था क्योंकि मेरे गाल पर काला तिल देखकर उसे एहसास हो गया था की मैं कॉलर काटने वाली लड़की नहीं हूँ और जब उसने मुझे पहली बार पेट्रोल पम्प पर देखा था, उस वक़्त वो मुझे अच्छे से नहीं देख पाया होगा |

प्रिया को मैंने इशारा कर दिया की अमन के पैंट पर पानी गिरा के उसे कैसे भी करके अंदर वाले रूम तक भेज दे | प्रिया ने ठीक वैसा ही किया, जब प्रिया अमन और उसके दोस्त को पानी पिलाने गई तो गिलास का पूरा पानी प्रिया ने अमन के पैंट पर गिरा दिया | फिर अमन को मज़बूर होकर अपनी पैंट को सुखाने के लिए रूम में जाना पड़ा |

जब मैं रूम में पहुँची तो अमन बेड पर बैठकर तौलिया से अपने गीले पैंट को सुखा रहा था

“मेरा नाम रिमसा है”, |

“रिमसा” नाम सुनते ही अमन अपने ज़गह पर खड़ा हो गया |

“बैठ जाओ!”

@BOOKHOUSE1

वो मेरी तरफ़ बिना पलक गिराए हुए देख रहा था |

“कोई ज़रूरत हो तो याद कर लेना”, |

उसने मुझसे पानी माँगा | मैं किचन से पानी लाकर उसे दे दि | वो पानी जबरदस्ती पी रहा था शायद, क्योंकि कुछ ही देर पहले प्रिया उसे पानी पिला चुकी थी |

“आपका दोस्त कहाँ है?” |

“बाहर गलियारे में बैठा है”, अमन ने बोला |

फिर मैं अमन के दोस्त को गलियारे से बुलाकर अमन के रूम में लाकर छोड़ दि, ताकि वो अकेले बोर ना हो| फिर मैं अंदर वाले रूम में लड्डू बांधने चली गई |

उसे पता चल चुका था की मैं ही रिमसा हूँ | फिर मैं उसके प्रपोज़ल करने का इंतज़ार करने लगी, क्योंकि दो दिलों की शुरुआत कोई लड़का ही करता है |

मैं रूम में लड्डू बांधते हुए सोच रही थी, तभी उस रूम में मुझे ढूँढते हुए अमन दाखिल हुआ और मेरे पास बैठकर लड्डू बंधवाने लगा | मैं उसे मना की क्योंकि अमन उस शादी का ख़ास मेहमान था | अमने ने ‘राणा’ का दो बार सहायता किया था |

मेरे मना करने के बाबज़ूद वो मेरे साथ लड्डू बंधवा रहा था | उसने अपना नाम मुझे बताया | “आपके बारे में मैं बहुत गहराई से जानती हूँ”, |

मेरी बातों पर उसे यक़ीन नहीं हो रहा था | फिर मैं उसे पेट्रोल पम्प वाली बात बता दी और उसके पिता की बाइक की डिग्गी भी मैं लाकर उसे दिखा दी |

इतने में अमन चिल्लाने लगा शायद वो उस वक़्त ख़ुश था | उसकी आवाज़ सुनकर उसका दोस्त भी रूम में आ गया | फिर अमन ने अपने दोस्त का नाम परम बताते हुए मुझसे हाथ मिलवाया |

इतने में परम अपना दोनों हाथ जोड़ते हुए बोला- "भाभी आप कैसी हैं?"

परम की बात से अमन डर गया की मैं भाभी वाली बात पर नाराज़ ना हो जाऊँ, पर मैंने परम की बातों का कोई विरोध नहीं किया बल्कि मैं परम की बात से बिल्कुल सहमत थी, अपनी हँसी को दबाती हुए मैं लड्डू की परात लेकर रूम से बाहर चली गई |

शाम के वक़्त बारात में डी० जे० के सामने सभी लोग नाच रहे थे | मैं भी उस भीड़ में अकेले नाच रही थी | अचानक अमन मेरे शरीर से लड़ गया, वो तुरंत पीछा होना चाहा पर मैं उसका हाथ पकड़कर डी० जे० के सामने नाचने लगी |

कुछ देर बाद अमन ने मुझे किस कर दिया | मैंने उसका कोई विरोध नहीं किया | अमन को लगा की मुझे कुछ पता ही नहीं चल रहा है |

कुछ देर बाद अचानक अमन ने मुझे दोबारा किस कर दिया |

उससे अच्छा मौका मुझे नहीं मिल पाता, इसलिए मैं डाँस पार्टी से अमन का हाथ पकड़कर गलियारों से होते हुए सीढ़ियों द्वारा सेकेंड फ्लोर के रूम में उसे लेकर चली गई |

@BOOKHOUSE1

उस वक़्त शायद वो डरा हुआ था | रूम में पहुँचते ही मैंने दरवाज़ा बंद कर दिया और खिड़की खोलकर अमन की बाहों में समा गई| पूरे तीन साल बाद मुझे मेरा एकतरफ़ा वाला प्यार मिला था |

अमन को समझ में नहीं आ रहा था की मैं इतनी जल्दी उसकी बाहों में कैसे समा गई थी | वो लम्हा मेरे लिए एक मसीहा की तरह था, जो -आज भी जब मैं अपनी आँखें बंद करती हूँ तो वो पल ताज़ा हो जाता है |

फिर मैं सन 2008 मे जो बग़ावत हुआ था उसके बारे में अमन से पूछने लगी |

वो मेरी बातों पर यक़ीन ही नहीं कर रहा था, उसे लग रहा था कि मैं उससे -झूठ बोल रही हूँ | फिर मैंने उसे याद दिलाया की सन 2008 वाली बग़ावत में तुम किसी मरे हुए लड़के को अपनी गोद मे लेकर तेज़ - तेज़ रो रहे थे | फिर अमन को यक़ीन हो गया था कि मैं उसे थोड़ा बहुत जानती हूँ |

सन 2008 वाला पत्थर का बग़ावत अमन मुझे बता चुका था | उसकी माँ का सपना था कि अमन एल० एल० बी० की पढ़ाई करके अगले बग़ावत तक वक़ील बनकर अपने पिताजी का हिस्सा अपने चाचा (एजेंट) से कानून द्वारा दिला सके |

उस वक़्त मैं अमन को यह बताना उचित नहीं समझी की कॉलर काटने वाली लड़की दूसरी

कोई लड़की नहीं है बल्कि मैं ही हूँ

इस बात को मैं कुछ वक़्त के लिए अमन से छुपाना चाहती थी, क्योंकि वो मुझसे बहुत प्यार कर बैठा था, इस बात का मुझे अंदाज़ा लग चुका था | कहीं ऐसा न हो की वो मेरी वज़ह से अपनी पढ़ाई छोड़ दें |

राज़ की बात मैं अमन से छुपाई और उसके लिए मैं उस दिन से रिमसा नाम से उसकी गर्लफ्रेंड भी बनी रही तथा रिया नाम से उसके साथ दोस्ती निभाने लगी |

हम दोनों का प्यार रूह तक बढ़ता गया | आख़िर उसने वही गलती कर दिया जो मैं सोची थी प्यार के ख़ातिर उसने अपने एल० एल० बी० फर्स्ट ईयर की पढ़ाई छोड़ दिया |

मुझे शुरू में ही उस पर शक़ हो गया था, इसलिए मैं उसके सामने दो किरदार बनकर उसका सपोर्ट करती रही |

पार्लर जाना तो एक बहाना था वो भी उसके लिए | फिर मैं स्टेडियम ज्वाइन कर ली, ताकि वो अपना बेस्ट परफॉर्मेंस दे सके | अमन कभी - कभी मेरे दोनों रूपों पर शक़ करता था, पर मैं मैनेज़ कर लेती थी |

गर्लफ्रेंड के तौर पर मैं अमन से दूरी बना ली  और दोस्ती को करीबी से निभाकर मैं उसका साथ देती रही, ताकि वो कैसे भी करके अपनी माँ के सपने को पूरा कर सके, क्योंकि दो बार मैं उसकी माँ से भी मिल चुकी थी |

@BOOKHOUSE1

उस वक़्त अमन की माँ ने मुझसे अपने बेटे के ज़िंदगी से वक़ालत पूरी करने तक दूर रहने को गुहार लगाई थी |

मैं भी अमन से बहुत प्यार करती थी इसलिए मैं उससे दूरी बना ली, ताकि वो अपनी माँ के सपनों को पूरा कर सके |

न्यू सेशन (2013) का पढ़ाई स्टार्ट हो चुका था | अमन के लखनऊ जाने का वक़्त हो चुका था |

लखनऊ जाने से पहले वो मुझसे मिलना चाहता था, इसलिए मैं अपना फोन मौसी को दे दि थी क्योंकि अमन एक साल एल० एल० बी० फर्स्ट ईयर का पढ़ाई लखनऊ से छोड़कर चला आया था और सबके सामने उसने झूठ बोला था कि स्पोर्ट्स का सर्टिफिकेट ना होने की वज़ह से उसका एडमिशन कैंसिल हो गया है | ये बात मुझे तब पता चला जब मैं उसके साथ एक प्राइवेट हॉस्पिटल गई हुई थी और वहाँ मैं अमन का हेल्थ सर्टिफिकेट देख चुकी थी | जिसमे साफ - साफ ये लिखा था कि प्रार्थी की तबियत सीरियस हो गया था | जिस कारण प्रार्थी को अपना कॉलेज छोड़ना पड़ा |

मैं नहीं चाहती थी कि अमन अपने प्यार के चक्कर में अपना एल० एल० बी० का पढ़ाई

बीच में छोड़े | उसने मुझसे मिलने के लिए प्रिया के नंबर पर कॉल करके मुझे गोरखपुर के रीज़नल स्टेडियम वाली गली में बुलाया था | मैं अमन से मिलने के लिए फोन पर हामी भर दी |

प्रिया मेरी ख़ास सहेली थी, फिर भी वो मुझसे जलती थी | जिस वक़्त अमन मुझसे फोन पर बात कर रहा था, वो सारी बातें प्रिया के मोबाइल में रिकॉर्ड हो रहा था, मुझे थोड़ा भी पता नहीं चला | फिर प्रिया ने हम दोनों के मिलने की ख़बर अमन के चाचा (एजेंट) को बता दी |

जब गोरखपुर के रीज़नल स्टेडियम वाली गली में मैं अमन से बात कर रही थी, उसी वक़्त एजेंट वहाँ पुलिस लेकर आ गया |

एजेंट अमन को फँसाना चाहता था क्योंकि उसे पता चल चुका था की अमन एल० एल० बी० का पढ़ाई के लिए लखनऊ जा रहा है | पर जो इंस्पेक्टर अमन को अरेस्ट करने आया था, वो इंस्पेक्टर मुझे और अमन को पहचान रहा था | कुछ वक़्त पहले हम दोनों गुमशुदा बालक को लेकर पुलिस चौकी में गए थे, तो उसी इंस्पेक्टर ने रिपोर्ट दर्ज़ करवाया था अपने सिपाही से कहकर |

एजेंट के वहाँ से जाने के बाद मैं उस इंस्पेक्टर से अमन को छोड़ने के लिए बहुत रिक्वेस्ट की |

@BOOKHOUSE1

इंस्पेक्टर ने मुझे इशारा भी किया की उसके दोस्त को कुछ नहीं होगा | अमन को मैं हमेशा बोला करती थी की लखनऊ जाने से पहले रिया से ज़रूर मिल लेना| मुझे अच्छी तरह से पता था की अमन, रिया से ज़रूर मिलने आएगा | शाम के वक़्त अमन मेरे पास आया हुआ था |

मैं उसके हाथ में एक लेटर दि वो लेटर अमन वहीं खोलकर पढ़ना चाह रहा था, पर मैं उसे मना कर दि |

वो लेटर मैं इसलिए इतने क्रूर शब्दों में लिखी थी ताकि अमन का मेरे प्रति, उसके दिल से प्यार थोड़ा कम हो सके ताकि वो अपना एल० एल० बी० का पढ़ाई आराम से पूरा कर सके |

मैं उसके साथ किसी भी तरह के संपर्क से दूर थी, क्योंकि मुझे पता था की वो मुझे किस हद तक चाहता है | लेटर लेकर अमन मेरे घर से जा चुका था |

2013 जुलाई,

एक साल बाद वो अपना एल० एल० बी० फर्स्ट ईयर का पढ़ाई पूरा करके अपने घर आया

हुआ था | शाम के वक़्त वो मेरे पास आया था, अपनी रिमसा के बारे में पता लगाने के लि, क्योंकि उसे  तो पता था नहीं की रिमसा ही 'रिया' है | मुझसे अपनी रिमसा के बारे में पूछा करता था क्योंकि मैं ख़ुद रिया को मीडिएटर बनायी थी | जब वो शाम को आया था, तो मैं उसकी पढ़ाई के बारे में पूछने लगी | ऊपरी मन से अमन ठीक बता रहा था, पर उसे देखकर ऐसा लग रहा था की वाक़ई अपनी रिमसा के बिना वो अधूरा है |

उस वक़्त भी मैं उसे रिया और रिमसा वाली सीक्रेट बात बताना उचित नहीं समझी, क्योंकि उसके एल० एल० बी० का पढ़ाई अभी एक साल बाकी रह गया था |

वो बार-बार अपनी रिमसा के बारे में मुझसे पूछा रहा था | मैं जहाँ तक कोशिश करके रिमसा की बुराई करने में बिजी थी, ताकि अमन अपना एल० एल० बी० का पढ़ाई पूरी कर सके | मेरे सामने वो चुप-चाप बैठा था |

"गोरखपुर कब तक रुकने वाले हो?" मैं अमन से पूछी  |

"सिर्फ़ आज रात के लिए गोरखपुर में हूँ", बोलते हुए अमन जाने के लिए खड़ा हो गया | मैं भी अमन के लिए बेचैन रहा करती थी, पर मैं उसकी माँ के सपने को पूरा कराना चाहती थी | मैं तुरंत अमन के तरफ़ आगे बढ़ते हुए उसे गले लगा ली, क्योंकि अमन फिर एक साल के लिए लखनऊ जाने वाला था | मुझे उस पल बहुत अज़ीब लग रहा था |

मेरे दिमाग़ में उस वक़्त यह बात आ रही थी कि मैं अमन को सच्चाई बता दूँ की मैं ही उसकी "रिमसा" हूँ जोकि वो मुझे 'रिया' समझता है | पर मैं ऐसा नहीं की, क्योंकि उसे पता चल जाता तो किसी भी क़ीमत पर वो अपने पढ़ाई के लिए लखनऊ नहीं जा पाता | उसके जाने से पहले मैं उसके गाल पर किस कर दि |

अमन ने तुरंत मुझे गाल पर एक चाँटा मारते हुए धक्का दे दिया, क्योंकि अमन को यह पता नहीं था की जिसको वो चाँटा मारा है वही उसकी "रिमसा" है | पर उसने तो मुझे रिया समझकर चाँटा मारा था |

उसके चाँटा मारने के बाद मैं चुपचाप खड़ी होकर उसे देखती रही | फिर वो मेरे सामने से "सॉरी" बोलता हुआ मेरे रूम से चला गया |

उसके लखनऊ जाने के बाद मैं चड्ढा की लड़की रूपा को फोन करके अमन का ख़बर ले लिया करती थी | उसी बीच एजेंट को यह पता चल गया था की मुझे रूपा के माध्यम से अमन के बारे में जानकारी है, तो उसी बीच एजेंट ने मुझ पर बहुत प्रेशर बनाया की मैं अमन का पता उसे बता दूँ |

मैं अमन का पता एजेंट को नहीं बताना चाहती थी क्योंकि मुझे पता था कि एजेंट 'अमन' की पढ़ाई में दख़लअंदाज़ी करेगा | एजेंट ने मेरे मौसा जी को मरवा दिया और फिर मौसी को मारने की धमकी मुझे देने लगा | फिर मुझे मज़बूर होकर रूपा के पास फोन करना पड़ा |

उस वक़्त मेरी आवाज़ कम साँसें अधिक निकल रही थी | मैं जब भी रूपा के पास कॉल

करती थी मेरे बोलने के बाद ही रूपा 'अमन' के बारे में बताया करती थी | उस दिन मेरे फोन का लाउडस्पीकर ऑन था और एजेंट सारी बातें सुन रहा था |

जब रूपा ने फोन उठाया तो, मैं अमन के बारे में पूछने लगी | लेकिन रूपा कोई जवाब नही दे रही थी अचानक उस वक़्त अमन का आवाज़ आया |

"रिमसा, मैं लापता नहीं हूँ", फिर कॉल डिसकनेक्ट हो गया |

अमन का आवाज़ फोन पर एजेंट सुन चुका था | उस वक़्त मैं बहुत घबरा गई थी यह सोचकर की अमन पर मेरी वज़ह से आफत आने वाली है | फिर मैं उसके बाद से सेवई बाज़ार के चौराहे वाले मंदिर पर भगवान की भक्ति में लग गई और अमन के सहायता के लिए मैं ईश्वर से प्रार्थना करने लगी |

◆ ◆ ◆

@BOOKHOUSE1

होटल में मेरे द्वारा दिए गये डायरी को पढ़ने के बाद अमन जोर - जोर से रो रहा था और बच्चो की तरह चिल्ला रहा था | शांत कराने के बावज़ूद भी वो चुप नहीं हो रहा था | मेरे पास से जाने से पहले अमन ने मुझे अपने घर का एड्रेस दिया | एक कागज़ पर लिखते हुये और मुझसे अपने घर आने का निवेदन किया | -- सन 2016 के बग़ावत के दिन, फिर वो जल्दीबाज़ी में रोता हुआ मेरे रूम से चला गया |

◆ ◆ ◆

# गोरखपुर, सेवई गावं

## अमन श्रीनेत का हवेली”

@BOOKHOUSE1

अपना डिप्लोमा पूरा करने के बाद मैं गोरखपुर शास्त्री चौक से होते हुए एन० एच०-29 के रास्ते “सेवई बाज़ार” अमन श्रीनेत के घर पहुँच चुका था | अगर मैं गलती नहीं कर रहा था तो बिल्कुल सही ज़गह पर खड़ा था |

मैं खड़ा होकर एक बड़ी हवेली को देख रहा था अचानक मेरे पीछे से आवाज़ आई |

“आप किसे ढूँढ़ रहे हैं?” एक शादीशुदा जवान महिला ने पूछा उसने सलवार सूट पहन रखा था |

“जी! मुझे ‘अमन श्रीनेत जी’ से मिलना है”, मैंने कहा |

“आप अंदर आ जाइए, मैं उन्हें बोलती हूँ”, उस जवान शादीशुदा लड़की के साथ में हवेली के अंदर चला गया | अंदर जाने के बाद उसने मुझे रूम में बैठने को कहा |

मैं जिस रुम में बैठा था उसके बगल वाले रूम से कुछ वृद्ध महिलाओं के कराहने की आवाज़ आ रही थी | ऐसा लग रहा था की रूम के अंदर कोई वृद्धाश्रम खुला हुआ है | तभी अमन के साथ सलवार सूट वाली महिला रूम में दाख़िल हुए |

अमन मेरे तरफ़ दौड़ता हुआ आया और मुझे गले लगा लिया | उस वक़्त अमन बहुत ख़ुश था | उसके बगल में खड़ी शादीशुदा महिला के बारे में उसने मेरे पूछने से पहले ही बता दिया की वो मेरी पत्नी है |

"रिमसा या रिया?" मैंने पूछा |

"आप दोनों ही समझ लीजिए", अमन ने मुस्कुराते हुए कहा | तभी एक नन्हे बालक के साथ दो बूढ़ी महिला तथा एक पुरुष रुप में दाख़िल हुए | मैं समझ गया कि वो लोग अमन के माता पिता होंगे |

एक बूढी महिला की तरफ़ अमन ने इशारा करते हुए बोला -"इनका नाम 'नीरू' है | दिल्ली में इनका आलिशान बंगला है |

इन्हीं के पास हॉस्पिटल होम केयर सर्विस का जॉब मैं करता था, पर ये मुझे अपने बेटे की तरह मानती थी | दिल्ली के 'द न्यू अशोका होटल' के रूम में बार बार इन्हीं के कहने पर मैं अपने डायरी को रखा करता था |"

"अच्छा! तो दो सौ से अधिक किताबें पढ़ने वाली यही 'नीरू' जी है",|

"जी बिल्कुल, आप ठीक पकड़े", अमन ने कहा |

उस शानदार हवेली के एक रूम में बालक को छोड़कर छः लोग बैठकर आपस में बातचीत करने लगे |

@BOOKHOUSE1

"आपने हमारे घर आने में इतनी देर क्यों कर दी? अमन आपका हमेशा चर्चा करता-रहता है", अमन की पत्नी ने कहा |

"दिल्ली के होटल में आपके लिए ये पागल हो गया था | वैसे आप लोगो का घर बहुत अच्छा है", मैंने कहा |

"आपने मेरे घर आने में देरी कर दी है | देखिये ये बच्चा बड़ा होने लगा है", अमन ने कहा |

"मैं आ तो गया ना | यह बच्चा किसका है?" मैंने पूछा |

"हम लोगो का है", अमन की पत्नी ने कहा |

"हम लोगों का?" कहते हुए मैंने बात को दोहराया दिया |

अमन और उसकी पत्नी के अलावा, उसके माँ-बाप, मैं तथा दिल्ली वाली नीरू जी हँसने लगे |

मैंने नन्हें बालक को अपनी गोद में बैठा लिया |

"दिल्ली के होटल से जाने के बाद क्या हुआ? तुम बताना चाहोगे", मैंने कहा |

अमन ने हामी भर दी |

"लेकिन अब रोना मत", |

“अब तो बिल्कुल नहीं रोऊँगा ‘सर’”, अमन ने कहा |

“सुनाओ फिर”|

“कहाँ से शुरू करें”, अमन ने कहा |

“रिमसा या रिया का डायरी पढ़ने के बाद तुम पागलों की तरह चिल्ला रहे थे और बच्चों की तरह रो रहे थे”, वहीं से शुरू हो जाओ |

“सर प्लीज़”, उसने कहा |

“रियली! सॉरी”, |

लम्बी साँस लेते हुए अमन बोलना शुरू किया |

@BOOKHOUSE1

◆ ◆ ◆

# अमन श्रीनेत निकल पड़ा खोज में

“आपके द्वारा दी गई डायरी पढ़ने के बाद मेरा प्यार रिमसा के प्रति और बढ़ गया था, क्योंकि मुझे  पता चल चुका था की रिमसा और रिया दोनों ही मेरे प्यार का नाम है | रिमसा मुझे कामयाब बनाने के लिए मेरे सामने दो किरदार निभा रही थी पर मैं उस वक्त समझ नही पाया था |

मैं दिल्ली होटल से दौड़ता हुआ ‘नीरू’ जी के घर पहुँचा | जहाँ मुझे हॉस्पिटल होम केयर सर्विस का जॉब मिला था, ‘नीरू’ जी की देखरेख करने के लिए |

“इतना हाँफ क्यों रहे हो?” बुढ़िया ने पूछा |

@BOOKHOUSE1

बुढ़िया के साथ मैं हवेली के अंदर चला गया | अंदर जाने के बाद लॉकर से एक किताब निकालकर उसे दिखाया, तो बुढ़िया समझ गई थी की मैं कहना क्या चाहता हूँ |

“अच्छा, तुम्हारी माँ के सपनों को पूरा कराने के लिए रिमसा तुम पर बोझ ना बनकर, वो तुमसे दूर चली गई थी” बुढ़िया ने मुस्कुराते हुए कहा |

मैंने परम के ऑफिस में कॉल किया |

“कैसे हो?”|

“वह बैग कहाँ है जो रूपा  बालकनी के  खिड़की पर फेंकी थी?” मैंने पूछा |

“वह बैग वहीं खिड़की पर ही पड़ा हुआ है”, परम ने कहा |

“उस बैग को लेकर जल्दी आ जाओ”, |

उस वक़्त मैं बहुत घबराया हुआ था |

“तुम इतने जल्दी में क्यों हो?” परम ने पूछा |

“एड्रेस सेंड कर रहा हूँ, जल्दी आ जाओ”, बोलते हुए मैंने कॉल कट कर दिया और मैं दिल्ली का एड्रेस परम को मैसेज़ कर दिया |

मेरे बेचैनी को देखकर बुढ़िया भी हैरान थी |

“धीरज रखो बेटा, थोड़ा धीरज रखो”, उस बुढ़िया ने कहा |

अगले सुबह  परम आ गया | दरवाज़ा किसने खोला था यह याद नहीं है पर परम को देखकर मैं उसकी तरफ़ दौड़ा | उसके ख़ातिरदारी करने की ज़गह मैं बैंग के बारे में पूछने लगा | परम अपने पीठ से बैग उतारते हुए मुझे दे दिया |

लखनऊ से दिल्ली तक का सफ़र करके परम आया हुआ था, मुझे उसका हाल चाल पूछना चाहिए, पर मेरा दिमाग़ बैग में रखे हुए फोटो पर था |

बैग का चैन खोलते हुए मैं फोटो निकालकर देखने लगा | उस फोटो को मैं लखनऊ भी देखा था, पर दूर से | परम ने बताया था की यह फोटो मैच वाले ग्राऊंड से मिला था | मैं उस वक़्त फोटो को लेकर सीरियस इसलिए नहीं हुआ, क्योंकि ग्राऊंड के पास वाला घर रिया का था |

मैंने रिया का फोटो समझकर नहीं देखा था, पर उस फोटो को रूपा ने  मेरी गर्लफ्रेंड का फोटो समझकर ही बालकनी के खिड़की पर बैग सहित फेंक दि थी |

रिमसा और रिया के बारे मे मुझे पता चल चुका था | मैं उस फोटो को बडे ध्यान से देख रहा था | वह फोटो राणा की शादी के दिन का था | राणा के शादी में मैं और परम गए हुए थे | मुझे रिमसा वहीं मिली थी |

@BOOKHOUSE1

एक फोटो में रिमसा के साथ वॉचमैन भी खड़ था, जो रिया के घर के सामने खड़ा रहता था | उस फोटो को देखकर सौ टका कंफर्म हो गया था की रिमसा मेरे माँ के सपने को पूरा कराने के लिए मेरा साथ दे रही थी |

मैं उस लड़की को समझ नहीं पाया था की वो मुझे कितना चाहती थी | रिमसा वाक़ई प्रशंसा करने लायक थी क्योंकि वो रिमसा नाम से मेरी गर्लफ्रेंड बनी रही है और रिया बनकर मुझसे दोस्ती भी निभाती रही |

“किसकी फोटो इतने ध्यान से देख रहे हो?” बुढ़िया ने पूछा |

बुढ़िया के हाथ में फोटो देते हुए कहा- “अपनी वाली की फोटो देख रहा हूँ |”

“हाय ला, यह तो चाँद जैसी है”, फोटो को देखते हुए बुढ़िया ने कहा |

“सच्ची”,|

“भाभी मिल गईं क्या?” परम ने पूछा |

“रिमसा ही रिया थी | वो यह नहीं चाहती थी की उसकी वज़ह से मेरे माँ के सपने अधूरे रह जाएँ”, | अपना मुँह खोलकर परम चौंक गया |

“यह देखो रिया के घर का चौकीदार रिमसा के साथ खड़ा है |”

राणा के शादी का फोटो परम बड़े ध्यान से देखते हुए बोला-  “बाप रे भाभी तो

मास्टरमाइंड निकली" |

मैं एक भी सेकंड दिल्ली में नहीं रहना चाहता था | घर लौटने के लिए मैं बेताब हो गया था | मैं जब वहाँ से निकलने वाला था तभी बुढ़िया सिसकने लगी | उसके साथ रहने से उसे मुझसे लगाव हो गया था |

वो बुढ़िया मुझे रोकना चाहती थी पर मेरे बेचैनी को देखकर वो मुझे वहाँ रुकने के लिए नहीं बोली | बेड से उतरकर अपने मोबाइल से बात करके किसी को जल्दी आने के लिए बोली | फिर मुझे और परम को दरवाज़े तक छोड़ने आई | दरवाज़े के सामने एक नई रेंज रोवर गाड़ी लगी हुई थी |

गाड़ी की ओर से एक आदमी आया और मेरे पास खड़ी बुढ़िया को रिंग सहित चाबी दे दिया | मैं वहाँ से जाने के लिए बुढ़िया के पैर को स्पर्श किया, क्योंकि उसी के कारण मुझे अपने प्यार का पता चल पाया था |

उसने अपना हाथ मेरे सिर पर रखकर आशीर्वाद देते हुए कहा "रिमसा को एक बार मेरे पास ज़रुर लाना बेटा |" कहते हुए बुढ़िया रोने लगी थी |

"आप कृपया चुप हो जाइए", मैंने कहा |

चाबी वाला गुच्छा मेरे हाथ में रखते हुए सामने खड़ी गाड़ी की तरफ़ इशारा करते हुए बुढ़िया ने कहा- "यह गाड़ी मेरे प्यार की निशानी है | मैं इसे संभाल के रखी थी | अब मैं इस गाड़ी को तुम्हें दे रहीं हूँ | मेरे बच्चे संभल के घर जाना |",

चाबी लेकर मैं और परम गाड़ी में बैठ चुके थे | घर के अंदर जाते हुये बुढ़िया ने एक भी बार पीछे मुड़कर नही देखा | वो सीधे अपने महल में चली गई | मैंने अंदाज़ा लगा लिया की वो रो ही रही होगी |

उस वक़्त परम बहुत ख़ुश था | ऐसा लग रहा था की वो पहली बार किसी लक्ज़री गाड़ी में बैठा है | दिल्ली से गाड़ी ड्राइव करते हुए हम जल्दी लखनऊ पहुँच गये | मैं दिल्ली से डायरेक्ट गोरखपुर जाना चाहता था, पर परम ने दोस्ती की कसम दिलाकर मुझे रूपा वाले फ्लैट पर चलने को कहा |

रूपा की बीएमडब्लू पार्किंग में लगी हुई थी | दरवाज़े की बेल मैं जल्दी-जल्दी बजाने लगा | अंदर से दरवाज़ा खोलते हुए रूपा ने चिल्लाया "बार-बार बेल क्यों बजा रहे हो?"

उसके सामने मैं और परम खड़े थे | मुझे और परम को अपने सामने देखकर रूपा चौंक गई |

"अरे ! अमन तुम!" रुपा ने चौंकते हुए कहा |

"गेम शुरू हो गया है सिर्फ़ हार जीत बाकी है", मैंने कहा |

"इतने दिनों बाद मिले हो, रूम में चलो", रूपा ने कहा |

ना चाहते हुए भी मुझे रूम में जाना पड़ा | मेरे पास परम, रूपा बैठे हुए थे, तभी रूम में गुगु भी आ गई | वो अपने हाथ में फॉरेन ब्रांड के साथ - साथ चिल्ड वाटर भी लाई हुई थी |

@BOOKHOUSE1

महीनों बाद विदेशी शराब मुझे देखने को मिला था, पर मैं जल्द से जल्द अपने घर लौटना चाहता था ताकि वहाँ से मैं रिमसा का पता कर सकूँ | रूपा पटियाला पैग बना चुकी थी, पर मैं पीने को तैयार नहीं था |

मेरे ना पीने का मतलब रूपा नहीं समझ पा रही थी, पर उसे इतना पता चल गया था कि मैं जल्द से जल्द लखनऊ से रवाना होना चाहता हूँ |

"अकेले जाकर तुम क्या कर लोगे एजेंट का?" रूपा ने पूछा |

"मैं रिमसा के लिए जा रहा हूँ", |

"एक काम करो, तुम इंजीनियर बनकर चले जाओ | जिस हवेली को बनाने के लिए मेरे पापा ने एजेंट को देने के लिए कहा था | तुम्हारे वहाँ जाते ही मैं सब मैनेज कर लूँगी", रूपा ने कहा |

"आयडिया सही है", परम ने कहा |

रूपा की बात मुझे अच्छी लगी क्योंकि तीन साल बाद मैं अपने गाँव जाने वाला था | मैं अपने आपको थोड़ा सा मॉडिफाई कर लेना चाहता था, ताकि मुझे कोई आसानी से पहचान ना सके |

"इतना सोच क्या रहे हो? जाम तो लड़ा लो", रूपा ने कहा |

मैंने दारू का गिलास उठाया और पीने लगा, दो पैग मैं लगा चुका था | उन सभी के सामने मैं नशे में होने का एक्टिंग करने लगा |

@BOOKHOUSE1

"दो ही पैग में इतना चढ़ गया", गुगु ने कहा |

"महीनों बाद पीने को मिला है, इसलिए जल्दी चढ़ गया है", मैंने कहा |

रुपा के साथ मैं जब भी पीता था, नशा कम होने के बावज़ूद नाटक अधिक करता था | उस वक़्त मुझे जो भी कहना होता था, मैं कह दिया करता था |

वो पल लखनऊ में मेरा आखिरी पल था | इसके बाद मैं यहाँ कब आऊँगा इसकी कोई गारंटी नहीं था |

"तुमने अभी तक शादी क्यों नहीं की?" रूपा की तरफ़ मैंने देखते हुए पूछा |

जिसे ढूँढ़ रही हूँ, अभी तक वो मुझे मिला ही नहीं | तुमने भी तो शादी नहीं की रूपा", ने कहा |

"मैं घर इसीलिये ही जा रहा हूँ", मैंने कहा |

"वाह! तुम्हारी शादी कब है?" रूपा ने पूछा |

"आपकी उपस्थिति में ही होगा मेरा शादी और इस बार के बग़ावत में तुम अपने राजकुमार से ज़रूर मिलोगी", मैंने कहा |

रुपा मेरे बातों को सुनकर हँस रही थी | मैं जब भी रुपा के साथ दारु पीने के लिए बैठा करता था, वो अपने राजकुमार के बारे में ज़रुर चर्चा किया करती थी और उसी राजकुमार के चक्कर में रूपा ने शादी नहीं की थी |

“रूपा,तुम मेरा एक काम कर सकती हो?” |

“तुम्हारी गर्लफ्रेंड से मिलाने के अलावा कोई भी कार्य कर सकती हूँ”, रूपा ने कहा |

“मेरा एल० एल० बी० सेकेंड ईयर का रिज़ल्ट कॉलेज से मंगवा देना सुबह तक | मैं और परम गोरखपुर जाने वाले है”,|

“इतना छोटा सा काम”, रुपा कहते हुए रूम से बाहर चली गई |

मैं बिस्तर पर लेटा रहा और सुबह होने का इंतज़ार कर रहा था ताकि जल्द से जल्द मैं अपने घर पहुँचकर रिमसा का पता लगा सकूँ | परम खर्राटे भरी नींद ले रहा था | सुबह की लाली से पहले मैं फ्रेश होकर रेडी था |

तभी मेरे एल० एल० बी० सेकेंड ईयर रिज़ल्ट के साथ सारा डॉक्यूमेंट रूपा ने मुझे दे दिया |

“थैंक्स बोलना मना है”, रूपा ने मुस्कुराते हुये कहा |

फ्लैट से बाहर निकलकर गाड़ी तक छोड़ने के लिए रूपा और गुगु साथ में आये हुये थे |

“बग़ावत में तो आओगी ही अपने राजकुमार के लिए”, मैं रूपा के तरफ देखते हुये कहा |

“तुम्हारे कहने पर मैं विश्वास कर चुकी हूँ और इस बार गोरखपुर जल्दी आऊँगी”, रूपा ने कहा |

गाड़ी के अगली सीट पर मैं और परम बैठ चुके थे | पीछे का दरवाज़ा खोलकर गुगु भी बैठ गई |

मैंने गुगु का विरोध इसलिए नहीं किया क्योंकि मुझे लगा की आगे चलकर गुगु रेंज रोवर से उतर जाएगी |

रुपा को बाय करते हुए मैं गाड़ी को ड्राइव करने लगा | शहीद पथ होते हुए फैज़ाबाद वाले रोड के तरफ़ आगे बढ़ने लगे | मैं गाड़ी धीरे ही चला रहा था |

“इतना धीरे क्यों चल रहे हो? क्या तुम्हें पता नहीं है की ये गाड़ी लक्ज़री है?” गुगु ने पूछा |

उसकी बातों से मैं समझ गया कि हम दोनों के साथ गोरखपुर गुगु भी चल रही है | अच्छी गाड़ी और अच्छे रोड का फ़ायदा उठाते हुए, मैं सौ किलोमीटर मीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से गाड़ी ड्राइव करने लगा | गुगु के साथ होने से परम बहुत ख़ुश था |

बेचारा परम अभी तक गुगु को अपने बस में नहीं कर पाया था | ढाई साल में दर्जनों लड़कियां सेट की जा सकती हैं पर परम से एक गुगु नहीं सेट हो पाई थी, कितने दुर्भाग्य की

@BOOKHOUSE1

बात है | तकरीबन चार घंटे से पहले हम गोरखपुर-लखनऊ वाले हाईवे तक पहुँच चुके थे |

गोरखपुर-लखनऊ वाले हाईवे से टर्न होते ही परम को सूसू लग गई | फिर मैं गोरखपुर-देवरिया वाले रोड के किनारे गाड़ी रोक दिया | एक तरफ़ की रोड चौरी-चौरा होते हुए देवरिया जिला होते हुए बिहार तक चली जाती है |

चौरी-चौरा से एक बात मैं आपको बताना चाहूँगा, जो की इतिहास के पन्नों में भी दर्ज़ है | जब हम अँग्रेज़ों के गुलाम थे, तो अँग्रेज़ों के विरुद्ध हमारे देश के वीरों ने भारत की आज़ादी के लिए चौरी-चौरा की पुलिस चौकी में आग लगा दिए थे, अँग्रेज़ों का विरोध करते हुए पर उन ज़ालिमों ने भारत के तीन जवानों को दिन में ही फांसी पर चढ़ा दिया | भारत के उन तीन शहीद जवानों की याद में चौरी-चौरा स्टेशन के नार्थ साइड में भारत सरकार ने उनके नाम से म्यूज़ियम बनावाया है |

गोरखपुर शहर के तरफ़ मैं गाड़ी ड्राइव करने लगा | शास्त्री चौक पार करते हुए एन० एच०-29 रोड से होते हम अपने गाँव "सेवई" पहुँच चुके थे | अपने घर से पहले ही मैंने गाड़ी रोक दिया | उस वक़्त शाम के 07:00 बज रहे थे | अपने घर में आराम से अपने कदमों को रखते हुए मैं अंदर जाने लगा |

"बेटा कैसे हो?" माँ ने पूछा |

"आपने अंधेरे में मुझे कैसे पहचान लिया?" मैंने कहा |

"मैं तुम्हारी माँ हूँ", |

"किसी को पता नहीं चलना चाहिए की मैं आपका बेटा हूँ, क्योंकि एजेंट की बेईमानी इस बार नहीं चलेगी |" अपना बैग माँ को देकर मैं वापस चला आया, जहाँ परम और गुगु गाड़ी में बैठकर मेरा इंतज़ार कर रहे थे |

एजेंट को देने के लिए जो हवेली चड्ढा जी बनवा रहे थे, उस हवेली में हम तीनों पहुँच चुके थे | हम तीनों को उस हवेली में जाने से किसी ने रोका नहीं था क्योंकि उस वक़्त हम लक्ज़री गाड़ी से गए हुए थे और प्रोफेशनल भी दिख रहे थे | कैसे भी करके रात का वक्त हवेली में तीनों लोगों ने व्यतीत किया |

परम और गुगु आराम से नींद का मज़ा ले रहे थे | मेरा तो नींद उड़ गया था | सुबह के वक़्त मुझे नींद आ रहा था क्योंकि रात भर मैं सोया नहीं था | अपनी आँखें धो-धोकर नींद की मार से मैं बचने की कोशिश कर रहा था क्योंकि सुबह मुझे रिमसा का पता लगाने के लिए उसके पार्लर जाना था |

सुबह हो चूका था, मुझे लघुशंका लगा हुआ था, फिर मैं छत पर एक कोने में खड़ा होकर सुसु करने लगा | सीढ़ियों द्वारा छत से उतरकर अभी नीचे आ ही रहा था तभी बाहर से किसी के शोर करने की आवाज़ आई |

@BOOKHOUSE1

मैं झट से नीचे उतरा फिर गेट पर देखा तो एजेंट फूल लेकर खड़ा था और अपने सिर पर हाथ फेरता हुआ चिल्ला रहा था |

“क्या हुआ?” मैंने पूछा |

“ऊपर से किसी ने पानी गिरा दिया है”, एजेंट ने चिलाते हुये कहा |

एजेंट का बात सुनकर मैं हँसने लगा क्योंकि जो पानी मैं कोने में खड़े होकर गिराया था, वही पानी एजेंट के ऊपर गिरेगा अगर मुझे पहले पता होता तो मैं थोड़ा और पानी गिरा दिया होता |

“हँसना बंद करो | तुम हवेली के अंदर क्या कर रहे थे?” एजेंट ने अपने सिर से पानी झाड़ते हुए कहा |

“मैं इंजीनियर हूँ | लखनऊ से मुझे भेजा गया है”, मैंने कहा |

“इंजीनियर साहब, आप तो सुबह आने वाले थे”, एजेंट ने कहा |

“शुभ कार्यों में मैं देरी नहीं करता”, |

“आपको मैंने लखनऊ में कहीं देखा है”, एजेंट ने कहा |

“मैं वहीं का रहने वाला हूँ”, |

“आपके जैसा मेरा एक भतीजा भी है”, एजेंट मेरे तरफ गौर से देखते हुये कहा |

“मेरे जगह उसे फाँसी हो गई”, मैं एजेंट के कान में धीरे से कहा |

“मेरे इलाके में आपका स्वागत है”, एजेंट मेरे पीठ पर अपने एक हाथ से थप थपाते हुये मुझे माला पहनाने की कोशिस किया |

उसके हाथों से फूल का माला खींचकर मैंने उसे पहनाते हुए कहा – “इलाका किसी का भी हो धमाका मेरा ही होता है |”

“अमन (मेरे भतीजे) को फाँसी पर चढ़वाकर तुमने मेरा बहुत बड़ा काम किया है, इसलिए मैं तुमसे दुश्मनी नहीं, दोस्ती करना चाहता हूँ”, एजेंट कहता हुआ वहाँ से चला गया |

लखनऊ में जब एजेंट ने मुझे एक दफ़ा देखा था, उस वक़्त मेरे द्वारा की गई एक्टिंग काम आ गई थी | उसे पूरा यक़ीन हो गया था की मैं लखनऊ का ही रहने वाला हूँ |

मैंने उसकी गलतफ़हमी का फ़ायदा उठाना शुरू कर दिया | उसे विश्वास हो गया था कि मैं अमन (उसका भतीजा) नहीं हूँ बल्कि लखनऊ का रहने वाला कोई इंजीनियर हूँ |

मेरा एक्टिंग इतना परफेक्ट काम कर जायेगा मुझे पता भी नहीं था | एजेंट के दिमाग़ में यह फिट हो गया था की अमन सचमुच इस दुनिया में नहीं है, इसलिए वो मुझे लखनऊ का इंजीनियर समझकर मुझसे दोस्ती करने के पक्ष में था |

सुबह के 09:30 हो रहे थे | मैं, गुगु और परम गाड़ी से रिमसा के पार्लर पहुँच चुके थे |

@BOOKHOUSE1

पार्लर के सामने गुगु को छोड़कर मैं और परम शास्त्री चौक वाले दुकान के पास पहुँच चुके थे, जिस दुकान से रिमसा किताबें खरीदा करती थी |

रिमसा का फोटो दिखाकर मैं दुकानदार से पूछने पर उसने बताया की पिछले तीन सालों से यह मैडम नहीं आई है हमारी दुकान से किताब लेने |

वहाँ के आस-पास के सारे बुक स्टॉल्स पर हम दोनों ने अलग-अलग पता किया पर कोई दूकान वाला रिमसा के बारे में कुछ बता ना सका | दुकान से पता करने के बाद हम पार्लर पहुँचे, जहाँ गुगु को छोड़कर गये हुये थे |

गुगु अपना मुँह सिकुड़ाते हुए ना का इशारा करते हुए बोली- "पिछले तीन सालों में रिमसा एक बार भी इस पार्लर में नहीं आई थी |

मुझे नाकाम होकर हवेली लौटना पड़ा | ज़ाहिर सी बात थी की रिमसा के गायब होने से रिया का भी कुछ अता पता नहीं था | मैंने सोच लिया था रिमसा मेरे सामने रिया भी बनकर आई तो भी मैं उसे जोर से दो - तीन चाँटे ज़रुर लगाऊँगा |

हवेली का कार्य पूर्ण रूप से पूरा हो चुका था | मैं हवेली के रूम में लगे पंखे को देख रहा था, तभी परम ने मुझे फोन करके सेवई बाज़ार वाले मंदिर पर तत्काल बुलाया पर उस वक़्त मैं रिमसा के वियोग में डूबा हुआ था |

कुछ देर बाद परम हाँफता हुआ हवेली पर आया |

@BOOKHOUSE1

"मंदिर में रिमसा दिखी थी", परम ने कहा |

" सच कह रहे हो?" |

"मंदिर में जाते हुए मैंने अपने आँखों से देखा है", परम ने कहा |

"चलो फिर देखते हैं", तेज़ी से कहते हुए मैं अपनी ज़गह पर खड़ा हो गया जाने के लिये |

"रिमसा मंदिर से जा चुकी होगी, तुम्हें उसी वक़्त आना चाहिए था", परम ने कहा |

मैं परम के बुलाने पर भी वहाँ ना जाकर पछता रहा था |

अगले दिन शाम को मैं,परम और गुगु उसी मंदिर के पास गए हुए थे, जहाँ परम ने रिमसा को देखा था | गाँव होने के कारण बहुत से लोग धूप समाप्त होने के बाद खेतों में अपने अपने गाय, भैंस तथा बकरियों को चरा रहे थे |

शहर की रहने वाली गुगु उन्हें देखकर ऐसे चहक रही थी, जैसे मानो उसने शेर को देख लिया हो | हमारे लिए तो यह सब आम बात था | एक बार गुगु सांप देखकर मुझे और परम को चिल्लाते हुए बुलाने लगी |

जब हम दोनों उसके पास पहुँचे तो साँप वहाँ से जा चुका था | मैं और परम ने गुगु का मज़ाक उड़ा दिया क्योंकि गुगु साँप को दिखा ना सकी | मंदिर में आने जाने वाली सारी महिलाओं पर मेरे ध्यान केंद्रित था | तभी गुगु ने फिर चिल्लाते से हुए मुझे बुलाया |

मैं, गुगु के पास जानबूझकर नहीं गया क्योंकि मुझे लगा की पिछली बार की तरह उसे कोई छोटा मोटा जानवर दिखा होगा, जिसके कारण वो चिल्ला रही होगी |

एक कोने से परम तथा दूसरे कोने से मैं, मंदिर में आने जाने वाली महिलाओं पर ध्यान टिकाए हुए थे |

अचानक गुगु और परम मेरे सामने आकर खड़े हो गये |

"मेरे बुलाने पर तुम आए क्यों नहीं?" गुगु मेरे तरफ गुस्साते हुये बोली पूछा |

"हम यहाँ रिमसा को देखने आए हैं, साँप देखने नहीं", |

"रिमसा को देखकर ही मैं चिल्लाया थी",|

उसकी बात सुनकर मुझे साँप सूंघ गया | मेरा आवाज़ ही नहीं निकल रहा था |

"टेंशन मत लो सही वक़्त आने पर "तुम्हारी रिमसा" तुम्हारे पास लौट आएगी | ऐसा रिमसा ख़ुद बोली है मुझसे", गुगु ने कहा |

"सचमुच रिमसा तुमसे मिलकर बात की है?" मैंने कहा |

"हाँ, |

उस वक़्त गुगु की हालत बहुत ही नाज़ुक लग रही थी, क्योंकि गुगु भी मेरे चाहत का शिकार हो चुकी थी, पर मैं उसे दोस्त के अलावा और किसी रूप में हासिल नहीं था और यह ज़ाहिर सी बात है की कोई भी लड़की अपने बॉयफ्रेंड को दूसरी लड़की से बात करते हुए या मिलते हुए नहीं देखना चाहेगी |

बायचाँस अगर ऐसा हो गया तो लड़की के दिल पर क्या गुज़रेगी | वह तो आप भी अंदाज़ा लगा सकते हैं | फिर भी गुगु हर हाल में मेरा साथ देने को तैयार थी |

अचानक वहाँ एजेंट आ गया | "अरे! इंजीनियर साहब आप यहाँ क्या कर रहे हैं?" एजेंट ने पूछा |

"पूजा करने के लिये", मैंने कहा |

"भगवान के अलावा और कुछ चाहिए तो मुझसे भी माँग लेना मैं भी तुम्हारी पूर्ति कर दूँगा", एजेंट ने कहा |

"ऊपर वाले ने मुझे सब कुछ दिया है और जो मुझे चाहिए वो तेरा बाप भी मुझे नहीं दे पाएगा", मैंने कहा |

मेरे बातों से एजेंट नाराज़ हो गया पर उसके चेहरे पर मुस्कान देखकर लगा की वो जबरदस्ती दिखावा कर रहा है |

"बड़े से बड़ो को डुबाया है मैंने", एजेंट ने कहा |

"मुझे डूबना ही पसंद है पर दबना बिल्कुल नहीं", मैंने एजेंट के कान में कहा |

एजेंट मुझे शाबाशी देते हुए मंदिर के पास से चला गया | उस वक़्त एक बात तय हो चूका था की रिमसा मुझे पहचान चुकी थी |

रिमसा को मेरे सामने ना आने के दो ही कारण लग रहे थे | पहला, एजेंट की उपस्थिति में वो मेरे सामने नहीं आना चाहती थी और दूसरा, वो मुझसे छिपकर एजेंट के विरुद्ध कोई जाल बिछा रही थी, ऐसा मुझे आभास हो रहा था |

“एजेंट, तुम्हें पहचान नहीं पाया”, परम ने हँसते हुए कहा |

“पहचान जाएगा कुछ ही पलों की बात है”, |

मंदिर के चारों तरफ़ सन्नाटा छाया हुआ था | नाकाम होकर हमें हवेली लौटना पड़ा | बग़ावत का वक़्त आ चुका था | एजेंट के घर बहुत लोगों का आना जाना लगा हुआ था | इतना हलचल तो शायद किसी की शादी में भी नहीं होता होगा, जितना लोगों का जोर शोर एजेंट के घर के करीब लगा हुआ था |

चड्ढा सर के साथ उनके भी लोग आ चुके थे पर रूपा कहीं दिखाई नहीं पड़ रही थी |

मैं हवेली की अंतिम छत से रूपा को देखने की कोशिश कर रहा था, पर रूपा कहीं नज़र नहीं आ रही थी |

मेरा चाहत रिमसा को पाने का था पर बग़ावत में रूपा को भी उपस्थित होते देखना चाहता था ताकि एजेंट ने जो पिछली बार झूठ बोला था, उसका सच सबके सामने आ सके |

@BOOKHOUSE1

ऐसा मुझे आभास हो रहा था की रिमसा बग़ावत तक मेरे पास लौट आएगी | मेरे दिल से भी यही आवाज़ आ रही थी | तभी दलाल के साथ चड्ढा सर और उनके लोगों ने हवेली में प्रवेश किया |

मैं छत से सीढ़ियों द्वारा नीचे की तरफ़ तेज़ी से उतरने लगा | अभी सेकेंड फ्लोर ही मैं पार कर रहा था किअचानक मेरे सामने रूपा आ गई | शायद वो भी सीढ़ियों द्वारा हवेली की उपरी छत की तरफ़ जा रही थी |

“तुम कहाँ चले गए थे?” रूपा ने पूछा |

“रिमसा के अलावा आपका इंतज़ार कर रहा हूँ”, मैंने कहा |

अभी इतना ही बात हुआ था तभी वहाँ एजेंट और चड्ढा जी आ गये |

मुझे देखते ही चड्ढा जी कुछ बड़बड़ाने लगे | शायद उन्होंने मुझे पहचान लिया था | मेरा उनसे आख़री मुलाक़ात तब हुई थी, जब मैं हॉस्पिटल में रूपा को बचाने के लिए गया हुआ था |

“तुम पिछली बार मुझे हॉस्पिटल में मिले थे याद है”, चड्ढा जी मेरे तरफ गौर से देखते हुये कहा |

मेरा बचाव करते हुए रूपा बोल पड़ी “कितना काम अधूरा है इंजीनियर साहब?”

मैं रूपा की बात को समझ गया की वो एजेंट के सामने अपने पापा (चड्ढा जी) को गुमराह करने की कोशिश कर रही है | मैं भी सीरियस होकर बात करने लगा |

“मैडम, हवेली का सारा काम पूरा हो चुका है”, |

“ये इंजीनियर महोदय, मुझे लखनऊ में भी मिले थे”, एजेंट ने कहा |

चड्ढा जी मुझे देखकर हैरान तो थे, पर रूपा और एजेंट की बातों में वो गुमराह हो गए थे | फिर भी चड्ढा जी के चेहरे को पढ़कर मुझे पता चल गया था कि वो अभी भी सस्पेंस में जी रहे है की उन्होंने मुझे सच-मुच हॉस्पिटल में देखा था |

एक्टिंग करने की मुझमें बहुत काबिलियत तो था ही जो मैं उनके सामने करने लगा और वहाँ से मैं नीचे चला गया |

अचानक मेरे पीछे से आवाज़ आई - “तुम एजेंट के भतीजे हो ना?” जब मैं पीछे मुड़कर देखा तो चड्ढा जी मेरे पीछे खड़े थे |

“नहीं नहीं”, मैंने घबराते हुए बोला | अपने सामने रूपा को देखकर मुझमें झूठ बोलने की हिम्मत आ गई |

“नहीं सर, मैं इंजीनियर हूँ लखनऊ का रहने वाला”, मैंने कहा |

“क्या बात है पापा, आप इस इंजीनियर को जानते हैं क्या?” रूपा ने पूछा |

“हाँ, बेटा ये मुझे पिछली बार हॉस्पिटल में मिला था”,चड्ढा जी ने कहा |

“नहीं नहीं ये प्रॉपर्ली लखनऊ के रहने वाले हैं”, रूपा ने कहा |

चड्ढा जी का बात काटते हुए मैं उनको कंफ्यूज करने की कोशिश कर रहा था की मैं एजेंट का भतीजा नहीं हूँ | फिर एजेंट के साथ चड्ढा जी बाहर चले गये |

बग़ावत शुरु हो चुका था |“एक सौ सात” छोटे तथा बड़े प्लॉट का बग़ावत होना था | उस बंटवारे को देखने के लिए दूर-दूर से लोग आए हुए थे क्योंकि उस तरह का आपसी बँटवारा कहीं नहीं होता था |

दो प्लॉट को छोड़ दिया गया, सामाजिक कार्यों के लिए | एक सौ पाँच प्लॉट का बग़ावत जारी किया गया |

एक सौ पाँच प्लॉट को तीन लोगों में बाँटना था, तो प्रत्येक को पैंतीस प्लॉट मिलना तय था | जिसकी किस्मत अच्छी होगी, उसे बड़े प्लॉट मिलेंगे और जिसका किस्मत अच्छा नहीं होगा उसे छोटे प्लॉट लेकर ही सन्तोष करना पड़ेगा |

अगर एजेंट कोई चालबाजी ना करे तो | एक सौ पाँच पत्थरों पर तीन हिस्सेदारो का नाम लिखा जा चूका था |

@BOOKHOUSE1

पैंतीस पत्थरों पर एजेंट का नाम लिखा गया |

पैंतीस पत्थरों पर अपाहिज का नाम लिखा गया |

पैंतीस पत्थरों पर मेरा नाम लिखा गया "अमन श्रीनेत " |

एजेंट ने मेरे घर वालों के साथ फिर एक शातिर चाल चलने का नक्शा बना लिया था |

उसे यह पता था की अमन(उसका भतीजा) इस दुनिया में नहीं है, इसलिए उसने बग़ावत करने वाले पत्थरों पर मेरे पिताजी का नाम लिखवाने की ज़गह एजेंट ने जबरदस्ती मेरा लिखवा दिया था, ताकि एक भी प्लॉट मेरे घरवालों को ना मिल सके और वो मेरे घर वालो को उलझाए रहे |

एजेंट को ये हकीकत पता नहीं थी कि वो जिसे लखनऊ का इंजीनियर समझ रहा है वही उसका भतीजा "अमन श्रीनेत" है | मैंने भी आखरी पल तक एक्टिंग करने की कोशिश जारी रखी |

एक सौ पाँच पत्थरों पर तीन लोगों का नाम लिखा जा चुका था | पत्थरों की संख्या अधिक था इसलिए अधिक अनजान लोगों की ज़रूरत थी, ताकि टोकरी में रखे गए पत्थरों को निकलवाकर प्लॉटो में रखवाया जा सके | जिसके बाद सभी को अपना अपना हिस्सा मिल सके |

चौराहे वाले मंदिर से कुछ साधुओं के साथ महिलाएँ तथा लड़कियाँ भी आई हुई थी | कुछ लड़कियों ने अपने चेहरे को दुपट्टे से ढक रखा था |

@BOOKHOUSE1

मंदिर से आई हुई लड़कियों तथा महिलाओं ने टोकरी से पत्थर को निकालकर प्लॉट में रखना शुरु कर दिया |

जो हवेली चड्ढा जी बग़ावत के वक़्त एजेंट को देने वाले थे, उस हवेली के ऊपरी तल पर एक अंडाकार गोल रूम बना हुआ था, उसके चारों तरफ़ लोहे का छड़ लगाया गया था |

उस आखिरी रूम के छत पर एजेंट और अपाहिज बैठकर प्लॉट के तरफ़ देख रहे थे |

जिसके नाम का पत्थर जिस प्लॉट पर पड़ जाता, वो प्लॉट उसका हो जाता था | दूर के प्लॉट का पता लगाने के लिए तीन रंग के झंडे बनाए गए थे, ताकि दूर से प्लॉट को देखकर पता किया जा सके कि कौन सा प्लॉट किसे मिला है |

एजेंट के झंडे का रंग पीला था |

अपाहिज के झंडे का रंग नीला था |

मेरे झंडे का रंग लाल था |

जैसे-जैसे पत्थर प्लॉट में पड़ते जा रहे थे | वैसे - वैसे प्लॉट में झंडे लगा दिए जा रहे थे | मैं भी हवेली के ऊपरी तल पर एजेंट के पास पहुँचा | ऊपरी तल से बिल्कुल साफ़ दिख रहा था, क्योंकि वो ज़गह हवेली के सबसे ऊपर तथा एक छोर पर स्थित था | ऊपर से देखने पर

बड़े प्लॉट में सिर्फ़ लाल झंडे लहरा रहे थे |

नीले और पीले झंडे सिर्फ़ छोटे प्लॉट में लहरा रहे थे | उस समय एजेंट के चेहरे पर उदासी छाई हुई थी |

“ इतने घबराए हुए क्यों हो? ये तो तुम्हारा ही इलाका है”, मैंने कहा |

“सारे बड़े प्लॉट पर दुश्मन के झंडे लहरा रहे हैं”, एजेंट ने कहा |

“तुम्हारा दुश्मन तो नहीं है ना, फिर क्यों घबरा रहे हो? ” |

“इसीलिये तो मैंने उसके पिता का नाम बग़ावत वाले पत्थरों पर नहीं लिखने दिया”, एजेंट ने कहा |

“इस बार तुम्हारा चाल बेकार जाएगा”, कहते हुए मैं जाने के लिए मुड़ा |

“जाओ यहाँ से”, एजेंट ने चिल्लाते हुए बोला |

मैंने बाहर आते वक़्त उस गोलाकार रूम में ताला लगा दिया और सीढ़ियों से होते हुए नीचे आ गया | एजेंट प्लॉट की तरफ़ देखने में बिज़ी था | नीचे से भी बहुत सारे लोग पत्थर वाले बग़ावत का तमाशा देख रहे थे |

प्लॉट में पत्थर रखने वाले सभी पुरुष, स्त्रियां तथा लड़कियाँ वापस आ चुके थे | तभी एजेंट का ख़ास पहलवान वहाँ दौड़ते हुये आ गया | वो पहलवान किसी को ढूँढ रहा था |

उसके हाथ में एक बंदूक था शायद वो किसी को गोली मारने के लिए आया था | सारे बड़े प्लॉट पर लाल झंडे लहरा रहे थे | प्लॉट के तरफ़ देखकर मुझे ऐसा लग रहा था कि रूपा ने मेरा कोई सेटिंग कर दी है |

सेवई बाज़ार के मंदिर से आये हुये भक्तों के तरफ़ देखते हुए पहलवान ने गोली लोड किया | अचानक रूपा एक लड़की की तरफ़ तेज़ी से बढ़ी, तबतक पहलवान ने गोली चला दिया | पहलवान गोली किसी और लड़की को मारना चाहता था, पर उस वक़्त रूपा सामने आ गई | रूपा ने पहले ही अंदाज़ा लगा लिया था की पहलवान गोली चलाने वाला है दूसरी लड़की की तरफ़ |

रूपा उस लड़की को बचाने के लिए उसे तेज़ी से धक्का दे दि, ताकि पहलवान की गोली से उस लड़की को बचा सके | उस लड़की को बचाने के चक्कर में गोली रूपा को ही लग गई | रूपा को गोली लगते ही वो उस लड़की का हाथ पकड़ते हुए ज़मीन पर गिरने लगी |

जिस लड़की का हाथ रूपा पकड़ते हुए गिर रही थी उसके हाथ में रूपा की अंगूठी था, जो अंगूठी वर्षों पहले मैं रिमसा को दिया था | गोली लगने के बावजूद रूपा की सांसे चल रही थी |

जिस हाथ में उस लड़की ने अंगूठी पहन रखी थी, उस हाथ को रूपा ने अपने हाथ से पकड़ लिया था | रूपा ने अपने एक हाथ को बढ़ाते हुए उस लड़की के चेहरे से दुपट्टा हटाया | उस लड़की का चेहरा देखकर मेरा दिमाग़ चकरा गया |

@BOOKHOUSE1

वो लड़की कोई और नहीं बल्कि रिमसा थी | तभी उस पहलवान ने चिल्लाया, इसी लड़की ने सारे बड़े प्लॉट पर "अमन श्रीनेत" नाम का पत्थर रखा है |

रुपा के एक इशारे से चड्ढा जी ने उस पहलवान को तुरंत गोली मार दी | मेरे पाँव कांपने लगे यह सोचकर की रिमसा मेरे लिए इतना बड़ा रिस्क ले सकती है, वो भी एजेंट के खिलाफ़ | वाक़ई रिमसा की हिम्मत को देखकर मैं हैरान था |

"रिमसा, ये अंगूठी तुम्हें किसने दिया है?" रूपा ने पूछा |

रिमसा ने अपना सिर घुमाते हुए मेरी तरफ़ इशारा कर दिया | रिमसा के उस हाथ को रूपा सहला रही थी, जिस हाथ में रिमसा ने अंगूठी पहन रखी थी | रुपा मुझे राजकुमार कहकर पुकार रही थी | मैं धीरे-धीरे रूपा के पास जाकर बैठ गया | रूपा को रिमसा अपने पैरों पर लेटायी हुई थी |

"राजकुमार मेरे अमन", धीरे से कराहते हुये रूपा  बोली |

"रूपा, मैंने तुमसे बोला था ना, की आखरी बग़ावत के वक़्त तुम अपने राजकुमार को ज़रुर देख सकोगी", मैंने कहा |

"तुम्हें याद है मैं अपने राजकुमार से शादी करना चाहती थी", रूपा ने कहा |

मुझे पता था फिर भी मैं "ना" करते हुए अपना सिर हिला दिया |

"तुम मेरे इतने करीब रहे फिर भी मैं तुम्हें पहचान नहीं सकी | मेरी एक ख़्वाहिश पूरी कर सकते हो?" रूपा ने कहा |

"रिमसा से दूर होने को ना कहना", |

"मैं अपने राजकुमार को हमेशा ख़ुश देखना चाहती हूँ", रूपा ने कहते हुए एक आदमी के तरफ़ कुछ लाने के लिए इशारा की |

तभी चड्ढा जी के एक आदमी ने मेरे सामने वेडिंग कार्ड रख दिया | उस कार्ड के ऊपर रूपा संग राजकुमार लिखा हुआ था | कार्ड को मैंने बिना उठाए पढ़ लिया | रूपा के इशारे पर कार्ड को सारे लोगों में बाँट दिया गया |

"तुम शादी रिमसा से कर सकते हो सिर्फ़ कार्ड पर मेरा नाम रहने दो", रूपा ने रिक्वेस्ट करते हुए कहा |

मैं, रूपा की बात मान गया क्योंकि उसके लफ़्ज़ों पर बहुत पहले से राजकुमार बस चुका था | मैं उसकी बातों का विरोध करके रूपा के दिल को चोट नहीं पहुँचाना चाहता था |

फिर मैं और रिमसा उसी दौरान एक दूसरे के हो गए | हमारी शादी के संपन्न होते ही रूपा की आँखें हमेशा के लिए बंद हो गई |

चड्ढा जी को हक़ीकत पता चल चूका था की पिछले बार रूपा को मैंने ही अपना किडनी डोनेट करके उसका जान बचाया था |

@BOOKHOUSE1

जो हवेली एजेंट को देने के लिए चड्ढा जी ने बनवाया था, वो हवेली मुझे मिल गया | फिर मैंने इस हवेली में वृद्धाश्रम खोल दिया | वृद्धाश्रम की पहली महिला दिल्ली वाली नीरू जी है |

परम (अमन) ने हँसते हुए अपनी कहानी समाप्त कर दिया |

◆ ◆ ◆

@BOOKHOUSE1

उसी वक़्त बच्चा मेरे गोद से कूदकर पूछने लगा, " 'रिया' कौन थी?" सब लोग हँस पड़े |

"तुम्हारी कहानी पूरी हो चुकी है | अगले महीने से सारे बुक सैलरों के पास मिल जाया करेगा | मैं चाहूँगा की पहले तुम ही खरीदो |"

"मेरे सपने पूरे हो चुके हैं", अमन की पत्नी ने कहा |

"तुम्हारे जैसी बहुत सी लड़कियाँ अपने बॉयफ्रेंड को सुधारने के लिए कुछ पलों के लिए उनसे दूर हो जाती हैं ताकि उस लड़की का बॉयफ्रेंड कामयाब हो सके पर दुनिया उन लड़कियों को बेवफ़ा समझ बैठती है | मैं इस कहानी को प्रकाशित करके समाज में सभी लड़कों को यह बताना चाहता हूँ की आख़िर सच क्या है |"

"बेटा मैं बांक दे रही हूँ की तुम्हारे द्वारा पूरी की गई कहानी को पढ़कर, दुनिया को ये पता चल सकेगा कि ख़ास अपनों की हमदर्दी क्या होती है", दिल्ली वाली नीरू नाम की महिला ने कहा |

दो-तीन दिन मैं गोरखपुर "अमन श्रीनेत" की शानदार हवेली में रहा, फिर मैं बी०एड० का पढ़ाई करने अपने शहर दुर्गापुर वापस आ गया |

◆ ◆ ◆

# लेखक परिचय

@BOOKHOUSE1

समाचार पत्रों में लेख लिखते लिखते, मैंने एक उपन्यास ( हमारी अधूरी मुलाकातें ) भी लिखा है | अब एक पटकथा आपके समक्ष पेश कर रहा हूँ | कुछ साल तक मैं “ शाह इंटरटेनमेंट मिडिया “ मुंबई, में कार्यरत था | “ शाह इंटरटेनमेंट मिडिया “ कंपनी के मालिक सुन्नी शाह सर का मै पर्सनल असिस्टेंट बना रहा, उन्ही के कारण फ़िल्मी दुनियो को मै बहुत करीब से देख सका और वही से कहानियाँ और पटकथा लिखना शुरू कर दिया |

" हमारी अधूरी मुलाकातें " उपन्यास प्रकाशित करने के बाद, मै फिर से बेकरार हूँ |

क्या आप दोबारा तैयार है ?  तुमसा ना कोई !

1. हमारी अधूरी मुलाकातें

2. तुमसा ना कोई

◆ ◆ ◆

@BOOKHOUSE1